चन्द्रकान्ता सन्तति

बाबू देवकीनन्दन खत्री

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

प्रकाशक—
श्री कमलापति खत्री,
लहरी बुक डिपो,
वाराणसी ।

मूल्य :—

सजिल्द—१३/००

अजिल्द—९/००
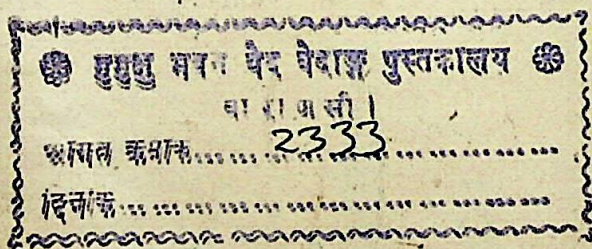
मुद्रक—
भारतजीवन प्रेस,
वाराणसी ।

* श्रीः *

२८

चन्द्रकान्ता सन्तति

सत्रहवां भाग

पहिला बयान

हमारे पाठक 'लीला' को भूले न होंगे। तिलिस्मी दारोगा वाले बंगले की बर्बादी के पहिले तक इसका नाम आया है जिसके बाद फिर इसका जिक्र नहीं आया*। लीला को जमानिया की खबरदारी पर मुकर्रर करके मायारानी काशी वाले नागर के मकान में चली गई थी और वहां दारोगा के आ जाने पर उसके साथ इन्द्रदेव के यहां चली गई। जब इन्द्रदेव के यहां से भी वह भाग गई और दारोगा तथा शेरअलीखां की मदद से रोहतासगढ़ के अन्दर घुसने का प्रबन्ध किया गया जैसा कि सन्तति के बारहवें भाग के तेरहवें बयान में लिखा गया है उस समय लीला भी मायारानी के साथ थी मगर रोहतासगढ़ में जाने के पहिले मायारानी ने उसे अपनी हिफाजत का जरिया बना कर पहाड़ के नीचे ही छोड़ दिया था। मायारानी ने अपना तिलिस्मी तमंचा, जिससे बेहोशी के बारूद की गोली चलाई जाती थी, लीला को दे कर कह दिया था कि मैं शेरअलीखां की मदद से और उन्हीं के भरोसे पर रोहतासगढ़ के अन्दर जाती हूं मगर ऐयारों के हाथ मेरा गिरफ्तार हो जाना कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि बीरेन्द्रसिंह के ऐयार बड़े ही चालाक हैं। यद्यपि उनसे बचे रहने की पूरी पूरी तर्कीब की गई है मगर फिर भी मैं बेफिक्र नहीं रह सकती, अस्तु यह तिलिस्मी तमंचा तू अपने पास रख और इस पहाड़ के नीचे ही रह कर हम लोगों के बारे में टोह लेती रह, अगर हम लोग अपना काम करके राजी खुशी के साथ लौट आये तब तो कोई बात नहीं, ईश्वर न करे कहीं मैं गिरफ्तार हो गई तो

* देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति नौवां भाग, आठवां बयान।

तू मुझे छुड़ाने का बन्दोबस्त कीजियो और इस तमंचे से काम निकालियो। इसमें चलाने वाली गोलियां और वह ताम्रपत्र भी मैं तुझे दिये जाती हूं जिसमें गोली बनाने की तर्कीब लिखी हुई है।

जब दारोगा और शेरअलीखां सहित मायारानी गिरफ्तार हुई और यह खबर शेरअलीखां के लश्कर में पहुंची जो पहाड़ के नीचे था तो लीला ने भी सब हाल सुना और वह उसी समय वहां से टल कर कहीं छिप रही फिर भी जब तक राजा बीरेन्द्रसिंह वहां से चुनारगढ़ की तरफ रवाना न हुए वह भी उस इलाके के बाहर न गई और इसी से शिवदत्त और कल्याणसिंह (जो बहुत से आदमियों को लेकर रोहतासगढ़ के तहखाने में घुसे थे) वाला मामला भी उसे बखूबी मालूम हो गया था

माधवी मनोरमा और शिवदत्त ने जब ऐयारों की मदद से कल्याणसिंह को छुड़ाया था तो भीमसेन भी उसी के साथ ही छुड़ाया गया मगर भीमसेन कुछ बीमार था इसलिए शिवदत्त के साथ मिलजुल कर रोहतासगढ़ के तहखाने में न जा सका था, शिवदत्त ने अपने ऐयारों की हिफाजत में उसे शिवदत्तगढ़ भेज दिया था।

सब बखेड़ों से छुट्टी पाकर जब राजा बीरेन्द्रसिंह कैदियों को लिए हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए तो मायारानी को कैद से छुड़ाने की फिक्र में लीला भी भेष बदले हुए उन्हीं के लश्कर के साथ रवाना हुई। लश्कर में नकली किशोरी कामिनी और कमला के मारे जाने वाला मामला उसके सामने ही हुआ और तब तक उसे अपनी कारंवाई करने का कोई मौका न मिला, मगर जब नकली किशोरी कामिनी और कमला की दाहक्रिया करके राजा साहब आगे बढ़े और दुश्मनों की तरफ से कुछ बेफिक्र हुए तब लीला को भी अपनी कारंवाई का मौका मिला और वह उस खेमे के चारो तरफ ज्यादे फेरे लगाने लगी जिसमें मायारानी कैद थी और चालीस आदमी नंगी तलवार लिये बारी बारी से उसके चारो तरफ पहरा दिया करते थे। एक दिन इत्तिफाक से आंधी पानी का जोर हो गया और इसी से उस कम्बख्त को अपने काम का अच्छा मौका मिला।

बीरेन्द्रसिंह का लश्कर एक सुहावने जंगल में पड़ा हुआ था। समय बहुत अच्छा था, संध्या होने के पहिले ही से बादलों का शामियाना खड़ा हो गया था, बिजली चमकने लग गई थी, और हवा के झपेटे पेड़ पत्तों के साथ हाथापाई कर रहे थे। पहर रात जाते जाते पानी अच्छी तरह बरसने लग गया और उसके बाद तो आंधी पानी ने एक भयानक तूफान का रूप धारण कर लिया। उस समय लश्कर वालों को बहुत ही तकलीफ हुई। हजारों सिपाही, गरीब बनिये, घसियारे और शागिर्द

पेशे वाले जो मैदान में सोया करते थे इस तूफान से दुखी होकर जान बचाने की फिक्र करने लगे। यद्यपि राजा वीरेन्द्रसिंह की रहमदिली और रिआयापरवरी ने बहुतों को आराम दिया और बहुत से आदमी खेमों और शामियानों के अन्दर घुस गये यहां तक कि राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह के खेमों से भी सैकड़ों को पनाह मिल गई मगर फिर भी हजारों आदमी ऐसे रह गये थे जिनकी भूंडी किस्मत में दुःख भोगना बदा था। यह सब कुछ था मगर लीला को ऐसे समय भी चैन न था और वह दुःख को दुःख नहीं समझती थी क्योंकि उसे अपना काम साधने के लिए बहुत दिनों बाद आज यही एक मौका अच्छा मालूम हुआ।

जिस खेमे में मायारानी और दारोगा वगैरह कैद थे उससे चालीस या पचास हाथ की दूरी पर सलई का एक बड़ा और पुराना दरख्त था। इस आंधी पानी और तूफान का खौफ न करके लीला उसी पेड़ पर चढ़ गई और कैदियों के खेमे की तरफ मुंह करके तिलिस्मी तमंचे का निशाना साधने लगी। जब जब विजली चमकती तब तब वह अपने निशाने को ठीक करने का उद्योग करती। सम्भव था कि विजली की चमक में कोई उसे पेड़ पर चढ़ा हुआ देख लेता मगर जिन सिपाहियों के पहरे में वह खेमा था उस (कैदियों वाले) खेमे के आस पास जो लोग रहते थे सभी इस तूफान से घबड़ा कर उसी खेमे के अन्दर घुस गये थे जिसमें मायारानी और दारोगा वगैरह कैद थे। खेमे के बाहर या उस पेड़ के पास कोई भी न था जिस पर लीला चढ़ी हुई थी।

लीला जब अपने निशाने को ठीक कर चुकी तब उसने एक गोली (वेहोशी वाली) चलाई। हम पहिले के किसी बयान में लिख चुके हैं कि इस तिलिस्मी तमंचे के चलाने में किसी तरह की आवाज नहीं होती थी मगर जब गोली जमीन पर गिरती थी तब कुछ हलकी सी आवाज पटाखे की तरह होती थी।

लीला की चलाई हुई गोली खेमे को छेद के अन्दर चली गई और एक सिपाही के बदन पर गिर कर फूटी। उस सिपाही का कुछ नुकसान नहीं हुआ जिस पर गोली गिरी थी। न तो उसका कोई अंगभंग हुआ और न कपड़ा जला, केवल हलकी सी आवाज हुई और वेहोशी का बहुत ज्यादे धूआं चारो तरफ फैलने लगा। मायारानी उस वक्त बैठी हुई अपनी किस्मत पर रो रही थी। पटाखे की आवाज से वह चौंक कर उसी तरफ देखने लगी और बहुत जल्द समझ गई कि यह उसी तिलिस्मी तमंचे से चलाई गई हुई गोली है जो मैं लीला के सुपुर्द कर आयी थी।

मायारानी यद्यपि जान से हाथ धो बैठी थी और उसे विश्वास हो गया था

कि अब इस कैद से किसी तरह छुटकारा नहीं मिल सकता मगर इस समय तिलिस्मी तमंचे की गोली ने खेमे के अन्दर पहुंच कर उसे विश्वास दिला दिया कि अब भी तेरा एक दोस्त मदद करने लायक मौजूद है जो यहां आ पहुंचा और कैद से छुड़ाया ही चाहता है।

वह मायारानी, जिसकी आंखों के आगे मौत की भयानक सूरत घूम रही थी और हर तरह से नाउम्मीद हो चुकी थी, चौंक कर सम्हल बैठी। बेहोशी का असर करने वाला धूआं बच रहने की मुबारकबाद देता हुआ आंखों के सामने फैलने लगा और तरह तरह की उम्मीदों ने उसका कलेजा ऊंचा कर दिया। यद्यपि वह जानती थी कि यह धूआं मुझे भी बेहोश कर देगा, मगर फिर भी वह खुशी की निगाह से चारो तरफ देखने लगी और इतने में ही एक दूसरी गोली भी उसी ढंग से वहां आकर गिरी।

मायारानी और दारोगा को छोड़ कर जितने आदमी उस खेमे में थे सभों को उन दोनों गोलियों ने ताज्जुब में डाल दिया। अगर गोली चलाती समय तमंचे में से किसी तरह की आवाज निकल कर उनके कानों तक पहुंचती तो शायद कुछ पता लगाने की नीयत से दो चार आदमी खेमे के बाहर निकलते मगर उस समय सिवाय एक दूसरे का मुंह देखने के किसी को किसी तरह का गुमान न हुआ और धूएं ने तेजी के साथ फैल कर अपना असर जमाना शुरू कर दिया। बात की बात में जितने आदमी उस खेमे के अन्दर थे सभों का सर घूमने लगा और एक दूसरे के ऊपर गिरते हुए सब के सब बेहोश हो गए, मायारानी और दारोगा को भी दीन दुनिया की सुध न रही।

पेड़ पर चढ़ी हुई लीला ने थोड़ी देर तक इन्तजार किया। जब खेमे के अन्दर से किसी को निकलते न देखा और उसे विश्वास हो गया कि खेमे के अन्दर वाले अब बेहोश हो गये होंगे तब वह पेड़ से उतरी और खेमे के पास आई। आंधी पानी का जोर अभी तक वैसा ही था मगर लीला ने इसे अच्छी तरह सह लिया और कनात के नीचे से झांक कर खेमे के अन्दर देखा तो सभों को बेहोश पाया।

पाठकों को यह मालूम है कि लीला ऐयारी भी जानती थी। कनात काट कर वह खेमे के अन्दर चली गई। आदमी बहुत ज्यादे भरे हुए थे इसलिए उसे मायारानी के पास तक पहुंचने में बड़ी कठिनाई हुई, आखिर उसके पास पहुंची और हाथ-पैर खोलने के बाद लखलखा सुंघा कर होश में लाई। मायारानी ने होश में आकर लीला को देखा और धीरे से कहा, "शाबाश, खूब पहुंची। बस दारोगा

को छुड़ाने की कोई जरूरत नहीं ।" इतना कह कर मायारानी उठ खड़ी हुई और लीला के हाथ का सहारा लेती हुई खेमे के बाहर निकल गयी ।

लीला ने चाहा कि लश्कर में से दो घोड़े भी सवारी के लिए चुरा लावे मगर मायारानी ने स्वीकार न किया और उसी तूफान में दोनों कम्बख्तों ने एक तरफ का रास्ता लिया ।

दूसरा बयान

पाठकों को मालूम है कि शिवदत्त और कल्याणसिंह ने जब रोहतासगढ़ पर चढ़ाई की थी तब उनके साथ मनोरमा और माधवी भी मौजूद थीं । भूतनाथ और सर्यूसिंह ने शिवदत्त और कल्याणसिंह को डरा धमका कर मनोरमा को तो गिरफ्तार कर लिया* परन्तु माधवी कहां गई या क्या हुई इसका हाल कुछ लिखा नहीं गया अस्तु अब हम थोड़ा सा हाल माधवी का लिखना उचित समझते हैं ।

जिस जमाने में माधवी गया और राजगृही की रानी कहलाती थी उस जमाने में उसका राज्य केवल तीन ही आदमियों के भरोसे पर चलता था—एक दीवान अग्निदत्त, दूसरा कोतवाल धर्मसिंह, और तीसरा सेनापति कुबेरसिंह । बस यही तीनों उसके राज्य का आनन्द लेते थे और इन्हीं तीनों का माधवी को भरोसा था । यद्यपि ये तीनों ही माधवी की चाह में डूबने वाले थे मगर कुबेरसिंह और धर्मसिंह प्यासे ही रह गये जिसका उन दोनों को बराबर बहुत ही रंज बना रहा ।

जब राजगृही और गया की किस्मत ने पलटा खाया तब धर्मसिंह कोतवाल को तो चपला ने माधवी की सूरत बन और धोखा दे गिरफ्तार कर लिया और दीवान अग्निदत्त बहुत दिनों तक बचा रह कर अन्त में किशोरी के कारण एक खोह के अन्दर मारा गया, परन्तु अभी तक यह न मालूम हुआ कि उसके मर जाने का सबब क्या था । हां सेनापति कुबेरसिंह जिसने माधवी के राज्य में सबसे ज्यादे दौलत पैदा की थी, बचा रहा गया क्योंकि उसने जमाने को पलटा खाते देख चुपचाप अपने घर (मुर्शिदाबाद) का रास्ता लिया मगर माधवी के हालचाल की खबर लेता रहा, क्योंकि यद्यपि उसने माधवी का राज्य छोड़ दिया था मगर माधवी के इश्क ने उसके दिल में से अपना दखल नहीं उठाया था ।

माधवी की बिगड़ी हुई अवस्था देख कर भी उसकी मुहब्बत से हाथ न धोने का दो सबब था, एक तो माधवी वास्तव में खूबसूरत हसीन और नाजुक थी, दूसरे

* देखिये चौदहवां भाग, दूसरा बयान ।

राजगृही और गया के राज्य से खारिज हो जाने पर भी वह माधवी को अमीर और बेहिसाब दौलत का मालिक समझता था और इसलिये वह समय पर ध्यान रख कर माधवी के हालचाल की बराबर खबर लेता रहा और वक्त पर काम देने के लिये थोड़ी सी फौज का मालिक भी बना रहा।

मनोरमा के गिरफ्तार हो जाने के बाद शिवदत्त और कल्याणसिंह के साथ जब माधवी रोहतासगढ़ की तराई में पहुंची तो एक आदमी ने गुप्त रीति पर उसे एक चीठी दी और बहुत जल्द उसका जवाब मांगा। यह चीठी कुबेरसिंह की थी और उसमें यह लिखा हुआ था :—

"मुझे आपकी अवस्था पर बहुत रंज और अफसोस है। यद्यपि आपकी हालत बदल गई है और आप मुझसे बहुत दूर हैं मगर मैं अभी तक आपकी खयाली तस्वीर अपने दिल के अन्दर कायम रख कर दिन रात उसकी पूजा किया करता हूं। यही सबब है कि बहुत दिनों तक मेहनत करके मैंने इतनी ताकत पैदा कर ली है कि आपकी मदद कर सकूं और आपको पुनः राजगृही की गद्दी का मालिक बनाऊं। आप अपने ही दिल से पूछ देखिये कि अग्निदत्त, जिसके साथ आपने सब कुछ किया, कैसा बेईमान और बेमुरौवत निकला और मैं, जिसे आपने हद से ज्यादे तरसाया कैसी हालत में आपकी मदद करने को तैयार हूं! यदि आप मुनासिब समझें तो इस आदमी के साथ मेरे पास चली आवें या मुझी को अपने पास बुला लें। यह आदमी जो चीठी लेकर जाता है मेरा ऐयार है।

आपका—कुबेर।"

माधवी ने उस चीठी को बड़े गौर से दोहरा कर पढ़ा और देर तक तरह तरह की बातें सोचती रही। हम नहीं जानते कि उसका दिल किन किन बातों का फैसला करता रहा या वह किस विचार में देर तक डूबी रही, हां थोड़ी देर बाद उसने सिर उठा चीठी लाने वाले की तरफ देखा और कहा, "कुबेरसिंह कहां पर है!"

ऐयार०। यहां से थोड़ी दूर पर।

माधवी०। फिर वह खुद यहां क्यों न आया?

ऐयार०। इसीलिए कि आप इस समय दूसरों के साथ हैं जिन्होंने आपको न मालूम किस तरह का भरोसा दिया होगा या आप ही ने शायद उनसे किस तरह का एकरार किया हो, ऐसी अवस्था में आपसे दरियाफ्त किये बिना इस लश्कर में आना उन्होंने मुनासिब नहीं समझा।

माधवी०। ठीक है, अच्छा तुम जाकर उसे बहुत जल्द मेरे पास ले आओ

कितनी देर में आओगे !

ऐयार० । (सलाम करके) आधे घंटे के अन्दर ।

वह ऐयार तेजी के साथ दौड़ता हुआ वहां से चला गया और माधवी उसी जगह टहलती हुई उसका इन्तजार करने लगी ।

दिन आधे घंटे से कुछ ज्यादे बाकी था और इस समय माधवी कुछ खुश मालूम होती थी । शिवदत्त और कल्याणसिंह का लश्कर एक जंगल में छिपा हुआ था और माधवी अपने डेरे से निकल कर सौ सवा सौ कदम की दूरी पर चली गई थी । माधवी कुबेरसिंह के अच्छर अच्छी तरह पहिचानती थी इसलिए उसे किसी तरह का धोखा खाने का शक कुछ भी न हुआ और वह बेखौफ उसके आने का इन्तजार करने लगी ।

संध्या होने के पहिले ही उसी ऐयार को साथ लिए हुए कुबेरसिंह माधवी की तरफ आता दिखाई दिया जो थोड़ी ही देर पहिले उसकी चीठी लेकर आया था । उस समय वह ऐयार भी एक घोड़े पर सवार था और कुबेरसिंह अपनी सूरत शक्ल तथा हैसियत को अच्छी तरह सजाये हुए था । माधवी के पास पहुंच कर दोनों आदमी घोड़े से नीचे उतर पड़े और कुबेरसिंह ने माधवी को सलाम करके कहा, "आज वहुत दिनों के बाद ईश्वर ने मुझे आपसे मिलाया ! मुझे इस इस बात का वहुत रंज है कि आपने लौंडियों के भड़काने पर चुपचाप घर छोड़ जंगल का रास्ता लिया और अपने खैरखाह कुबेरसिंह (हम) को याद तक न किया । मैं खूब जानता हूं कि आपने अपने दीवान अग्निदत्त से डर कर ऐसा किया था मगर उसके बाद भी तो मुझे याद करने का मौका जरूर मिला होगा ।"

माधवी० । (मुस्कुराती हुई कुबेरसिंह का हाथ पकड़ के) मैं घर से निकलने के बाद ऐसी मुसीबत में पड़ गयी थी कि अपनी भलाई बुराई पर कुछ भी ध्यान न दे सकी और जब मैंने सुना कि गया और राजगृही में बीरेन्द्रसिंह का राज्य हो गया तब और भी हताश हो गई, फिर भी मैं अपने उद्योग की बदौलत बहुत कुछ कर गुजरती मगर गयाजी में अग्निदत्त की लड़की कामिनी ने मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया और मुझे किसी लायक न रक्खा । (अपनी कटी हुई कलाई दिखा कर) यह उसी की बदौलत है ।

कुबेर० । वह खानदान का खानदान ही निमकहराम निकला और इसी फेर में अग्निदत्त मारा भी गया ।

माधवी० । हां उसके मरने का हाल कामिनी की सखी मनोरमा की जुबानी

मैंने सुना था। (पीछे की तरफ देख कर) कौन आ रहा है ?

कुबेर०। आप ही के लश्कर का कोई आदमी है, शायद आपको बुलाने आता हो, नहीं वह दूसरी तरफ घूम गया, मगर अब आपको कुछ सोच विचार करना किसी से मिलना या इस जगह खड़े खड़े बातों में समय नष्ट करना न चाहिये और यह मौका भी बातचीत करने का नहीं है। आप (घोड़े की तरफ इशारा करके) इस घोड़े पर शीघ्र सवार होकर मेरे साथ चली चलें, मैं आपका तावेदार सब लायक और सब कुछ करने के लिये तैयार हूं, फिर किसी की खुशामद की जरूरत ही क्या है ? यदि कल्याणसिंह के लश्कर में आपका कुछ असबाब हो तो उसकी परवाह न कीजिए।

माधवी०। नहीं अब मुझे किसी की परवाह नहीं रही, मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूं।

इतना कह कर माधवी कुबेरसिंह के घोड़े पर सवार हो गई, कुबेरसिंह अपने ऐयार के घोड़े पर सवार हुआ तथा पैदल ऐयार को साथ लिए हुए दोनों एक तरफ को रवाना हुए।

यही सबब था कि शिवदत्त वगैरह के साथ माधवी रोहतासगढ़ के तहखाने में दाखिल नहीं हुई।

तीसरा बयान

कैद से छुटकारा मिलने के बाद बीमारी के सबब से यद्यपि भीमसेन को घर जाना पड़ा और वहां उसकी बीमारी बहुत जल्दी जाती रही मगर घर में रहने का जो सुख उसको मिलना चाहिए वह न मिला क्योंकि एक तो मां के मरने का रंज और गम उसे हद से ज्यादे था और अब वह घर काटने को दौड़ता था, दूसरे थोड़े ही दिन बाद बाप के मरने की खबर भी उसे पहुंची जिससे वह बहुत ही उदास और बेचैन हो गया। इस समय उसके ऐयार लोग भी वहीं मौजूद थे जो बाहर से यह दुःखदाई खबर लेकर लौट आये थे। पहिले तो उसके ऐयारों ने उसे बहुत समझाया और राजा बीरेन्द्रसिंह से सुलह कर लेने में बहुत सी भलाइयां दिखाई मगर उस नालायक के दिल में एक भी न बैठी और वह राजा बीरेन्द्रसिंह से बदला लेने तथा किशोरी को जान से मार डालने की कसम खाकर घर से बाहर निकल पड़ा। बाकरअली खुदाबक्श अजायबसिंह और यारअली इत्यादि उसके लालची ऐयारों ने भी लाचार होकर उसका साथ दिया।

अबकी दफे भीमसेन ने अपने ऐयारों के सिवाय और किसी को भी साथ न लिया, हां रुपै अशर्फी या जवाहिरात की किस्म में से जहां तक उससे बना या जो कुछ उसके पास था लेकर अपने ऐयारों को लालच भरी उम्मीदों का सब्जबाग दिखाता रवाना हुआ और थोड़ी दूर जाने बाद ऐयारों के साथ ही साथ उसने अपनी भी सूरत बदल ली।

"राजा वीरेन्द्रसिंह को किस तरह नीचा दिखाना चाहिये और क्या करना चाहिये ?" इस विषय पर तीन दिन तक उन लोगों में बहस होती रही और अन्त में यह निश्चय किया गया कि राजा वीरेन्द्रसिंह और उनके खान्दान तथा आपुस वालों का मुकाबला करने के पहिले उनके दुश्मनों से दोस्ती बढ़ाकर अपना बल पुष्ट कर लेना चाहिये। इस इरादे पर वे लोग बहुत कुछ कायम भी रहे और माधवी मायारानी तथा तिलिस्मी दारोगा वगैरह से मुलाकात करने की फिक्र करने लगे।

कई दिनों तक सफर करने और घूमने फिरने के बाद एक दिन ये लोग दोपहर होते होते एक घने जंगल में पहुंचे। चार पांच घण्टे आराम कर लेना इन लोगों को बहुत जरूरी मालूम हुआ क्योंकि गर्मी के बबाचली का जमाना था और धूप बहुत कड़ी और दुःखदाई थी। मुसाफिरों को तो जाने दीजिये, जंगली जानवरों और आकाश में उड़ने तथा बात की बात में दूर दूर की खबर लाने वाली चिड़ियाओं को भी पत्तों की आड़ से निकलना बुरा मालूम होता था।

इस जंगल में एक जगह पानी का झरना भी जारी था और उसके दोनों तरफ पेड़ों की घनाहट के सबब बनिस्बत और जगहों के ठंढक ज्यादे थी। ये पांचों मुसाफिर भी झरने के किनारे पत्थर की साफ चट्टान देख कर बैठ गए और आपुस में इधर उधर की बातें करने लगे। इसी समय बातचीत की आहट पाने और निगाह दौड़ाने पर इन लोगों की निगाह दस बारह सिपाहियों पर पड़ी जिन्हें देख भीमसेन चौंका और उनका पता लगाने के लिए अजायबसिंह से कहा, क्योंकि दोस्तों और दुश्मनों के खयाल से उसका जी एक दम के लिए भी ठिकाने नहीं रहता था और 'पत्ता खड़का बन्दा भड़का' की कहावत का नमूना बन रहा था।

भीमसेन की आज्ञानुसार अजायबसिंह ने उन आदमियों का पीछा किया और दो घण्टे तक लौट कर न आया। तब दूसरे ऐयारों को भी चिन्ता हुई और वे अजायबसिंह की खोज में जाने के लिए तैयार हुए मगर इसकी नौबत न पहुंची क्योंकि उसी समय अजायबसिंह अपने साथ कई सिपाहियों को लिए भीमसेन की तरफ आता दिखाई दिया।

अजायबसिंह के इस तरह आने ने पहिले तो सभी को खुटके में डाल दिया मगर जब अजायबसिंह ने दूर ही से खुशी का इशारा किया तब सभों का जी ठिकाने हुआ और उसके आने का इन्तजार करने लगे। पास आने पर अजायबसिंह ने भीमसेन से कहा, "इस जंगल में आकर टिक जाना हम लोगों के लिए बहुत अच्छा हुआ क्योंकि रानी माधवी से मुलाकात हो गई। आज ही उनका डेरा भी इस जंगल में आया है। कुबेरसिंह सेनापति और चार पांच सौ सिपाही उनके साथ हैं। जिन लोगों का मैंने पीछा किया था वे भी उन्हीं के सिपाहियों में से थे और ये भी उन्हीं के सिपाही हैं जो मेरे साथ आपको बुलाने के लिए आए हैं।"

माधवी की खबर सुन कर भीमसेन उतना ही खुश हुआ जितना अजायबसिंह की जुबानी भीमसेन के आने की खबर पाकर माधवी खुश हुई थी। अजायबसिंह की बात सुनते ही भीमसेन उठ खड़ा हुआ और अपने ऐयारों को साथ लिए हुए घड़ी भर के अन्दर ही अपनी बेहया बहिन माधवी से जा मिला। ये दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए मगर उन दोनों की मुलाकात कुबेरसिंह को अच्छी न मालूम पड़ी जिसका सबब क्या था सो हमारे पाठक लोग खुद ही समझ सकते हैं।

थोड़ी देर तक भीमसेन और माधवी ने कुशल-मंगल पूछने में बिताया। माधवी ने खाने पीने की चीजें तैयार करने का हुक्म दिया क्योंकि उसे अपने अनूठे भाई की खातिरदारी आज मंजूर थी और इसलिए बड़ी मुहब्बत के साथ देर तक बातें होती रहीं।

माधवी को इस जंगल में आये आज पांच दिन हो चुके हैं। पांचवें दिन दोपहर के समय भीमसेन से मुलाकात हुई थी। उसका (कुबेरसिंह का) ऐयार दुश्मनों की खोज खबर लगाने के लिए कहीं गया हुआ था क्योंकि माधवी और कुबेरसिंह ने इस जंगल में पहुंच कर निश्चय कर लिया था कि पहिले दुश्मनों का हाल चाल मालूम करना चाहिए इसके बाद जो कुछ मुनासिब होगा किया जायगा।

चौथा बयान

कैद से छूटने के बाद लीला को साथ लिए हुए मायारानी ऐसा भागी कि उसने पीछे की तरफ फिर के भी नहीं देखा। आंधी और पानी के कारण उन दोनों को भागने में बड़ी तकलीफ हुई, कई दफे वे दोनों गिरीं और चोट भी लगी मगर प्यारी जान को बचा कर ले भागने के ख्याल ने उन्हें किसी तरह दम लेने न दिया। दो घण्टे के बाद आंधी पानी का जोर जाता रहा, आसमान साफ हो गया और

चन्द्रमा भी निकल आया, उस समय उन दोनों को भागने में सुबीता हुआ और सवेरा होते तक ये दोनों बहुत दूर निकल गईं।

मायारानी यद्यपि खूबसूरत थी नाजुक थी और अमीरी परले सिरे की कर चुकी थी मगर इस समय ये सब बातें हवा हो गईं। पैरों में छाले पड़ जाने पर भी उसने भागने में कसर न की और सवेरा हो जाने पर भी दम न लिया, बराबर भागती ही चली गई। दूसरा दिन भी उसके लिये बहुत अच्छा था, आसमान पर बदली छाई हुई थी और धूप को जमीन तक पहुंचने का मौका नहीं मिलता था। अब मायारानी बातचीत करती हुई और पिछली बातें लीला को सुनाती हुई रुक कर चलने लगी। थोड़ी दूर जाती फिर जरा दम ले लेती, पुनः उठ कर चलती और कुछ दूर बाद दम लेने के लिए बैठ जाती। इसी तरह दूसरा दिन भी मायारानी ने सफर ही में बिता दिया और खाने पीने की कुछ विशेष परवाह न की। संध्या होने के कुछ पहिले वे दोनों एक पहाड़ी की तराई में पहुंचीं जहां साफ पानी का सुन्दर चश्मा बह रहा था और जंगली बैर तथा मकोय के पेड़ भी बहुतायत से थे। वहां पर लीला ने मायारानी से कहा कि अब डरने तथा चलते चलते जान देने की कोई जरूरत नहीं, हमलोग बहुत दूर निकल आये हैं और ऐसे रास्ते से आये हैं कि जिधर से किसी मुसाफिर की आमदरफ्त नहीं होती अस्तु अब हम लोगों को बेफिक्री के साथ आराम करना चाहिए। यह जगह इस लायक है कि हम लोग खा पी कर अपनी आत्मा को सन्तोष दे लें और अपनी अपनी सूरतें भी अच्छी तरह बदल कर पहिचाने जाने का खटका मिटा लें!"

लीला की बात मायारानी ने स्वीकार की और चश्मे के पानी से हाथ मुंह धोने और जरा दम लेने बाद सबके पहिले सूरत बदलने का बन्दोबस्त करने लगी क्योंकि दिन नाममात्र को रह गया था और रात हो जाने पर बिना रोशनी के सहारे यह काम अच्छी तरह नहीं हो सकता था।

सूरत शक्ल के हेर फेर से छुट्टी पाने बाद दोनों ने जंगली बैर और मकोय को अच्छे से अच्छा मेवा समझ कर भोजन किया और चश्मे का जल पीकर आत्मा को सन्तोष दिया, तब निश्चिन्त होकर बैठी और यों बातचीत करने लगीं :—

माया०। अब जरा जी ठिकाने हुआ, मगर शरीर चूर चूर हो गया। खैर किसी तरह तेरी बदौलत जान बच गई, नहीं तो मैं हर तरह से नाउम्मीद हो चुकी थी और राह देखती थी कि मेरी जान किस तरह ली जाती है।

लीला०। चाहे तुम्हारे बिल्कुल नौकर चाकर तुम्हारे अहसानों को भूल जायं

और तुम्हारे नमक का ख्याल न करें मगर मैं कब ऐसा कर सकती हूं, मुझे दुनिया में तुम्हारे बिना चैन कब पड़ सकता है, जब तक तुम्हें कैद से छुड़ा न लिया अन्न का दाना मुंह में न डाला बल्कि अभी तक जंगली बेर और मकोय पर ही गुजारा कर रही हूं !!

माया० । शाबाश ! मैं तुम्हारे इस अहसान को जन्म भर नहीं भूल सकती, जिस तरह आप रहूंगी उसी तरह तुम्हें भी रक्खूंगी, यह जान तुमने बचाई है इसलिए जब तक इस दुनिया में रहूंगी इस जान का मालिक तुम्हीं को समझूंगी ।

लीला० । (तिलिस्मी तमंचा और गोली मायारानी के सामने रख कर) यह अपनी अमानत आप लीजिए और अब इसे अपने पास रखिये,इसने बड़ा काम किया।

माया० । (तमंचा उठा कर और थोड़ी सी गोली लीला को देकर) इन गोलियों को अपने पास रक्खो, बिना तमंचे के भी ये बड़ा काम देंगी, जिस तरफ फेंक दोगी या जहां जमीन पर पटकोगी उसी जगह ये अपना गुण दिखलावेंगी ।

लीला० । (गोली रख कर) बेशक ये बड़े वक्त पर काम दे सकती हैं । अच्छा यह कहिये कि अब हम लोगों को क्या करना और कहां जाना चाहिये ?

माया० । इसका जवाब भी तुम्हीं बहुत अच्छा दे सकती हो,मैं केवल इतना ही कहूंगी कि गोपालसिंह और कमलिनी को इस दुनिया से उठा देना सबसे पहिला और जरूरी काम समझना चाहिए ! किशोरी कामिनी और कमला को मार कर मनोरमा ने कुछ भी न किया, उतनी ही मेहनत अगर गोपालसिंह और कमलिनी को मारने के लिए करती तो इस समय मैं पुनः तिलिस्म की रानी कहलाने लायक हो सकती थी ।

लीला० । ठीक है मगर मुझे....(कुछ रुक कर) देखो तो वह कौन सवार जा रहा है ! मुझे तो उस छोकड़े रामदीन की छटा मालूम पड़ती है । यह पंचकल्यान मुश्की घोड़ी भी अपने ही अस्तबल की मालूम पड़ती है बल्कि....

माया० । (गौर से देख कर) वही है जिस पर मैं सवार हुआ करती थी, और बेशक वह सवार भी रामदीन ही है, उसे पकड़ो तो गोपालसिंह का ठीक हाल मालूम हो ।

लीला० । पकड़ना तो कोई कठिन काम नहीं है क्योंकि तिलिस्मी तमंचा तुम्हारे पास मौजूद है, मगर यह कम्बख्त कुछ बताने वाला नहीं है ।

माया० । खैर जो हो, मैं गोली चलाती हूं ।

इतना कह कर मायारानी ने फुर्ती से तिलिस्मी तमंचे में गोली भर कर सवार

की तरफ चलाई। गोली घोड़ी की गर्दन में लगी और तुरत फट गई, घोड़ी भड़की और उछली कूदी मगर गोली से निकले हुए बेहोशी के धूएं ने अपना असर करने में उससे भी ज्यादे तेजी और फुर्ती दिखाई। घोड़ी और सवार दोनों ही पर बेहोशी का असर हो गया। सवार जमीन पर गिर पड़ा और दो कदम आगे बढ़कर घोड़ी भी लेट गई। मायारानी और लीला ने दूर से यह तमाशा देखा और दौड़ती हुई सवार के पास पहुंचीं।

लीला०। पहिले इसकी मुश्कें बांधनी चाहिए।

माया०। क्या जरूरत है?

लीला०। क्यों, फिर इसे बेहोश किस लिये किया?

माया०। तुम खुद ही कह चुकी हो कि यह कुछ बताने वाला नहीं है, फिर मुश्कें बांधने से मतलब?

लीला०। आखिर फिर किया क्या जायगा?

माया०। पहिले तुम इसकी तलाशी ले लो फिर जो कुछ करना होगा मैं बताऊंगी।

लीला०। बहुत खूब, यह तुमने ठीक कहा।

इस समय संध्या पूरे तौर पर हो चुकी थी परन्तु चन्द्रदेव के दर्शन हो रहे थे इसलिए यह नहीं कह सकते कि अन्धकार पल पल में बढ़ता जाता था। लीला उस सवार की तलाशी लेने लगी और पहिले ही दफे जेब में हाथ डालने से उसे दो चीजें मिलीं। एक तो हीरे की कीमती अंगूठी जिस पर राजा गोपालसिंह का नाम खुदा हुआ था और दूसरी चीज एक चीठी थी जो लिफाफे के तौर पर लपेटी हुई थी।

चाहे अन्धकार न हो मगर चीठी और अंगूठी पर खुदे हुए नाम को पढ़ने के लिए रोशनी की जरूरत थी और जब तक चीठी का हाल मालूम न हो जाय तब कुछ काम करना या आगे तलाशी लेना उन दोनों को मंजूर न था, अस्तु लीला ने अपने ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी पैदा की और मायारानी ने सब के पहिले अंगूठी पर निगाह दौड़ाई। अंगूठी पर 'श्रीगोपाल' खुदा हुआ देख उसके रोंगटे खड़े हो गये फिर भी अपनी तबीयत सम्हाल कर वह चीठी पढ़ने लगी। चीठी में यह लिखा हुआ था :—

"बेनीराम जोग लिखी गोपालसिंह—

आज हमने अपना पर्दा खोल दिया, कृष्णाजिन्न के नाम का अन्त हो गया, जिनके लिये यह स्वांग रचा गया था उन्हें मालूम हो गया कि गोपालसिंह और

कृष्णाजिन्न में कोई भी भेद नहीं है,अस्तु अब हमने काम काज के लिए इस छोकरे को अपनी अंगूठी देकर विश्वास का पात्र बनाया है। जब तक यह अंगूठी इसके पास रहेगी तब तक इसका हुक्म हमारे हुक्म के बराबर सभों को मानना होगा। इसका बन्दोबस्त कर देना और दो सौ सवार तथा चार रथ बहुत जल्द पिपलिया घाटी में भेज देना। हम किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को लेकर आ रहे हैं। थोड़ा सा जलपान का सामान उम्दा अलग भेजना। परसों रविवार की शाम तक हम लोग वहां पहुंच जायेंगे।"

इस चीठी ने मायारानी का कलेजा दहला दिया और उसने घबड़ा कर इसे पढ़ने के लिए लीला के हाथ में दे दिया।

माया०। ओफ ! मुझे स्वप्न में भी इस बात का गुमान न था कि कृष्णाजिन्न वास्तव में गोपालसिंह है ! आह, जब मैं पिछली बातें याद करती हूं तो कलेजा कांप जाता है और मालूम होता है कि गोपालसिंह ने मेरी तरफ से लापरवाही नहीं की बल्कि मुझे बुरी तरह से दुःख देने का इरादा कर लिया था। किशोरी कामिनी और कमला के बारे में भी....ओफ ! बस अब मैं इस जगह दम भर भी नहीं ठहर सकती और ठहरना उचित भी नहीं है।

लीला०। बेशक ऐसा ही है, मगर कोई हर्ज नहीं, आज यदि कृष्णाजिन्न का भेद खुल गया है तो यह (अंगूठी और चीठी दिखा कर) चीजें भी बड़ी ही अनूठी मिल गई हैं। तुम बहुत जल्द देखोगी कि इस चीठी और अंगूठी की बदौलत मैं कैसे कैसे नामी ऐयारों की आंखों में धूल डालती हूं और गोपालसिंह तथा उसके सहायकों को किस तरह तड़पा तड़पा कर मारती हूं। तुम यह भी देखोगी कि तुम्हारे उन लोगों ने जो ऐयारी का बाना पहिने हुए थे और और नामी ऐयार कहलाते थे उसका पासंगा भी नहीं किया जो मैं अब कर दिखाऊंगी। तो अब यहां से चलना चाहिये।

माया०। बहुत जल्द ही चलना चाहिये, मगर क्या इस छोकड़े को जीता ही छोड़ जाओगी ?

लीला०। नहीं नहीं, कदापि नहीं। क्या इसे मैं इसलिये जीता छोड़ जाऊंगी कि यह होश में आकर जमानिया या गोपालसिंह के पास चला जाये और मेरी कारंवाइयों में बट्टा लगाए !

इतना कह कर लीला ने खंजर निकाला और एक ही हाथ में बेचारे रामदीन का सिर काट दिया, तब लाश को उसी तरह छोड़ घोड़ी को होश में लाने

का उद्योग करने लगी।

थोड़ी देर में घोड़ी भी चैतन्य हो गई, उस समय लीला के कहे अनुसार माया-रानी उस घोड़ी पर सवार हुई और दोनों ने वहां से हट कर एक घने जंगल का रास्ता लिया। लीला घोड़ी की रिकाब थामे साथ साथ बातें करती हुई जाने लगी।

माया०। यह मदद मुझे गैब से मिली है, यकायक रामदीन का मिल जाना और उसकी जेब में से अंगूठी तथा चीठी का निकल आना कहे देता है कि मेरे बुरे दिन बहुत जल्द खत्म हुआ चाहते हैं।

लीला०। इसमें क्या शक है! अबकी दफे तो राजा गोपालसिंह सचमुच हमारे कब्जे में आ गये हैं। अफसोस इतना ही है कि हमलोग अकेले हैं, अगर सौ पचास आदमियों की भी मदद होती तो आज गोपालसिंह तथा किशोरी लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को सहज ही में गिरफ्तार कर लेती।

माया०। अब उन लोगों को गिरफ्तार करने का ख्याल तो बिल्कुल जाने दे और एकदम से उन लोगों को मार कर बखेड़ा निपटा डालने की ही फिक्र कर। इस अंगूठी और चीठी के मिल जाने पर यह काम कोई मुश्किल नहीं है।

लीला०। ठीक है, जो कुछ तुम चाहती हो मैं पहिले से समझे बैठी हूं। मेरा इरादा है कि तुम्हें किसी अच्छी और हिफाजत की जगह पर छोड़ कर मैं जमानिया जाऊं और दीवान साहब से मिलूं जिसके नाम गोपालसिंह ने यह चीठी लिखी है।

माया०। बस रामदीन छोकड़े की सूरत बना ले और इसी घोड़ी पर सवार होकर चीठी लेकर जा। इस चीठी के अलावे भी तू जो कुछ दीवान को कहेगी वह उससे इन्कार न करेगा। गोपालसिंह के लिखे अनुसार जो कुछ खाने पीने की चीजें तू लेकर उस घाटी की तरफ जायगी उसमें जहर मिला देना तो तेरे लिए कोई मुश्किल न होगा और इस तरह एक साथ ही कई दुश्मनों की सफाई हो जायगी, मगर इसमें भी मुझे एक बात का खुटका होता है।

लीला०। वह क्या?

माया०। जिस वक्त से मुझे यह मालूम हुआ है कि गोपालसिंह ही ने कृष्णा-जिन्न का रूप धारण किया था उस वक्त से मैं उसे बहुत ही चालाक और धूर्त ऐयार समझने लग गई हूं, ताज्जुब नहीं कि वह तेरा भेद मालूम कर ले या वे खाने पीने की चीजें जो उसने मंगाई हैं उनमें से स्वयं कुछ भी न खाय।

लीला०। यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। मेरा दिल भी यही कहता है कि उसने खाने पीने का बहुत बड़ा ध्यान रक्खा होगा, सिवाय अपने हाथ के और

किसी का बनाया कदापि न खाता होगा क्योंकि वह तकलीफें उठा चुका है, अः उसे धोखा देना जरा टेढ़ी खीर है, मगर फिर भी तुम देखोगी कि इस अंगूठी के बदौलत मैं उसे कैसा धोखा देती हूं और किस तरह अपने पंजे में फंसाती हूं।

माया०। खैर जो मुनासिब समझ कर, मगर इसमें तो कोई शक नहीं है कि रामदीन छोकरे की सूरत बन और घोड़ी पर सवार होकर तू दीवान साहब के पास जायगी!

लीला०। जाऊंगी और जरूर जाऊंगी, नहीं तो इस अंगूठी और चीठी के मिलने का फायदा ही क्या हुआ! बस तुम्हें किसी अच्छे ठिकाने पर रख देने भर की देर है।

माया०। मगर मैं एक बात और कहा चाहती हूं।

लीला०। वह क्या?

माया०। मैं इस समय बिल्कुल कंगाल हो रही हूं और ऐसे मौके पर रूपै की बड़ी जरूरत है। इसलिए मैं चाहती हूं कि दीवान साहब के पास तुझे न भेज कर खुद ही जाऊं और किसी तरह तिलिस्मी बाग में घुस कर कुछ जवाहिरात और सोना जहां तक ला सकूं ले आऊं, क्योंकि मुझे वहां के खजाने का हाल मालूम है और यह काम तेरे किये नहीं हो सकता। जब मुझे रूपै की मदद मिल जायगी तब कुछ सिपाहियों का भी बन्दोबस्त कर सकूंगी और........

लीला०। यह सब कुछ ठीक है मगर मैं तुम्हें दीवान साहब के पास कदापि न जाने दूंगी। कौन ठिकाना कहीं तुम गिरफ्तार हो जाओ तो फिर मेरे किए कुछ भी न हो सकेगा। बाकी रही रुपये पैसे वाली बात, सो इसके लिए तरद्दुद करना तो वृथा है, क्या यह नहीं हो सकता कि जब मैं दीवान साहब के पास जाऊं और सवारी इत्यादि तथा खाने पीने की चीजें लूं तो एक रथ पर थोड़ी सी अशर्फियां और कुछ जवाहिरात भी रख देने के लिए कहूं? क्या वह इस अंगूठी के प्रताप से मेरी बात न मानेगा? और अगर अशर्फियों और जवाहिरात का बन्दोबस्त कर देगा तो क्या मैं उन्हें रास्ते में से गुम नहीं कर सकती? इसे भी जाने दो, अगर तुम पता ठिकाना ठीक ठीक बताओ तो क्या मैं तिलिस्मी बाग में जाकर जवाहिरात और अशर्फियों को नहीं निकाल ला सकती?

माया०। निकाल ला सकती है और दीवान साहब से भी जो कुछ मांगेगी सम्भव है कि बिना कुछ विचारे दे दें, मगर इसमें मुझे दो बातों की कठिनाई मालूम पड़ती है।

लीला० । वह क्या ?

माया० । एक तो दीवान साहब के पास अन्दाज से ज्यादे रुपै अशर्फियों की तहवील नहीं रहती जवाहिरात तो बिल्कुल ही उसके पास नहीं रहता, शायद आज कल गोपालसिंह के हुक्म से रहता हो मगर मुझे उम्मीद नहीं है, अस्तु जो चीज तू उससे मांगेगी वह अगर उसके पास न हुई तो उसे तुझ पर शक करने की जगह मिलेगी और ताज्जुब नहीं कि काम में विघ्न पड़ जाय ।

लीला० । अगर ऐसा है तो जरूर खुटके की बात है, अच्छा दूसरी बात क्या है ?

माया० । दूसरे यह कि तिलिस्मी बाग के खजाने में घुस कर वहां से कुछ निकाल लाना नये आदमी का काम नहीं है । खैर, मैं तुझे रास्ता बता दूंगी फिर जो कुछ करते बने कर लीजियो ।

लीला० । खैर जैसा होगा देखा जायगा, मगर मैं यह राय कभी नहीं दे सकती कि तुम दीवान साहब के सामने या ख़ास बाग में जाओ, ज्यादे नहीं तो थोड़ा बहुत मैं ले ही आऊंगी ।

माया० । अच्छा यह बता कि मुझे कहां छोड़ जायगी और तेरे जाने बाद मैं क्या करूंगी ?

लीला० । इतनी जल्दी में कोई अच्छी जगह तो मिलती नहीं, किसी पहाड़ की कन्दरा में दो दिन गुजारा करो और चुपचाप बैठी रहो, इसी बीच में मैं अपना काम करके लौट आऊंगी । मुझे जमानिया जाने में अगर देर हो जायगी तो काम चौपट हो जायगा । ताज्जुब नहीं कि देर हो जाने के कारण गोपालसिंह किसी दूसरे को भेज दें और अंगूठी का भेद खुल जाय ।

इत्तिफाक अजब चीज है । उसने यहां भी एक बेढब सामान खड़ा कर दिया । इत्तिफाक से लीला और मायारानी भी उसी जंगल में जा पहुंचीं जिसमें माधवी और भीमसेन का मिलाप हुआ था और वे लोग अभी तक वहां टिके हुए थे ।

पांचवां बयान

आधी रात का समय था जब लीला और मायारानी उस जंगल में पहुंचीं जिसमें माधवी और भीमसेन टिके हुए थे । जब ये दोनों उसके पास पहुंचीं और लीला को वहां टिके हुए बहुत से आदमियों की आहट मिली तो वह मायारानी को

एक ठिकाने खड़ा करके पता लगाने के लिए उनकी तरफ गई ।

हम ऊपर बयान कर चुके हैं कि सेनापति कुबेरसिंह के साथ थोड़ी सी फौज भी थी—अस्तु लीला को थोड़ी ही कोशिश से मालूम हो गया कि यहां सैकड़ों आदमियों का डेरा पड़ा हुआ है और वे लोग इस ढंग से घने जंगल में आड़ देकर टिके हुए हैं जैसे डाकुओं का गरोह या छिप कर धावा मारने वाले टिकते हैं और हर वक्त होशियार रहते हैं। लीला खूब जानती थी कि राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके साथी या सम्बन्धी अगर किसी काम के लिए कहीं जाते हैं या लड़ाई करते हैं तो छिप कर या आड़ पकड़ कर डेरा नहीं डालते, हां अगर अकेले या ऐयार लोग हों तो शायद ऐसा करें, मगर जब उनके साथ सौ पचास आदमी या कुछ फौज होगी तब कदापि ऐसा न करेंगे, इसलिए उसे गुमान हुआ कि ये लोग जरूर कोई गैर हैं बल्कि ताज्जुब नहीं कि हमारा साथ देने वाले हों, अस्तु बहुत सी बातों को सोच विचार और अपनी ऐयारी पर भरोसा करके लीला माधवी की फौज में घुस गई और वहां बहुत से सिपाहियों को होशियार तथा पहरा देते हुए देखा।

पहिले लिखा जा चुका है कि लीला भेष बदले हुए थी और यह भी दर्शाया गया है कि माधवी और कुबेरसिंह अपनी असली सूरत में सफर करते थे।

लीला को कई सिपाहियों ने देखा और एक ने टोंका कि कौन है?

लीला०। एक मुसाफिर परदेसी औरत।

सिपाही०। यहां क्यों चली आ रही है?

लीला०। अपनी भलाई की आशा से।

सिपाही०। क्या चाहती है?

लीला०। आपके सरदार से मिलना।

सिपाही०। अपना परिचय दे तो सरदार के पास भेजवां दूं।

लीला०। परिचय देने में कोई हर्ज तो नहीं है मगर डरती हूं कि आप लोग भी कहीं उन्हीं में से न हों जिन्होंने मुझे लूट लिया है, यद्यपि अब मैं बिल्कुल खाली हो रही हूं मगर........

इतने में और भी कई सिपाही वहां जुट आये और सभों ने लीला को घेर कर सवाल करना शुरू किया और लीला ने भी गौर करके जान लिया कि ये लोग राजा बीरेन्द्रसिंह के दल वाले नहीं हैं क्योंकि उनके फौजी सिपाही अक्सर वर्दी पोशाक काम में लाते हैं, इसी तरह से जमानिया वाले भी नहीं मालूम हुए क्योंकि उनकी बातचीत और चाल ढाल को लीला खूब पहिचानती थी, अस्तु कुछ और बातचीत होने पर लीला को विश्वास हो गया कि ये लोग उनमें से नहीं

जिनका मुझे डर है।

उन सिपाहियों को भी एक अकेली औरत से डरने की कोई जरूरत न थी इसलिए उन्होंने अपने मालिक का नाम जाहिर कर दिया और लीला को लिये हुए उस जगह जा पहुंचे जहां माधवी और भीमसेन का बिस्तर लगा हुआ था और ये दोनों इस समय भी बैठे बातचीत कर रहे थे। लालटैन जलाया गया और लीला की सूरत अच्छी तरह देखी गयी,लीला ने भी उसी रोशनी में माधवी को पहिचान लिया और खुश होकर बोली, "अहा, आप तो गया की रानी माधवीदेवी हैं !!"

माधवी०। और तू कौन है ?

लीला०। मैं प्रसिद्ध मायारानी की ऐयारा हूं और उन्हीं के साथ यहां तक आई भी हूं। यह दुनिया का कायदा है कि एक से दूसरे को मदद पहुंचती है अस्तु जिस तरह आपको मायारानीसे मदद पहुंच सकती है उसी तरह आप मायारानी की भी मदद कर सकती हैं। वाह वाह, यह समागम तो बहुत ही अच्छा हुआ। अगर आजकल मायारानी मुसीबत के दिन काट रही हैं तो क्या हुआ मगर फिर भी वह तिलिस्म की रानी रह चुकी हैं और जो कुछ वह कर सकती हैं किसी दूसरे से नहीं हो सकता। आप लोगों का मिलकर एक हो जाना बहुत ही मुनासिब होगा और तब आप लोग जो चाहेंगी कर सकेंगी।

माधवी०। (खुश होकर) मायारानी कहां हैं ? उन्हें तो राजा बीरेन्द्रसिंह कैद करके चुनार ले गये थे।

लीला०। जी हां, मगर मैं अभी कह चुकी हूं कि मायारानी आखिर तिलिस्म की रानी हैं इसलिए जो कुछ वह कर सकती हैं किसी दूसरे के किए नहीं हो सकता। राजा बीरेन्द्रसिंह ने उन्हें कैद किया तो क्या हुआ, उनका छूटना कोई मुश्किल न था !!

माधवी०। बेशक बेशक, अच्छा बताओ वह कहां हैं ?

लीला०। यहां से थोड़ी दूर पर खड़ी हैं, किसी सरदार को भेजिये उनका इस्तकबाल करके यहां ले आवे, दो तीन सौ कदम से ज्यादे न चलना पड़ेगा।

माधवी०। मैं खुद उन्हें लेने के लिए चलूंगी।

लीला०। इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है ? अगर आप उनकी इज्जत करेंगी तो वह भी आपके लिए जान तक देना जरूरी समझेंगी।

लीला ने अपनी लच्छेदार बातों में माधवी को खूब उलझाया, यहां तक कि माधवी अपने साथ भीमसेन और कुबेरसिंह तथा कई सिपाहियों को ले कर

मायारानी के पास गई और उसे बड़ी खातिर और इज्जत के साथ अपने डेरे पर ले गई। जल मंगवा कर हाथ मुंह धुलवाया और फिर बातचीत करने लगी।

माधवी०। (मायारानी से) आपको बीरेन्द्रसिंह की कैद से छूट जाने पर मैं मुबारकबाद देती हूं यद्यपि आपके लिए यह कोई बड़ी बात न थी।

माया०। बेशक यह कोई बड़ी बात न थी, इस काम को तो अकेली मेरी सखी या ऐयारा लीला ही ने कर दिखाया। इस समय आपसे मिल कर मैं बहुत खुश हुई और इसमें अब शक करने की कोई जगह न रही कि आप पुनः गया की रानी और मैं जमानिया की मालिक बन जाऊंगी। दुनिया में एक का काम दूसरे से हुआ ही करता है और जब हम आप एक दिल हो जायंगे तो वह कौन सा काम है जिसे नहीं कर सकते! मुझे आपके कैद होने की भी खबर लगी थी और मुझे इस बात का बहुत रंज था कि आपको मेरी छोटी बहिन कमलिनी ने कैदखाने की सूरत दिखाई थी।

माधवी०। इधर तो यह सुनने में आया है कि आपसे और कमलिनी से कोई नाता नहीं है और लक्ष्मीदेवी भी प्रकट हो गई है तथा उसे राजा बीरेन्द्रसिंह चुनार ले गये हैं।

माया०। (मुस्कुरा कर) बेशक ऐसा ही है, मगर जिस जमाने का मैं जिक्र कर रही हूं उस जमाने में वह मेरी ही बहिन कहलाती थी और लक्ष्मीदेवी को राजा बीरेन्द्रसिंह चुनार नहीं ले गये हैं वह तो किशोरी कामिनी कमलिनी लाडिली और कमला के सहित किसी दूसरी ही जगह छिपाई गई है, मगर इसमें भी कोई सन्देह नहीं है कि कल शाम को गोपालसिंह उन सभों को जमानिया की तरफ ले जायेंगे और हमलोग उन्हें गोपालसिंह के सहित रास्ते ही में गिरफ्तार कर लेंगे।

माधवी०। (ताज्जुब से) हां! क्या कल मैं दुष्टा किशोरी की नापाक सूरत देख सकूंगी! उस पर मुझे बड़ा ही रंज है, और कमलिनी ने तो मुझे कैद ही किया था।

माया०। बेशक कल किशोरी और कमलिनी इत्यादि तुम्हारे कब्जे में होंगी और गोपालसिंह भी तुम्हारे काबू में होगा जो जो बीरेन्द्रसिंह और उनके लड़कों की बदौलत तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन हो रहा है?

माधवी०। निःसंदेह वह मेरा और तुम्हारा सब से बड़ा दुश्मन है, तो क्या उसकी गिरफ्तारी का इन्तजाम हो चुका है?

माया०। हां चौदह आना इन्तजाम हो चुका है और दो आना बाकी है

वह भी हो जायगा ।

माधवी० । क्या वन्दोवस्त हुआ है और किस समय तथा किस तरह वे लोग गिरफ्तार किये जांयगे ?

माधवी० । (इधर उधर देख कर) वहुत सी बातें ऐसी हैं जो मैं केवल तुम्हीं से कहूंगी क्योंकि कोई दूसरा उसके सुनने का अधिकारी नहीं है ।

माधवी० । वहुत अच्छा यह कोई वड़ी वात नहीं है ।

इतना कह कर माधवी ने भीमसेन और कुबेरसिंह की तरफ देखा क्योंकि माधवी मायारानी और लीला के सिवाय केवल ये ही दो आदमी वहां मौजूद थे । भीमसेन ने कहा, "हम दोनों यहां से हट जाते हैं, तुम लोग वेधड़क बातें करो मगर (मायारानी से) मेरे एक सवाल का जवाव पहिले मिलना चाहिए ।"

माया० । वह क्या ?

भीम० । आप अभी कह चुकी हैं कि कल किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह गिरफ्तार हो जायंगी मगर मैंने सुना था कि राजा वीरेन्द्रसिंह के लश्कर में पहुंच कर मनोरमा ने किशोरी कामिनी और कमला को जान से मार डाला, अब इस समय कोई और ही वात सुनने में आ रही है ।

माधवी० । हां यह सवाल मैं भी करने वाली थी लेकिन बातों का सिलसिला दूसरी तरफ चला गया और मैं पूछना भूल गई ।

माया० । हां यह वात अच्छी तरह सुनने में आई थी और मुझे विश्वास भी हो गया था कि वास्तव में ऐसा ही हुआ है मगर आज यह बात खुद गोपालसिंह की लिखावट से खुल गई कि वास्तव में वे तीनों मारी नहीं गईं, परन्तु मुझे यह मालूम नहीं है कि इस विषय में किस तरह की चालाकी खेली गयी या मनोरमा ने जिन्हें मारा वह कौन थीं ।

भीम० । तो निश्चय है कि वे तीनों मारी नहीं गईं ?

माया० । वेशक वे तीनों जीती हैं। (गोपालसिंह वाली चीठी दिखा कर) देखो एक ही सवूत में मैं तुम्हारी दिलजमई कर देती हूं, इसे पढ़ो और माधवी रानी को सुनाओ । (माधवी से) देखो वहिन, तुम इस बात का ख्याल न करना कि मैं तुम्हें आप कह कर सम्बोधन नहीं करती, मेरा तुम्हारा अब दोस्ती और मुहब्बत का नाता हो चुका इसलिए अब इन बातों का ख्याल नहीं हो सकता ।

माधवी० । मैं भी यही पसन्द करती हूं और इस बारे में अपने लिए भी तुमसे पहिले ही माफी मांग लेती हूं ।

भीमसेन ने पत्र पढ़ा और माधवी को सुनाया।

भीम०। इस पत्र से तो बड़ा काम निकल सकता है! यह कब का लिखा है और तुम्हारे हाथ क्योंकर लगा तथा जिस अंगूठी का इसमें जिक्र किया गया है वह कहां है ?

माया०। (अंगूठी दिखा कर) अंगूठी भी मुझे मिल गई है और यह चीठी आज ही की लिखी और आज ही मेरे हाथ लगी है। अभी इसकी कार्रवाई बिल्कुल बाकी है।

भीम०। अफसोस इतना ही है कि मेरे ऐयारों मे से कोई भी रामदीन को नहीं जानता........

माया०। क्या हर्ज है, यह मेरी ऐयारा लीला बखूबी उसकी तरह बन कर काम निकाल सकती है, तुम्हारे ऐयार इसकी मदद पर मुस्तैद रह सकते हैं, और यह जब रामदीन की सूरत बनेगी तो इसे अच्छी तरह देख भी सकते हैं।

भीम०। (चीठी मायारानी के हाथ में देकर) अच्छा अब तुम दोनों को जो कुछ गुप्त बातें करनी हैं कर लो पीछे मैं इस विषय में कुछ कहूं सुनूंगा।

इतना कह कर भीमसेन उठ खड़ा हुआ और कुबेरसिंह को साथ लिए हुए कुछ दूर चला गया और मौका समझ कर लीला भी कुछ पीछे हट गई।

माया०। जो कुछ तुम पीछे कहो सुनोगी उसे मैं पहिले ही निपटा देना चाहती हूं। सच पूछो तो मेरी और तुम्हारी अवस्था बराबर है, तुम भी विधवा हो और मैं भी विधवा हूं, क्योंकि मैं वास्तव में गोपालसिंह की स्त्री नहीं हूं और यह बात सभों को मालूम हो गई है बल्कि तुम भी सुन ही चुकी होगी।

माधवी०। हां मैं सुन चुकी हूं, और मैंने यह भी सुना था कि तुमने राजा गोपालसिंह को वर्षों तक कैद कर रक्खा था पर आखिर कमलिनी ने उन्हें छुड़ा दिया। तो तुमने ऐसा क्यों किया और उन्हें मार ही क्यों न डाला ?

माया०। यही मुझसे भूल हो गई। तिलिस्म के दो चार भेद जो मुझे मालूम न थे जानने के लिए मैंने ऐसा किया था, मुझे उम्मीद थी कि वह कैद की तकलीफ उठा कर बता देगा। तब उसे मार डालती तो आज यह दिन देखना नसीब न होता, मैं तिलिस्म की बदौलत अकेली ही राजा बीरेन्द्रसिंह ऐसे दस को जहन्नुम में पहुंचा देने की ताकत रखती थी। अब भी अगर गोपालसिंह को मैं पकड़ पाऊं और मार सकूं तो पुनः तिलिस्म की रानी होने से मुझे कोई भी नहीं रोक सकता और तब मैं बात की बात में तुम्हें राजगृही और गया की रानी बना सकती हूं।

मगर उस बात का सिलसिला तो टूटा ही जाता है। तुम भी विधवा हो और मैं भी विधवा हूं, तुम भी नौजवान और आशिक मिजाज हो तथा मैं भी नौजवान और आशिक मिजाज हूं, तुम भी इन्द्रजीतसिंह के फेर में पड़ कर दुख भोग रही हो और मैं भी आनन्दसिंह की मुहब्बत में इस दशा तक आ पहुंची हूं, अब भी मेरी और तुम्हारी किस्मतों का फैसला एक साथ और एक ही ठिकाने हो सकता है क्योंकि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी आज कल जमानिया ही में तिलिस्म तोड़ रहे हैं, अगर आज हम तुम एक होकर काम करें तो बहुत जल्द दुश्मनों का नामोनिशान मिटा कर अपने प्यारों के साथ दुनिया का सुख भोग सकती हैं, मगर मुझे इस समय तुम्हारे दो कंटक दिखाई देते हैं।

माधवी० । हां एक तो मेरा भाई भीमसेन, और दूसरा मेरा सेनापति कुबेरसिंह, मगर तुम इन दोनों का कुछ भी खयाल न करो, इस समय हमें इन दोनों को मिला जुला कर काम ले लेना चाहिए फिर तुम जैसा कहोगी वैसा किया जायगा।

माया० । शाबाश शाबाश ! यही मालूम करने के लिए मैं तुमसे निराले में बातचीत किया चाहती थी क्योंकि ये बातें ऐसी हैं कि सिवाय मेरे और तुम्हारे किसी तीसरे का न जानना ही अच्छा है।

माधवी० । निःसन्देह ऐसा ही है, हम दोनों के दिल की बातें हवा को भी न मालूम होनी चाहिए। आज बड़ी खुशी का दिन है कि हम दोनों जो एक ही तरह का दिल रखती हैं यहां पर आ मिली हैं, अब हम दोनों को हमेशे मेल मिलाप रखने और समय पड़ने पर एक दूसरे की मदद करने के लिए कसम खाकर मजबूत हो जाना चाहिए।

पाठक, मायारानी और माधवी दोनों ही अपना मतलब देख रही हैं। दोनों ही धूर्त, दोनों ही खुदगरज, और दोनों ही विश्वासघातिनी हैं। इस समय कुछ देर तक दोनों में घुलघुल कर बातें होती रहीं, वादे भी हुए और कसमें भी खाई गईं। इसके बाद फिर भीमसेन और कुबेरसिंह बुलाए गए तथा लीला भी आ गई और आपुस में बातें होने लगीं।

भीम० । अच्छा तो अब क्या निश्चय किया जाता है ? राजा गोपालसिंह की चीठी लेकर जमानिया कौन जायगा और क्या होगा ?

माया० । पहिले तुम अपनी राय दो।

भीम० । मेरी राय तो यह है कि लीला रामदीन की सूरत बन दीवान साहब के पास जाय और वहां से उनकी फरमाइश लेकर 'पिपलिया घाटी' पहुंचे और

हम लोग भी अपनी फौज लेकर वहीं मौजूद रहें। लीला को यह करना चाहि कि उन दो सौ सवारों को जिन्हें जमानिया से अपने साथ लायेगी किसी बहाने पीछे टिकवा दे जिसमें गोपालसिंह के पहुंचते ही हम लोग बात की बात में उ सभों को गिरफ्तार कर लें या मार डालें।

माया०। मगर यह बात मुझे नापसन्द है क्योंकि एक तो उसके लिखे अ सार फौज 'पिपलिया घाटी' तक जरूर जायगी, अगर मान लिया जाय कि नक रामदीन के हुक्म से फौज पीछे रह भी जाय और तुम लोग उन सभों को गि फ्तार कर लो तो भी हमारा काम न निकल सकेगा क्योंकि राजा गोपालसिंह पकड़े या मारे जाने की खबर दीवान को तुरत लग जायगी और वह अपनी फौ को दुरुस्त करके लड़ने के लिए तैयार हो जायगा और हम लोगों को जमानि के अन्दर कभी घुसने न देगा। कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी जमानि ही में तिलिस्म के अन्दर हैं, वे दोनों भी लड़ने भिड़ने के लिए तैयार हो जा और उस समय हम लोग फिर लंडूरे ही रह जांयगे, इतना बखेड़ा करने का कु फायदा न निकलेगा, न तो जमानिया की गद्दी मिलेगी और न गया का राज्य

भीम०। तब आप ही कहिए कि क्या करना चाहिये।

माया०। (कुबेर से) इस वक्त आपके पास कितनी फौज है?

कुबेर०। पांच सौ।

माया०। (माधवी से) ऐसा करना चाहिए कि हम तुम भीमसेन और कुबे सिंह चारो आदमी जमानिया वाले तिलिस्मी बाग के अन्दर जा घुसें और इ पांच सौ आदमियों को इस तरह तिलिस्मी बाग के अन्दर ले चलें और छिपा र कि किसी को कानोंकान खबर न हो, क्योंकि उस बाग में इतने आदमियों को छि रखने की जगह है और वह बाग भी इस लायक है कि अगर मैं उसके अन्दर मौ रहूं तो चाहे कैसा ही जबर्दस्त दुश्मन हो और चाहे कितनी ही ज्यादे फौज ले क्यों न चढ़ आवे मगर बाग के अन्दर किसी की नजर तक पहुंचने न दूं।

माधवी०। बेशक वह बाग ऐसा ही सुनने में आया है और तुम तो वहां रानी ही ठहरीं तथा तुम्हें वहां के सब भेद मालूम भी हैं, अच्छा तब?

माया०। जब किशोरी और कमलिनी इत्यादि को लेकर गोपालसिंह जमा निया जायगा तो निःसन्देह सभों को लिए हुए उसी बाग में पहुंचेगा, बस उ समय हम लोग जो छिपे हुए रहेंगे निकल आवेंगे और बात की बात में सभों मार लेंगे। ऐसा होने से जमानिया में दखल भी बना रहेगा और इन्द्रजीत

तथा आनन्दसिंह भी कब्जे में आ जायंगे।

माधवी०। (खुश होकर) बात तो बहुत ठीक है मगर हमलोग इतने आदमियों को लेकर चुपचाप उस बाग के अन्दर किस तरह पहुंच सकते हैं।

माया०। इसका बन्दोबस्त इस तरह हो सकता है कि हम तुम भीमसेन और कुवेरसिंह एक साथ ही भेष बदल कर लीला के साथ जमानिया जांय और लीला दीवान साहब से कहे कि गोपालसिंह ने इन सभों अर्थात् हम लोगों को खास बाग के अन्दर पहुंचा देने का हुक्म दिया है। बस इतना कह कर हम लोगों को उस बाग के अन्दर पहुंचा दे क्योंकि दीवान इस नकली रामदीन की बात अंगूठी की बरकत से टाल न सकेगा और रामदीन पहिले भी खास बाग के अन्दर आता जाता था यह बात दीवान जानता है। जब हमलोग उस बाग के अन्दर जा पहुंचेंगे तो एक गुप्त रास्ते से कुल फौज को बाग के अन्दर ले लेंगे। इन फौजी सिपाहियों को उस सुरंग के मुहाने का पता बता दिया जायगा जिसकी राह से हम सभों को खास बाग के अन्दर पहुंचावेंगे।

माधवी०। यह बात तो तुमने बहुत ही अच्छी सोची!

भीम०। इससे बढ़कर और कोई तरकीब फतह पाने के लिए हो ही नहीं सकती!

कुवेर०। और ऐसा करने में कोई टण्टा भी नहीं है।

लीला०। बस अब इसी राय को पक्की रखिए।

इसके बाद फिर सभों में बातचीत और राय होती रही यहां तक कि सवेरा हो गया। मायारानी माधवी भीमसेन और कुवेरसिंह ने सूरतें बदल लीं और लीला भी रामदीन बन बैठी। भीमसेन के चारों ऐयारों को सुरंग का पता ठिकाना अच्छी तरह बता दिया गया और कह दिया गया कि उसी ठिकाने सुरंग के मुहाने पर फौजी सिपाहियोंको लेकर इन्तजार करना, इसके बाद मायारानी माधवी भीमसेन और कुवेरसिंह और लीलाने घोड़ोंपर सवार होकर जमानियाका रास्ता लिया।

छठवां बयान

दिन दोपहर से कुछ ज्यादे ढल चुका था जब जमानिया में दीवान साहब को रामदीन के आने की इत्तिला मिली। दीवान साहब ने रामदीन को अपने पास बुलाया और उसने दीवान साहब के सामने पहुंच कर गोपालसिंह की चीठी उनके हाथ में दी तथा जब वे चीठी पढ़ चुके तो अंगूठी भी दिखाई। दीवान साहब ने नकली रामदीन से कहा, "महाराज का हुक्म हम लोगों के सर आंखों पर, तुम

अंगूठी को पहिन लो और हमलोगों को अपने हुक्म का पाबन्द समझो। सवा
और सवारों का इन्तजाम दो घड़ी के अन्दर हो जायगा। तुम यहां रहोगे
सवारों के साथ जाओगे ?"

रामदीन ने कहा, "मैं सवारों के साथ ही राजा साहब के पास जाऊंगा म
इस समय चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुंचा कर उनके खाने
का इन्तजाम कर देना है जैसा कि हमारे राजा साहब का हुक्म है।"

दीवान०। (ताज्जुब से) खास बाग के अन्दर ?

रामदीन०। जी हां।

दीवान०। और वे चारो आदमी हैं कहां पर ?

रामदीन०। उन्हें मैं बाहर छोड़ आया हूं।

दीवान०। (कुछ सोच कर) खैर जो राजा साहब ने हुक्म दिया हो या
तुम्हारे जी में आवे करो, अब हम लोगों को तो रोकने टोकने का अधिकार
नहीं रहा।

रामदीन सलाम करके उठ खड़ा हुआ और अपने चारों साथियों को ले
तिलिस्मी बाग के अन्दर चला गया जहां इस समय बिल्कुल ही सन्नाटा था। अं
के खयाल से उसे किसी ने भी नहीं रोका और मायारानी बेखटके अपने ठि
पहुंच गई तथा लुकने छिपने और दर्वाजों को बन्द करने लगी।

अब हम रामदीन के साथ राजा गोपालसिंह की तरफ रवाना होते हैं
देखते हैं कि बनी बनाई बात किस तरह चौपट होती है।

संध्या होने से पहिले खाने पीने का सामान, चार रथ और दो सौ सवा
को लेकर नकली रामदीन पिपलिया घाटी की तरफ रवाना हुआ और दूसरे
दोपहर के बाद वहां पहुंचा।

आज ही संध्या होने के पहिले राजा गोपालसिंह यहां पहुंचने वाले थे
बात रामदीन की जुबानी सभों को मालूम हो चुकी थी और सभी आदमी
आने का इन्तजार कर रहे थे।

संध्या हो गई, चिराग जल गया, पहर रात गई, दोपहर रात गुजरी, आखि
तमाम रात बीत गई, मगर राजा गोपालसिंह न आये, इसलिए नकली राम
के ताज्जुब का तो कहना ही क्या ? उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा
लगीं, मगर इसके अतिरिक्त जितने फौजी सवार तथा लोग साथ आये थे उन
को भी बहुत ताज्जुब हुआ और वे घड़ी घड़ी राजा साहब के आने का सबब

पूछने लगे, मगर रामदीन क्या जवाब देता ? उसे इन बातों की खबर ही क्या थी !

दूसरे दिन संध्या के समय राजा गोपालसिंह घोड़े पर सवार वहां आ पहुंचे मगर अकेले थे, साइस तक साथ में न था। सिपाहियाना ठाठ से बेशकीमत कपड़ों के ऊपर तिलिस्मी कवच खंजर और ढाल तलवार लगाये बहुत ही सुन्दर तथा रोआबदार मालूम होते थे। सभों ने झुक कर सलाम किया और नकली रामदीन ने आगे बढ़ कर घोड़े की लगाम थाम ली तथा उसकी गर्दन पर दो चार थपकी देकर कहा, "आश्चर्य है कि आपके आने में पूरे आठ पहर की देर हो गई और फिर भी अकेले ही हैं !"

यह सुन कर राजा साहबने कई पल तक रामदीन का मुंह देखा और तब कहा, "हां किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी वगैरह ने हमारे साथ आने से इनकार किया इसलिए हम अकेले ही आये हैं और हमारे जाने में रात भर की देर है। इस समय हम किसी काम को जाते हैं सवेरे यहां आयेंगे, तब तक तुम सभों को इस घाटी में टिके रहना होगा !"

रामदीन०। घोड़ों का दाना तो सिर्फ एक ही दिन का आया था, और सवार लोग भी........

गोपाल०। खैर क्या हर्ज है, घोड़े चराई पर गुजारा कर लेंगे और सवार लोग रात भर फांका करेंगे।

इतना कह कर राजा गोपालसिंह ने घोड़े की बाग मोड़ी और जिधर से आये थे उसी तरफ तेजी के साथ रवाना हो गये। रामदीन चुपचाप ज्यों का त्यों खड़ा उनकी तरफ देखता ही रह गया और जब वे नजरों की ओट हो गये तब उसने सभों को राजा साहब का हुक्म सुनाया और इसके बाद अपने बिछावन पर जाकर सोचने लगा—

गोपालसिंह की बातें कुछ समझ में नहीं आतीं और न उनके इरादे का ही पता लगता है ! लक्ष्मीदेवी और कमलिनी वगैरह को न मालूम क्यों छोड़ आये और जब उन्होंने इनके साथ आने से इनकार किया तो इन्होंने मान क्यों लिया ? क्या अब लक्ष्मीदेवी का और इनका साथ न होगा ? अगर ये अकेले जमानिया गए तो क्या केवल इन्हीं के साथ वह सलूक किया जायगा जो हम सोच चुके हैं ? मगर कमलिनी वगैरह का बचे रह जाना तो अच्छा नहीं होगा। लेकिन फिर क्या किया जाय लाचारी है, हां एक बात का इन्तजाम तो कुछ किया ही नहीं गया और न पहिले इस बात का विचार ही हुआ। जमानिया पहुंचने पर जब दीवान साहब की

जुबानी गोपालसिंह को यह मालूम होगा कि रामदीन ने चार आदमियों को बाग के अन्दर पहुंचाया है तब वह क्या सोचेंगे और पूछने पर मुझसे क्या पावेंगे ? कुछ भी नहीं । इस बात का जवाब देना मेरे लिए कठिन हो जायगा तब फिर खास बाग पहुंचने के पहिले ही मेरा भाग जाना उचित होगा ? बड़ी भूल हो गई, यह बात पहिले न सोच ली ! दीवान साहब को बिना कुछ हीं उन सभों को खास बाग में पहुंचा देना मुनासिब होता । मगर ऐसा करने भी तो काम नहीं चलता । अगर दीवान साहब को नहीं तो खास बाग के दारों को तो मालूम ही हो जाता कि रामदीन चार आदमियों को बाग के छोड़ गया है और उन्हीं की जुबानी यह बात राजा साहब को भी मालू जाती । बात एक ही थी, सबसे अच्छा तो तब होता जब वे लोग किसो गुप्त से बाग के अन्दर जाते, मगर यह असम्भव था क्योंकि जरूर भीतर से सभी गोपालसिंह ने बन्द कर रक्खे होंगे । तब क्या करना चाहिये ? हां भाग ही सबसे अच्छा होगा । मगर मायारानी को भी तो इस बात की खबर कर चाहिए । अच्छा तब जमानिया होकर और मायारानी को कह सुन कर चाहिए । नहीं अब तो यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि मायारानी फौजी हियों को बाग के अन्दर करके साथियों समेत कहीं छिप गई होंगी और मैं बाग के गुप्त भेदों को न जानने के कारण इस लायक नहीं हूं कि मायारानी खोज निकालूं और अपने दिल का हाल उनसे कहूं या उन्हीं के साथ छिप रहूं । ओफ ! वह तो मजे में अपने ठिकाने पहुंच गई मगर मुझे डाल गई । खैर अभी तो नहीं मगर गोपालसिंह को जमानिया की हद में कर जरूर भाग जाना पड़ेगा । फिर जब मायारानी उन्हें मार कर अपना जमा लेंगी तब फिर उनसे मुलाकात होती रहेगी ।

इन्हीं विचारों में लीला (नकली रामदीन) ने तमाम रात आंखों में दी । सवेरा होने के पहिले ही वह जरूरी कामों से छुट्टी पाने के लिए घो सवार होकर दूर चली गई और घण्टे भर बाद लौट आई ।

सातवां बयान

दिन अनुमान दो घड़ी के चढ़ चुका होगा जब राजा गोपालसिंह दो मियों को साथ लिए हुए धीरे धीरे आते दिखाई पड़े । वे दोनों भैरोसिंह

इन्द्रदेव थे और पैदल थे। जब तीनों उस ठिकाने पहुंच गये जहां राजा साह

थ और सवार लोग थे तब राजा साहब ने अपना घोड़ा छोड़ दिया और उस पर भैरोसिंह को सवार होने के लिए कहा तथा और सवारों को भी घोड़ों पर सवार हो जाने के लिए इशारा किया, इसके बाद स्वयं एक रथ पर सवार हो गये और इन्द्रदेव को भी उसी पर अपने साथ बैठा लिया, बाकी तीन रथ खाली ही रह गये। सवारी धीरे धीरे जमानिया की तरफ रवाना हुई और फौजी सवार खूबसूरती के साथ राजा साहब को घेरे हुए धीरे धीरे जैसा कि रथ जा रहा था जाने लगे। भैरोसिंह अपना घोड़ा बढ़ा कर नकली रामदीन के पास चला गया जो उसी पंचकल्यान घोड़ी पर सवार था और उसके साथ साथ जाने लगा। यह बात लीला को बहुत बुरी मालूम हुई क्योंकि वह राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों से बहुत डरती थी। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद वह बोली—

लीला०। (भैरो से) आपने राजा साहब का साथ क्यों छोड़ दिया ?

भैरो०। (हंस कर) तुम्हारा साथ करने के लिये, क्योंकि मैं अपने दोस्त रामदीन को अकेला नहीं छोड़ सकता।

लीला०। और जब मुझे राजा साहब ने अकेले जमानिया भेजा था तब आप कहां डूब गये थे ?

भैरो०। तब भी मैं तुम्हारे साथ था मगर तुम्हारी नजरों से छिपा हुआ था।

लीला०। (डर कर, मगर अपने को सम्हाल कर) परसों तुम कहां थे? कल कहां थे और आज सवेरा होने के पहिले तक कहां गायब थे ? क्यों झूठी बातें बना रहे हो ?

भैरो०। परसों भी कल भी और आज भर भी मैं तुम्हारे साथ ही था मगर तुम्हारी नजरों से छिपा हुआ था, हां जब दो घण्टे रात बाकी थी तब मैंने तुम्हारा साथ छोड़ दिया और राजा साहब से जा मिला। अब मैं फिर तुम्हारे साथ जा रहा हूं क्योंकि राजा साहब का ऐसा ही हुक्म है! (हंस कर) क्योंकि राजा साहब ने सुना है कि तुम्हारा इरादा जमानिया पहुंचने के पहिले ही भाग जाने का है!

लीला०। (अपने उछलते कलेजे को रोक कर) यह उनसे किसने कहा ?

भैरो०। मैंने ?

लीला०। और तुम्हें किसने खबर दी ?

भैरो०। तुम्हारे दिल ने।

लीला०। मानो मेरे दिल के आप भेदिया ठहरे !

भैरो०। बेशक ऐसा ही है। अगर तुम्हें ऐयारी का ढंग पूरा पूरा मालूम

होता तब तुम्हारा दिल मजबूत होता मगर तुम्हारी ऐयारी अभी बिल्कुल कच्ची है। अहा, एक बात तुमसे कहना तो मैं भूल ही गया, जिस रात मायारानी राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर से भाग गई थी उसी रोज सवेरा होने के पहिले ही यह खबर राजा गोपालसिंह को मालूम हो गई।

लीला०। (कांपती हुई और लड़खड़ाती आवाज में) यह तो मुझे भी मालूम है, मगर तुम्हारे इस कहने का मतलब क्या है सो समझ में नहीं आता।

भैरो०। मतलब यही है कि तुम अपनी सूरत साफ करो और मेरे साथ राजा साहब के पास चलो क्योंकि अब असली रामदीन के सामने तुम्हारा रामदीन बने रहना मुनासिब नहीं है।

लीला०। असली रामदीन अब कहां................!

जल्दी में लीला इतना कह तो गई मगर फिर उसने जुबान बन्द कर ली। भैरोसिंह की चलती फिरती बातों ने उसका कलेजा हिला दिया और वह समझ गई कि अब मेरा नसीब मुझे धोखा दिया चाहता है, मेरा भेद खुल गया, कहा अब मेरे कैद होने में ज्यादे देर नहीं है। अब उसके दिल ने भी कहा कि वास्तव में कल ही राजा साहब को तुझ पर शक हो गया था, अगर तू कल ही भाग जाती तो अच्छा था, मगर अब तेरा भागना भी कठिन है। लीला ने कुछ और सोच विचार के भैरोसिंह से कहा, "तुम जरा निराले में चल कर मेरी एक बात सुन लो, बेहतर होगा कि हम दोनों आदमी घोड़ा बढ़ा कर जरा आगे निकल चलें, जो बात कहा चाहता हूं उसे सुन कर तुम बहुत खुश होवोगे।"

भैरो०। न तो मैं तुम्हारी कुछ सुन सकता हूं और न तुम्हें छोड़ सकता हूं, हां एक बात तुम्हें और भी कहे देता हूं जिसे सुन कर तुम्हारे दिल का खुटका निकल जायगा, वह यह है कि जब राजा साहब ने दीवान साहब के नाम की चीठी देकर असली रामदीन को जमानिया भेजा था तो जुबानी कह दिया था कि 'इस चीठी में हमने दो सौ सवार भेजने के लिए लिखा है मगर तुम केवल बीस सवार अपने साथ लाना और जिस दिन हमने मांगा है उसके एक दिन बाद आना।" कहो बहुत सी बातें तुम्हारी समझ में आ गई होंगी?

इतना कह भैरोसिंह ने लीला का हाथ पकड़ लिया और राजा साहब की तरफ चलने के लिए कहा मगर लीला को उधर जाना मंजूर न था इसलिए उसने अपनी घोड़ी को न रोका और झटका देकर अपना हाथ छुड़ाना चाहा मगर ऐसा न कर सकी, भैरोसिंह ने उसे खैंच कर जमीन पर गिरा दिया। उस समय भैरोसिंह

मालूम हुआ कि यह मर्द नहीं औरत है।

भैरोसिंह की यह कार्रवाई देख कर सभों के कान खड़े हो गये। सवारों ने घोड़ा रोक दिया, राजा साहब की सवारी (रथ) खड़ी हो गई, कई सवार अपने घोड़े पर से कूद कर भैरोसिंह के पास चले आये और इन्द्रदेव भी रथ पर से उतर कर उसके पास जा पहुंचे। आज्ञानुसार लीला की मुश्कें बांध ली गईं और पानी मंगा कर उसका चेहरा साफ किया गया और तब लीला को सभों ने पहिचान लिया। लीला राजा गोपालसिंह के पास लाई गई और भैरोसिंह ने सब हाल कहा जिसे सुन राजा साहब हंस पड़े और बोले, "अब इन्द्रदेव जैसा कहें वैसा करो।"

इन्द्रदेव की आज्ञानुसार लीला रस्सियों से जकड़ कर एक खाली रथ पर बैठा दी गई और कई सवार उसकी निगरानी पर मुस्तैद किये गये।

अब सवारी तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुई। दोपहर के बाद जब सवारी जमानिया के पास पहुंची तब इन्द्रदेव ने राजा साहब से धीरे धीरे कुछ कहा और रथ से उतर कर पैदल ही मैदान का रास्ता लिया और देखते देखते न मालूम कहां चले गये। सवारी खास बाग के दर्वाजे पर पहुंची और राजा साहब रथ से उतर कर भैरोसिंह को साथ लिए हुए बाग के अन्दर चले गये।

आठवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह तिलिस्म तोड़ने की धुन में लगे हुए थे। मगर उनके दिल से किशोरी और कमलिनी तथा कामिनी और लाडिली की मुहब्बत एक सायत के लिये भी बाहर नहीं होती थी। जब दोनों कुमारों ने बाग के उत्तर तरफ वाले मकान की खिड़की (छोटे दर्वाजे) में से झांकते हुए राजा गोपालसिंह की जुबानी किशोरी कमलिनी कामिनी और लाडिली का सब हाल सुना और यह भी सुना कि अब वे सब बहुत जल्द जमानिया में लाई जाएंगी, तब बहुत खुश हुए और उन लोगों से जल्द मिलने के लिए तिलिस्म तोड़ने की फिक्र उन्हें बहुत ज्यादे हो गई। जब गोपालसिंह इन्दिरा और इन्द्रदेव बातचीत करके चले गये तब बड़े कुमार ने सर्यू से कहा, "सर्यू, हमलोग अब बहुत जल्द तुम्हें अपने साथ लिए हुए इस तिलिस्म के बाहर होंगे। हम लोगों को तिलिस्म तोड़ने और दौलत पाने का उतना ख्याल नहीं है जितना तिलिस्म से बाहर निकलने का ध्यान है। इस तिलिस्म से हमलोगों को एक किताब मिलने वाली है जिसके लिए हम लोग जरूर उद्योग करेंगे क्योंकि उसी किताब की बदौलत हमलोग चुनारगढ़ का

वह भारी तिलिस्म तोड़ सकेंगे जिसे हमारे पिता ने हमारे लिए छोड़ रक्खा है और जिसका तोड़ना हम दोनों भाइयों को आवश्यक कहा जाता है।"

सर्यू०। मेरे दिल ने उम्मीदों से भर कर उसी समय विश्वास दिया कि तेरा दुर्दैव सदैव के लिए तेरा पीछा छोड़ देगा जब आप दोनों भाइयों के दर्शन थे आप लोगों का परिचय मिला। अब मैं अपना दुःख भूल कर बिल्कुल बेफिक्र रही हूं और सिवाय आपकी आज्ञा मानने के कोई दूसरा खयाल मेरे दिल में नहीं

इन्द्रजीत०। अच्छा तो अब तुम हम लोगों के लिए फल तोड़ो और तब हम लोग इस बाग में घूम कर कोई दर्वाजा ढूंढ़ते हैं। ताज्जुब नहीं कि हम को इस बाग में कई दिन रहना पड़े।

सर्यू०। जो आज्ञा।

इतना कह कर सर्यू फल तोड़ने और नहर के किनारे छाया देख कर जमीन साफ करने के ख्याल में पड़ी और दोनों कुमार बाग में इधर उधर कर दर्वाजा खोजने का उद्योग करने लगे।

पहर भर से ज्यादे देर तक घूमने और पता लगाने के बाद जब कुमार उत्तर तरफ वाली दीवार के नीचे पहुंचे जिधर मकान था तब उन्हें पूरब तरफ के कोने की तरफ हट कर जमीन में एक हौज का निशान मालूम हुआ। उसी के पास दीवार में एक छोटे से दर्वाजे का चिन्ह भी दिखा जिससे निश्चय हो गया कि लोगों का काम इन्हीं दोनों निशानों से चलेगा। इतना सोच कर वे दोनों भाई चले आये जहां सर्यू फल तोड़ और जमीन साफ करके बैठी हुई दोनों भाइयों के आने का इन्तजार कर रही थी। सर्यू ने अच्छे अच्छे और पके हुए फल दोनों भाइयों के लिए तोड़े और जल से धोकर साफ पत्थर की चट्टान पर रक्खे। दोनों भाइयों ने उसे खाकर नहर का जल पिया और इसके बाद सर्यू को भी खाने के लिए कह के उसी ठिकाने चले गए जहां हौज और दर्वाजे का निशान था। हौज में मिट्टी भरी हुई थी जिसे दोनों भाइयों ने खंजर से खोद खोद निकालना शुरू किया और थोड़ी देर में सर्यू भी उनके पास पहुंच कर मिट्टी फेंकने में मदद करने लगी। संध्या हो जाने पर इन सभों ने उस काम से हाथ खेंचा और नहर के किनारे जाकर आराम किया। उस हौज की सफाई में इन लोगों को चार दिन लग गए, पांचवें दिन दोपहर होते होते वह हौज साफ हुआ और मालूम हुआ लगा कि यह वास्तव में एक फौवारा है। वह हौज संगमर्मर का बना हुआ था और फौवारा सोने का। अब दोनों कुमारों ने खञ्जर के सहारे उस हौज की जमीन

पत्थर उखाड़ना शुरू किया और जब दो तीन दिन की मेहनत में सब पत्थर उखड़ गये तब वह फौवारा भी सहज ही में निकल गया और उसके नीचे एक दर्वाजे का निशान दिखाई दिया। दर्वाजे में पल्ला हटाने के लिए कड़ी लगी हुई थी और जिस जगह ताला लगा हुआ था उसके मुंह पर लोहे की एक पतली चादर रक्खी हुई थी जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने हटा दिया और उसी तिलिस्मी ताली से ताला खोला जो पुतली के हाथ में से उन्हें मिली थी।

दर्वाजा हटाने पर नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां दिखाई पड़ीं। आनन्दसिंह तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर रोशनी करते हुए नीचे उतरे और उनके पीछे पीछे इन्द्रजीतसिंह और सर्यू भी गए। नीचे पहुंच कर उन्होंने अपने को एक छोटी सी कोठरी में पाया जिसके बीचोबीच में एक हौज बना हुआ था। उस हौज के चारो तरफ वाली दीवार कई तरह की धातुओं से बनी हुई थी और हौज के बीच में किसी तरह की राख भरी हुई थी। कोठरी की चारो तरफ की दीवारों में से तांबे की बहुत सी तारें आई थीं और वे सब एक साथ होकर उसी हौज के बीच में चली गई थीं। इन्द्रजीतसिंह ने सर्यू से कहा, "जब ये सब तारें काट दी जांयगी तब बाग के चारो तरफ की दीवार करामात से खाली हो जायगी अर्थात् उसमें वह गुण न रहेगा कि उसके छूने से किसी को किसी तरह की तकलीफ हो। इसके बाद हम लोग उस दीवार वाले दर्वाजे को साफ करके रास्ता निकालेंगे और इस बाग से निकल कर किसी दूसरी ही जगह जायेंगे, अस्तु तुम यहां से निकल कर ऊपर चली जाओ तब हम लोग तार काटने में हाथ लगावें।"

इन्द्रजीतसिंह की आज्ञानुसार सर्यू कोठरी से बाहर निकल गई और दोनों कुमारों ने तिलिस्मी खन्जर से शीघ्र ही उन तारों को काट डाला और बाहर निकल आये। दर्वाजा पहिले की तरह बन्द कर दिया और ऊपर से मिट्टी डाल दी फिर नहर के किनारे आकर तीनों आदमी बैठ गए और बातचीत करने लगे।

सर्यू०। अब दीवार छूने में किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती?

इन्द्र०। अभी नहीं, धीरे धीरे दो पहर में उसका गुण जायगा और तब तक हम लोगों को व्यर्थ बैठे रहना पड़ेगा।

आनन्द०। तब तक (सर्यू की तरफ बता कर) इनका बचा हुआ किस्सा सुन लिया जाता तो अच्छा होता।

इन्द्र०। नहीं अब इनका किस्सा पिताजी के सामने सुनेंगे।

सर्यू०। अब तो मैं आपके साथ ही रहूंगी, इसलिए तिलिस्म तोड़ते समय जो

कुछ कार्रवाई आप करेंगे या जो तमाशा दिखाई देगा देखूंगी मगर यदि आज
पहिले का हाल जब से आप इस तिलिस्म में आये हैं सुना देते तो बड़ी कृपा होती
मैं भी समझती कि आपकी बदौलत इस तिलिस्म का पूरा पूरा तमाशा देख लिया
इन्द्र० । अच्छी बात है, (आनन्दसिंह से) तुम इस तिलिस्म का हाल इ
सुना दो।

थोड़ी देर आराम करने तथा जरूरी कामों से छुट्टी पाने के बाद भाई
आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने अपना और तिलिस्म का हाल तथा जिस ढंग से इन्दि
की मुलाकात हुई थी, वह सब सयूं को कह सुनाया, इसके साथ ही साथ तिलि
के बाहर आज कल का जैसा जमाना हो रहा था वह सब भी बयान किया।
सब हाल कहते सुनते रात आधी से कुछ ज्यादा चली गई और उस समय
लोगों ने एक विचित्र तमाशा देखा।

इस बाग के उत्तर तरफ जो सटा हुआ मकान था और जिसमें से राजा गो
सिंह और कुमार में बातचीत हुई थी, हम पहिले लिख आये हैं कि उसमें
की तरफ सात खिड़कियां थीं। इस समय यकायक एक आवाज आने से
कुमारों और सयूं की निगाह उस तरफ चली गई। देखा कि बीच वाली
खिड़की (दर्वाजा) खुली है और उसके अन्दर रोशनी मालूम होती है। इन
को ताज्जुब हुआ और इन्होंने सोचा कि शायद राजा गोपालसिंह आये हैं औ
लोगों से बातचीत करने का इरादा है मगर ऐसा न था, थोड़ी ही देर बाद
अन्दर दो तीन नकाबपोश चलते फिरते दिखाई दिये और इसके बाद एक न
पोश खिड़की में कमन्द अड़ा अड़ा कर नीचे उतरने लगा। पहिले तो दोनों कु
और सयूं को गुमान हुआ कि खिड़की में राजा गोपालसिंह या इन्द्रदेव दिख
या होंगे मगर जब एक नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतरने लगा तब
ख्याल बदल गया और वे सोचने लगे कि यह काम इन्द्रदेव या गोपालसिंह
है बल्कि किसी ऐसे आदमी का है जो इस तिलिस्म का हाल नहीं जानता
गोपालसिंह और इन्द्रदेव तथा इन्दिरा को भी मालूम हुई है कि इस बाग की
छूने या बदन के साथ लगाने लायक नहीं है, तभी तो इन्दिरा अपनी मां
नहीं पहुंच सकी थी और सयूं ने यह बात इन्दिरा से कही होगी।

इन्द्रजीतसिंह ने इसी समय सयूं से पूछा कि इस बाग की दीवार
इन्दिरा को मालूम है ? इसके जवाब में सयूं ने कहा, "जरूर मालूम है,
इन्दिरा से कहा था और इसी सबब से तो वह मेरे पास आज तक न आ

निःसन्देह इन्दिरा ने यह बात राजा गोपालसिंह से कही होगी बल्कि वह खुद जानते होंगे इसी से मैं सोचती हूं कि ये लोग कोई दूसरे ही हैं जो इस भेद को नहीं जानते, मगर अब तो इस दीवार का गुण जाता ही रहा।"

तीनों को ताज्जुब हुआ और तीनों आदमी टकटकी लगा कर उस तरफ देखने लगे। जब वह नकाबपोश कमन्द के सहारे नीचे उतर आया तब दूसरे नकाबपोश ने वह कमन्द ऊपर खैंच ली और उसी कमन्द में एक गठरी बांध कर नीचे लटकाई। दोनों कुमारों और सर्यू को विश्वास हो गया कि इस गठरी में जरूर कोई आदमी है।

जो नकाबपोश नीचे आ चुका था उसने गठरी थाम ली और खोल कर कमन्द खाली कर दी मगर जिस कम्बल में वह गठरी बंधी हुई थी उसे इसी के साथ बांध दिया और ऊपर वाले नकाबपोश ने खैंच लिया। थोड़ी देर बाद दूसरी गठरी लटकाई गई और नीचे वाले नकाबपोश ने पहिले की तरह उसे भी थाम लिया और खोल कर फिर कम्बल कमन्द के साथ बांध दिया।

इसी तरह बारी बारी से सात गठड़ियां नीचे उतारी गईं, इसके बाद वह नकाबपोश जो सबके पहिले नीचे उतरा था उसी कमन्द के सहारे उपर चढ़ गया और खिड़की बन्द हो गई।

नौवां बयान

जिस समय राजा गोपालसिंह खास बाग के दर्वाजे पर पहुंचे उस समय उनके दीवान साहब भी वहां हाजिर थे। नकली रामदीन अर्थात् लीला इनके हवाले कर दी गई। भैरोसिंह के सवाल करने पर उन्होंने कहा कि 'इस लीला ने चार आदमियों को खास बाग के अन्दर पहुंचाया है मगर हम नहीं कह सकते कि वास्तव में वे कौन थे'। अस्तु राजा साहब और भैरोसिंह को यह तो मालूम हो गया कि चार आदमी भी इस बाग के अन्दर घुसे हैं जो हमारे दुश्मन ही होंगे मगर उन्हें उन पांच सौ फौजी सिपाहियों की शायद ही खबर हो जिन्हें मायारानी ने गुप्त रीति से बाग के अन्दर कर लिया था। पहिली दफे जब मायारानी को गोपालसिंह ने फंसाया था तब वह खुले तौर पर बाग में रहती थी मगर अबकी दफे तो वह उस भूल भूलैया बाग में जाकर ऐसा गायब हुई है कि उसका पता लगाना भी कठिन होगा। दीवान साहब से पूछा भी कि अगर हुक्म हो तो बाग में तलाशी ली जाय और उन आदमियों का पता लगाया जाय जिन्हें लीला ने इस बाग में

पहुंचाया है', मगर राजा साहब ने इसके जवाब में सिर हिला कर जाहिर कर दि
कि यह बात उन्हें स्वीकार नहीं है।

कुछ दिन रहते ही राजा गोपालसिंह बाग के दूसरे दर्जे में केवल भैरोसिंह
साथ लेकर गये और बाग के अन्दर चारो तरफ सन्नाटा पाया। इस समय भै
सिंह और राजा गोपालसिंह दोनों ही के हाथ में तिलिस्मी खंजर मौजूद थे।

खास बाग के दूसरे दर्जे में दो कूए थे जिनमें पानी बहुत ज्यादे रहता
यहां तक कि इस बाग के पेड़ पत्तों को सींचने और छिड़काव का काम इन
में से किसी एक कूए ही से चल सकता था मगर सींचने के समय दूर और न
दीक का ख्याल करके या शायद और किसी सबब से बनवाने वाले ने दो बड़े बड़े
कूए बनवाये थे परन्तु ये दोनों कूए भी कारीगरी और ऐयारी से खाली न

भैरोसिंह और गोपालसिंह छिपते और घूमते हुए पूरब तरफ वाले कूए
पहुंचे जिसका घेरा बहुत था और नीचे उतरने तथा चढ़ने के लिए कूए की दी
में लोहे की कड़ियां लगी हुई थीं। भैरोसिंह और गोपालसिंह दोनों आदमी क
के सहारे इस कूए में उतर गये।

किसी ठिकाने छिपी हुए मायारानी इस तमाशे को देख रही थी। गोपाल
और भैरोसिंह को आते देख वह बहुत खुश हुई और उसे निश्चय हो गया कि
हम लोग गोपालसिंह को मार लेंगे। जिस जगह वह बैठी हुई थी वहां पर मा
कुबेरसिंह भीमसेन और ऐयारों के अतिरिक्त बीस आदमी फौजी सिपाहियों
भी मौजूद थे और बाकी फौजी सिपाही तहखानों में छिपाये हुए थे। पहिले
मायारानी ने चाहा कि केवल हम हो लोग बीस सिपाहियों के साथ जाकर गो
सिंह को गिरफ्तार कर लें मगर जब उसे कृष्णाजिन्न वाली बात याद आई और
ख्याल हुआ कि गोपालसिंह के पास वह तिलिस्मी खंजर और कवच जरूर होगा
कि रोहतासगढ़ में उनके पास उस समय मौजूद था जब शेरअली और दारो
साथ हम लोग वहां गये थे, तब उसकी हिम्मत टूट गई और बिना कुल
सिपाहियों को साथ लिए गोपालसिंह के पास जाना उचित न जाना। इसी
में उसके देखते देखते गोपालसिंह कूए के अन्दर चले गये।

इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आने तथा यहां से बाहर जाने वाला दर्वाजा
तरह बन्द होता है इसका हाल उस समय लिखा जा चुका है जब पहिले दफा
बाग में मायारानी के ऊपर आफत आई थी और मायारानी ने सिपाहियों के
हो जाने पर बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया था, अस्तु इस समय भी

ढंग से मायारानी ने बाग का दर्वाजा बन्द कर दिया और इसके बाद कुल सिपाहियों को तहखाने में से निकाल कर माधवी भीमसेन और कुवेरसिंह तथा ऐयारों को साथ लिए उस कूएं पर पहुंची जिसके अन्दर भैरोंसिंह को साथ लिए हुए राजा गोपालसिंह उतर गए थे।

मायारानी ने सोचा था कि आखिर गोपालसिंह उस कूएं के बाहर निकलेंगे ही, उस समय हमलोग उन्हें सहज ही में मार लेंगे बल्कि कूएं से बाहर निकलने की मोहलत ही न देंगे—इत्यादि, मगर जब बहुत देर हो गई और रात हो जाने पर भी गोपालसिंह कूएं के बाहर न निकले तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ। वह खुद कूएं के अन्दर झांक कर देखने लगी और उसी समय चौंक कर माधवी से बोली—

माया०। क्यों बहिन, आज ही तुमने भी देखा था कि इस कूएं में पानी कितना ज्यादा था!

माधवी०। बेशक मैंने देखा था कि बीस हाथ से ज्यादे दूरी पर पानी नहीं है, तो क्या इस समय पानी कम जान पड़ता है?

माया०। कम क्या मैं तो समझती हूं कि इस समय इसमें कुछ भी पानी नहीं है और कूआं सूखा पड़ा है।

माधवी०। (ताज्जुब से) ऐसा नहीं हो सकता। एक पत्थर इसमें फेंक कर देखो।

माया०। आओ तुम ही देखो।

माधवी ने अपने हाथ से ईंट का टुकड़ा कूएं के अन्दर फेंका और उसकी आवाज पर गौर करके बोली—

माधवी०। बेशक इसमें पानी कुछ भी नहीं है केवल कीचड़ मात्र है। तो क्या तुम नहीं जानतीं कि इसके अन्दर पानी के निकास का कोई रास्ता तथा आदमियों के आने जाने के लिए कोई सुरंग या दर्वाजा है या नहीं?

माया०। मुझे एक दफे गोपालसिंह ने कहा था कि इस कूएं के नीचे एक तहखाना है जिसमें तरह तरह के तिलिस्मी हर्बे और ऐयारी के काम की अपूर्व चीजें हैं।

माधवी०। बेशक यही बात ठीक होगी और उन्हीं चीजों में से कुछ लाने के लिये गोपालसिंह गये होंगे।

माया०। शायद ऐसा ही हो!

माधवी०। तो बस इससे बढ़ कर और कोई तर्कीब नहीं हो सकती कि यह कूआं पाट दिया जाय जिसमें गोपालसिंह को फिर दुनिया का मुंह देखना नसीब न हो।

पहुंचाया है', मगर राजा साहब ने इसके जवाव में सिर हिला कर जाहिर कर दि कि यह बात उन्हें स्वीकार नहीं है।

कुछ दिन रहते ही राजा गोपालसिंह बाग के दूसरे दर्जे में केवल भैरोसिंह साथ लेकर गये और बाग के अन्दर चारो तरफ सन्नाटा पाया। इस समय भै सिंह और राजा गोपालसिंह दोनों ही के हाथ में तिलिस्मी खंजर मौजूद थे।

खास बाग के दूसरे दर्जे में दो कूएं थे जिनमें पानी बहुत ज्यादे रहता यहां तक कि इस बाग के पेड़ पत्तों को सींचने और छिड़काव का काम इन में से किसी एक कूएं ही से चल सकता था मगर सींचने के समय दूर और न दीक का ख्याल करके या शायद और किसी सबब से बनवाने वाले ने दो बड़े बड़े कूएं बनवाये थे परन्तु ये दोनों कूएं भी कारीगरी और ऐयारी से खाली न

भैरोसिंह और गोपालसिंह छिपते और घूमते हुए पूरब तरफ वाले कूएं पहुंचे जिसका घेरा बहुत था और नीचे उतरने तथा चढ़ने के लिए कूएं की दी में लोहे की कड़ियां लगी हुई थीं। भैरोसिंह और गोपालसिंह दोनों आदमी क के सहारे इस कूएं में उतर गये।

किसी ठिकाने छिपी हुए मायारानी इस तमाशे को देख रही थी। गोपाल और भैरोसिंह को आते देख वह बहुत खुश हुई और उसे निश्चय हो गया कि हम लोग गोपालसिंह को मार लेंगे। जिस जगह वह बैठी हुई थी वहां पर मा कुबेरसिंह भीमसेन और ऐयारों के अतिरिक्त बीस आदमी फौजी सिपाहियों भी मौजूद थे और बाकी फौजी सिपाही तहखानों में छिपाये हुए थे। पहिले मायारानी ने चाहा कि केवल हम हो लोग बीस सिपाहियों के साथ जाकर गो सिंह को गिरफ्तार कर लें मगर जब उसे कृष्णाजिन्न वाली बात याद आई और ख्याल हुआ कि गोपालसिंह के पास वह तिलिस्मी खंजर और कवच जरूर होगा कि रोहतासगढ़ में उनके पास उस समय मौजूद था जब शेरअली और दारो साथ हम लोग वहां गये थे, तब उसकी हिम्मत टूट गई और बिना कुल सिपाहियों को साथ लिए गोपालसिंह के पास जाना उचित न जाना। इसी में उसके देखते देखते गोपालसिंह कूएं के अन्दर चले गये।

इस तिलिस्मी बाग के अन्दर आने तथा यहां से बाहर जाने वाला दरवाजा तरह बन्द होता है इसका हाल उस समय लिखा जा चुका है जब पहिले दफे बाग में मायारानी के मकर अपना आई थी और मायारानी ने सिपाहियों के हो जाने पर बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया था, अस्तु इस समय भी

ढंग से मायारानी ने बाग का दर्वाजा बन्द कर दिया और इसके बाद कुल सिपाहियों को तहखाने में से निकाल कर माधवी भीमसेन और कुबेरसिंह तथा ऐयारों को साथ लिए उस कूए पर पहुंची जिसके अन्दर भैरोसिंह को साथ लिए हुए राजा गोपालसिंह उतर गए थे।

मायारानी ने सोचा था कि आखिर गोपालसिंह उस कूए के बाहर निकलेंगे ही, उस समय हमलोग उन्हें सहज ही में मार लेंगे बल्कि कूए से बाहर निकलने की मोहलत ही न देंगे—इत्यादि, मगर जब बहुत देर हो गई और रात हो जाने पर भी गोपालसिंह कूए के बाहर न निकले तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ। वह खुद कूए के अन्दर झांक कर देखने लगी और उसी समय चौंक कर माधवी से बोली—

माया०। क्यों बहिन, आज ही तुमने भी देखा था कि इस कूए में पानी कितना ज्यादा था!

माधवी०। बेशक मैंने देखा था कि बीस हाथ से ज्यादे दूरी पर पानी नहीं है, तो क्या इस समय पानी कम जान पड़ता है?

माया०। कम क्या मैं तो समझती हूं कि इस समय इसमें कुछ भी पानी नहीं है और कूआं सूखा पड़ा है।

माधवी०। (ताज्जुब से) ऐसा नहीं हो सकता। एक पत्थर इसमें फेंक कर देखो।

माया०। आओ तुम ही देखो।

माधवी न अपने हाथ से ईंट का टुकड़ा कूए के अन्दर फेंका और उसकी आवाज पर गौर करके बोली—

माधवी०। बेशक इसमें पानी कुछ भी नहीं है केवल कीचड़ मात्र है। तो क्या तुम नहीं जानतीं कि इसके अन्दर पानी के निकास का कोई रास्ता तथा आदमियों के आने जाने के लिए कोई सुरंग या दर्वाजा है या नहीं?

माया०। मुझे एक दफे गोपालसिंह ने कहा था कि इस कूएं के नीचे एक तहखाना है जिसमें तरह तरह के तिलिस्मी हर्बे और ऐयारी के काम की अपूर्व चीजें हैं।

माधवी०। बेशक यही बात ठीक होगी और उन्हीं चीजों में से कुछ लाने के लिये गोपालसिंह गये होंगे।

माया०। शायद ऐसा ही हो!

माधवी०। तो बस इससे बढ़ कर और कोई तर्कीब नहीं हो सकती कि यह कूआं पाट दिया जाय जिसमें गोपालसिंह को फिर दुनिया का मुंह देखना नसीब न हो।

मायाο। निःसन्देह यह बहुत अच्छी राय है अस्तु जहां तक हो सके इसे ही देना चाहिये।

इस समय कुवेरसिंह की फौज टिड्डियों की तरह इस बाग में सब तरफ हुई हुक्म का इन्तजार कर रही थी। माधवी ने अपनी राय भीमसेन और कुं सिंह से कही और उनकी आज्ञानुसार फौजी आदमियों ने जमीन खोद कर निकालने और कूआं पाटने में हाथ लगा दिया।

पहर रात जाते तक कूआं वखूवी पट गया और उस समय मायारानी के में यह बात पैदा हुई कि अब मुझे गोपालसिंह का कुछ भी डर न रहा।

फौजी सिपाहियों को खुले मैदान बाग में पड़े रहने की आज्ञा देकर भी कुवेरसिंह और माधवी तथा ऐयारों को साथ लिए हुए मायारानी अपने उस कमरे की छत पर बेफिक्री और खुशी के साथ चली गई जिसमें आज के कुछ पहले मालिकाना ढंग से रहती थी।

दसवां बयान

रात अनुमान दो पहर के जा चुकी है। खास बाग के दूसरे दर्जे में दीव खाने की छत पर कुवेरसिंह भीमसेन और उसके चारो ऐयार तथा तथा माधवी साथ बैठी हुई मायारानी बड़ी प्रसन्नता से बात कर रही है। चांदनी खूब छि हुई है और बाग की हर एक चीज जहां तक निगाह बिना ठोकर खाये जा स है साफ दिखाई दे रही है। बात चीत का विषय अब यह था कि 'राजा गो सिंह से तो छुट्टी मिल गई, अब राज्य तथा राजकर्मचारियों के लिये क्या प्र करना चाहिए'?

जिस छत पर ये लोग बैठे हुए थे उसके दाहिनी तरफ वाली पट्टी में सुन्दर इमारत और उसके पीछे ऊंची दीवार के बाद तिलिस्मी बाग का ती दर्जा पड़ता था। इस समय मायारानी का मुंह ठीक उसी इमारत और दीवार तरफ था और उस तरफ की चांदनी दर्वाजों के अन्दर घुस कर बड़ी बहार दि रही थी। बात करते करते मायारानी चौंकी और उस तरफ हाथ का इश करके बोली—"हैं! उस छत पर कौन जा पहुंचा है?"

माधवीο। हां एक आदमी हाथ में नंगी तलवार लेकर टहल तो रहा है।

भीमο। चेहरे पर नकाव डाले हुए है।

कुबेरο। हमारे फौजी सिपाहियों में से शायद कोई ऊपर चला गया हो मगर उन्हें बिना हुक्म ऐसा करना नहीं चाहिये!

माया० । नहीं नहीं, उस मकान में सिवा मेरे और कोई नहीं जा सकता ।

माधवी० । तो फिर वहां गया कौन ?

माया० । यही तो ताज्जुब है ! देखिए एक और भी आ पहुंचा, यह तीसरा भी आया, मामला क्या है ?

अजायब० । कहीं राजा गोपालसिंह कूए में घुस कर वहां न जा पहुंचे हों ! मगर वे तो केवल दो ही आदमी थे !!

माया० । और ये तीन हैं ! (कुछ रुक कर) लीजिये अब पांच हो गये ।

मायारानी और उसके संगी साथियों के देखते देखते उस छत पर पचीस आदमी हो गये । उन सभों ही के हाथों में नंगी तलवारें थीं । जिस छत पर वे सब थे वहां पर से ऊपर मायारानी के पास तक आने में यद्यपि कई तरह की रुकावटें थीं मगर ऐयारों के लिए यह काई मुश्किल बात न थी इसलिये माया-रानी के पक्षवालों को भय हुआ और उन्होंने चाहा कि अपने फौजी आदमियों में से कुछ को ऊपर बुला लें और ऐसा करने के लिये अजायबसिंह को कहा गया ।

अजायबसिंह फौजी सिपाहियों को लाने के लिए चला गया मगर मकान के नीचे न जा सका और तुरत लौट आकर बोला, "जाने का हर दरवाजा वन्द है, कोई तर्कीब मायारानी करें तो शायद वहां तक पहुंचने की नौबत आवे ?"

अजायबसिंह की इस बात ने सभों को चौंका दिया और साथ ही इसके सभों को अपनी अपनी जान की फिक्र पड़ गई । मायारानी के दिलायें हुए भरोसे से जो कुछ उम्मीद की जड़ लोगों के दिलों में जमी थी वह हिल गई और अब अपने किये पर पछताने की नौवत आई; मगर मायारानी अब भी बात बनाने से न चूकी, यह कहती हुई अपनी जगह से उठी कि 'कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्द-सिंह इस तिलिस्म को तोड़ रहे हैं इसलिए ताज्जुब नहीं कि ये सब बातें कुछ उन्हीं से सम्बन्ध रखती हों ।'

मायारानी स्वयं नीचे उतरी मगर जा न सकी और अजायबसिंह की तरह लाचार होकर वैरंग लौट आई । उस समय उसके दिल में भी तरह तरह के खुटके पैदा हुए और वह ताज्जुब की निगाह से उन लोगों की तरफ देखने लगी जो उसके मुकाबले में एकाएक आकर अब गिनती में पचीस हो गये थे ।

थोड़ी देर बाद वे ऊपर से कूदते फांदते मायारानी की तरफ आते हुए दिखाई दिए । उस समय मायारानी आर उसके संगी साथी सभी उठ खड़े हुए और अपनी अपनी जान बचाने की नौबत से तलवारें खैंच खैंच मुस्तैद हो गये ।

बात की बात में वे पचीसों आदमी उस छत पर चले आये जिस पर माया-रानी थी, मगर मायारानी या उसके साथियों से किसी ने कुछ भी न कहा बल्कि उनकी तरफ आंख उठा कर देखा भी नहीं और मस्तानी चाल से चलते हुए छत के नीचे उतर गये। इन लोगों ने भी यह सोच कर कि वे लोग गिनती में हम से ज्यादे हैं रोक टोक न किया मगर इस बात का ख्याल जरूर रहा कि नीचे जाने के रास्ते तो सब बन्द हैं खुद मायारानी भी न जा सकी और लौट आई, इन लोगों को भी निःसन्देह लौट आना पड़ेगा, मगर थोड़ी देर में यह गुमान जाता रहा जब कि पचीसों नीचे उतर कर बाग के बीच में चलते हुए दिखाई दिये।

माधवी ने समझा कि हमारे फौजी सिपाही उन लोगों को जरूर टोकेंगे और वास्तव में बात ऐसी ही थी। उन पचीसों को बाग में देख फौजी सिपाहियों में खलबली मच गई और बहुतों ने उठ कर उन लोगों को रोकना चाहा मगर वे लोग देखते ही देखते पेड़ों की झुरमुट में घुस कर ऐसा गायब हुए कि किसी का पता न लगा और सब लोग आश्चर्य से देखते रह गये। उस समय माधवी ने मायारानी से कहा, "बहिन यहां तो मामला बेढब नजर आता है!"

माया०। कुछ समझ में नहीं आता कि ये लोग कौन थे, यहां क्यों आये और हमलोगों को बिना रोके टोके इस तरह क्यों और कहां गायब हो गये!

माधवी०। यह तो ठीक ही है मगर मैं पूछती हूं कि आप तिलिस्म की रानी कहला कर भी इस बाग का हाल क्या जानती हैं? मैं तो समझती हूं कि कुछ भी नहीं जानतीं! खास अपने कमरे का मामूली दर्वाजा भी आपसे नहीं खुलता और हमलोगों की जान मुफ्त में जाया चाहती है!!

भीम०। अब आपकी कोई कार्रवाई हमलोगों को भरोसा नहीं दिला सकती!

माया०। इस समय मैं मजबूर हो रही हूं इसलिए टेढ़ी सीधी जो जी में आवे सुनाओ लेकिन अगर इस मकान के नीचे उतरने की नौबत आयेगी तो दिखा दूंगी कि मैं क्या कर सकती हूं।

कुबेर०। नीचे जाने की नौबत ही क्यों आवेगी! गैर लोग आवें और चले जांय मगर यहां की रानी होकर तुम कुछ न कर सको यह बड़े शर्म की बात है!

मायारानी इसका जवाब कुछ दिया ही चाहती थी कि सीढ़ी की तरफ से आवाज आई, "तुम लोगों के कलपने पर मुझे दया आती है, अच्छा आओ हम दर्वाजा खोल देते हैं, तुम लोग नीचे उतर आओ और अपनी जान बचाओ!" इसके बाद सीढ़ी वाले दर्वाजे के खुलने की आवाज आई।

सभों को ताज्जुब हुआ और सीढ़ी की तरफ जाते डर मालूम हुआ मगर यह सोच कर कि यहां पड़े रहने से भी जान बचने की आशा नहीं है सभों ने जी कड़ा करके नीचे उतरने का इरादा किया।

वास्तव में दर्वाजे जो बन्द हो गये थे खुले हुए दिखाई दिये और सब कोई जल्दी के साथ नीचे उतर गये, उस समय मायारानी ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "अब कोई चिन्ता नहीं।"

बाकर०। मगर यह न मालूम हुआ कि दर्वाजा खोलने वाला कौन था ?

यारअली०। और उसने हम लोगों के साथ यह नेकी का बर्ताव क्यों किया ?

इतने ही में ऊपर से आवाज आई, "दर्वाजा खोलने वाला मैं हूं।"

सभों ने घबरा कर ऊपर की तरफ देखा। एक आदमी मुंह पर नकाब डाले बरामदे से झांकता हुआ दिखाई दिया। कुबेरसिंह ने उससे पूछा, "तुम कौन हो ?"

नकाबपोश०। मैं इस तिलिस्म का दारोगा हूं।

माया०। इस तिलिस्म का दारोगा तो राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे में है।

नकाब०। वह तुम्हारा दारोगा था और मैं राजा गोपालसिंह का दारोगा हूं, आज कल यह बाग मेरे ही कब्जे में है।

माया०। जिस समय हमलोग यहां आये तुम कहां थे ?

नकाब०। इसी बाग में।

माया०। फिर हम लोगों को रोका क्यों नहीं ?

नकाब०। रोकने की जरूरत ही क्या थी ? यह तो मैं जानता ही था कि तुम लोग अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रहे हो। तुम लोगों की बेवकूफी पर मुझे हंसी आती है।

माया०। बेवकूफी काहे की ?

नकाब०। एक तो यही कि तुम लोगों ने इतनी फौज को बाग के अन्दर घुसेड़ तो लिया मगर यह न सोचा कि इतने आदमी यहां आकर खायेंगे क्या ? अगर घास और पेड़ पत्तों को भी खाकर गुजारा किया चाहें तो भी दो एक दिन से ज्यादा का काम नहीं चल सकता। क्या तुम लोगों ने समझा था कि बाग में पहुंचते ही राजा गोपालसिंह को मार लेंगे ?

माया०। गोपालसिंह को तो हमलोगों ने मार ही लिया, इसमें शक ही क्या है ? बाकी रही हमारी फौज, सो एक दिन का खाना अपने साथ रखती है, कल तो हमलोग इस बाग के बाहर हो ही जायंगे।

नकाब० । दोनों बातें शेखचिल्ली की सी हैं । न तो राजा गोपालसिंह का लोग कुछ बिगाड़ सकते हो और न इस बाग के बाहर की हवा ही खा सकते।

माया० । तो क्या गोपालसिंह किसी दूसरी राह से निकल जायेंगे ?

नकाब० । बेशक ।

माया० । और हम लोग बाहर न जा सकेंगे ?

नकाब० । कदापि नहीं क्योंकि मैंने सब दर्वाजे अच्छी तरह बन्द कर हैं । तुम तो तिलिस्म की रानी बनने का दावा व्यर्थ ही कर रही हो ! तुम्हें यहां का हाल रुपये में एक पैसा भी नहीं मालूम है । अभी मैंने तुम लोगों के रने की राह रोक दी थी सो तुम्हारे किये कुछ भी न बन पड़ा ! जब तुम छत पर थे पचीस आदमी तुम्हारे सामने से होकर नीचे चले आये, अगर तिलिस्म की रानी होने का दावा था तो उन्हें रोक लेतीं ! मगर राजा साह हौसले को देखो कि तुम लोगों के यहां आने की ख़बर पाकर भी अकेले सिर्फ सिंह को साथ लेकर इस बाग में चले आए ?

माया० । उन्हें हमारे आने की खबर कैसे मिली ?

नकाब० ! (जोर से हंस कर) इसके जवाब में तो इतना ही कहना का कि तुम्हारी लीला इस बाग में आने के पहिले ही गिरफ्तार कर ली गई।

माधवी०। तो क्या हमलोग किसी तरह अब इस बाग के बाहर नहीं जा सक

नकाब० । जीते तो नहीं जा सकते मगर जब तुम लोग मर जाओगे तब की लाशें बाहर जरूर फेंक दी जायेंगी !

जिस मकान में मायारानी उतरी थी उसी के बरामदे में वह नकाबपोश रहा था । बरामदे के आगे किसी तरह की आड़ या रुकावट न थी । माया उससे बातें करती जाती और छिपे ढंग से अपने तिलिस्मी तमंचे को भी दु करती जाती थी तथा रात होने के सबब यह बात उस नकाबपोश को मालू हुई । जब वह माधवी से बातें करने लगा उस समय मौका पाकर मायारा तिलिस्मी तमंचा उस पर चलाया । गोली उसकी छाती में लग कर फट गई बेहोशी का धूआं बहुत जल्द उसके दिमाग में चढ़ गया, साथ ही वह आदमी बे होकर जमीन पर लुढ़कता हुआ मायारानी के आगे आ पड़ा । भीमसेन ने कर उसकी नकाब हटा दी और चौंक कर बोल उठा, "वाह वाह ! यह तो गोपालसिंह हैं ।"

ग्यारहवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और सर्यू को बड़ा ही ताज्जुब हुआ जब उन्होंने एक एक करके सात आदमियों को तिलिस्मी बाग में पहुंचाए जाते देखा। जब उस मकान की खिड़की बन्द हो गई और चारो तरफ सन्नाटा छा गया तब इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "उस तरफ चल कर देखना चाहिए कि ये लोग कौन हैं।"

आनन्द०। जरूर चलना चाहिये।

सर्यू०। कहीं हम लोगों के दुश्मन न हों।

आनन्द०। अगर दुश्मन भी होंगे तो हमें कुछ परवाह न करना चाहिए, हम लोग हजारों में लड़ने वाले हैं।

इन्द्र०। अगर हम लोग दस बीस आदमियों से डर कर चलेंगे तो कुछ भी न कर सकेंगे!

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने उस तरफ कदम बढ़ाया। आनन्दसिंह उनके पीछे पीछे रवाना हुए मगर सर्यू को साथ आने की आज्ञा न दी और वह उसी जगह खड़ी रह गई।

पास पहुंच कर कुमारों ने देखा कि सात आदमी जमीन पर बेहोश पड़े हैं। सभों के बदन पर स्याह लबादा और चेहरों पर स्याह नकाब थी। थोड़ी देर तक दोनों भाई ताज्जुब की निगाह से उन सभों की ओर देखते रहे और इसके बाद एक के चेहरे पर से नकाब हटाने का इरादा किया मगर उसी समय ऊपर से पुनः दर्वाजा या खिड़की खुलने की आवाज आई।

आनन्द०। मालूम होता है कि और भी दो चार आदमी यहां उतारे जायंगे।

इन्द्र०। शायद ऐसा ही हो, यहां से हट कर और आड़ में होकर देखना चाहिए।

आनन्द०। (सातो बेहोशों की तरफ इशारा करके) यदि इन लोगों को इनके किसी दुश्मन ने यहां पहुंचाया हो और अबकी दफे कोई आकर इनकी जान ...

इन्द्र०। नहीं नहीं, अगर ये लोग मारे जाने लायक होते और जिन लोगों ने इन्हें नीचे उतारा है वे इनके जानी दुश्मन होते तो धीरे से उतारने के बदले ऊपर से धक्का देकर नीचे गिरा देते। खैर ज्यादे बातचीत का मौका नहीं है, इस पेड़ की आड़ में हो जाओ फिर देखो हम सब पता लगा लेते हैं, बस हटो जल्दी करो।

बेचारे आनन्दसिंह कुछ जवाब न दे सके और वहां से थोड़ी दूर हट कर एक पेड़ की आड़ में हो गए। इस समय चन्द्रदेव अपनी छावनी की तरफ जा रहे थे

और पेड़ों की आड़-पड़ जाने के कारण उस जगह कुछ अन्धकार सा छा गया
जहां वे सातो वेहोश पड़े हुए थे और इन्द्रजीतसिंह खड़े थे।

इन्द्रजीतसिंह हाथ में तिलिस्मी खंजर लेकर फुर्ती से इन सातों के बीच में
कर लेट रहे, दोनों तरफ से दो आममियों के लबादे को भी अपने वदन पर
लिया और पड़े पड़े ऊपर की तरफ देखने लगे। एक आदमी कमन्द के सहारे
उतरता हुआ दिखाई दिया। जब वह जमीन पर उतर कर उन सातों आद
की तरफ आया तो इन्द्रजीतसिंह ने फुर्ती से हाथ बढ़ा कर तिलिस्मी खंजर उ
पैर से लगा दिया, साथ ही वह आदमी कांपा और वेहोश होकर जमीन पर
पड़ा। इन्द्रजीतसिंह पुनः उसी तरह लेट ऊपर को तरफ देखने लगे। थोड़ी
बाद और एक आदमी उसी कमन्द के सहारे नीचे उतरा और घूम घूम के गौ
उन सातों को देखने लगा। जब वह कुमार के पास आया कुमार ने उसके पै
भी तिलिस्मी खंजर लगा दिया और वह भी पहिले की तरह वेहोश होकर ज
पर गिर पड़ा। कुंअर इन्द्रजीतसिंह लेटे लेटे और भी किसी के आने का इन्त
करने लगे मगर कुछ देर हो जाने पर भी कोई तीसरा दिखाई न पड़ा। कुमार
खड़े हुए और आनन्दसिंह भी उनके पास चले आये।

इन्द्रजीत०। तुम इसी जगह मुस्तैद रह कर इन सभों की निगहबानी क
हम इसी कमन्द के सहारे ऊपर जाकर देखते हैं कि वहां क्या है।

आनन्द०। आपका अकेले ऊपर जाना ठीक न होगा, कौन ठिकाना
दुश्मनों की वारात लगी हो!

इन्द्रजीत०। कोई हर्ज नहीं, जो कुछ होगा देखा जायगा मगर तुम यहां
मत हिलना।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह उसी कमन्द के सहारे वहुत जल्द ऊपर चढ़
और खिड़की के अन्दर जाकर एक लम्बे चौड़े कमरे में पहुंचे जहां यद्यपि बिल्
सन्नाटा था मगर एक चिराग जल रहा था। इस कमरे में दूसरी तरफ क
निकल जाने के लिए एक बड़ा सा दर्वाजा था, कुमार वहां चले गये और एक
दर्वाजे के बाहर रख झांकने लगे। एक दूसरा कमरा नजर पड़ा जिसमें चारों त
छोटे छोटे कई दर्वाजे थे मगर सब बन्द थे और सामने की तरफ एक बड़ा सा
हुआ दर्वाजा था। कुमार उस खुले हुए दर्वाजे में चले गये और झांक कर दे
लगे। एक छोटा सा नजरबाग दिखाई दिया जिसके चारो तरफ ऊंची ऊंची
रसें और बीच में एक छोटी सी बावली थी। बागों में कोई ... से ज्यादे ज

न थी और फूल पत्तों के पेड़ भी कम थे। बावली के पूरब तरफ एक आदमी हाथ में मशाल लिये खड़ा था और उस मशाल में से बिजली की तरह बहुत ही तेज रोशनी निकल रही थी। वह रोशनी स्थिर थी अर्थात् हवा लगने से हिलती न थी और केवल उस एक ही रोशनी से तमाम बाग ऐसा उजाला हो रहा था कि वहां का एक एक पत्ता साफ साफ दिखाई दे रहा था। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने बड़े गौर से उस आदमी को देखा जिसके हाथ में मशाल थी और उनको निश्चय हो गया कि यह आदमी असली नहीं है बनावटी है- अस्तु ताज्जुब से कुछ देर तक वे उसकी तरफ देखते रहे, इसी बीच में बाग के उत्तर वाले दालान में से एक आदमी निकल कर बावली की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा और कुमार ने उसे देखते ही पहिचान लिया कि यह राजा गोपालसिंह हैं। कुमार ने उन्हें पुकारने का इरादा किया ही था कि उसी दालान में से और चार आदमी आते हुए दिखाई दिए और इनकी सूरत शक्ल भी पहिले आदमी के समान ही थी अर्थात् ये चारो भी राजा गोपालसिंह ही मालूम पड़ते थे जिससे कुंअर इन्द्रजीतसिंह को बहुत आश्चर्य हुआ और वे बड़े गौर से इनकी तरफ देखने लगे।

वे चारो आदमी जो पीछे आये थे खाली हाथ न थे बल्कि दो आदमियों की लाशें उठाए हुए थे। धीरे धीरे चल कर वे चारो आदमी उस बनावटी मूरत के पास पहुंचे जिसके हाथ में मशाल थी, वे दोनों लाशें उसी के पास जमीन पर रख दीं और तब पांचों गोपालसिंह मिल कर धीरे धीरे कुछ बातें करने लगे जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह किसी तरह सुन नहीं सकते थे।

पहिले आदमी को देख कर और गोपालसिंह समझ कर कुमार ने आवाज देना चाहा था मगर जब और भी चार गोपालसिंह निकल आए तब उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ और यह समझ कर कि कदाचित इन पांचों में से एक भी गोपालसिंह न हो, वे चुप रह गये। उन पांचों गोपालसिंह की पोशाकें एक ही रंग ढंग की थीं, बल्कि उन दोनों लाशों की पोशाक भी ठीक उन्हीं की तरह थी। यद्यपि उन लाशों का सर कटा हुआ और वहां मौजूद न था मगर उन पांचों गोपालसिंह की तरफ खयाल करके देखने वाला उन लाशों को भी गोपालसिंह बता सकता था।

कुमार को चाहे इस बात का खयाल हो गया हो कि इन सभों में से कोई भी असली गोपालसिंह न होंगे मगर फिर भी वे उन सभों को बड़े ताज्जुब और गौर की निगाह से देखते हुए सोच रहे थे कि इतने गोपालसिंह बनने की जरूरत क्या पड़ी और उन दोनों लाशों के साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया गया या किसने किया!

जिस दर्वाजे में कुंअर इन्द्रजीतसिंह खड़े थे उसी के आगे बाईं तरफ घूमती हुई छोटी सीढ़ियां नीचे उतर जाने के लिए थीं। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने कुछ सोच विचार कर चाहा कि इन सीढ़ियों की तरह नीचे उतर कर दोनों गोपालसिंह के पास जांय और उन्हें जबर्दस्ती रोक कर असल बात का पता लगावें मगर इसके पहले किसी के आने की आहट मालूम हुई और पीछे घूम कर देखने से कुंअर आनन्दसिंह पर निगाह पड़ी।

इन्द्रजीत०। तुम क्यों चले आये ?

आनन्द०। आपको मैंने कई दफे नीचे से पुकारा मगर आपने कुछ जवाब न दिया तो लाचार यहां आना पड़ा।

इन्द्रजीत०। क्यों ?

आनन्द०। राजा गोपालसिंह की आज्ञा से।

इन्द्रजीत०। राजा गोपालसिंह कहां हैं ?

आनन्द०। उन दोनों आदमियों में से जो नीचे उतरे थे और जिन्हें आपने बेहोश कर दिया था एक राजा गोपालसिंह थे। जब आप ऊपर चढ़ आए तब मैंने एक का नकाब हटाया और तिलिस्मी खंजर की रोशनी में चेहरा देखा तो मालूम हुआ कि गोपालसिंह हैं। उस समय मुझे इस बात का अफसोस हुआ कि बेहोश करने बाद आपने उनकी सूरत नहीं देखी, अगर देखते तो उन्हें छोड़ कर यहां न आते। खैर जब मैंने उन्हें पहिचाना तो होश में लाने के लिये उद्योग करना उचित जाना अस्तु तिलिस्मी खंजर के जोड़ की अंगूठी उनके बदन में लगाई जिसके थोड़ी ही देर बाद वह होश में आये और उठ बैठे। होश में आने बाद पहिले पहिल जो कुछ उनके मुंह से निकला वह यह था कि 'कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने धोखा खाया, मुझे बेहोश करने की क्या जरूरत थी ? मैं तो खुद उनसे मिलने के लिए यहां आया था' ! इतना कह कर उन्होंने मेरी तरफ देखा, यद्यपि उस समय चांदनी वहां से हट गई थी मगर उन्होंने मुझे बहुत जल्द पहिचान लिया और पूछा कि 'तुम्हारे बड़े भाई कहां हैं' ? मैंने उनसे कुछ छिपाना उचित न जाना और कह दिया कि 'वे कमन्द के सहारे ऊपर चले गए हैं'। सुन कर वे बहुत रंज हुए और क्रोध से बोले कि 'सब काम लड़कपन और नादानी का किया करते हैं ! उन्हें बहुत जल्द ऊपर से बुला लो'। मैंने आपको कई दफे पुकारा मगर आप न बोले तब उन्होंने घुड़क कर कहा कि 'क्यों व्यर्थ देर कर रहे हो, तुम खुद ऊपर जाओ और जल्द बुला लाओ'। मैंने कहा कि मुझे यहां से हटने की आज्ञा नहीं है आप खुद जाइये और बुला

जाइये, मगर इतना सुन कर वे और भी रंज हुए और बोले, "अगर मुझमें ऊपर जाने की ताकत होती तो मैं तुम्हें इतना कहता ही नहीं ! बेहोशी के कारण मेरी रग रग कमजोर हो रही है, तुम अगर उनको बुला लाने में विलम्ब करोगे तो पछताओगे, बस अब मैं इससे ज्यादे और कुछ न कहूंगा, जो ईश्वर की मर्जी होगी और जो कुछ तुम लोगों के भाग्य में लिखा होगा सो होगा।" उनकी बातें ऐसी न थीं कि मैं सुनता और चुपचाप खड़ा रह जाता, आखिर लाचार होकर आपको बुलाने के लिए आना पड़ा अब आप जल्द चलिए देर न कीजिए।

आनन्दसिंह की बातें सुन कर इन्द्रजीतसिंह को बहुत रंज हुआ और उन्होंने क्रोध भरी आवाज में कहा—

इन्द्र०। आखिर तुमसे नादानी हो ही गई ?

आनन्द०। (आश्चर्य से) सो क्या ?

इन्द्र०। तुमने उस दूसरे के चेहरे पर की भी नकाब हटा कर देखा कि वह कौन था ?

आनन्द०। जी नहीं।

इन्द्र०। तब तुम्हें कैसे विश्वास हुआ कि यह राजा गोपालसिंह ही हैं ? जब चेहरे पर से नकाब हटा कर देखा ही था तो पानी से मुंह धोकर भी देख लेना था ? क्या तुम भूल गये कि राजा गोपालसिंह के पास भी इसी तरह का तिलिस्मी खंजर मौजूद है अस्तु उनके ऊपर इस खंजर का असर क्यों होने लगा था ?

आनन्द०। (सिर नीचा करके) बेशक मुझसे भूल हुई !

इन्द्र०। भारी भूल हुई ! (छोटे बाग की तरफ बता कर) देखो यहां पांच राजा गोपालसिंह हैं ! क्या तुम कह सकते हो कि ये पांचों राजा गोपालसिंह हैं ?

आनन्दसिंह ने उस छोटे बागीचे की तरफ झांक कर देखा और कहा, "बेशक मामला गड़बड़ है !"

इन्द्र०। खैर अब तो हमें लौटना ही पड़ा, हम चाहते थे कि इन सभों का कुछ भेद मालूम करें, मगर खैर।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह लौट पड़े और उस कमरे को लांघकर दूसरे कमरे में पहुंचे जिसमें वे सातों खिड़कियां थीं। यकायक इन्द्रजीतसिंह की निगाह एक लिफाफे पर पड़ी जिसे उन्होंने उठा लिया और चिराग के पास ले जाकर पढ़ा। लिफाफा बन्द था और उस पर यह लिखा हुआ था—"इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह जोग लिखी गोपालसिंह।"

कुमार ने लिफाफा फाड़ कर चीठी निकाली और देखते ही कहा, "इस
पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता, बेशक यह भाई साहब के हाथ की
है और मामूली निशान भी है।" इसके बाद वे चीठी पढ़ने लगे।

आनन्दसिंह ने देखा कि चीठी पढ़ते पढ़ते इन्द्रजीतसिंह के चेहरे का रंग
दफे बदला और जैसे जैसे पढ़ते जाते थे रंज की निशानी बढ़ती जाती थी
जब कुल चीठी पढ़ चुके तो एक लम्बी सांस लेकर बोले, "अफसोस, बड़ी
हुई!" और वह चीठी पढ़ने के लिए आनन्दसिंह के हाथ में दे दी।

आनन्दसिंह ने चीठी पढ़ी, यह लिखा हुआ था :—

"किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी कमला लाडिली और इन्दिरा को आपके
तिलिस्म में भेजते हैं। देखिये इन्हें सम्हालिए और एक क्षण के लिए भी
अलग न होइए। सुन्दर हमारे तिलिस्मी बाग में घुसी हुई है, हम आठ आना
कब्जे में आ गये हैं। लीला ने धोखा देकर हमारे कुछ भेद मालूम कर लिए जि
सबब और पूरा पूरा हाल लक्ष्मीदेवी या कमलिनी की जुबानी आपको मालूम
जिन्हें हमने सब कुछ बता और समझा दिया है। कई बातों के ख्याल से
को बेहोश करके कमन्द द्वारा आपके पास पहुंचाते हैं, खबरदार एक क्षण के
भी इन लोगों से अलग न हों और किसी बनावटी गोपालसिंह का विश्वास न
आज कम से कम बीस पचीस आदमी गोपालसिंह बने हुए कार्रवाई कर रहे
हम जरा तरद्दुद में पड़े हुए हैं मगर कोई चिन्ता नहीं, भैरोसिंह हमारे साथ
आप बाग के इस दर्जे को तोड़ कर दूसरी जगह पहुंचिये और यह काम रात
के अन्दर होना चाहिये। —"शिवरामे गोपाल मेरावशि शुलेख

चीठी पढ़ कर आनन्दसिंह को भी बड़ा अफसोस हुआ और अपने किए
पछताने लगे। सच तो यों है कि दोनों ही भाइयों को इस बात का अफसोस
कि किशोरी कामिनी इत्यादि को अपने पास आ जाने पर भी देखे और हो
लाये बिना छोड़ कर इधर चले आये और व्यर्थ की झंझट में पड़े, क्योंकि
कुमार किशोरी और कामिनी की मुलाकात से बढ़ कर दुनिया में किसी चीज
पसन्द नहीं करते थे।

दोनों कुमार जल्दी जल्दी उस कमरे के बाहर हुए और उस खिड़की में पहुं
जिसमें कमन्द लगा हुआ छोड़ आये थे मगर आश्चर्य और अफसोस की बात
कि अब उन्होंने उस कमन्द को खिड़की में लगा हुआ न पाया जिसके सहारे
नीचे उतर जाते, शायद किसी नीचे वाले ने उस कमन्द को छुड़ा लिया था।

बारहवां बयान

राजा गोपालसिंह ने जब रामदीन को चीठी और अंगूठी देकर जमानिया भेजा था तो यद्यपि चीठी में लिख दिया था कि परसों रविवार को शाम तक हमलोग वहां (पिपलिया घाटी) पहुंच जांयगे, मगर रामदीन को समझा दिया था कि रविवार को पिपलिया घाटी पहुंचना हमने यों ही लिख दिया है वास्तव में हम वहाँ सोमवार को पहुंचेंगे अस्तु तुम भी सोमवार को पिपलिया घाटी पहुंचना, जिसमें ज्यादे देर तक हमारे आदमियों को वहां ठहर कर तकलीफ न उठानी पड़े और दो सौ सवारों की जगह केवल बीस सवार लाना। यह बात असली रामदीन को तो मालूम थी और वह मारा न जाता तो वेशक रथ और सवारों को लेकर राजा साहब की आज्ञानुसार सोमवार को ही पिपलिया घाटी पहुंचता, मगर नकली रामदीन अर्थात् लीला तो उन्हीं वातों को जान सकती थी जो चीठी में लिखी हुई थीं अस्तु वह रविवार ही को रथ और दो सौ फौज लेकर पिपलिया घाटी जा पहुंची और जब सोमवार को राजा साहब वहां पहुंचे तो बोली, "आश्चर्य है कि आपके आने में पूरे आठ पहर की देर हुई!"

यह सुनते ही राजा साहब समझ गये कि यह असली रामदीन नहीं है, उसी समय से उन्होंने अपनी कार्रवाई का ढंग बदल दिया और लीला तथा मायारानी का सब बन्दोबस्त मिट्टी में मिल गया। वे उसी समय दो चार बातें करके पीछे लौट गए और दूसरे दिन औरतों को अपने साथ न लाकर केवल भैरोसिंह और इन्द्रदेव को साथ लिए हुए पिपलिया घाटी में आए।

इस जगह यह भी लिख देना उचित जान पड़ता है कि दूसरे दिन पिपलिया घाटी में पहुंच कर लीला के लाए हुए सवारों के साथ रथ पर चढ़ कर जमानिया पहुंचने वाले गोपालसिंह असली न थे बल्कि नकली थे और भैरोंसिह ने लीला के साथ जो सलूक किया वह असली राजा गोपालसिंह के इशारे से था। अब हमारे पाठक यह जानना चाहते होंगे कि यदि वह राजा गोपालसिंह नकली थे तो असली गोपालसिंह कहां गये, या वह किस सूरत में गये? तो इसके जवाब में केवल इतना ही कह देना काफी होगा कि असली गोपालसिंह नकली गोपालसिंह के साथ इन्द्रदेव की सूरत बन कर रथ पर सवार हुए थे और जमानिया पहुंचने के पहिले ही नकली गोपालसिंह को समझा बुझा कर रथ से उतर किसी तरफ चले गये थे। यह सब हाल यद्यपि पिछले बयानों से पाठकों को मालूम हो गया होगा परन्तु शक मिटाने के लिये यहां पुनः लिख दिया गया।

राजा गोपालसिंह के होशियार हो जाने के कारण मायारानी ने तिलि बाग में तरह तरह के तमाशे देखे जिसका कुछ हाल तो लिखा जा चुका है बाकी आगे चल कर लिखा जायगा क्योंकि इस समय हम इन्द्रजीतसिंह और आन सिंह का हाल लिखना उचित समझते हैं।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने जब खिड़की में कमन्द लगा हुआ पाया तो उन्हें ताज्जुब और रंज हुआ। थोड़ी देर तक खड़े उसी बाग की त देखते रहे और तब आनन्दसिंह से बोले,"क्या हम लोग यहां से कूद नहीं सकते

आनन्द०। क्यों नहीं कूद सकते! अगर इस बात का ख्याल हो कि बहुत है तो कमरबन्द खोल कर इस दर्वाजे के सीकचे में बांध और उसके स कुछ नीचे लटक कर कूदने में मालूम भी न पड़ेगा।

इन्द्र०। हां तुमने यह बहुत ठीक कहा, कमरबन्दों के सहारे हमलोग आधी तक तो जरूर ही लटक सकते हैं मगर खराबी यह है कि दोनों कमरबन्दों से खोना पड़ेगा और इस तिलिस्म में नहाने धोने का सुभीता इन्हीं की बदौलत है। कोई चिन्ता नहीं लंगोटे से भी काम चल सकता है, अच्छा लाओ कमरबन्द खोलें

दोनों भाइयों ने कमरबन्द खोलने बाद दोनों को एक साथ जोड़ा और उस एक सिरा दर्वाजे में लगे हुए सीकचे के साथ बांध कर दोनों भाई बारी बारी नीचे लटक गये।

कमरबन्द ने आधी दूर तक दोनों भाइयों को पहुंचा दिया इसके बाद दो भाइयों को कूद जाना पड़ा। कूदने के साथ ही नीचे एक झाड़ी के अन्दर से आव आई, "शाबाश! इतनी ऊंचाई से कूद पड़ना आप ही लोगों का काम है। मग अब किशोरी कामिनी इत्यादि से मुलाकात नहीं हो सकती।"

जितने आदमी कमन्द के सहारे इस बाग में लटकाये गए थे और जिन स को यहां छोड़ आनन्दसिंह अपने भाई को बुलाने के लिए ऊपर गये थे उन स को मौजूद न पाकर और इस शाबाशी देने वाली आवाज को सुन कर दोनों बड़ा ही आश्चर्य हुआ। दोनों भाई चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगे म किसी की सूरत नजर न पड़ी, हां एक पेड़ के नीचे सर्यू को बेहोश पड़े हुए उ देखा जिससे उन दोनों का ताज्जुब और भी ज्यादे हो गया।

इन्द्र०। (आनन्दसिंह से) यह सब खराबी तुम्हारी जरा सी भूल के सबब से है

आनन्द०। निःसन्देह ऐसा ही है।

इन्द्र०। पहिले सर्यू को होश में लाने की फिक्र करो, शायद इसकी जुबा

कुछ मालूम हो।

आनन्द०। जो आज्ञा।

इतना कह कर आनन्दसिंह सर्यूं को होश में लाने का उद्योग करने लगे। थोड़ी देर में सर्यूं की बेहोशी जाती रही और इतने ही में सुबह की सुफेदी ने भी अपनी सूरत दिखाई।

इन्द्रजीत०। (सर्यूं से) तुम्हें किसने बेहोश किया?

सर्यूं०। एक नकाबपोश ने आकर एक चादर जबर्दस्ती मेरे ऊपर डाल दी जिससे मैं बेहोश हो गई। मैं दूर से सब तमाशा देख रही थी। जब आप कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गये और उसके कुछ देर बाद छोटे कुमार भी आपको कई दफे पुकारने बाद उसी कमन्द के सहारे ऊपर चढ़ गये तब उन्हीं में से एक नकाबपोश ने उन सभों को सचेत किया जो (हाथ का इशारा करके) उस जगह बेहोश पड़े हुए थे या जो ऊपर से लटकाए गये थे। इसके बाद सब कोई मिल कर उस (हाथ से बता कर) दीवार की तरफ गए और कुछ देर तक आपस में बातें करते रहे। इसी बीच में छिप कर उनकी बातें सुनने की नीयत से मैं भी धीरे धीरे अपने को छिपाती हुई उस तरफ बढ़ी मगर अफसोस वहां तक पहुंचने भी न पाई थी कि एक नकाबपोश मेरे सामने आ पहुंचा और उसने उसी ढंग से मुझे बेहोश कर दिया जैसा कि मैं अभी कह चुकी हूं। शायद उसी बेहोशी की अवस्था में मैं इस जगह पहुंचाई गई।

सर्यूं की बातें सुन कर दोनों कुमार कुछ देर तक सोचते रहे, इसके बाद सर्यूं को साथ लिए उसी दीवार की तरफ गये जिधर उन लोगों का जाना सर्यूं ने बताया था जो कमंद के सहारे इस बाग में उतरे या उतारे गये थे। जब वहां पहुंचे तो देखा कि दीवार की लम्बाई के बीचोबीच में एक दर्वाजे का निशान बना हुआ है और उसके पास ही में नीचे की जमीन कुछ खुदी हुई है।

आनन्द०। (इन्द्रजीतसिंह से) देखिए यहां की जमीन उन लोगों ने खोदी और तिलिस्म के अन्दर जाने का दरवाजा निकाला है क्योंकि दीवार में अब वह गुण तो रहा नहीं जो उन लोगों को ऐसा करने से रोकता।

इन्द्र०। बेशक यह वही दर्वाजा है जिस राह से हम लोग तिलिस्म के दूसरे दर्जे में जाने वाले थे? मगर इससे तो जाना जाता है कि वे लोग तिलिस्म के अन्दर घुस गये?

आनन्द०। जरूर ऐसा ही है और यह काम सिवाय गोपाल भाई के दूसरा कोई नहीं कर सकता, अस्तु अब मैं जरूर यह कहने की हिम्मत करूंगा कि वह

राजा गोपालसिंह के होशियार हो जाने के कारण मायारानी ने तिलि[illegible] बाग में तरह तरह के तमाशे देखे जिसका कुछ हाल तो लिखा जा चुका है[illegible] बाकी आगे चल कर लिखा जायगा क्योंकि इस समय हम इन्द्रजीतसिंह और आन[illegible] सिंह का हाल लिखना उचित समझते हैं।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने जब खिड़की में कमन्द लगा हुआ पाया तो उन्हें ताज्जुब और रंज हुआ। थोड़ी देर तक खड़े उसी बाग की त[illegible] देखते रहे और तब आनन्दसिंह से बोले, "क्या हम लोग यहां से कूद नहीं सकते[illegible]

आनन्द०। क्यों नहीं कूद सकते! अगर इस बात का ख्याल हो कि नी[illegible] बहुत है तो कमरबन्द खोल कर इस दर्वाजे के सीकचे में बांध और उसके स[illegible] कुछ नीचे लटक कर कूदने में मालूम भी न पड़ेगा।

इन्द्र०। हां तुमने यह बहुत ठीक कहा, कमरबन्दों के सहारे हमलोग आधी[illegible] तक तो जरूर ही लटक सकते हैं मगर खराबी यह है कि दोनों कमरबन्दों से [illegible] धोना पड़ेगा और इस तिलिस्म में नहाने धोने का सुभीता इन्हीं की बदौलत है।[illegible] कोई चिन्ता नहीं लंगोटे से भी काम चल सकता है, अच्छा लाओ कमरबन्द खोले[illegible]

दोनों भाइयों ने कमरबन्द खोलने बाद दोनों को एक साथ जोड़ा और उस[illegible] एक सिरा दर्वाजे में लगे हुए सीकचे के साथ बांध कर दोनों भाई बारी बारी नीचे लटक गये।

कमरबन्द ने आधी दूर तक दोनों भाइयों को पहुंचा दिया इसके बाद दो[illegible] भाइयों को कूद जाना पड़ा। कूदने के साथ ही नीचे एक झाड़ी के अन्दर से आवा[illegible] आई, "शाबाश! इतनी ऊंचाई से कूद पड़ना आप ही लोगों का काम है। म[illegible] अब किशोरी कामिनी इत्यादि से मुलाकात नहीं हो सकती।"

जितने आदमी कमन्द के सहारे इस बाग में लटकाये गए थे और जिन स[illegible] को यहां छोड़ आनन्दसिंह अपने भाई को बुलाने के लिए ऊपर गये थे उन स[illegible] को मौजूद न पाकर और इस शाबाशी देने वाली आवाज को सुन कर दोनों [illegible] बड़ा ही आश्चर्य हुआ। दोनों भाई चारो तरफ घूम घूम कर देखने लगे म[illegible] किसी की सूरत नजर न पड़ी, हां एक पेड़ के नीचे सर्यू को बेहोश पड़े हुए [illegible] देखा जिससे उन दोनों का ताज्जुब और भी ज्यादे हो गया।

इन्द्र०। (आनन्दसिंह से) यह सब खराबी तुम्हारी जरा सी भूल के सबबसे हु[illegible]

आनन्द०। निःसन्देह ऐसा ही है।

इन्द्र०। पहिले सर्यू को होश में लाने की फिक्र करो, शायद इसकी जुबा[illegible]

कि वह लोहे या पीतल की हो) दिखाई दे रही थी और उसे उठाने के लिए बीच में लोहे की कड़ी लगी हुई थी जिसका एक सिरा दीवार के साथ सटा हुआ था। इन्द्रजीतसिंह ने कड़ी में हाथ डाल कर जोर किया और उस पटिया (छोटी चट्टान) को उठा कर किनारे पर रख दिया। नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां दिखाई दीं और दोनों भाई सयू को साथ लिए नीचे उतर गए।

लगभग बीस सीढ़ी के नीचे उतर जाने बाद एक छोटी कोठरी मिली जिसकी जमीन किसी धातु की बनी हुई थी और खूब चमक रही थी। ऊपर दो तीन सूराख (छेद) भी इस ढंग से बने हुए थे जिससे दिन भर उस कोठड़ी में कुछ कुछ रोशनी रह सकती थी। आनन्दसिंह ने चारों तरफ गौर से देख कर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "भैया, रिक्तगंथ में लिखा था कि यह कोठरी तुम्हें तिलिस्म के अन्दर पहुंचावेगी, मगर समझ में नहीं आता कि यह कोठरी किस तरह से हम लोगों को तिलिस्म के अन्दर पहुंचावेगी क्योंकि इसमें न तो कहीं दर्वाजा दिखाई देता है और न कोई ऐसा निशान ही मालूम पड़ता है जिसे हमलोग दर्वाजा बनाने के काम में लावें।"

इन्द्र०। हम भी इसी सोच विचार में पड़े हुए हैं मगर कुछ समझ में नहीं आता है।

इसी बीच में दोनों कुमार और सयूं के पैरों में झुनझुनी और कमजोरी मालूम होने लगी और वह बात की बात में इतनी ज्यादे बढ़ी कि वे लोग वहां से हिलने लायक भी न रहे। देखते देखते तमाम बदन में सनसनाहट और कमजोरी ऐसी बढ़ गई कि वे तीनों बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े और फिर तनोबदन की सुध न रही।

घण्टे भर के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह की बेहोशी जाती रही और वह उठ कर बैठ गए मगर चारो तरफ घोर अंधकार छाया रहने के कारण यह नहीं जान सकते थे कि वे किस अवस्था में या कहां पड़े हुए हैं। सब से पहिले उन्हें तिलिस्मी खंजर की फिक्र हुई, कमर में हाथ लगाने पर उसे मौजूद पाया, अस्तु उसे निकाल कर और उसका कब्जा दबा कर रोशनी पैदा की और ताज्जुब की निगाह से चारो तरफ देखने लगे।

जिस स्थान में इस समय कुमार थे वह सुर्ख पत्थर से बना हुआ था और यहां की दीवारों पर पत्थर के गुलबूटों का काम बहुत खूबी खूबसूरती और कारीगरी का अनूठा नमूना दिखाने वाला बना हुआ था। चारों तरफ की दीवार में चार दर्वाजे थे मगर उनमें किवाड़ के पल्ले लगे हुए न थे। पास ही कुंअर आनन्दसिंह भी पड़े हुए थे परन्तु सयूं का कहीं पता न था जिससे कुमार को बहुत ही

ताज्जुब हुआ। उसी समय आनन्दसिंह की बेहोशी भी जाती रही और वे उठ कर घबराहट के साथ चारो तरफ देखते हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास आकर बोले—

आनन्द०। हम लोग यहां क्योंकर आये ?

इन्द्रजीत०। मुझे मालूम नहीं, तुमसे थोड़ा हा देर पहिले मैं होश में आया हूं और ताज्जुब के साथ चारो तरफ देख रहा हूं।

आनन्द०। और सर्यू कहां चली गई ?

इन्द्रजीत०। यह भी नहीं मालूम, तुम चारो तरफ की दीवारों में चार दर्वाजे देख रहे हो, शायद वह हमसे पहिले होश में आकर इन दर्वाजों में से किसी एक के अन्दर चली गई हो।

आनन्द०। शायद ऐसा ही हो, चल कर देखना चाहिए। रिक्तगंथ का कहा बहुत ठीक निकला, आखिर उस कोठरी ने हमलोगों को यहां पहुंचा दिया मगर किस ढंग से पहुंचाया सो मालूम नहीं होता! (छत की तरफ देख कर) शायद वह कोठड़ी इसके ऊपर हो और उसकी छत ने नीचे उतर कर हमलोगों को यहां लुढ़का दिया हो!

इन्द्रजीत०। (कुछ मुस्कुरा कर) शायद ऐसा ही हो, मगर निश्चय नहीं कह सकते, हां अब व्यर्थ न खड़े रह कर सर्यू और नकाबपोशों का पता लगाना चाहिए।

इन्द्रजीतसिंह ने इतना कहा ही था कि दीवार वाले एक दर्वाजे के अन्दर से आवाज आई, "बेशक, बेशक!!"

तेरहवां बयान

"बेशक बेशक" की आवाज ने दोनों कुमारों को चौंका दिया। वह आवाज सर्यू की न थी और न किसी ऐसे आदमी की थी जिसे कुमार पहिचानते हों यह सबब उनके चौंकने का और भी था। दोनों कुमारों को निश्चय हो गया कि यह आवाज उन्हीं नकाबपोशों में से किसी की है जो तिलिस्म के अन्दर लटकाये गये और जिन्हें हमलोग खोज रहे हैं। ताज्जुब नहीं कि सर्यू भी इन्हीं लोगों के सबब गायब हो गई हो क्योंकि एक कमजोर औरत की बेहोशी हम लोगों की बनिस्बत जल्द दूर नहीं हो सकती।

दोनों भाइयों के विचार एक से थे अतएव दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा और इसके बाद इन्द्रजीतसिंह और उनके पीछे पीछे आनन्दसिंह उस दर्वाजे के अन्दर चले गये जिसमें किसी के बोलने की आवाज आई थी।

कुछ आगे जाने पर कुमार को मालूम हुआ कि रास्ता सुरंग के ढंग का बना हुआ है मगर बहुत छोटा और केवल एक ही आदमी के जाने लायक है अर्थात् इसकी चौड़ाई डेढ़ हाथ से ज्यादे नहीं है।

लगभग बीस हाथ जाने बाद दूसरा दर्वाजा मिला जिसे लांघ कर दोनों भाई एक छोटे से बाग में गये जिसमें सब्जी की बनिस्बत इमारत का हिस्सा बहुत ज्यादे था अर्थात् उसमें कई दालान कोठरियां और कमरे थे जिन्हें देखते ही इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "इसके अन्दर थोड़े आदमियों का पता लगाना भी कठिन होगा।"

दोनों कुमार दो ही चार कदम आगे बढ़े थे कि पीछे से दर्वाजे के बन्द होने की आवाज आई, घूम कर देखा तो उस दर्वाजे को बन्द पाया जिसे लांघ कर इस बाग में पहुंचे थे। दर्वाजा लोहे का और एक ही पल्ले का था जिसने चूहेदानी की तरह ऊपर से गिर कर दर्वाजे का मुंह बन्द कर दिया। उस दर्वाजे के पल्ले पर मोटे मोटे अक्षरों में यह लिखा हुआ था :—

"तिलिस्म का यह हिस्सा टूटने लायक नहीं है, हां तिलिस्म को तोड़ने वाला यहां का तमाशा जरूर देख सकता है।"

इन्द्रजीत०। यद्यपि तिलि मी तमाशे दिलचस्प होते हैं मगर हमारा यह समय बड़ा नाजुक है और तमाशा देखने योग्य नहीं क्योंकि तरह तरह के तरद्दुदों ने दुःखी कर रक्खा है। देखा चाहिए इस तमाशबीनी से छुट्टी कब मिलती है।

आनन्द०। मेरा भी यही खयाल है बल्कि मुझे तो इस बात का अफसोस है कि इस बाग में क्यों आए, अगर किसी दूसरे दर्वाजे के अन्दर गये होते तो अच्छा होता।

इन्द्रजीत०। (कुछ आगे बढ़ कर ताज्जुब से) देखो तो सही उस पेड़ के नीचे कौन बैठा है ! कुछ पहिचान सकते हो ?

आनन्द०। यद्यपि पोशाक में बहुत बड़ा फर्क है मगर सूरत भैरोंसिंह की सी मालूम पड़ती है !

इन्द्रजीत०। मेरा भी यही खयाल है, आओ उसके पास चल कर देखें।

आनन्द०। चलियें।

इस बाग के बीचोबीच में एक कदम्ब का बहुत बड़ा पेड़ था जिसके नीचे एक आदमी गाल पर हाथ रक्खे बैठा हुआ कुछ सोच रहा था। उसी को देख कर दोनों कुमार चौंके थे और उस पर भैरोंसिंह के होने का शक हुआ था। जब दोनों भाई उसके पास पहुंचे तो शक जाता रहा और अच्छी तरह पहिचान कर इन्द्रजीतसिंह

ने पुकारा और कहा, "क्यों यार भैरोसिंह, तुम यहां कैसे आ पहुंचे?"

उस आदमी ने सर उठा कर ताज्जुब से दोनों कुमारों की तरफ देखा तब हलकी आवाज में जवाब दिया, "तुम दोनों कौन हो? मैं तो सात वर्ष यहां रहता हूं मगर आज तक किसी ने भी मुझसे यह न पूछा कि 'तुम यहां कैसे आ पहुंचे'?"

आनन्द०। कुछ पागल तो नहीं हो गये हो?

इन्द्र०। क्योंकि तिलिस्म की हवा बड़े बड़े चालाकों और ऐयारों को पागल बना देती है!

भैरो०। (शायद वह भैरोसिंह ही हो) कदाचित ऐसा ही हो मगर मुझे आज तक किसी ने यह भी नहीं कहा कि तू पागल हो गया है! मेरी स्त्री भी यहां रहती है, वह भी मुझे बुद्धिमान ही समझती है।

आनन्द०। (मुस्कुरा कर) तुम्हारी स्त्री कहां है? उसे मेरे सामने बुलाओ, मैं उससे पूछूंगा कि वह तुम्हें पागल समझती है या नहीं।

भैरो०। वाह वाह, तुम्हारे कहने से मैं अपनी स्त्री को तुम्हारे सामने बुला लूं! कहीं तुम उस पर आशिक हो जाओ या वही तुम पर मोहित हो जाय तो क्या हो?

इन्द्रजीत०। (हंस कर) वह भले ही मुझ पर आशिक हो जाय मगर मैं वादा करता हूं कि उस पर मोहित न होऊंगा।

भैरो०। सम्भव है कि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूं मगर उसकी नौजवानी मुझे उस पर विश्वास नहीं करने देती। अच्छा ठहरो मैं उसे बुलाता हूं। अरी ए री मेरी नौजवान स्त्री भोली ई....ई....ई....!!

एक तरफ से आवाज आई, "मैं आप ही चली आ रही हूं तुम क्यों चिल्ला रहे हो? कम्बख्त को जब देखो 'भोली भोली' करके चिल्लाया करता है!"

भैरो०। देखो कम्बख्त को! साठ घड़ी में एक पल भी सीधी तरह से बात नहीं करती। खैर नौजवान औरतें ऐसी हुआ ही करती हैं!!

इतने में दोनों कुमारों ने देखा कि बाईं तरफ से एक नब्बे वर्ष की बुढ़िया छड़ी टेकती धीरे धीरे चली आ रही है जिसे देखते ही भैरोसिंह उठा और यह कहता हुआ उसकी तरफ बढ़ा, "आओ मेरी प्यारी भोली। तुम्हारी नौजवानी तुम्हें अकड़ कर चलने नहीं देती तो मैं अपने हाथों का सहारा देने के लिए तैयार हूं।"

भैरोसिंह ने बुढ़िया को हाथ का सहारा देकर अपने पास ला बैठाया और आ

भी उसी जगह बैठ कर बोला, "मेरी प्यारी भोली, देखो ये दो नये आदमी आज यहां आये हैं जो मुझे पागल बताते हैं। तू ही बता कि क्या मैं पागल हूं?"

बुढ़िया०। राम राम, ऐसा भी कभी हो सकता है ? मैं अपनी नौजवानी की कसम खा कर कहती हूं कि तुम्हारे ऐसे बुद्धिमान बुड्ढे को पागल कहने वाला स्वयं पागल है ! (दोनों कुमारों की तरफ देख कर) ये दोनों उजड्ड यहां कैसे आ पहुंचे ? क्या किसी ने इन्हें रोका नहीं ?

भैरो०। मैंने इनसे अभी कुछ भी नहीं पूछा कि ये कौन हैं और यहां कैसे आ पहुंचे क्योंकि मैं तुम्हारी मुहब्बत में डूबा हुआ तरह तरह की बातें सोच रहा था, अब तुम आई हो तो जो कुछ पूछना हो स्वयं पूछ लो।

बुढ़िया०। (कुमारों से) तुम दोनों कौन हो ?

भैरो०। (कुमारों से) बताओ बताओ, सोचते क्या हो ? आदमी हो, जिन्न हो, भूत हो, प्रेत हो, कौन हो, कहते क्यों नहीं ! क्या तुम देखते नहीं कि मेरी नौजवान स्त्री को तुमसे बात करने में कितना कष्ट हो रहा है ?

भैरोसिंह और उस बुढ़िया की बातचीत और अवस्था पर दोनों कुमारों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और कुछ सोचने बाद इन्द्रजीतसिंह ने भैरोसिंहसे कहा, "अब मुझे निश्चय हो गया कि जरूर तुम्हें किसी ने इस तिलिस्म में ला फंसाया है और कोई ऐसी चीज खिलाई या पिलाई है कि जिससे तुम पागल हो गए हो, ताज्जुब नहीं कि यह सब बदमाशी इसी बुढ़िया की हो, अब अगर तुम होश में न आओगे तो मैं तुम्हें मार पीट कर होश में लाऊंगा।" इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह की तरफ बढ़े, मगर उसी समय बुढ़ियाने यह कह कर चिल्लाना शुरू किया, "दौड़ियो दौड़ियो, हाय रे, मारा रे, मरे रे,चोर चोर, डाकू डाकू, दौड़ो दौड़ो, ले गया, ले गया, ले गया !"

बुढ़िया चिल्लाती रही मगर कुमार ने उसकी एक भी न सुनी और भैरोसिंह का हाथ पकड़ के अपनी तरफ खैंच ही लिया, मगर बुढ़िया का चिल्लाना भी व्यर्थ न गया। उसी समय चार पांच खूबसूरत लड़के दौड़ते हुए वहां आ पहुंचे जिन्होंने दोनों कुमारो को चारो तरफ से घेर लिया। उन लड़कों के गले में से छोटी छोटी झोलियां लटक रही थीं और उनमें आटे की तरह की कोई चीज भरी हुई थी। आने के साथ ही इन लड़कों ने अपनी झोली में से वह आटा निकाल निकाल कर दोनों कुमारों की तरफ फेंकना शुरू किया।

निःसन्देह उस बुकनी में तेज बेहोशी का असर था जिसने दोनों कुमारों को

बात की बात में बेहोश कर दिया और दोनों चक्कर खाकर जमीन पर लेट गये जब आंख खुली तो दोनों ने अपने को एक सजे सजाये कमरे में फर्श के ऊ पड़े पाया।

चौदहवां बयान

जिस कमरे में दोनों कुमारों की बेहोशी दूर हो जाने के कारण आंख खु थी वह लम्बाई में बीस और चौड़ाई में पन्द्रह गज से कम न था। इस कमरे और सजावट कुछ विचित्र ढंग की थी और दीवारों में भी एक तरह का अनूठापन छोटे रोशनी के शीशों (हांडी और कन्दीलो) की जगह उसमें दो दो हाथ लम्बी तरो तरह की खूबसूरत पुतलियां लटक रही थीं और दीवारगीरो की जगह पचा रफ किस्म के जानवरो के चेहरे दीवारो में लगे हुए थे। दीवारें इस कमरे की ल दार बनी हुई थीं और उन पर तरह तरह की चित्रकारी की हुई थी। ऊपर और तरफ छत से कुछ नीचे हट कर चारो तरफ छोटी छोटी खिड़कियां थीं जिन जान पड़ता था कि ऊपर की तरफ कोई गुलामगर्दिश या मकान है मगर इस स सब खिड़कियां बन्द थीं और इस कमरे में से कोई रास्ता ऊपर जाने का और दिखाई देता था।

कुंअर आनन्दसिंहने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "भैया, वह बुढ़िया तो अजब आ की पुड़िया मालूम होती है। और उन लड़कों की तेजी भी भूलने योग्य नहीं है।

इन्द्रजीत०। वेशक ऐसा ही है! ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिये कि उन्हों हमलोगों को जीता छोड़ दिया। मगर हमें भैरोसिंह की बातों पर आश्चर्य मालू होता है! क्या हम उसे वास्तव में कोई ऐयार समझें?

आनन्दसिंह०। यदि वह ऐयार होता तो निःसन्देह हमलोगों को धोखा दे के लिये भैरोसिंह बना होता और साथ ही इसके पौशाक भी वैसी ही रखता जै भैरोसिंह पहिरा करता है, इसके सिवाय वह स्वयं अपने को भैरोसिंह प्रकट कर हमलोगों का साथी बनता, ऐसा न कहता कि मैं भैरोसिंह नहीं हूं। मगर उस नौजवान औरत (बुढ़िया) के विषय में:....

इन्द्रजीत०। उस बुढ़िया की बात जाने दो, अगर वह वास्तव में भैरोसिंह तो ताज्जुब नहीं कि मसखरापन करता है या पागल हो गया है और अगर पागल हो गया है तो निःसंदेह उस बुढ़िया की बदौलत जो उसको आंखों में अ तक नौजवान बनी हुई है।

आनन्द०। उस बुढ़िया को जिस तरह हो गिरफ्तार करना चाहिए।

इन्द्रजीत० । मगर उसके पहिले अपने को बेहोशी से बचाने का बन्दोबस्त र लेना चाहिए क्योंकि लड़ाई दंगे से तो हम लोग डरते ही नहीं ।

आनन्द० । जी हां जरूर ऐसा करना चाहिए । दवा तो हम लोगों के पास ौजूद ही है और ईश्वर की कृपा से कमरे का दर्वाजा भी खुला है ।

दोनों भाइयों ने कमर से एक डिबिया निकाली जिसमें किसी तरह की दवा थी ौर उसे खाने के बाद कमरे के बाहर निकला ही चाहते थे कि ऊपर वाले छोटे छोटे दर्वाजों में से एक दर्वाजा खुला और पुनः उसी नौजवान बुढ़िया के खसम रोसिंह की सूरत दिखाई दी । दोनों भाई रुक गये और आनन्दसिंह ने उसकी रफ देख कर कहा, "अब आप यहां क्यों आ पहुंचे ?"

भैरो० । आपके हालचाल की खबर लेने और साथ ही इसके अपनी नौजवान ौरत की तरफ से आपको ज्याफत का न्योता देने आया हूं । मालूम होता है क वह तुम लोगों पर आशिक हो गई है तभी खातिरदारी का बन्दोबस्त कर रही । उसने तुमलोगों के लिये कितनी अच्छी अच्छी चीजें खाने की तैयार की हैं ौर अभी तक बनाती ही जाती है ।

आनन्द० । (हंस कर) और उन चीजों में जहर कितना मिलाया है ?

भैरो० । केवल डेढ़ छटाक, मैं उम्मीद करता हूं, कि इतने से तुम लोगों की ान न जायगी ।

आनन्द० । आपकी इस कृपा के लिए मैं धन्यवाद देता हूं और आपसे बहुत ी प्रसन्न होकर आपको कुछ इनाम दिया चाहता हूं, आप मेहरबानी करके जरा हां आइये तो अच्छी बात है ।

भैरो०। बहुत अच्छा, इनाम लेने में देर करना भले आदमियों का काम नहीं है ।

इतना कह कर भैरोसिंह वहां से हट गया और थोड़ी ही देर बाद सदर दर्वाजे ी राह से कमरे के अन्दर आता हुआ दिखाई दिया । जब कुंअर आनन्दसिंह के ास आया तो बोला, "लाइये क्या इनाम देते हैं ।"

आनन्दसिंह ने फुर्ती से तिलिस्मी खंजर उसके हाथ पर रख दिया जिसके सर से वह एक दफे कांपा और बेहोश होकर जमीन पर लम्बा हो गया । तब ानन्दसिंह ने अपने भाई से कहा, "अब इसे अच्छी तरह जांच कर देख लेना ाहिये कि यह भैरोसिंह ही है या कोई और ?"

इन्द्रजीत० । हां अब बखूबी पता लग जायगा, पहिले इसके दाहिने बगल ाला मसा देखो ।

आनन्द०। (भैरोसिंह की बगल देख कर) देखिये मसा मौजूद है। अब वाला दाग देखिये—लीजिए यह भी मौजूद है। इसके भैरोसिंह होने में अब तो किसी तरह का सन्देह नहीं रहा।

इन्द्रजीत०। अब सन्देह हो ही नहीं सकता, मैंने इस मसे को अच्छी खैंच कर भी देख लिया, अच्छा इसे होश में लाना चाहिये।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने अपना वह हाथ जिसमें तिलिस्मी खं जोड़ की अंगूठी थी भैरोसिंह के बदन पर फेरा। भैरोसिंह तुरन्त होश में उठ बैठा और ताज्जुब से चारो तरफ देखता हुआ बोला, "वाह वाह! मैं क्योंकर आ गया और आप लोगों ने मुझे कहां पाया?"

आनन्द०। मालूम होता है अब आपका पागलपन उतर गया?

भैरो०। (ताज्जुब से) पागलपन कैसा?

इन्द्रजीत०। इसके पहिले तुम किस अवस्था में थे और क्या करते थे याद है?

भैरो०। मुझे कुछ भी याद नहीं?

इन्द्रजीत०। अच्छा बताओ कि तुम इस तिलिस्म के अन्दर कैसे आ प

भैरो०। केवल मुझी को नहीं बल्कि किशोरी कामिनी कमला लक्ष्मी लाडिली कमलिनी और इन्दिरा को भी राजा गोपालसिंह ने इस तिलिस्म अन्दर पहुंचा दिया है, बल्कि मुझे तो सबके आखिर में पहुंचाया है। आपके को एक चीठी भी दी थी मगर अफसोस! आपसे मुलाकात होने न पाई और अवस्था बदल गई।

इन्द्रजीत०। वह चीठी कहां है?

भैरो०। (इधर उधर देख कर) जब मेरे बटुए ही का पता नहीं तो ची बारे में क्या कह सकता हूं?

आनन्द०। मगर यह तो तुम्हें याद होगा कि उस चीठी में क्या लिखा

भैरो०। क्यों नहीं, मेरे सामने ही तो वह लिखी गई थी। उसमें कोई बात न थी, केवल इतना ही लिखा था कि 'उस गुप्त स्थान से किशोरी का इत्यादि को लेकर मैं जमानिया जा रहा था मगर मायारानी की कुटिलता के अपने इरादे में बहुत कुछ उलट फेर करना पड़ा। जब यह मालूम हुआ कि मा रानी तिलिस्मी बाग के अन्दर घुस गई है तब लाचार सब औरतों को तिलि के अन्दर पहुंचाता हूं। बाकी हाल भैरोसिंह से सुन लेना'—बस इतना लिखा

मालूम होता है कि पहिले का हाल वह आपसे कह चुके हैं।

इन्द्रजीत०। हां पहले का बहुत कुछ हाल वह हमसे कह चुके हैं।

भैरो०। क्या यह भी कहा था कि कृष्णाजिन्न का रूप भी उन्हीं कृपानिधान ने धारण किया था ?

आनन्द०। नहीं सो तो साफ नहीं कहा था मगर उनकी बातों से हम लोग कुछ कुछ समझ गये थे कि कृष्णाजिन्न वही बने थे, खैर अब तुम खुलासा बताओ कि क्या हुआ ?

भैरोसिंह ने वह सब हाल दोनों कुमारों से कहा जो ऊपर के बयानों में लिखा जा चुका है और जिसमें का बहुत कुछ हाल राजा गोपालसिंह की जुबानी दोनों कुमार सुन चुके थे। इसके बाद भैरोसिंह ने कहा—"जब राजा गोपालसिंह को मालूम हो गया कि मायारानी बहुत से आदमियों को लेकर तिलिस्मी बाग के अन्दर जा छिपी है तब वे एक गुप्त राह से छिप कर सब औरतों को साथ लिए हुए उस मकान में पहुंचे जिसमें से कमन्द के सहारे सभों को लटकाते हुए शायद आपने देखा होगा।"

इन्द्रजीत०। हां देखा था, तो क्या उस समय वे औरतें बेहोश थीं ?

भैरो०। जी हां, न मालूम किस खयाल से उन्होंने सब औरतों को बेहोश कर दिया था मगर इसके पहिले यह कह दिया था कि तुम्हें तिलिस्म के अन्दर पहुंचा देते हैं जहां दोनों कुमार हैं, यद्यपि वहां पहुंचना बहुत कठिन था मगर अब एक दीवार वाले तिलिस्म को दोनों कुमार तोड़ चुके हैं इसलिए वहां तक पहुंचा देने में कोई कठिनता न रही !

इन्द्र०। तो क्या तुम भी उन औरतों के साथ ही उस बाग में उतारे गये थे ?

भैरो०। पहिले तो उन्होंने इन्द्रदेव की बहुत सी बातें समझाई बुझाई जिन्हें मैं समझ न सका। इसके बाद इन्द्रदेव को तो गोपालसिंह बनाया और इन्द्रदेव के एक ऐयार को भैरोसिंह बना कर दोनों को खास बाग के अन्दर भेजा। इस काम से छुट्टी पाकर सब औरतों को और मुझे साथ लिए उस मकान में आये। सभों को तो उस कमरे में बैठा दिया जिसमें से कमंद के सहारे सबको लटकाया था और मुझे उनकी हिफाजत के लिए छोड़ने बाद कमलिनी को साथ लिए हुए कहीं चले गये और घन्टे भर के बाद वापस आये। उस समय कमलिनी के हाथ में एक छोटी सी किताब थी जिसे उन्होंने कई दफे तिलिस्मी किताब के नाम से सम्बोधन किया था। इसके बाद उन्हों ने सभी को बेहोश करके नीचे लटका दिया। इस

काम से छुट्टी पाकर उन्हों ने आपके नाम की दो चीठियां लिखीं, एक
कमरे में रक्खी और दूसरी चीठी जिसका मैं अभी जिक्र कर चुका हूं मुझे
कहा कि 'जब कुमारों से तुम्हारी मुलाकात हो तो यह चीठी उन्हें देना
काम कमलिनी की आज्ञानुसार करना, यहां तक कि यदि कमलिनी तुम्हें
हो जाने पर भी कुमारों से मिलने के लिए मना करे तो तुम कदापि न
इत्यादि कह कर मुझे नीचे उतर जाने के लिए कहा। (कुछ रुक कर) नहीं
मैं भूलता हूं, मुझे उन्होंने पहिले ही नीचे उतार दिया था क्योंकि समों
मैं ही ने नीचे से थामी थी, समों को नीचे उतार देने के बाद जब मैं उनकी
नुसार पुनः ऊपर गया तब उन्हों ने ये सब बातें मुझे समझाईं और आप
देव भी वहां आ पहुंचे जो गोपालसिंह की सूरत बने हुए थे। इन्द्रदेव ने
गोपालसिंह से कुछ कहना चाहा मगर उन्होंने रोक दिया और मुझसे कहा
तुम भी कमंद के सहारे नीचे उतर जाओ और इन्द्रदेव के आने का इन्तजार
मैं उनकी आज्ञानुसार नीचे उतर आया। मैं अन्दाज से कहता हूं कि उन
में आप या छोटे कुमार छिपे थे और आप ही दोनों में से किसी ने मेरे
साथ तिलिस्मी खंजर लगाया था जिससे मैं बेहोश हो गया।

इन्द्र०। हां ठीक है ऐसा ही हुआ था।

भैरो०। फिर तो मैं बेहोश हो ही गया, मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि
देव जो गोपालसिंह की सूरत में थे कब नीचे आये या क्या हुआ।

आनन्द०। ठीक है, वह भी थोड़ी ही देर बाद नीचे उतरे और तुम्हारी
से वह भी बेहोश किए गए। (इन्द्रजीतसिंह से) अब मालूम हुआ कि इन्द्र
के कहे मुताबिक मैं आपको बुलाने के लिए ऊपर गया था।

भैरो०। हां जब हम लोगों को उन्हों ने चैतन्य किया तो कहा था कि आप
कुमार ऊपर गए हैं। आखिर इन्द्रदेव ने कमन्द खींच ली और हम लोगों को
हुए दूसरी दीवार की तरफ गये। वहां कमलिनी ने जमीन खोद कर एक
पैदा किया। ताज्जुब नहीं कि उसी दर्वाजे की राह से आप लोग भी यहां
आये हों, और अगर ऐसा है तो उस कोठरी में भी अवश्य पहुंचे होंगे
जमीन लोगों को बेहोश करके तिलिस्म के अन्दर पहुंचा देती है!

आनन्द०। हमलोग भी उसी रास्ते से यहां तक आये हैं, अच्छा तो क्या
देव भी तुम लोगों के साथ यहां आये हैं?

भैरो०। जी नहीं वह तो ऊपर ही रह गये, बोले कि मुझे तिलिस्म के

जाने की आज्ञा नहीं है, तुम लोग जाओ मैं इसी बाग में छिप कर रहूंगा, जब दोनों कुमार यहां आ जायेंगे तब उनसे छिप कर पुनः कमन्द के सहारे ऊपर जाऊंगा और राजा गोपालसिंह के साथ मिल कर काम करूंगा।

आनन्द०। (इन्द्रजीतसिंह से) तब ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ने ही सयूं को बेहोश किया हो ?

इन्द्र०। जरूर ऐसा ही है, (भैरो से) अच्छा तब क्या हुआ !

भैरो०। नीचे उतर कर जब हम लोग उस कोठरी में पहुंचे जहां की जमीन थोड़ी ही देर में लोगों को बेहोश कर देती है तब नियमानुसार सभों के साथ मैं भी बेहोश हो गया। उस समय से इस समय तक का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं है, मैं बिल्कुल नहीं जानता कि उसके बाद क्या हुआ और मैं किस अवस्था में होकर क्यों इस तरह अपने को यहां पाता हूं।

पन्द्रहवां बयान

भैरोसिंह की बातें सुन कर दोनों कुमार देर तक तरह तरह की बातें सोचते रहे और तब उन्होंने अपना किस्सा भैरोसिंह से कह सुनाया। बुढ़िया वाली बात सुन कर भैरोसिंह हंस पड़ा और बोला, "मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं है कि वह बुढ़िया कौन और कहां है, यदि अब मैं उसे पाऊं तो जरूर उसकी बदमाशी का मजा उसे चखाऊं। मगर अफसोस तो यह है कि मेरा ऐयारी का बटुआ मेरे पास नहीं है जिसमें बड़ी बड़ी अनमोल चीजें थीं। हाय, वे तिलिस्मी फूल भी उसी बटुए में थे जिसके देने से मेरा बाप भी मुझे टल्ली बताया चाहता था मगर महाराज ने दिलवा दिया। इस समय बटुए का न होना मेरे लिए बड़ा दुखदाई है क्योंकि आप कह रहे हैं कि 'उन लड़कों ने एक तरह की बुकनी उड़ा कर हमें बेहोश कर दिया'। कहिए अब मैं क्योंकर अपने दिल का हौसला निकाल सकता हूं ?"

इन्द्र०। निःसन्देह उस बटुए का जाना बहुत ही बुरा हुआ ? वास्तव में उसमें बड़ी अनूठी चीजें थीं, मगर इस समय उनके लिए अफसोस करना फजूल है हां इस समय मैं दो चीजों से तुम्हारी मदद कर सकता हूं।

भैरो०। वह क्या ?

इन्द्र०। एक तो वह दवा हम दोनों के पास मौजूद है जिसके खाने से बेहोशी असर नहीं करती और वह मैं तुम्हें खिला सकता हूं, दूसरे हम दोनों के पास दो दो हर्बे मौजूद हैं बल्कि यदि तुम चाहो तो तिलिस्मी खंजर भी दे सकता हूं।

भैरो० । जी नहीं तिलिस्मी खंजर मैं न लूंगा क्योंकि आपके पास उनका तब तक बहुत ही जरूरी है जब तक आप तिलिस्म तोड़ने का काम समाप्त न कर लें । मुझे बस मामूली तलवार दे दीजिये, मैं अपना काम उसी से चला लूंगा, वह दवा खिला कर मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं उस बुढ़िया के पास से अपना निकालने का उद्योग करूं ।

दोनों कुमारों के पास तिलिस्मी खंजर के अतिरिक्त एक एक तलवार थी । इन्द्रजीतसिंह ने अपनी तलवार भैरोसिंह को दे और डिबिया में से नि कर थोड़ी सी दवा भी खिलाने बाद कहा, "मैं तुमसे कह चुका हूं कि जब हम भाई इस बाग में पहुंचे तो चूहेदानी के पल्ले की तरह वह दर्वाजा बन्द हो जिस राह से हम दोनों आये थे और उस दर्वाजे पर लिखा हुआ था कि यह ति टूटने लायक नहीं है ।

भैरो० । हां आप कह चुके हैं ।

आनन्द० । (इन्द्रजीत से) भैया मुझे तो उस लिखावट पर विश्वास नहीं

इन्द्रजीत० । यही मैं भी कहने को था क्योंकि रिक्तगन्थ की बातों से ति का यह हिस्सा भी टूटने योग्य जान पड़ता है, (भैरोसिंह से) इसी से मैं कहूंगा कि इस बाग में जरा समझ बूझ के घूमना ।

भैरो० । खैर इस समय तो मैं आपके साथ चलता हूं, चलिए बाहर नि

आनन्द० । (भैरो से) तुम्हें याद है कि तुम ऊपर से उतर कर इस किस राह से आए थे ?

भैरो० । मुझे कुछ भी याद नहीं ।

इतना कह कर भैरोसिंह उठ खड़ा हुआ और दोनों कुमार भी उठ कर के बाहर निकलने के लिए तैयार हो गये ।

सोलहवां बयान

तीनों आदमी कमरे के बाहर निकल कर सहन में आये, उस समय कुमा मालूम हुआ कि यह कमरा बाग के पूरब तरफ वाली इमारत के सब से हिस्से में बना हुआ है और इस कमरे के ऊपर और भी दो मंजिल की इमा मगर वे दोनों मंजिलें बहुत छोटी थीं और उनके साथ ही दोनों तरफ इमार सिलसिला बराबर चल गया था । दिन चढ़ आया था और नित्यकर्म न कि के कारण कुमारों की तबीयत कुछ भारी हो रही थी ।

जिस तरह इस तिलिस्म में पहिले और दूसरे बाग के अन्दर नहर की बदौलत पानी की कमी न थी उसी तरह इस बाग में भी नहर का पानी छोटी नालियों के जरिये चारो ओर घूमता हुआ आता था और दस पांच मेवों के पेड़ भी थे जिनमें बहुतायत के साथ मेवे लगे हुए थे।

दोनों कुमार और भैरोसिंह टहलते हुए बाग के बीचोबीच से उसी कदम्ब के पेड़ तले आए जिसके नीचे पहिले पहिल भैरोसिंह के दर्शन हुए थे। बातचीत करने के बाद तीनों ने जरूरी कामों से छुट्टी पा हाथ मुंह धोकर स्नान किया और संध्योपासन से छुट्टी पा कर के बाग के मेवे और नहर के जल से संतोष करने बाद बैठ कर यों बातचीत करने लगे :—

इन्द्रजीत०। मैं उम्मीद करता हूं कि कमलिनी किशोरी और कामिनी वगैरह से इसी बाग में मुलाकात होगी।

आनन्द०। निःसन्देह ऐसा ही है, इस बाग में अच्छी तरह घूमना और यहां की हर एक बातों का पूरा पूरा पता लगाना हम लोगों के लिए जरूरी है।

भैरो०। मेरा दिल भी यही गवाही देता है कि वे सब जरूर इसी बाग में होंगी मगर कहीं ऐसा न हुआ हो कि मेरी तरह से उन लोगों का दिमाग भी किसी कारण विशेष से बिगड़ गया हो।

इन्द्रजीत०। कोई ताज्जुब नहीं अगर ऐसा ही हुआ हो मगर तुम्हारी जुबानी मैं सुन चुका हूं कि राजा गोपालसिंह ने कमलिनी को बहुत कुछ समझा बुझा कर एक तिलिस्मी किताब भी दी है।

भैरो०। हां बेशक मैं कह चुका हूं और ठीक कह चुका हूं।

इन्द्रजीत०। तो यह भी उम्मीद कर सकता हूं कि कमलिनी को इस तिलिस्म का कुछ हाल मालूम हो गया हो और वह किसी के फंदे में न फंसे।

भैरो०। इस तिलिस्म में और है ही कौन जो उन लोगों के साथ दगा करेगा

आनन्द०। बहुत ठीक ! शायद आप अपनी नौजवान स्त्री और उसके हिमा-यती लड़कों को बिल्कुल ही भूल गए, या हम लोगों की जुबानी सब हाल सुन कर भी आपको उसका कुछ खयाल न रहा !

भैरो०। (मुस्कुरा कर) आपका कहना ठीक है मगर उन सभों को....

इतना कह कर भैरोसिंह चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। दोनों कुमार भी किसी बात पर गौर करने लगे और कुछ देर बाद भैरोसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से कहा—

भैरो० । आपको याद होगा कि लड़कपन में एक दफे मैंने पागलपन की नक़ की थी ।

इन्द्र० । हां याद है, तो क्या आज भी तुम जान बूझ कर पागल बने हुए थे

भैरो० । नहीं नहीं, मेरे कहने का मतलब यह नहीं बल्कि मैं यह कहता कि इस समय भी उसी तरह का पागल बन के शायद कोई काम निकाल सकूं।

आनन्द० । हां ठीक तो है, आप पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को बुल इए जिस ढंग से मैं बताता हूं ।

कुमार के बताये हुए ढंग से भैरोसिंह ने पागल बन के अपनी नौजवान स्त्री को कई दफे बुलाया मगर उसका नतीजा कुछ न निकला, न तो कोई उसके पा आया और न किसी ने उसकी बात का जवाब ही दिया, आखिर इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "बस करो, उसे मालूम हो गया कि तुम्हारा पागलपन जाता रहा, अब ह लोगों को फंसाने के लिए वह जरूर कोई दूसरा ही ढंग लावेगी ।"

आखिर भैरोसिंह चुप हो रहे और थोड़ी देर बाद तीनों आदमी इधर उधर का तमाशा देखने के लिए यहां से रवाना हुए । इस समय दिन बहुत कम बाकी था

तीनों आदमी बाग के पश्चिम तरफ गये जिधर संगमर्मर की एक बारहदरी थी । उसके दोनों तरफ दो इमारतें और थीं जिनके दर्वाजे बन्द रहने के कारण यह नहीं जाना जाता था कि उसके अन्दर क्या है मगर बारहदरी खुले ढंग की बनी हुई थी अर्थात् उसके पीछे की तरफ दीवानखाना और आगे की तरफ केवल तेरह खम्भे लगे हुए थे जिनमें दर्वाजा चढ़ाने की जगह न थी ।

इस बारहदरी के मध्य में एक सुन्दर चबूतरा बना हुआ था जिस पर कम से कम पन्द्रह आदमी बखूबी बैठ सकते थे । उस चबूतरे के ऊपर बीचोबीच में लोहे का चौखूटा तख्ता था जिसमें उठाने के लिए कड़ी लगी हुई थी और चबूतरे के सामने की दीवार में एक छोटा सा दर्वाजा था जो इस समय खुला हुआ था और उसके अन्दर दो चार हाथ के बाद अंधकार सा जान पड़ता था । भैरोसिंह ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यदि आज्ञा हो तो इस छोटे से दर्वाजे के अन्दर जाकर देखूं कि इसमें क्या है ?"

इन्द्रजीत० । यह तिलिस्म का मुकाम है खिलवाड़ नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि तुम अन्दर जाओ और दर्वाजा बन्द हो जाय ! फिर तुम्हारी क्या हालत होगी सो तुम्हीं सोच लो ।

आनन्द० । पहिले यह तो देखो कि दर्वाजा लकड़ी का है या लोहे का ?

इन्द्रजीत० । भला तिलिस्म बनाने वाले इमारत के काम में लकड़ी क्यों लगाने लगे जिसके थोड़े ही दिन में बिगड़ जाने का खयाल होता है, मगर शक मिटाने के लिए यदि चाहो तो देख लो।

भैरो० । (उस दर्वाजे को अच्छी तरह जांच कर) बेशक यह लोहे का बना हुआ है। इसके अन्दर कोई भारी चीज डाल कर देखना चाहिये कि बन्द होता है या नहीं, यदि किसी आदमी के जाने से बंद हो जाता होगा तो मालूम हो जायगा।

आनन्द० । (चबूतरे की तरफ इशारा करके) पहिले इस तख्ते को उठा कर देखो कि इसके अन्दर क्या है !

"बहुत अच्छा" कह कर भैरोसिंह चबूतरे के ऊपर चढ़ गया और कड़ी में हाथ डाल के उस तख्ते को उठाने लगा। तख्ता किसी कब्जे या पेंच के सहारे उसमें जड़ा हुआ न था बल्कि चारो तरफ से अलग था इसलिए भैरोसिंह ने उसे उठा कर चबूतरे के नीचे रख दिया, इसके बाद झांक कर देखने से मालूम हुआ कि नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं।

भैरोसिंह ने नीचे उतरने के लिए आज्ञा मांगी मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह उसे रोक कर स्वयं नीचे उतर गये और भैरोसिंह तथा आनन्दसिंह को ऊपर मुस्तैद रहने के लिए ताकीद कर गये।

नीचे उतरने के लिए चक्करदार सीढ़ियां बनी हुई थीं और हर एक सीढ़ी के दोनों तरफ बनावटी पेड़ गेंदे के बने हुए थे जो सीढ़ी पर पैर रखने के साथ ही झुक जाते और पैर (या बोझ) हट जाने से पुनः ज्यों के त्यों खड़े हो जाते थे। इस तमाशे को देखते हुए इन्द्रजीतसिंह कई सीढ़ियां नीचे उतर गये और जब अंधेरे में पहुंचे तो एक बन्द दर्वाजा मिला जिसे उस समय कुमार ने कुछ खुला हुआ देखा था जब वहां तक पहुंचने में तीन चार सीढ़ियां बाकी थीं अर्थात् कुमार के देखते ही देखते वह दर्वाजा बन्द हो गया था।

कुमार को ताज्जुब मालूम हुआ और जब उद्योग करने पर भी दर्वाजा न खुला तो कुमार ऊपर की तरफ लौटे। तीन सीढ़ियां ऊपर चढ़ने बाद घूम कर देखा तो दर्वाजे को पुनः कुछ खुला हुआ देखा मगर जब नीचे उतरे तो फिर बन्द हो गया।

इन्द्रजीतसिंह को विश्वास हो गया कि इस दर्वाजे का खुलना और बन्द होना भी इन्हीं सीढ़ियों के आधीन है। आखिर लाचार होकर कुछ सोचते विचारते चले आए। ऊपर आते समय भी सीढ़ियों के दोनों तरफ वाले पेड़ों की वही दशा हुई अर्थात् जिस सीढ़ी पर पैर रक्खा जाता उसके दोनों तरफ वाले पेड़ झुक जाते और

जब उस पर से पैर हट जाता तो फिर ज्यों के त्यों हो जाते।

ऊपर आकर इन्द्रजीतसिंह ने कुल हाल आनन्दसिंह और भैरोसिंह से कह और इस बात पर विचार करने की आज्ञा दी कि 'हम नीचे उतर कर किस उस दर्वाजे को खुला हुआ पा सकते हैं'।

थोड़ी देर के बाद भैरोसिंह ने कहा, "मैं पेड़ों का मतलब समझ गया, आप मुझे अपने साथ ले चलें तो मैं ऐसी तर्कीब कर सकता हूं कि वह द आपको खुला मिले।"

इस समय संध्या हो चुकी थी इस लिये सभों की राय नीचे उतरने हुई। कुमार की आज्ञानुसार भैरोसिंह ने उस गड़हे का मुंह ज्यों का त्यों ढांक और उस बारहदरी में निश्चिन्ती के साथ बैठ बातचीत करने लगे क्योंकि की रात इसी बारहदरी में होशियारी के साथ रह कर बिताने का निश्चय लिया था और भैरोसिंह के जिद करने से यह बात भी तै पाई थी कि इन्द्रजीत आराम के साथ सोएं और भैरोसिंह तथा आनन्दसिंह बारी बारी से जाग पहरा दें।

सत्रहवां बयान

आधी रात का समय है, तिलिस्मी बाग में चारो तरफ सन्नाटा छाया है, इमारत के ऊपरी हिस्से पर चन्द्रमा की कुछ थोड़ी सी चांदनी जरा मार रही है बाकी सब तरफ अंधकार छाया हुआ है। कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह सोए हुए हैं और भैरोसिंह एक खम्मे के सहारे बैठे हुए बारहदरी सामने वाली इमारत को देख रहे हैं।

बारहदरी के सामने वाली इमारत दो मंजिली थी और उसकी लम्बाई बहुत ज्यादे मगर चौड़ाई बहुत कम थी। इमारत के ऊपर वाली मंजिल में की तरफ छोटे छोटे दर्वाजे एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर एक ही के बने हुए थे। दर्वाजों के बीच में केवल एक खम्मे का फासला था और वे सब भी एक ही ढंग के नक्काशीदार बने हुए थे जिसकी खूबी इस समय कु मालूम नहीं पड़ती थी मगर एक दर्वाजे के अन्दर यकायक कुछ रोशनी की पड़ जाने के कारण भैरोसिंह एक टक उसी तरफ देख रहे थे।

थोड़ी ही देर बाद ऊपर वाली मंजिल का एक दर्वाजा खुला और पीठ गठरी लादे हुए एक आदमी बाईं तरफ से दाहिनी तरफ जाता हुआ दिखाई

भैरोसिंह चैतन्य होकर सम्हल कर बैठ गये और बड़ी दिलचस्पी के साथ ध्यान देकर उस तरफ देखने लगे। कुछ देर बाद दर्वाजा बन्द हो गया और उसके दाहिनी तरफ चार दर्वाजे छोड़ कर पांचवां दर्वाजा खुला जिसके अन्दर हाथ में चिराग लिए हुए एक और आदमी इस तरह खड़ा दिखाई दिया जैसे किसी के आने का इन्तजार कर रहा हो। थोड़ी देर में चार पांच औरतें मिल कर किसी लटकते बोझ को लिए हुए उसी आदमी के पास से निकल गईं जिसके हाथ में चिराग था और उन्हीं के पीछे पीछे वह आदमी भी चिराग लिए चला गया। दर्वाजा बन्द नहीं हुआ मगर उसके अन्दर अंधकार हो गया।

भैरोसिंह ने यह समझ कर कि शायद हम और भी कुछ तमाशा देखें दोनों कुमारों को चैतन्य कर दिया और जो कुछ देखा था बयान किया।

हम कह आये हैं कि इस बारहदरी की पिछली दीवार के नीचे बीचो बीच में अर्थात् चबूतरे के सामने एक छोटा दर्वाजा था जिसके अन्दर भैरोसिंह ने जाने का इरादा किया था। इस समय यकायक उसी दर्वाजे के अन्दर चिराग की रोशनी देख कर भैरोसिंह और दोनों कुमार चौंक पड़े और उठ कर दर्वाजे के सामने जा झांक कर देखने लगे। मालूम हुआ कि इस छोटे से दर्वाजे के अन्दर एक बहुत बड़ा कमरा है जिसके दोनों तरफ की लोहे वाली शहतीरें (बड़ी धरनें) बड़े बड़े चौखूटे खम्भों के ऊपर हैं और उसकी छत लदाव की बनी हुई है। उस कमरे के दोनों तरफ के खम्भों के बाद भी एक दालान है और दालान की दीवारों में कई बड़े दर्वाजे बने हैं जिनमें कुछ खुले और कुछ बन्द हैं।

दोनों कुमारों और भैरोसिंह ने देखा कि उसी कमरे के मध्य में एक आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी थी, हाथ में चिराग लिए हुए खड़ा छत की तरफ देख रहा है। कुछ देर तक देखने बाद वह आदमी एक खम्भे के सहारे चिराग रख कर पीछे की तरफ लौट गया।

भैरोसिंह और दोनों कुमार आड़ में खड़े होकर सब तमाशा देख रहे थे और जब वह आदमी चिराग रख कर हट गया तब भी यह सोच कर खड़े ही रहे कि 'जब चिराग रख कर गया है तो पुनः आवेहीगा'।

उस नकाबपोश को चिराग रख कर गये हुए दस बारह पल से ज्यादे न बीते होंगे कि दूसरी तरफ वाले दर्वाजे के अन्दर से कोई दूसरा आदमी निकल कर तेजी के साथ इसी कमरे के मध्य में आ पहुंचा और हाथ की हवा देकर उस चिराग को बुझा दिया जिसे पहिला आदमी एक खम्भे के सहारे रख कर चला गया था,

और इसके बाद कमरे में अंधकार हो जाने के कारण कुछ मालूम न हुआ दूसरा आदमी चिराग बुझा कर चला गया या उसी जगह कहीं आड़ छिप रहा ।

यह दूसरा आदमी भी जिसने कमरे में आकर चिराग बुझा दिया चेहरे पर स्याह नकाब डाले हुए था, केवल नकाब ही नहीं, उसका तमा भी स्याह कपड़े से ढंका हुआ था और कद में छोटा रहने के कारण इस नहीं लग सकता था कि वह मर्द है या औरत ।

थोड़ी ही देर बाद दोनों कुमार और भैरोसिंह के कान में किसी के बो आवाज सुनाई दी जैसे किसी ने उस अन्धेरे में आकर ताज्जुब के साथ कहा 'हैं ! चिराग कौन बुझा गया ?'

इसके जवाब में किसी ने कहा, "अपने को सम्हाले रहो और जल्दी जाओ, कोई दुश्मन न आ पहुंचा हो ।"

इसके बाद चौथाई घड़ी तक न तो किसी तरह की आवाज ही सु और न कोई दिखाई ही पड़ा मगर दोनों कुमार और भैरोसिंह अपनी न हिले ।

आधी घड़ी के बाद वह आदमी पुनः हाथ में चिराग लिए हुए आया जो खम्भे के सहारे चिराग रख कर चला गया था । इस आदमी का बदन गठी फुर्तीला मालूम पड़ता था । इसका पायजामा अंगा पटूका मुंड़ासा और ढीले कपड़े का बना हुआ था । अबकी दफे वह बायें हाथ में चिराग और हाथ में नंगी तलवार लिए हुए था, शायद उसे पहले दुश्मन का ख्याल था चिराग बुझा दिया था इसलिये उसने चिराग जमीन पर रख दिया और लिए चारो तरफ घूम घूम कर किसी को ढूंढ़ने लगा । वह आदमी जिसने बुझा दिया था एक खम्भे की आड़ में छिपा हुआ था । जब पीले कपड़े वा खम्भे के पास पहुंचा तो उस आदमी पर निगाह पड़ी, उसी समय वह न भी सम्हल गया और तलवार खैंच कर सामने खड़ा हो गया । पीले कप ने तलवार वाला हाथ ऊंचा करके पूछा, "सच बता तू कौन है ?"

इसके जवाब में स्याह नकाबपोश ने यह कहते हुए उस पर तलवार किया कि 'मेरा नाम इसी तलवार की धार पर लिखा हुआ है' ।

पीले कपड़े वाले ने बड़ी चालाकी से दुश्मन का वार बचा कर अपना किया और इसके बाद दोनों में अच्छी तरह लड़ाई होने लगी ।

दोनों कुमार और भैरोसिंह लड़ाई के बड़े ही शौकीन थे इसलिये बड़ी चाह
ान देकर उन दोनों की लड़ाई देखने लगे। निःसन्देह दोनों नकाबपोश लड़ने
शियार और बहादुर थे, एक दूसरे के वार को बड़ी खूबी से बचाकर अपना
करता था जिसे देख इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "दोनों अच्छे हैं,
ा की रोशनी एक ही तरफ पड़ती है दूसरी तरफ सिवाय तलवार की चमक
र कोई सहारा वार बचाने के लिए नहीं हो सकता, ऐसे समय में इस खूबी
थ लड़ना मामूली काम नहीं है !"

इसी बीच यकायक स्याह नकाबपोश ने अपने हाथ की तलवार जमीन पर
ी और एक खम्भे की आड़ घूमता हुआ खंन्जर खींच और उसका कब्जा
र बोला, "अब तू अपने को किसी तरह नहीं बचा सकता।"

निःसन्देह वह तिलिस्मी खंजर था जिसकी चमक से उस कमरे में दिन की
उजाला हो गया। मगर पीले नकाबपोश ने भी उसका जवाब तिलिस्मी खंजर
दिया क्योंकि उसके पास भी तिलिस्मी खंजर मौजूद था। तिलिस्मी खंजरों
ड़ाई अभी पूरी तौर से होने भी न पाई थी कि एक तरफ से आवाज आई,
मकरंद, लेना जाने न पावे! अब मुझे मालूम हो गया कि भैरोसिंह के
स्मी खंजर और बटुए का चोर यही है, देखो इसकी कमर से वह बटुआ लटक
है, अगर तुम इस बटुए के मालिक बन जाओगे तो फिर इस दुनिया में तुम्हारा
ला करने वाला कोई भी न रहेगा क्योंकि यह तुम्हारे ही ऐसे ऐयारों के पास
योग्य है !"

यह एक ऐसी बात थी जिसने सबसे ज्यादे भैरोसिंह को चौंका ही नहीं दिया
बेचैन कर दिया। उसने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "बस आप कृपा करके
तिलिस्मी खंजर मुझे दीजिये, मैं स्वयं उसके पास जाकर अपनी चीज ले
क्योंकि यहां पर तिलिस्मी खंजर के बिना काम न चलेगा और यह मौका
थ से गंवा देने लायक नहीं है।

न्द्र०। हां बेशक ऐसा ही है, अच्छा चलो मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।

ानन्द०। और मैं ?

न्द्रजीत०। तुम इसी जगह खड़े रहो, दोनों भाइयों का एक साथ वहां चलना
हीं, अकेला मैं ही उन दोनों के लिये काफी हूं।

ानन्द०। फिर भैरोसिंह जा कर क्या करेंगे ? तिलिस्मी खंजर की चमक
ों आंखें खुली नहीं रह सकती।

इन्द्रजीत० । सो तो ठीक है ।

भैरो० । अजी आप इस समय ज्यादे सोच विचार न कीजिए ! आप खंजर मुझे दीजिये बस मैं निपट लूंगा ।

इन्द्रजीतसिंह ने खंजर जमीन पर रख दिया और उसके जोड़ की अंगू सिंह की उंगली में पहिरा देने बाद खंजर उठा लेने के लिए कहा । भैरो तिलिस्मी खंजर उठा लिया और उस छोटे दर्वाजे के अन्दर जाकर बोला," सिंह स्वयं आ पहुंचा !"

भैरोसिंह के अन्दर जाते ही दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया और कुमार ताज्जुब से एक दूसरे की तरफ देखने लगे ।

* सत्रहवां भाग समाप्त *

३१ वां संस्करण] १९७७ ई० [२२०

लहरी प्रेस, वाराणसी ।

* श्री *

चन्द्रकान्ता सन्तति

अठारहवां भाग

पहिला बयान

कह सकते हैं कि तारासिंह के हाथ में नानक का मुकदमा दे ही दिया गया। ाजा बीरेन्द्रसिंह ने तारासिंह को इस काम पर मुकर्रर किया था कि वह नानक ; घर जाय और उसकी चालचलन तथा उसके घर के सच्चे सच्चे हाल को तह- ीकात करके लौट आवे मगर इसके पहिले कि तारासिंह नानक की चालचलन ौर उसकी नीयत का हाल जाने, उसने नानक के घर ही की तहकीकात शुरू र दी और उसकी स्त्री का भेद जानने के लिए उद्योग किया। जब नानक की त्री सहज ही में तारासिंह के पास आ गई तो उसे उसकी बदचलनी का विश्वास ा गया और उसने चाहा कि किसी तरह नानक की स्त्री को टाल दे और इसके ाद नानक की नीयत का अन्दाजा करे मगर उसकी कार्रवाई में उस समय विघ्न ड़ गया जब नानक की स्त्री तारासिंह के सामने जा बैठी और उसी समय बाहर किसी के चिल्लाने की आवाज आई।

हम कह चुके हैं कि नानक के यहां एक मजदूरनी थी। वह नानक के काम ो चाहे न हो मगर उसकी स्त्री के लिए उपयुक्त पात्र थी और उसके द्वारा नानक ी स्त्री का सब काम चलता था। मगर इस तारासिंह वाले मामले में नानक ी स्त्री श्यामा की बातचीत हनुमान छोकरे की मारफत हुई थी इसलिए बीच ले मुनाफे की रकम में उस मजदूरनी के हाथ भंझी कौड़ी भी न लगी थी सका उसे बहुत रंज हुआ और वह दोनों [illegible] में दुश्मनी करने पर उतारू गई। इसलिए कि श्यामारानी को उससे किसी तरह का पर्दा तो था ही नहीं,

उसने मजदूरनी से अपना भेद तो सब कह दिया मगर उसके हानि लाभ प
न दिया। इसलिए वह मजदूरनी चुपचाप सब कार्रवाई देखती सुनती
भ्रती रही मगर जब श्यामारानी तारासिंह के यहां चली गई और कुछ
नानक घर में आया तो उसने अपना नाम प्रकट न करने का वादा कराके
नानक से कह दिया और तारासिंह का मकान दिखा देने के लिए भी
गई क्योंकि उसे पता ठिकाना तो मालूम हो ही चुका था।

नानक ने जब सुना कि उसकी स्त्री किसी परदेशी के घर गई है,
बड़ा ही क्रोध आया और उसने ऐयारी के सामान से लैस होकर अकेले
स्त्री का पीछा किया।

नानक ने यद्यपि किसी कारण से लोकलाज को तिलांजुली दे दी
ऐयारों को नहीं। उसे अपनी ऐयारी पर बहुत भरोसा था और वह
आदमियों में अकेला घुस कर लड़ने की हिम्मत भी रखता था, यही सब
उसने किसी संगी साथी का खयाल न करके अकेले ही श्यामारानी का पीछा
हां यदि उसे यह मालूम होता कि श्यामारानी की उपपति तारासिंह है तो
अकेला न जाता।

नानक औरत के वेष में घर से बाहर निकला और जब उस मकान
पहुंचा जिसमें तारासिंह ने डेरा डाला था, तो कमन्द लगा कर मकान
चढ़ गया और धीरे धीरे उस कोठरी के पास जा पहुंचा जिसके अन्दर
और श्यामारानी थी और बाहर तारासिंह का चेला और नानक का
मान हिफाजत कर रहा था। वहां पहुंचते ही उसने एक लात अपने
कमर में ऐसी जमाई कि वह तिलमिला गया और जब वह चिल्लाया तो
की नीयत से नानक स्वयं भी औरतों ही की तरह चिल्ला उठा।

यही वह चिल्लाने की आवाज थी जिसे कोठरी के अन्दर बैठे हुए
और श्यामा ने सुना था। चिल्लाने की आवाज सुनते ही तारासिंह उठ
और हाथ में खञ्जर लिए कोठरी के बाहर निकला। वहां अपने चेले
मान के अतिरिक्त एक औरत को खड़ा देख वह ताज्जुब करने लगा
औरत अर्थात् नानक से पूछा, "तू कौन है ?"

नानक०। पहिले तू ही बता कि तू कौन है जिसमें तुझे मार डाल
यह तो मालूम रहे कि मैंने फलाने को मारा था।

तारा०। तेरी ढिठाई पर मुझे ताज्जुब ही नहीं होता बल्कि यह

होता है कि तू औरत नहीं कोई ऐयार है !

नानक० । (गम्भीरता के साथ) बेशक मैं ऐयार हूं तभी तो अकेले तेरे घर में घुस आया हूं ! शैतान, तू नहीं जानता कि बुरे कर्मों का फल क्योंकर मिलता है और वह कितना बड़ा ऐयार है जिसकी स्त्री को तूने धोखा देकर बुला लिया है !

तारा० । (जोर से हंस कर) अ ह ह ह ! अब मुझे विश्वास हो गया कि हया नानक तू ही है और शायद अपनी पतिव्रता की आमदनी गिनाने के लिए यहां आ पहुंचा है । अच्छा तो अब तुझे यह भी जान लेना चाहिए कि जिसका तू मुकाबला कर रहा है उसका नाम तारासिंह है और वह राजा बीरेन्द्रसिंह की आज्ञानुसार तेरे चालचलन की तहकीकात करने आया है ।

तारासिंह और राजा बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही नानक सन्न हो गया । इधर उसकी स्त्री ने जब यह जाना कि इस कोठरी के बाहर उसका पति खड़ा है तो वह नखरे से रोने और पीटने लगी तथा यह कहती हुई कोठरी के बाहर निकल कर नानक के पैरों पर गिर पड़ी कि मुझे तो तुम्हारा नाम ले कर हनुमान यहां लाया है ।

नानक थोड़ी देर तक सन्नाटे में रहा, इसके बाद तारासिंह की तरफ देख बोला—

नानक० । क्या ऐयारों का यही धर्म है कि दूसरों की औरतों को खराब करें और बदकारी का धब्बा अपने नाम के साथ लगावें ।

तारा० । नहीं नहीं ऐयारों का यह काम नहीं है और ऐयारों को यह भी उचित नहीं है कि सब तरफ का ख्याल छोड़ केवल औरत की कमाई पर गुजारा करें । मैंने तेरी औरत को किसी बुरी नीयत से नहीं बुलाया बल्कि चालचलन का हाल जानने के लिए ऐसा किया है । जो बातें तेरे बारे में सुनी गई हैं और जो कुछ यहां आने पर मैंने मालूम की हैं, उनसे जाना जाता है कि तू बड़ा ही कमीना और नमकहराम है । नमकहराम इसलिए कि मालिक क काम की तुझे कुछ भी फिक्र नहीं है और इसका सबूत केवल मनोरमा ही बहुत है जिसके साथ तू शादी किया चाहता था और जिसने जूतियों से तेरी पूजा ही नहीं की बल्कि तिलस्मी खञ्जर भी तुझसे ले लिया ।

नानक० । यह कोई आवश्यक नहीं है कि ऐयारों का काम सदैव पूरा ही उतरा करे कभी धोखा खाने में न आवे । यदि मनोरमा की ऐयारी मुझ पर चल गई तो इसके बदले में कमीना और नमकहराम कहे जाने लायक मैं नहीं हो सकता ।

क्या तुमने और तुम्हारे बाप ने कभी धोखा नहीं खाया ? और मेरी स्त्री को तुम बदनाम कर रहे हो वह तुम्हारी भूल है। वह तो खुद कह रही है कि तो तुम्हारा नाम लेकर हनुमान यहां ले आया है'। मेरी स्त्री बदकार नहीं है वह साध्वी और सती है, असल में बदमाश तू है जो इस तरह धोखा देकर स्त्री को अपने घर में बुलाता है और मुझे यहां पर अकेला जान कर गा देता है, नहीं तो मैं तुझसे किसी बात में कम नहीं हूं।

तारा०। नहीं नहीं, तू बहुत बातों में मुझसे बड़ के है, और मैं भी समझ के तुझे गालियां नहीं देता बल्कि दोषी जान कर गालियां देता हूं। तू स्त्री को साध्वी सती छोड़ के चाहे माता से भी बढ़ कर समझ ले, मेरी कोई नहीं है। मैं वास्तव में जिस काम के लिए आया था उसे कर चुका, अब जाकर मालिक से सब कह दूंगा और तेरे गम्भीर स्वभाव की प्रशंसा भी क जिसे सुन कर तेरा बाप बहुत ही प्रसन्न होगा जो अपनी एक भूल के कार से ज्यादे पछता रहा है और बदनामी का टीका मिटाने के लिए जी जान से कर रहा है मगर तुझ कपूत क मारे कुछ भी करने नहीं पाता। (हंस कर) कुलटा स्त्री को सती और साध्वी समझने वाला अपने को ऐयार कहे यही आ

नानक०। मेरे ऐयार होने में तुम्हें कुछ शक है !

तारा०। कुछ ? अजी बिल्कुल शक है !

नानक०। यदि तुम ऐसा समझ भी लो तो इसमें मेरी कुछ हानि इससे ज्यादे तुम और कुछ भी नहीं कर सकते कि यहां से जाकर राजा सिंह से मेरी झूठी शिकायतें करो मगर इस बात को भी समझ लो किसी का तावेदार नहीं हूं ?

तारा०। (क्रोध से) तू किसी का ताबेदार नहीं है ?

तारासिंह को क्रोधित देख कर नानक डर गया, केवल इसलिए कि वह अकेला था और अकेले ही इस मकान में तारासिंह का मुकाबला करना ताकत से बाहर समझता था जिसके दो चेले भी यहां मौजूद थे, अस्तु ध्यान देकर वह चुप हो गया मगर दिल में वह तारासिंह का जानी दु गया। उसने मन में निश्चय कर लिया कि तारासिंह को किसी न किसी अवश्य नीचा दिखाना बल्कि मार डालना चाहिए।

नानक ने और भी न मालूम क्या सोच कर अपनी जुबान को रोक सिर नीचा करके चुपचाप खड़ा रह गया। तारासिंह ने कहा, "बस अब

और अपनी साध्वी तथा नौकर को भी अपने साथ लेता जा !"

नानक ने इस आज्ञा को गनीमत समझा और चुपचाप वहां से रवाना हो गया। उसकी स्त्री और नौकर भी उसके पीछे चल पड़े।

उसी समय तारासिंह ने भी अपना डेरा कूच कर दिया और शहर के बाहर हो चुनार का रास्ता लिया, मगर दिल में सोच लिया कि कम्बख्त नानक अवश्य मेरा पीछा करेगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि धोखा देकर जान लेने की फिक्र भी करे।

दूसरा बयान

संध्या हुआ ही चाहती है। पटने की बहुत बड़ी सराय के दर्वाजे पर मुसाफिरों की भीड़ हो रही है। कई भठियारे भी मौजूद हैं जो तरह तरह के आराम की लालच दे अपनी अपनी तरफ मुसाफिरों को ले जाने का उद्योग कर रहे हैं। और मुसाफिर लोग भी अपनी अपनी इच्छानुसार उनके साथ जा जाकर डेरा डाल रहे हैं। मुसाफिरों को भठियारी के सुपुर्द करके भठियारे पुनः सराय के फाटक पर लौट आते और नए मुसाफिरों को अपनी तरफ ले जाने का उद्योग करते हैं।

यह सरांय बहुत बड़ी और इसका फाटक मजबूत तथा बड़ा था। फाटक के दोनों तरफ (मगर दर्वाजे के अन्दर) बारह सिपाही और एक जमादार का डेरा था जो इस सराय में रहने वाले मुसाफिरों की हिफाजत के लिए राजा की तरफ से मुकर्रर थे। उनकी तनखाह सराय के भठियारों से वसूल की जाती थी। ये ही सिपाही बारी बारी से घूम कर सराय के अन्दर पहरा दिया करते थे और जब मुसाफिरों को किसी तरह की तकलीफ होती तो सीधे राजदीवान के पास जाकर रपट किया करते थे।

थोड़ी देर बाद जब सब मुसाफिरों के टिकने का बन्दोबस्त हो गया और सराय के फाटक पर कुछ सन्नाटा हुआ तो उन सिपाहियों का जमादार अपनी जगह से उठ कर सराय के अन्दर इसलिए घूमने लगा कि देखें सब मुसाफिरों का ठीक ठीक बन्दोबस्त हो गया या नहीं। वह जमादार केवल घूमता ही न था बल्कि भठियारों से भी तरह तरह के सवाल करके मुसाफिरों का हाल दरियाफ्त करता जाता था।

जमादार घूमता हुआ जब उत्तर तरफ वाले उस कमरे के पास पहुंचा जो इस सराय में सबसे अच्छा, ऊंचा, दो मंजिला और अमीरों के रहने लायक बना और सजा हुआ था तो कुछ देर के लिए अटक गया और उस कमरे तथा उसमें रहने वालों की तरफ ध्यान देकर देखने लगा, क्योंकि उसमें एक जवहरी का डेरा पड़

मुझे वेफिक्र देख खुर्राटे लेने लगे और दिन चढ़े तक किसी की आंख ही न
तो ऐसी हालत में कोई चोरी करेगा भी तो प्रातः समय फाटक खुलने पर
निकल जाना कोई बड़ी बात न होगी ।

जमा० । ठीक है मगर मैं वादा करता हूं कि सुबह मैं आपसे पूछ
फाटक खोलूंगा ।

जव० । हो सकता है परन्तु कदाचित चोरी हो ही जाय और चोर प
भी जाय तो मुझे राजा या किसी राजकर्मचारी के पास सबूत देने के लिए
पड़ेगा और ऐसा होने से मेरा बहुत बड़ा हर्ज होगा, ताज्जुब नहीं कि राजा
या राजकर्मचारी मुझे ठहरने की आज्ञा दें, मगर मैं एक दिन भी नहीं रुक स
इत्यादि बहुत सी बातों को सोच कर मैं चाहता हूं कि चोरी होने का शक
रहे और मैं आराम के साथ टांगें फैला कर सोऊं और यह बात यदि तुम
तो सहज ही में हो सकती है, इसके बदले में मैं तुम्हें अच्छी तरह खुश कर दूं

जमा० । कोई चिन्ता नहीं मैं अपने सिपाहियों को हुक्म दे दूंगा कि
में से एक आदमी सिर्फ आपके दरवाजे पर और तीन आदमी तमाम सराय में
घूम कर पहरा दिया करें ।

जव० । बस बस, इतने ही से मैं वेफिक्र हो जाऊंगा । अपने सिपा
को यह भी ताकीद कर देना कि मेरे सिपाहियों को सोने न दें ! यद्यपि मैं
अपने आदमियों को जागने के लिए सख्त ताकीद कर दूंगा मगर वे कई दिन के
जागे हुए हैं नींद आ जाय तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है हां एक तर्कीब
और मालूम है जो इससे भी सहज में हो सकती है अर्थात् तुम स्वयं अकेले
यदि यहां अपने सोने का बन्दोबस्त रक्खोगे तो तमाम रात यहां अमन चमन
रहेगा, पहरा बदलने के समय........

जमा० । मैं आपका मतलब समझ गया, मगर नहीं, ऐसा करने से मेरी ब
नामी हो जायगी, मुझे हरदम फाटक पर मौजूद रहना चाहिए क्योंकि रात भ
पचासों दफे लोग फाटक पर मेरे पास तरह तरह की फरियाद करने आया क
हैं । खैर आप इस बारे में चिन्ता न कीजिए मैं आपके माल असबाब की नि
बानी का पूरा इन्तजाम कर दूंगा, अगर आपका कुछ नुकसान हो तो मेरा जिम्मा

कुछ और बातचीत करने के बाद जमादार अपने स्थान पर चला गया
थोड़ी देर बाद प्रतिज्ञानुसार उसने पहरे का बन्दोबस्त भी कर दिया ।

पाठक, यह सौदागर महाशय हमारे उपन्यास का कोई नवीन पात्र न

बल्कि बहुत प्राचीन पात्र तारासिंह है जो नानक की चालचलन का पता लगा के चुनारगढ़ लौट जा रहा है। इसे इस बात का विश्वास हो गया है कि नानक मेरा पीछा करेगा और ऐयारी के कायदे को छप्पर पर रख के जहां तक हो सकेगा मुझे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा इसलिए वह इस ढंग से सफर कर रहा है। हकीकत में तारासिंह का ख्याल बहुत ठीक था। नानक तारासिंह को नुकसान पहुंचाने, बल्कि जान से मार डालने की कसम खा चुका था। केवल इतना ही नहीं बल्कि वह अपने बाप का तथा राजा बीरेन्द्रसिंह का भी विपक्षी बन गया था क्योंकि अब उसे किसी तरफ से किसी तरह की उम्मीद न रही थी। अस्तु वह (नानक) भी अपने शागिर्दों को साथ लिए हुए तारासिंह के पीछे पीछे सफर कर रहा है और आज उसका भी डेरा इसी सराय में पड़ा है क्योंकि पहले ही से पता लगाए रहने के कारण वह तारासिंह की पूरी खबर रखता है और जानता है कि तारासिंह सौदागर बन कर इसी सराय में उतरा हुआ है। नानक यद्यपि तारासिंह को फंसाने का उद्योग कर रहा है मगर उसे इस बात की खबर कुछ भी नहीं है कि तारासिंह भी मेरी तरफ से गाफिल नहीं है और उसे मेरा रत्ती रत्ती हाल मालूम है। अस्तु देखना चाहिए अब किसकी चालाकी कहां तक चलती है।

रात आधी से ज्यादे जा चुकी है। सराय के अन्दर बिल्कुल सन्नाटा तो नहीं है मगर पहरा देने वालों के अतिरिक्त बहुत कम आदमी ऐसे हैं जिन्हें अपनी कोठरी के बाहर की खबर हो। सराय का बड़ा फाटक बन्द है, पहरे के सिपाहियों में से एक तो तारासिंह (सौदागर) के दर्वाजे पर टहल रहा है और बाकी के तीन घूम घूम कर इस बहुत बड़ी सराय के अन्दर पहरा दे रहे हैं।

तारासिंह के साथ साथ दो आदमी तो इसके शागिर्द ही हैं और दो नौकर ऐसे भी हैं जिन्हें तारासिंह ने रास्ते ही में तनख्वाह मुकर्रर करके रख लिया था, मगर ये दोनों नौकर तारासिंह के सच्चे हाल को कुछ भी नहीं जानते, इन्हें केवल इतना ही मालूम है कि तारासिंह एक अमीर सौदागर है। इस समय ये दोनों नौकर कमरे के बाहर दालान में पड़े खुर्राटे ले रहे हैं और तारासिंह तथा उसके शागिर्द कमरे के अन्दर बैठे आपुस में कुछ बातचीत कर रहे हैं। कमरे का दर्वाजा भिड़काया हुआ है।

तारासिंह का एक शागिर्द कमरे के बाहर निकला और उसने चारो तरफ निगाह दौड़ाने के बाद पहरे वाले सिपाही से कहा, "तुम्हें सौदागर साहब बुला रहे हैं, जाओ सुन आओ, तब तक तुम्हारे बदले मैं पहरा देता हूं! अन्दर जाकर दर्वाजा

भिड़का देना खुला मत रखना।"

हुक्म पाते ही लालची सिपाही, जिसे विश्वास था कि हमारे जमादार को मिल चुका है और मुझे भी अवश्य मिलेगा, कमरे के अन्दर घुस गया और देर तक तारासिंह का शागिर्द इधर उधर टहलता रहा। इसी बीच में उसने कि एक आदमी कई दफे इस तरफ आया मगर किसी को टहलता देख कर लौट

बहुत देर के बाद कमरे के अन्दर से दो आदमी बाहर निकले, एक तो सिंह का दूसरा शागिर्द और दूसरा स्वयम् सौदागर भेषधारी तारासिंह। तारा के हाथ में सिपाही का ओढ़ना मौजूद था जिसे अपने शागिर्द को जो पहरा दे था देकर उसने कहा,"इसे ओढ़ कर तुम एक किनारे सो जाओ, अगर कोई तुम पास आकर बेहोशी की दवा भी सुंघावे तो बेखटके सूंघ लेना और मुझको से दूर न समझना।"

तारासिंह के शागिर्द ने ओढ़ना ले लिया और कहा—"जब से मैं टहल हूं तब से दो तीन दफे दुश्मन आया मगर मुझे होशियार देख कर लौट गया

तारा०। हां काम में तो कुछ देर तो जरूर हो गई है। मैं उस सिपाही बेहोश करके अपनी जगह सुला आया हूं और चिराग गुल कर आया हूं। से इशारा करके) अब तुम इस खम्भे के पास लेट जाओ (दूसरे शागिर्द से) तुम उस दर्वाजे के पास जा लेटो। मैं भी किसी ठिकाने छिप कर तमाशा देखूं तारासिंह की आज्ञानुसार उसके दोनों शागिर्द बताए हुए ठिकाने पर जाकर गए और तारासिंह अपने दर्वाजे से कुछ दूर जाकर एक दूसरे मुसाफिर की के आगे लेट रहा मगर इस ढंग से कि अपने तरफ की सब कार्रवाई अच्छी देख सके।

आधे घण्टे के बाद तारासिंह ने देखा कि दो आदमी उसके दरवाजे पर खड़े हो गए हैं जिनकी सूरत अंधेरे के सबब दिखाई नहीं देती और नहीं जान पड़ता कि वे दोनों अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए हैं या नहीं। अटक कर उन दोनों आदमियों ने तारासिंह के आदमियों को देखा भाला, बाद एक आदमी कमरे का दर्वाजा खोल कर अन्दर घुस गया और आधी घड़ी बाद जब वह कमरे के बाहर निकला तो उसकी पीठ पर एक बड़ी सी गठरी दिखाई पड़ी। गठरी पीठ पर लादे हुए अपने साथी को लेकर वह आदमी के दूसरे भाग की तरफ चला गया। जब वह दूर निकल गया तो तारासिंह दरवाजे पर आया और शागिर्दों को चैतन्य पाने पर समझ गया कि दुश्मन

उसके आदमी को बेहोशी की दवा नहीं सुंघाई थी। तारासिंह के दोनों शागिर्द उठे मगर तारासिंह उन्हें उसी तरह लेटे रहने की आज्ञा देकर अपने कमरे के अन्दर चला गया और भीतर से दर्वाजा बन्द कर लिया। रोशनी करने के बाद तारासिंह ने देखा कि दुश्मन ने उसकी कोई चीज नहीं चुराई है, वह केवल उस सिपाही को उठा कर ले गया है जिसे तारासिंह अपनी सूरत का सौदागर बना कर अपनी जगह लिटा गया था। तारासिंह अपनी कार्रवाई पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कमरे के बाहर निकल कर अपने शागिर्दों को उठाया और कहा, "हमारा मतलब सिद्ध हो गया, अब इसमें कोई सन्देह नहीं कि कम्बख्त नानक अपनी मुराद पूरी हो गई समझ के इसी समय सराय का फाटक खुलवा कर निकल जायगा और मैं भी ऐसा ही चाहता हूं, अस्तु अब उचित है कि तुम दोनों में से एक आदमी तो यहां पहरा दे और एक आदमी सराय के फाटक की तरफ जाय और छिप कर मालूम करे कि नानक कब सराय के बाहर निकलता है। जिस समय वह सराय के बाहर हो उसी समय मुझे इत्तिला मिले।"

इतना कह कर तारासिंह कमरे के अन्दर चला गया और भीतर से दरवाजा बन्द कर लेने के बाद कमरे की छत पर चढ़ गया, इसलिए कि वह कमरे के ऊपर से अपने मतलब की बात बहुत कुछ देख सकता था।

इस समय नानक की खुशी का कोई ठिकाना न था। वह समझे हुए था कि हमने तारासिंह को गिरफ्तार कर लिया, अस्तु जहां तक जल्द हो सके सराय के बाहर निकल जाना चाहिए। इसी खयाल से उसने अपना डेरा कूच कर दिया और सराय के फाटक पर आकर जमादार को बहुत कुछ कह सुन के या दे दिला के दर्वाजा खुलवाया और बाहर हो गया।

तारासिंह को जब मालूम हुआ कि नानक सराय के बाहर निकल गया तब उसने अपने यहां चोरी हो जाने की खबर मशहूर करने का बन्दोबस्त किया। उसके पास जो सन्दूक थे, जिनमें कीमती माल होने का लोगों या जमादार को गुमान था, उनका ताला तोड़ कर खोल दिया क्योंकि वास्तव में सन्दूक बिल्कुल खाली केवल दिखाने के लिए थे। इसके बाद अपने नौकरों को होशियार किया और खूब रोशनी कर के 'चोर' 'चोर' का हल्ला मचाया और जाहिर किया कि हमारी लाखों रुपये की चीज (जवाहिरात) चोरी हो गई।

चोरी की खबर सुन बेचारा जमादार दौड़ा हुआ तारासिंह के पास आया जिसे देखते ही तारासिंह ने रोनी सूरत बना कर कहा, "देखो जमादार, मैं पहिले

ही कहता था कि मेरे असबाब की खूब हिफाजत होनी चाहिए! आखिर मेरी चोरी हो ही गयी! मालूम होता है कि तुम्हारे सिपाही ने मिल कर चोरी दी क्योंकि तुम्हारा सिपाही भी दिखाई नहीं देता। कहो अब हम अपने रुपये के माल का दावा किस पर करें?"

तारासिंह की बात सुनते ही जमादार के तो होश उड़ गए। उसने सन्दूकों को भी अपनी आंखों से देख लिया और खोज करने पर उस सिपाही भी न पाया जिसका इस समय पहरे पर मौजूद रहना वाजिब था। यद्यपि दार ने उसी समय सिपाहियों को फाटक पर होशियार रहने का हुक्म दे मगर इस बात का उसे बहुत रंज हुआ कि उसने थोड़ी ही देर पहिले एक को डेरा उठा कर सराय के बाहर चले जाने दिया था। उसने तुरन्त सिपाहियों को उसकी गिरफ्तारी के लिए रवाना किया और तारासिंह से "मैं इसी समय इस मामले की इत्तिला करने राज दीवान के पास जाता हूं

तारा०। तुम जहां चाहो वहां जाओ मगर हमारा तो नुकसान हो ही अस्तु हम भी अपने मालिक के पास इस बात की इत्तिला करने जाते हैं।

जमादार०। (ताज्जुब से) तो क्या आप स्वयं मालिक नहीं हैं?

तारा०। नहीं, हम मालिक नहीं हैं बल्कि मालिक के गुमाश्ते हैं। हमें बात का बहुत रंज है कि तुमने हमसे पूछे बिना सराय का फाटक खोल दिया चोर को सराय के बाहर निकल जाने की इजाजत दे दी, यद्यपि तुम मुझसे चुके थे कि आपसे पूछे बिना सराय का फाटक न खोलेंगे और इसी हिफाजत लिए हमने अपनी जेब की अशर्फियां तुम्हारी जेब में डाल दी थीं, मगर अफ मुझे इस बात की बिल्कुल खबर न थी कि तुम हद से ज्यादे लालची हो, माल चोरी करवा दोगे और चोर से गहरी रकम रिश्वत लेकर उसे फाटक के निकल जाने की आज्ञा दे दोगे और मैं यह भी नहीं जानता था कि इस सराय हिफाजत करने वाले इस किस्म का रोजगार करते हैं, अगर जानता तो सराय में कभी थूकने भी न आता।

तारासिंह ने धमकी के ढंग पर ऐसी ऐसी बातें जमादार से कहीं कि वह गया और सोचने लगा कि नाहक मैंने इनसे पूछे बिना सराय का फाटक कर किसी को जाने दिया, अगर किसी को जाने न देता तो बेशक इनका सराय के अन्दर ही से निकल आता, अब बेशक मैं दोषी ठहरता हूं, ताज्जुब कि सौदागर की बातों पर दीवान साहब को भी यह शक हो जाय कि जमा

ने रिश्वत ली है। अगर ऐसा हुआ तो मैं कहीं का भी न रहूंगा, मेरी बड़ी दुर्गति की जायगी। चोरी भी ऐसी नहीं है कि जिसे मैं अपने पल्ले से पूरी कर सकूं—इत्यादि बातें सोचता हुआ जमादार बहुत ही घबड़ा गया और बड़ी नर्मी और आजिजी के साथ तारासिंह से माफी मांग कर बोला, "निःसन्देह मुझसे बड़ी भूल हो गई, मगर मैं आपसे वादा करता हूं कि उस चोर को जो मुझे धोखा देकर और फाटक खुलवा कर चला गया है गिरफ्तार कर लूंगा, परन्तु मेरी जिन्दगी आपके हाथ में है, अगर आप मुझ पर दया कर फाटक खोल देने वाले मेरे कसूर को छिपावेंगे तो मेरी जान बच जायगी नहीं तो राजा साहब मेरा सिर कटवा डालेंगे और इससे आपका कुछ लाभ न होगा। मैं कसम खाकर कहता हूं कि मैंने उससे एक कौड़ी भी रिश्वत नहीं ली है! मुझे उस कम्बख्त ने पूरा धोखा दिया मगर मैं उसे निःसन्देह गिरफ्तार करूंगा और आपकी रकम जाने न दूंगा। यदि आपको मुझ पर शक हो और आप समझते हों कि मैंने रिश्वत ली है तो फाटक पर चल कर मेरी कोठरी की तलाशी ले लीजिए और जो कुछ निकले चाहे वह आपका दिया हो या मेरा खास हो, वह सब आप ले लीजिए मगर आप मेरी जान बचाइये!"

जमादार ने तारासिंह की हद्द से ज्यादे खुशामद की और यहां तक गिड़-गिड़ाया कि तारासिंह का दिल हिल गया मगर अपना काम निकालना भी बहुत जरूरी था इसलिए चालबाजी के साथ उसने जमादार का कसूर माफ करके कहा, "अच्छा मैं कसूर तो तुम्हारा माफ कर देता हूं मगर इस समय जो कुछ मैं तुमसे कहता हूं उसे बड़ी होशियारी के साथ करना होगा, अगर कसर करोगे तो तुम्हारे हक में अच्छा न होगा।"

जमा०। नहीं नहीं मैं जरा भी कसर न करूंगा, जो कुछ आप हुक्म देंगे वही करूंगा, कहिये क्या आज्ञा होती है?

तारा०। एक तो मैं अपनी जुबान से झूठ कदापि न बोलूंगा।

जमा०। (कांप कर) तब मेरी जान कैसे बचेगी?

तारा०। तुम मेरी बात पूरी हो लेने दो—दूसरे मुझे यहां से तुरन्त चले जाने की जरूरत भी है, इसलिए मैं अपने इन (अपने शागिर्दों की तरफ इशारा करके) दोनों साथियों को यहां छोड़ जाता हूं, तुम जब चोर को गिरफ्तार करके अपने राजदीवान या राजा के पास जाना, तो इन्हीं दोनों को ले जाना, ये दोनों आदमी अपने को मेरा नौकर कह कर चोरी गई हुई चीजों की बखूबी पहिचान लेंगे और ये चोरी के समय मेरा यहां मौजूद रहना तथा तुम्हारा कसूर कुछ भी

जाहिर न करेंगे और तुम भी इस बात को जाहिर मत करना कि सौदागर गुमाश्ता भी यहां मौजूद था। ये दोनों आदमी अपने काम को पूरी तरह से दे लेंगे। हां एक बात कहना तो भूल गया, इस सराय के अन्दर जितने हैं उन सभों की भी तलाशी ले लेना।

जमा०। (दिल में खुश होकर) जरूर उन सभी की तलाशी ले जायगी और जो कुछ आपने आज्ञा दी है वही किया जायगा, आप अपना कीजिए और जाइए, यहां मैं किसी तरह का नुकसान होने न दूंगा।

सौदागर (तारासिंह) चला जायगा यह जान कर जमादार अपने दिल में प्रसन्न हुआ क्योंकि इनके रहने से उसे अपना कसूर प्रकट हो जाने का डर भी

जमादार से और भी कुछ बातें करने के बाद तारासिंह अपने दोनों शा को एकान्त में ले गया और हर तरह की बातें समझाने के बाद यह भी "तुम लोग मेरे चले जाने के बाद किसी तरह घबड़ाना नहीं और मुझे हर अपने पास मौजूद समझना।"

इन सब बातों से छुट्टी पाकर तारासिंह अकेले ही वहां से रवाना हो गया

तीसरा बयान

तारासिंह के चले जाने बाद सराय में चोरी की खबर बड़ी तेजी के फैल गई। जितने मुसाफिर उसमें उतरे हुए थे सब रोके गये। राजदीवान को खबर हो गई, वह भी बहुत से सिपाहियों को साथ लेकर सराय में आ हुआ। खूब ही हल्ला मचा, चारो तरफ तलाशी और तहकीकात की कारंवाई लगी, मगर सभों को निश्चय इसी बात का था कि चोर सिवाय उसके और नहीं है जो रात रहते ही फाटक खुलवा कर सराय के बाहर निकल गया है। वाले सिपाही के गायब हो जाने से और भी परेशानी हो रही थी। चोर की फ्तारी में कई सिपाही तो जा ही चुके थे मगर दीवान साहब के हुक्म से और बहुत से सिपाही भेजे गये, आखिर नतीजा यह निकला कि दोपहर के पहिले हजरत नानकपरसाद गिरफ्तार हो कर सराय के अन्दर आ पहुंचे जो अपने में तारासिंह को गिरफ्तार कर ले गये थे और अभी तक सौदागर का चेहरा कर देखने भी न पाये थे, मगर उन कृपानिधान को ताज्जुब था तो इस बात कि वे चोरी के कसूर में गिरफ्तार किए गये थे।

अभी तक दीवान साहब सराय के अन्दर मौजूद थे। नानक के आते ही

तरफ से मुसाफिरों की भीड़ आ जुटी और हर तरफ से नानक पर गालियों की बौछार होने लगी। जिस कमरे में तारासिंह उतरा हुआ था उसी के आगे वाले दालान में सुन्दर फर्श के ऊपर दीवान साहब विराज रहे थे और उनके पास ही तारासिंहके दोनों शागिर्द भी अपनी असली सूरत में बैठे हुए थे। सामने आते ही दीवान साहब ने क्रोध भरी आवाज में नानक से कहा, "क्यों बे ! तेरा इतना बड़ा हौसला हो गया कि तू हमारी सराय में आकर इतनी बड़ी चोरी करे !!"

नानक०। (अपने को बेतरह फसा हुआ देख हाथ जोड़ के) मुझ पर चोरी का इलजाम किसी तरह नहीं लग सकता, मुझे यह मालूम होना चाहिये कि यहां किसकी चोरी हुई है और मुझ पर चोरी का इलजाम कौन लगा रहा है ?

दीवान०। (तारासिंह के दोनों शागिर्दों की तरफ इशारा करके) इनका माल चोरी गया है और यहां के सभी आदमी तुझे चोर कहते हैं।

नानक०। झूठ, बिल्कुल झूठ।

तारासिंह का एक शागिर्द०। (दीवान से) यदि हर्ज न हो तो पहिले इसका चेहरा धुलवा दिया जाय।

दीवान०। क्या तुम्हें कुछ दूसरे ढंग का भी शक है ? अच्छा (जमादार से) पानी मंगा कर इस चोर का चेहरा धुलवाओ।

जमादार०। जो हुक्म।

नानक०। चेहरा धुलवा के क्या कीजिएगा ? हम ऐयारों की सूरत हरदम बदली ही रहती है, खास कर सफर में।

दीवान०। तू ऐयार है ! ऐयार लोग भी कहीं चोरी करते हैं ?

नानक०। जो मैं कह चुका हूं कि चोरी का इलजाम मुझ पर नहीं लग सकता।

तारा का एक शागिर्द०। चोरी तो अच्छी तरह साबित हो जायगी, जरा अपने माल असबाब की तलाशी तो होने दो ! (दीवान से) लीजिए पानी भी आ गया, अब इसका चेहरा धुलवाइये।

जमादार०। (पानी की गगरी नानक के सामने धर के) लो अब पहिले अपना चेहरा साफ कर डालो।

नानक०। मैं अभी अपना चेहरा साफ कर डालता हूं, चेहरा धोने में मुझे कोई उज्र नहीं है क्योंकि मैं पहिले ही कह चुका हूं कि ऐयारों की सूरत प्रायः बदली रहती है और मैं भी एक ऐयार हूं।

इतना कह कर नानक ने अपना चेहरा साफ कर डाला और दीवान साहब

से कहा, "कहिए अब क्या हुक्म होता है ?"

दीवान० । अब तुम्हारी तलाशी ली जायगी ।

नानक० । तलाशी देने में भी मुझे कुछ उज्र न होगा, मगर मुझे पहि चीजों की फिहरिश्त मिल जानी चाहिए जो चोरी गई हैं । कहीं ऐसा न मेरी कुछ चीजों को ये नकली सौदागर साहब अपनी ही चीज बतावें, तः ताज्जुब नहीं कि मैं अपनी ही चीजों का चोर बन जाऊं ।

दीवान० । चीजों की फिहरिश्त जमादार के पास मौजूद है, तुम्हारी चीं तुम्हें कोई चोर नहीं बना सकता । हां तुमने इन्हें नकली सौदागर क्यों क

नानक० । इसलिए कि ये दोनों भी मेरी तरह से ऐयार हैं और इनके म तारासिंह को मैंने गिरफ्तार कर लिया है, दुश्मनी से नहीं बल्कि आपुस की लि से, क्योंकि हम दोनों एक ही मालिक अर्थात् राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं देने की शर्त लग गई थी ।

राजा बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही दीवान साहब के कान खड़े हो ग वे ताज्जुब के साथ तारासिंह के दोनों शागिर्दों की तरफ देखने लगे । ता के एक शागिर्द ने कहा, "इसने तो झूठ बोलने पर कमर बांध रक्खी है ! यह राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार हो मगर हम लोगों को उनसे कोई सरोकार नह हम लोग न तो ऐयार हैं और न हम लोगों का कोई मालिक ही हमारे साथ जिसे इसने गिरफ्तार कर लिया हो । यह तो अपने को ऐयार बताता ही है अगर झूठ बोल के आपको धोखा देने का उद्योग करे तो ताज्जुब ही क्या इसकी झुठाई सचाई का हाल तो इतने ही से खुल जायगा कि एक तो इ तलाशी ले ली जाय दूसरे इससे ऐयारी की सनद मांगी जाय जो राजा बीरेन्द्र की तरफ से नियमानुसार इसे मिली होगी ।

दीवान० । तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, ऐयारों के पास उनके मालिक सनद जरूर हुआ करती है । अगर यह प्रतापी महाराज बीरेन्द्रसिंह का ऐ होगा तो इसके पास सनद जरूर होगी और तलाशी लेने पर यह भी मालूम जायगा कि इसने जिसे गिरफ्तार किया है वह कौन है । (नानक से) अगर राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हो तो उनकी सनद हमको दिखाओ । हां, और भी बताओ कि अगर तुम यह ऐयार ही तो इतनी जल्दी गिरफ्तार क्यों हो क्योंकि ऐयार लोग जहां कब्जे के बाहर हुए तहां उनका गिरफ्तार होना हो जाता है ।

नानक० । मैं गिरफ्तार कदापि न होता मगर अफसोस, मुझे यह बात बिल्कुल मालूम न थी कि तारासिंह को मेरी पूरी खबर है और वह मेरी तरफ से होशियार है तथा उसने पहिले ही से मुझे गिरफ्तार करा देने का बन्दोवस्त कर रक्खा है।

दीवान० । खैर तुम ऐयारी को सनद दिखाओ।

नानक० । (कुछ लाजवाब सा होकर) सनद मुझे अभी नहीं मिली है।

तारासिंह का शा० । (दीवान से) देखिए मैं कहता था न कि यह झूठा है!

दीवान० । (क्रोध से) बेशक झूठा है और चोर भी है। (जमादार से) हां अब इसकी तलाशी ली जाय।

जमादार० । जो आज्ञा।

नानक की तलाशी ली गई और दो ही तीन गठरियों बाद वह बड़ी गठरी खोली गई जिसमें सराय का सिपाही बेचारा बंधा हुआ था।

नानक ने उस वेहोश सिपाही की तरफ इशारा करके कहा, "देखिए यही तारासिंह है जो सौदागर बना हुआ सफर कर रहा था।"

तारासिंह का शा० । (दीवान से) यह बात भी इसकी झूठ निकलेगी, आप पहिले इस वेहोश का चेहरा धुलवाइए।

दीवान० । हां मेरा भी यही इरादा है। (जमादार से) इसका चेहरा तो धोकर साफ करो।

नानक० । मैं खुद इसका चेहरा धोकर साफ किये देता हूं और तब आपको मालूम हो जायगा कि मैं झूठा हूं या सच्चा।

नानक ने उस सिपाही का चेहरा धोकर साफ किया मगर अफसोस, नानक की मुराद पूरी न हुई और वह सिर से पैर तक झूठा साबित हो गया। अपने यहां के सिपाही को ऐसी अवस्था में देख कर जमादार और दीवान साहब को क्रोध चढ़ आया। जमादार ने किसी तरह का खयाल न करके एक लात नानक के कमर पर ऐसी जमाई कि वह लुढ़क गया मगर बहुत जल्द सम्हल कर जमादार को मारने के लिए तैयार हुआ। नानक का हर्बा पहिले ही ले लिया गया था और अगर इस समय उसके पास कोई हर्बा मौजूद होता तो बेशक वह जमादार की जान ले लेता मगर वह कुछ भी न कर सका उलटा उसे जोश में आया हुआ देख सभी को क्रोध चढ़ आया। सराय में उतरे हुए मुसाफिर भी उसकी तरफ से चिढ़े हुए थे क्योंकि वे बेचारे बेकसूर रोके गये थे और उन पर शक भी किया गया था, अतएव एक दम से बहुत से आदमी नानक पर टूट पड़े और मन-

मानती पूजा करने के बाद उसे हर तरह से बेकार कर दिया, इसके बाद दी साहब की आज्ञानुसार उसकी और उसके साथियों की मुश्कें कस दी गईं।

दीवान साहब ने जमादार को आज्ञा दी कि—यह शैतान (नानक) बेशक और चोर है, इसने बहुत ही बुरा किया कि सरकारी नौकर को गिरफ्तार लिया। तुम कह चुके हो कि उस समय यही सिपाही सौदागर के दर्वाजे पर दे रहा था। बेशक चोरी करने के लिए ही इस सिपाही को इसने गिरफ्तार होगा। अब इसका मुकदमा थोड़ी देर में निपटने वाला नहीं है और इस बहुत देर भी हो गई है अस्तु तुम इसे और इसके साथियों को कैदखाने दो तथा इसका माल असबाब इसी सराय की किसी कोठरी में बन्द करके मुझे दे दो और सराय के सब मुसाफिरों को छोड़ दो। (तारासिंह के शा की तरफ देख के) क्यों साहब अब मुसाफिरोंको रोकनेकी तो कोई जरूरत नहीं

तारासिंह का शा०। बेशक बेचारे मुसाफिरों को छोड़ देना चाहिए उनका कोई कसूर नहीं। मेरा माल इसी ने चुराया है। अगर इसके असब से कुछ भी न निकलेगा तो भी हम यही समझेंगे कि सराय से बाहर दूर इसने किसी ठिकाने चोरी का माल गाड़ दिया है।

दीवान०। बेशक ऐसा ही है! (जमादार से) अच्छा जो कुछ हुक्म दि है उसे जल्द पूरा करो।

जमादार०। जो आज्ञा।

बात की बात में वह सराय मुसाफिरों से खाली हो गई। नानक हवा भेज दिया गया और उसका असबाब एक कोठरी में रख कर ताली दीवान को दे दी गई। उस समय तारासिंह के दोनों शागिर्दों ने दीवान साहब से "इस शैतान का मामला दो एक दिन में निपटता नजर नहीं आता, इसलि लोग भी चाहते हैं कि यहां से जाकर अपने मालिक को इस मामले की और उन्हें भी सर्कार के पास ले आवें, अगर ऐसा न करेंगे तो मालिक से हम लोगों पर बड़ा दोष लगाया जायगा। यदि आप चाहें तो जमानत में माल असबाब रख सकते हैं।"

दीवान०। तुम्हारा कहना बहुत ठीक है। हम खुशी से इजाजत दे तुम लोग जाओ और अपने मालिक को ले आओ, जमानत में तुम लोगों असबाब रखना हम मुनासिब नहीं समझते, इसे तुम लोग ले जाओ।

तारासिंह के दोनों शा०। (दीवान साहब को सलाम करके) आपने

की जो हम लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, हम लोग बहुत जल्द अपने मालिक को लेकर हाजिर होंगे।

तारासिंह के दोनों शागिर्दों ने भी डेरा कूच कर दिया और बेचारे नानक को खटाई में डाल गए। देखा चाहिए अब उस पर क्या गुजरती है। वह भी इन लोगों से बदला लिए बिना रहता नजर नहीं आता।

चौथा बयान

भैरोसिंह के चले जाने बाद दर्वाजा बन्द हो जाने से दोनों कुमारों को ताज्जुब ही नहीं हुआ बल्कि उन्हें भैरोसिंह की तरफ से एक प्रकार की फिक्र लग गई। आनन्दसिंह ने अपने बड़े भाई की तरफ देख कर कहा, "अब इस रात के समय भैरोसिंह के लिए हम लोग क्या कर सकते हैं?"

इन्द्रजीत०। कुछ भी नहीं, मगर भैरोसिंह के हाथ में तिलिस्मी खंजर है। वह यकायक किसी के कब्जे में न आ सकेगा।

आनन्द०। पहिले भी तो उनके पास तिलिस्मी खंजर था बल्कि ऐयारी का बटुआ भी मौजूद था, तब उन्होंने क्या कर लिया था?

इन्द्रजीत०। सो तो ठीक कहते हो, तिलिस्म के अन्दर हर तरह से बचे रहना मामूली काम नहीं हैं, मगर रात के समय अब हो ही क्या सकता है?

आनन्द०। मेरी राय है कि तिलिस्मी खंजर से इस छोटे से दरवाजे को काटने का उद्योग किया जाय, शायद........

इन्द्रजीत०। अच्छी बात है, कोशिश करो।

आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खंजर का वार उस छोटे से दरवाजे पर किया मगर कोई नतीजा न निकला, आखिर दोनों भाई लाचार होकर वहां से हटे और उसी दालान में एक किनारे बैठ कर बातचीत में रात बिताने का उद्योग करने लगे।

रात के साथ ही साथ दोनों कुमारों की उदासी भी कुछ कुछ जाती रही और फूलों की महक से बसी हुई सुबह की ठण्ढी हवा ने उद्योग और उत्साह का संचार किया। दोनों के पराधीन और चुटीले दिलों में किसी की याद ने गुदगुदी पैदा कर दी और बारह पर्दे के अन्दर से भी खुशबू फैलाने वाली मगर कुछ दिनों तक नाउम्मीदी के पाले से गन्धहीन हो गई कलियों पर आशारूपी वायु के झपेटे से महक कर आए हुए शृंगार रूपी भ्रमर इस समय पुनः गुंजार करने लग गये।

क्या आज दिन भर की मेहनत से भी अपने प्रेमी का पता न लगा सकेंगे? भला आज दिन भर के उद्योग की सहायता से भी इस छोटी सी मगर अनूठी

रंगशाला के नेपथ्य में से किसी को खोज निकालने में सफल मनोरथ न हो
क्या आज दिन भर की कार्रवाई भी हमें विश्वास न दिला सकेगी कि इस
दिल का मालिक इसी स्थान में आ पहुंचा है जैसा कि सुन चुके हैं और क्या
दिन भर की उपासना का फल भी जुदाई की उस काली घटा को दूर न कर
जिसने इन चकोरों को जीवनदान देने वाले पूर्णचन्द्र को छिपा रक्खा है ?
नहीं, ऐसा कदापि नहीं हो सकता, आज दिन भर में हम बहुत कुछ कर
और उनका पता अवश्य लगावेंगे जिन पर अपनी जिन्दगी का भरोसा सम
और जिनके मिलाप से बढ़ कर इस दुनिया में और किसी चीज को नहीं

इसी तरह की बातें सोचते हुए दोनों कुमार खड़े हो गये । नहर के
आकर हाथ मुंह धोने बाद घड़ी भर के अन्दर ही जरूरी कामों से छुट्टी
बाग में घूमने और वहां की हर एक चीज को गौर से देखने लगे और थो
देर में बारहदरी के सामने वाली उस दोमंजिला इमारत के नीचे जा पहुंचे
ऊपर वाली मंजिल में रात को कोई काम करते हुए भैरोंसिंह ने कई
को देखा था ।

इस इमारत के नीचे वाला भाग ऊपर वाले हिस्से के विपरीत दर्वा
दर्वाजे के किसी नामोनिशान तक से भी खाली था । बाग की तरफ वाले
की दीवार साफ तथा चिकने संगमर्मर की बनी हुई थी और बीचोबीच चा
ऊंचा और दो हाथ चौड़ा स्याह पत्थर का एक टुकड़ा लगा हुआ था । उस
लिखे मोटे छत्तीस अक्षर खुदे हुए थे जिसे दोनों कुमार बड़े गौर से देख
उसका मतलब जानने के लिए उद्योग करने लगे ।

वे अक्षर ये थे :—

ने	इ	तो	के	स्म	स्सों
हि	को	ड़	की	उ	ति
स्से	का	स	लि	हि	न
या	से	न	न	दू	र
य	क	ल	सै	जो	गे
रो	ख	हां	टैं	क	रो

दो घड़ी तक गौर करने पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह उसका मतलब सम
और अपने छोटे भाई कुंअर आनन्दसिंह को भी समझाया, इसके बाद दोनों
ने जोर करके उस पत्थर को दबाया तो वह अन्दर की तरफ घुस कर

बराबर हो गया और अन्दर जाने लायक एक खासा दर्वाजा दिखाई देने लगा, साथ ही इसके भीतर की तरफ अन्धकार भी मालूम हुआ। इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी खञ्जर को रोशनी करके आगे चलने के लिए आनन्दसिंह से कहा।

तिलिस्मी खजर की रोशनी के सहारे दोनों भाई उस दर्वाजे के अन्दर चले गये और एक छोटे से कमरे में पहुंचे जिसके बीचोबीच में ऊपर की मंजिल में जाने के लिए छोटी छोटी चक्करदार सीढ़ियां बनी हुई थीं। उन्हीं सीढ़ियों की राह से दोनों कुमार ऊपर वाली मंजिल पर चढ़ गए और एक ऐसी कोठरी में पहुंचे जिसकी बनावट अर्धचन्द्र के ढंग की थी और तीन दर्वाजे बाग की तरफ उस बारहदरी के ठीक सामने थे जिसमें रात को दोनों कुमारों ने आराम किया था।

बाग की तरफ वाले तीनों दर्वाजे खोल देने से उस कोठरी के अन्दर अच्छी तरह उजाला हो गया, उस समय आनन्दसिंह ने तिलिस्मी खंजर की रोशनी बन्द की और उसे कमर में रखने बाद अपने भाई से कहा—

आनन्द०। इसी कोठरी में रात को भैरोसिंह ने कई आदमियों को चलते फिरते तथा काम करते देखा था, और मालूम होता है कि इसके दोनों तरफ की कोठरियों का सिलसिला एक दूसरे से लगा हुआ है और सभों का एक दूसरे से सम्बन्ध है।

इन्द्र०। मैं भी ऐसा ही विश्वास करता हूं, इस दाहिने बगल वाली दूसरी कोठरी का दर्वाजा खोलो और देखो कि उसके अन्दर क्या है?

बड़े कुमार की आज्ञानुसार आनन्दसिंह ने बगल वाली दूसरी कोठरी का दर्वाजा खोला, उसी समय दोनों कुमारों को ऐसा मालूम हुआ कि कोई आदमी तेजी के साथ कोठरी में से निकल कर इसके बाद वाली दूसरी कोठरी में चला गया। दोनों कुमारों ने तेजी के साथ उसका पीछा किया और उस दूसरी कोठरी में गए जिसका दर्वाजा मजबूती के साथ बन्द न था तो नानक पर निगाह पड़ी। यद्यपि उस कोठरी के वे दरवाजे जो बाग की तरफ पड़ते थे बन्द थेमगर दिन का समय होने के कारण झिलमिलियों की दरारों में से पड़ने वाली रोशनी ने उसमें इतना उजाला जरूर कर रक्खा था कि आदमी की सूरत शक्ल बखूबी दिखाई दे जाय, यही सबब था कि निगाह पड़ते ही दोनों कुमारो ने नानक को पहिचान लिया, इसी तरह नानक ने भी दोनों कुमारों को पहिचान कर प्रणाम किया और कहा, "मैं किसी दुश्मन का होना अनुमान करके भागा था मगर जब आवाज सुनी तो पहिचान कर रुक गया। मैं कल से आप दोनों भाइयों की खोज रहा हूं

मगर पता न लगा सका क्योंकि तिलिस्मी खारखाने में बिना समझे बूझे ह देना उचित न जान कर अपनी बुद्धिमानी या जबर्दस्ती से किसी दर्वाजे को न सका और इसीलिए बाग में भी पहुंचने की नौबत न आई। कहिए आप कुशल से तो हैं!"

इन्द्र०। हां हम लोग बहुत अच्छी तरह हैं, तुम बताओ कि यहां कब क्यों और किस तरह से आए?

नानक०। कमलिनी जी से मिलने के लिए घर से निकला था मगर मालूम हुआ कि वे राजा गोपालसिंह के साथ जमानिया गईं तब मैं राजा गो सिंह के पास आया और उन्हीं की आज्ञानुसार यहां आपके पास आया हूं।

इन्द्र०। किनकी आज्ञानुसार? राजा गोपालसिंह की या कमलिनी की?

नानक०। कमलिनी की आज्ञानुसार।

नानक की बात सुन कर आनन्दसिंह ने एक भेद की निगाह इन्द्रजीतसिंह डाली और इन्द्रजीतसिंह ने कुछ मुस्कुराहट के साथ आनन्दसिंह की तरफ देख कहा—"बाग की तरफ जो दरवाजे पड़ते हैं उन्हें खोल दो, चांदना हो जाव

आनन्दसिंह ने दर्वाजे खोल दिए और फिर नानक के पास आकर पूछा, तो कमलिनीजी की आज्ञानुसार तुम यहां आए?"

नानक०। जी हां।

आनन्द०। कमलिनी को कहां छोड़ा?

नानक०। राजा गोपालसिंह के तिलिस्मी बाग में।

इन्द्र०। वह अच्छी तरह से तो है न?

नानक०। जी हां बहुत अच्छी तरह से हैं।

आनन्द०। घोड़े पर से गिरने के कारण उनकी टांग जो टूट गई थी अच्छी हुई?

नानक०। यह खबर आपको कैसे मालूम हुई?

आनन्द०। अजी वाह, मेरे सामने ही तो घोड़े पर से गिरी थीं, भैरोसिं उनका इलाज किया था, अच्छी हो गई थीं मगर कुछ दर्द बाकी था जब मैं चला आया।

नानक०। जी हां अब तो वह बहुत अच्छी हैं।

आनन्द०। (हंस कर) अच्छा यह तो बताओ कि तुम किस रास्ते से आए हो?

नानक० । उसी बुर्ज वाले रास्ते से आया हूं ।

आनन्द० । मुझे अपने साथ ले चल कर वह रास्ता बता तो दो ।

नानक० । बहुत अच्छा, चलिए मैं बता देता हूं, मगर मुझसे कमलिनीजी ने कहा था कि जब तुम बाग में जाओगे तो लौटने का रास्ता बन्द हो जाएगा ।

आनन्द० । यह तो उन्होंने ठीक कहा था । हम दोनों भाइयों को भी उन्होंने यही कहला भेजा था कि मैं नानक को तुम्हारे पास भेजूंगी, तुम उसकी जुबानी सब हाल सुन कर हिफाजत के साथ उसे तिलिस्म के बाहर कर देना ।

नानक० । (कुछ शर्माना सा होकर) जी ई ई ई, आप तो दिल्लगी करते हैं, मालूम होता है आपको मुझ पर कुछ शक है और आप समझते हैं कि मैं आपके दुश्मन का ऐयार हूं और नानक की सूरत बन कर आया हू, अस्तु आप जिस तरह चाहें मेरी आजमाइश कर सकते हैं ।

इतने ही में एक तरफ से आवाज आई, "जब तुम कमलिनीजी के भेजे हुए आए हो तो आजमाइश करने की जरूरत ही क्या है ? थोड़ी देर में कमलिनी का सामना आप ही हो जाएगा !"

इस आवाज ने दोनों कुमारों को तो कम मगर नानक को हद से ज्यादे परेशान कर दिया । उसके चेहरे पर हवाई सी उड़ने लगी और वह घबड़ा कर पीछे की तरफ देखने लगा । इस कोठरी में से दूसरी कोठरी में जाने के लिए जो दर्वाजा था वह इस समय मामूली तौर पर बन्द था इसलिए किसी गैर पर उसकी निगाह न पड़ी अतएव उस दर्वाजे को खोल कर नानक अगली कोठरी में चला गया मगर साथ ही आनन्दसिंह ने भी वहां पहुंच कर उसकी कलाई पकड़ ली और कहा, "बस इतने ही में घबड़ा गए ! इसी हौसले पर तिलिस्म के अन्दर आए थे ! आओ आओ, हम तुम्हें बाग में ले चलते हैं जहां निश्चिन्ती से बैठ कर अच्छी तरह बातें कर सकेंगे ।"

इसी समय दो दर्वाजे खुले और स्याह लबादा ओढ़े हुए चार पांच आदमी उसके अन्दर से निकल आए जो नानक को जबर्दस्ती घसीट कर ले गए, साथ ही वे दर्वाजे भी उसी तरह बन्द हो गए जैसे पहले थे । दोनों कुमारों ने भी कुछ सोच कर आपत्ति न की और उसे ले जाने दिया ।

और कोठरियों की बनिस्वत इस कोठरी में दर्वाजे ज्यादे थे अर्थात् दो दर्वाजे दोनों तरफ तो थे ही मगर बाग की तरफ चार और दो दर्वाजे पिछली तरफ भी थे और उसी पिछली तरफ वाले दोनों दर्वाजों में से वे लोग आए थे जो नानक

को घसीट कर ले गए थे। नानक को ले जाने के बाद आनन्दसिंह ने उन्हीं
तरफ वाले दर्वाजों में से एक दर्वाजा खोला और अन्दर की तरफ झांक के देखा
भीतर बहुत लम्बा चौड़ा एक कमरा नजर आया जिसमें अन्धकार का नाम
भी न था बल्कि अच्छी तरह उजाला था। दोनों कुमार उस कमरे में चले
और तब मालूम हुआ कि वे दर्वाजे एक ही कमरे में जाने के लिए हैं। इस
में दोनों कुमारों ने एक बहुत बूढ़े आदमी को देखा जो चारपाई के ऊपर लेटा
कोई किताब पढ़ रहा था। कुमारों को देखते ही वह चारपाई के नीचे उतर
खड़ा हो गया और सलाम कर के बोला, "आज कई दिनों से मैं आप दोनों
के आने का इन्तजार कर रहा हूं।"

इन्द्र०। तुम कौन हो?

बुड्ढा०। जी मैं इस बाग का दारोगा हूं।

इन्द्र०। तुम हम लोगों का इन्तजार क्यों कर रहे थे?

दारोगा०। इसलिए कि आप लोगों को यहां की इमारतों और अजायब
की सैर करा के अपने सर से एक भारी बोझ उतार दूं।

इन्द्र०। क्या इधर दो तीन दिन के बीच में कोई और भी इस बाग में आया

दारोगा०। जी हां दो मर्द और कई औरतें आई हैं।

इन्द्र०। क्या उन लोगों के नाम बता सकते हो?

दारोगा०। नानक और भैरोसिंह के सिवाय मैं और किसी का नाम
जानता (कुछ सोच कर) हां एक औरत का भी नाम जानता हूं, शायद
नाम कमलिनी है, क्योंकि वह दो एक दफे इसी नाम से पुकारी गई थी, बड़ी
धूर्त और चालाक है, अपनी अक्ल के सामने किसी को कुछ समझती ही
अस्तु बिना धोखा खाये नहीं रह सकता।

इन्द्र०। क्या यह बता सकते हो कि वे सब इस समय कहां हैं और
मुलाकात क्योंकर हो सकती है?

दारोगा०। जी मुझे उन लोगों का पता नहीं मालूम क्योंकि कमलिनी ने
सभों को मेरी बात मानने न दी और अपनी इच्छानुसार उन सभों को लिए
चारो तरफ घूमती रही, इसी से मुझे रंज हुआ और मैंने उनकी खबरगोरी छोड़
इन्द्र०। अगर तुम यहां के दारोगा हो तो खबरदारी न रखने पर भी
तो जरूर जानते ही होवोगे कि वे सब कहां हैं!

दारोगा०। मुझे यहां का दारोगा समझने और न समझने का तो आ

अख्तियार है मगर मैं यह जरूर कहूंगा कि मुझे उन सभों का पता नहीं मालूम है।

आनन्द०। (हंस कर) यही हाल है तो यहां की हिफाजत क्या करते हो?

दारोगा०। इसका हाल तो तभी मालूम होगा जब आप मेरे साथ चल कर यहां की सैर करेंगे।

आनन्द०। अच्छा यह बताओ कि अभी हमारे देखते ही देखते जो लोग नानक को ले गए वे कौन थे?

दारोगा०। वे सब मेरे ही नौकर थे। वह झूठा और शैतान है तथा आपको नुकसान पहुंचाने की नीयत से धोखा देकर यहां घुस आया है इसी लिए मैंने उसे गिरफ्तार करने का हुक्म दिया।

आनन्द०। तुम्हारे आदमी लोग कहां रहते हैं? यहां तो मैं तुमको अकेला ही देखता हूं।

दारोगा०। यह कमरा तो मेरा एकान्त स्थान है, जब पढ़ने या किसी विषय पर गौर करने की जरूरत पड़ती है तब मैं इस कमरे में आकर बैठता या लेटता हूं। मगर यहां खड़े खड़े बातें करने में तो आपको तकलीफ होगी। आप मेरे स्थान पर चलें तो उत्तम हो या बाग हो में चलिए जहां और भी कई....

इन्द्रजीत०। खैर यह सब तो होता रहेगा पहिले हम लोगों को यह मालूम होना चाहिए कि तुम हमारे दोस्त हो दुश्मन नहीं और तुम्हारी यह सूरत असली है बनावटी नहीं। इसके बाद मैं तुमसे दिल खोल कर बातें कर सकूंगा।

दारोगा०। इस बात का पता तो आपको मेरी कारंबाई से ही लग सकेगा, मेरे कहने का आपको एतबार कब होगा, मगर इस बात को खूब समझ........

दारोगा की बात पूरी न होने पाई थी कि एक तरफ से आवाज आई, "अजी तुम्हें कुछ खाने पीने की भी सुध है या यों ही बकवाद किया करोगे।"

दोनों कुमार ताज्जुब के साथ उस तरफ देखने लगे जिधर से आवाज आई थी। उसी समय एक बुढ़िया उसी तरफ से कमरे के अन्दर आती दिखाई पड़ी और वह दारोगा के पास आकर फिर बोली, "मैं बड़ी ही बदकिस्मत थी जो तुम्हारे साथ ब्याही गई। मैंने जो कहा तुमने कुछ सुना या नहीं?"

दारोगा०। (क्रोध से) आ गई शैतान की नानी!

दोनों कुमारों ने देखते ही उस बुढ़िया को पहिचान लिया कि यह वही बुढ़िया है जो भैरोसिंह की जोरू उस समय बनी हुई थी जब भैरोसिंह पागल भया हुआ इसी बाग में हम लोगों को दिखाई दिया था।

इन्द्रजीतसिंह ने ताज्जुब और दिल्लगी की निगाह से उस बुढ़िया को देखा और कहा, "अभी कल की बात है कि तू भैरोसिंह पागल की जोरू बनी थी और आज इस दारोगा को अपना मालिक बता रही है।"

पांचवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह की बात सुन कर वह बुढ़िया चमक उठी और नाक भौं चढ़ा कर बोली, "वुड्ढी औरतों से दिल्लगी करते तुम्हें शर्म नहीं मालूम होती?"

इन्द्र०। क्या मैं झूठ कहता हूं ?

बुढ़िया०। इससे बढ़ कर झूठ और क्या हो सकता है ? लोग किसी के पीछे झूठ बोलते हैं मगर आप मुंह पर झूठ बोल के अपने को सच्चा बनाने का दावा करते हैं। भला इस तिलिस्म में दूसरा आ ही कौन सकता है ? और वह भैरोसिंह कौन है जिसका नाम आपने लिया ?

इन्द्रजीत०। बस बस, मालूम हो गया। मैं अपने को तुम्हारी जुबान...

बुड्ढा०। (इन्द्रजीतसिंह को रोक कर) अजी आप किससे बातें कर रहे हैं, यह तो पागल है। इसकी बातों पर ध्यान देना आप ऐसे बुद्धिमानों का काम नहीं है। (बुढ़िया से) तुझे यहां किसने बुलाया जो चली आई ? तेरे ही डर से तो भाग कर मैं यहां एकान्त में आ बैठा हूं मगर तू ऐसी शैतान की नानी है कि यहां भी आए बिना नहीं रहती। सवेरा हुआ नहीं और खाने की रट लगा दी।

बुड्ढी०। अजी तो क्या तुम कुछ खाओ पीओगे नहीं ?

बुड्ढा०। जब मेरी इच्छा होगी तब खा लूंगा, तुम्हें इससे मतलब ? (कुमारों से) आप इस कम्बख्त का ख्याल छोड़िए और मेरे साथ चले आइए, मैं आपको ऐसी जगह ले चलता हूं जहां इसकी आत्मा भी न जा सके। उसी जगह हम लोग बातचीत करेंगे, फिर आप जैसा मुनासिब समझिएगा आज्ञा दीजिएगा।

यह बात उस बुड्ढे ने ऐसे ढंग से कही और इस तरह पलटा खा कर चल पड़ा कि दोनों कुमारों को उसकी बातों का जवाब देने या उस पर शक करने का मौका न मिला और वे दोनों भी उसके पीछे पीछे रवाना हो गए।

उस कमरे के बगल ही में एक कोठरी थी और उस कोठरी में ऊपर की छत पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं। वह बुड्ढा दोनों कुमारों को साथ लिए हुए उस कोठरी में और वहां से सीढ़ियों की राह चढ़ कर उसके ऊपर वाली छत पर ले गया। उस मंजिल में भी छोटी छोटी कई कोठरियां और कमरे थे। बुड्ढे के कहे मुताबिक दोनों कुमारों ने एक कमरे की जालीदार खिड़की

झांक कर देखा तो इस इमारत के पिछले हिस्से में एक ओर छोटा सा बाग दिखाई दिया जो बनिस्वत इस बाग के जिसमें कुमार एक दिन और रात रह चुके ज्यादे खूबसूरत और सरसब्ज नजर आता था। उसमें फूलों के पेड़ बहुतायत थे और पानी का एक छोटा सा साफ झरना भी बह रहा था जो इस मकान की दीवार से दूर और उस बाग के पिछले हिस्से की दीवार के पास था, और उसी चश्मे के किनारे पर कई औरतों को भी बैठे हुए दोनों कुमारों ने देखा।

पहिले तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को यही गुमान हुआ कि ये औरतें किशोरी कामिनी और कमलिनी इत्यादि होंगी मगर जब उनकी सूरत पर गौर किया तो दूसरी ही औरतें मालूम हुईं जिन्हें आज के पहिले दोनों कुमारों ने कभी नहीं देखा था।

इन्द्रजीत०। (बुड्ढे से) क्या ये वे ही औरतें हैं जिनका जिक्र तुमने किया था और जिनमें से एक औरत का नाम तुमने कमलिनी बताया था ?

बुड्ढा०। जी नहीं, उनकी तो मुझे कुछ भी खबर नहीं कि वे कहां गईं और क्या हुईं।

आनन्द०। फिर ये सब कौन हैं ?

बुड्ढा०। इन सभों के बारे में इससे ज्यादे और मैं कुछ नहीं जानता कि ये सब राजा गोपालसिंह की रिश्तेदार नें हैं और किसी खास सबब से राजा गोपालसिंह ने इन लोगों को यहां रख छोड़ा है।

इन्द्रजीत०। ये सब यहां कब से रहती हैं ?

बुड्ढा०। सात वर्ष से।

इन्द्रजीत०। इनकी खबरगीरी कौन करता है और खाने पीने तथा कपड़े लत्ते का इन्तजाम क्योंकर है ?

बुड्ढा०। इसकी मुझे भी खबर नहीं। यदि मैं इन सभों से कुछ बातचीत करता या इनके पास जाता तो कदाचित् कुछ मालूम हो जाता मगर राजा साहब ने मुझे सख्त ताकीद कर दी है कि इन सभों से कुछ बातचीत न करूं बल्कि इनके पास भी न जाऊं।

इन्द्रजीत०। खैर यह बताओ कि हम लोग इनके पास जा सकते हैं या नहीं ?

बुड्ढा०। इन सभों के पास जाना न जाना आपकी इच्छा पर है, मैं किसी तरह की रुकावट नहीं डाल सकता और न कुछ राय ही दे सकता हूं।

इन्द्रजीत०। अच्छा इस बाग में जाने का रास्ता तो बता सकते हो ?

बुड्ढा० । हां मैं खुशी से आपको रास्ता बता सकता हूं मगर स्वयं साथ वहां तक नहीं जा सकता, इसके अतिरिक्त यह कह देना भी उचित पड़ता है कि यहां से उस बाग में जाने का रास्ता बहुत पेचीदा और इस लिए वहां जाने में कम से कम एक पहर तो जरूर लगेगा। इससे यही होगा कि यदि आप उस बाग में या उन सभों के पास जाना चाहते हैं तो लगा कर इस खिड़की की राह से नीचे उतर जांय। ऐसा आप किया आज्ञा दें मैं एक कमन्द आपको ला दूं।

इन्द्रजीत०। हां यह बात मुझे पसन्द है, यदि एक कमन्द ला दो तो हम भाई उसी के सहारे नीचे उतर जायं।

वह बुड्ढा दोनों कुमारों को उसी तरह उसी जगह छोड़ कर कहीं चला और थोड़ी ही देर में एक बहुत बड़ी कमन्द हाथ में लिए हुए आकर "लीजिये यह कमन्द हाजिर है।"

इन्द्रजीत०। (कमन्द लेकर) अच्छा तो अब हम दोनों इस कमन्द के उस बाग में उतर जाते हैं।

बुड्ढा०। जाइये मगर यह बताते जाइये कि आप लोग यहां से लौट आवेंगे और मुझे आपको यहां की सैर कराने का मौका कब मिलेगा?

इन्द्रजीत०। सो तो मैं ठीक नहीं कह सकता मगर तुम यह बता दो कि हम लौटें तो यहां किस राह से आवें?

बुड्ढा०। इसी कमन्द के जरिये इसी राह से आ जाइयेगा, मैं यह खिड़की आपके लिए खुली छोड़ दूंगा।

आनन्द०। अच्छा यह बताओ कि भैरोंसिंह की भी कुछ खबर है?

बुड्ढा०। कुछ नहीं।

इसके बाद दोनों कुमारों ने उस बुड्ढे से कुछ भी न पूछा और खिड़की के बाद कमन्द लगा कर उसी के सहारे दोनों नीचे उतर गये।

दोनों कुमारों ने यद्यपि उन औरतों को ऊपर से बखूबी देख लिया था वह बहुत दूर नहीं पड़ती थीं मगर इस बात का गुमान न हुआ कि उन ने भी उन्हें उस समय या कमन्द के सहारे नीचे उतरती समय देखा या नहीं।

जब दोनों कुमार नीचे उतर गये तो कमन्द को भी खैंच कर साथ ले और टहलते हुए उस तरफ रवाना हुए जिधर चश्मे के किनारे बैठी हुई ऊपर से देखा था। थोड़ी देर में कुमार उस चश्मे के पास जा पहुंचे और

औरतों को उसी तरह बैठे हुए पाया। कुमार चश्मे के इस पार थे और वे सब औरतें जो गिनती में सात थीं चश्मे के उस पार सब्ज घास के ऊपर बैठी हुई थीं।

किसी गैर को अपनी तरफ आते देख वे सब औरतें चौकन्नी होकर उठ खड़ी हुईं और बड़े गौर के साथ मगर क्रोध भरी निगाहों से कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की तरफ देखने लगीं।

जिस जगह वे औरतें बैठी थीं उससे थोड़ी ही दूर पर दक्खिन तरफ बाग की दीवार के साथ ही एक छोटा सा मकान भी बना हुआ था जो पेड़ों की आड़ में होने के कारण दोनों कुमारों को ऊपर से दिखाई नहीं दिया था मगर अब नहर के किनारे आ जाने पर बखूबी दिखाई दे रहा था।

वे औरतें जिन्हें नहर के किनारे कुमार ने देखा था, सब की सब नौजवान और हसीन थीं। यद्यपि इस समय वे सब बनाव श्रृङ्गार और जेवरों के ढकोसलों से खाली थीं मगर उनका कुदरती हुस्न ऐसा न था जो किसी तरह की खूबसूरती को अपने सामने ठहरने देता। यहां पर यदि ऐसी केवल एक औरत होती तो हम उसकी खूबसूरती के बारे में कुछ लिखते भी, मगर एक दम से सात ऐसी औरतों की तारीफ में कलम चलाना हमारी ताकत के बाहर है जिन्हें प्रकृति ने खूबसूरत बनाने के समय हर तरह पर अपनी उदारता का नमूना दिखाया हो।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने जब उन औरतों को अपनी तरफ क्रोध भरी निगाहों से देखते देखा तो एक औरत से मुलायम और गम्भीर शब्दों में कहा, "हमलोग तुम्हारे पास किसी तरह की तकलीफ देने की नीयत से नहीं आए हैं बल्कि यह कहने के लिए आए हैं कि किस्मत ने हम लोगों को अकस्मात् यहां पहुंचा कर तुम लोगों का मेहमान बनाया है। हमलोग लाचार और राह भूले हुए मुसाफिर हैं और तुम लोग यहां की रहने वाली और दयावान् हो, क्योंकि जिस ईश्वर ने तुम्हें इतना सुन्दर बना कर अपनी कारीगरी का नमूना दिखाया है उसने तुम्हारे दिल को कठोर बना कर अपनी भूल का परिचय कदापि न दिया होगा, अतएव उचित है कि तुम लोग ऐसे समय में हमारी सहायता करो और बताओ कि अब हम दोनों भाई क्या करें और कहां जायें ?"

औरतें खुशामद पसन्द तो होती ही हैं! कुंअर इन्द्रजीतसिंह की मीठी और खुशामद भरी बातें सुन कर उन सभों की चढ़ी हुई त्योरियां उतर गईं और होंठों पर कुछ मुस्कराहट दिखाई देने लगी। एक ने जो सबसे चतुर चंचल और चालाक जान पड़ती थी, आगे बढ़ कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "जब आप हमारे मेहमान

बनते हैं और इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि हमारे साथ दगा न को हम लोग भी निःसन्देह आपको अपना मेहमान स्वीकार करके जहां तक हो आपकी सहायता करेंगी, अच्छा ठहरिए हम लोग जरा आपुस में सलाह कर

इतना कह कर वह चुप हो गई । उन लोगों ने आपुस में धीरे धीरे कुछ कीं और इसके बाद फिर उसी औरत ने इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर कहा

औरत० । (हाथ का इशारा करके) उस तरफ एक छोटा ला पुल बना है, उसी पर से होकर आप इस पार चले आइए ।

इन्द्र० । क्या इस नहर में पानी बहुत ज्यादा है ?

औरत० । पानी तो ज्यादा नहीं है मगर इसमें लोहे के तेज नोक वाले बहुत पड़े हैं इसलिए इस राह से आपका आना असम्भव है ।

इन्द्र० । अच्छा तो हम पुल पर से होकर आवेंगे ।

इतना कह कुमार उस तरफ रवाना हुए जिधर उस औरत ने हाथ के से पुल का होना बताया था । थोड़ी दूर जाने बाद एक गुंजान और खुशनुमा के अन्दर वह छोटा सा पुल दिखाई दिया । इस जगह नहर के दोनों तरफ पा के कई पेड़ थे जिनकी डालियां ऊपर से मिली हुई थीं और उस पर खूबसूरत पत्ती वाली वेलें इस ढंग से चढ़ी हुई थीं कि उनकी सुन्दर छाया में छिपा वह छोटा सा पुल बहुत खूबसूरत और स्थान बड़ा रमणीक मालूम होता था जगह से न तो दोनों कुमार उन औरतों को देख सकते थे और न उन औरतों निगाह इन पर पड़ सकती थी ।

जब दोनों कुमार पुल की राह पार उतर कर और घूम फिर कर उस पहुंचे जहां उन औरतों को छोड़ आए थे तो केवल दो औरतों को मौजूद जिनमें से एक तो वही थी जिससे कुंअर इन्द्रजीतसिंह से बातचीत हुई थी दूसरी उससे उम्र में कुछ कम मगर खूबसूरती में कुछ ज्यादे थी । बाकी का पता न था कि क्या हुईं और कहां गईं । कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने ताज्जु आकर उस औरत से जिसने पुल की राह इधर आने का उपदेश किया था "यहां तुम दोनों के सिवाय और कोई नहीं दिखाई देता, सब कहां चली गईं

औरत० । आपको उन औरतों से क्या मतलब ?

इन्द्रजीत० । कुछ नहीं, यों ही पूछता हूं ।

औरत० । (मुस्कुराती हुई) वे सब आप दोनों भाइयों की मेहमानदारी इन्तजाम करने चली गईं, अब आप मेरे साथ चलिए ।

इन्द्रजीत० । कहां ले चलोगी ?

औरत० । जहां मेरी इच्छा होगी, जब आपने मेरी मेहमानी कबूल हो कर ली तब........"

इन्द्रजीत० । खैर अब इस किस्म की बातें न पूछूंगा और जहां ले चलोगी चला चलूंगा ।

औरत० । (मुस्कुरा कर) अच्छा तो आइए ।

दोनों कुमार उन दोनों औरतों के पीछे पीछे रवाना हुए । हम कह चुके हैं कि जहां ये औरतें बैठी थीं वहां से थोड़ी ही दूर पर एक छोटा सा मकान बना हुआ था । वे दोनों औरतें कुमारों को लिए उसी मकान के दरवाजे पर पहुंचीं जो इस समय बन्द था मगर कोई जंजीर कुण्डा या ताला उसमें दिखाई नहीं देता था । कुमारों को यह भी मालूम न हुआ कि किस खटके को दबा कर या क्योंकर उसने वह दर्वाजा खोला । दर्वाजा खुलने पर उस औरत ने पहिले दोनों कुमारों को उसके अन्दर जाने के लिए कहा, जब दोनों कुमार उसके अन्दर चले गए तब उन दोनों ने भी दरवाजे के अन्दर पैर रक्खा और इसके बाद हलकी आवाज के साथ वह दर्वाजा आप से आप बन्द हो गया । इस समय दोनों कुमारों ने अपने को एक सुरंग में पाया जिसमें अन्धकार के सिवाय और कुछ दिखाई नहीं देता था और जिसकी चौड़ाई तीन हाथ और ऊंचाई चार हाथ से किसी तरह ज्यादे न थी । इस जगह कुमार को इस बात का ख्याल हुआ कि कहीं इन औरतों ने मुझे धोखा तो नहीं दिया मगर यह सोच कर चुप रह गये कि अब तो जो कुछ होना था हो ही गया और ये औरतें भी तो आखिर हमारे साथ ही हैं जिनके पास किसी तरह का हर्बा देखने में नहीं आया था ।

दोनों कुमारों ने अपना हाथ पसार कर दीवाल को टटोला और मालूम किया कि यह सुरंग है, उसी समय पीछे से उस औरत की यह आवाज आई, "आप दोनों भाई किसी तरह का अन्देशा न कीजिए और सीधे चले चलिए, इस सुरंग में बहुत दूर तक जाने की तकलीफ आप लोगों को न होगी ।"

वास्तव में यह सुरंग बहुत बड़ी न थी, चालीस पचास कदम से ज्यादे कुमार न गए होंगे कि सुरंग का दूसरा दर्वाजा मिला और उसे लांघ कर कुंअर इन्द्रजीत-सिंह और आनन्दसिंह ने अपने को एक दूसरे ही बाग में पाया जिसकी जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा मकान कमरों बारहदरियों तथा और इमारतों के काम में लगा हुआ था और थोड़े हिस्से में मामूली ढंग का एक छोटा सा बाग था । हां

उस बाग के बीचोबीच में एक छोटी सी खूबसूरत बावली जरूर थी जिस
अंगुल ऊंची सीढ़ियां सफेद लहरदार पत्थरों से बनी हुई थी ! इसके चारो
पर चार पेड़ कदम्ब के लगे हुए थे और एक पेड़ के नीचे एक चबूतरा
का इस लायक था कि उस पर बीस पचीस आदमी खुले तौर पर बैठ सकें।
रत का हिस्सा जो कुछ बाग में था वह सब बाहर से तो देखने में बहुत ही
था मगर अन्दर से वह कैसा और किस लायक था सो नहीं कह सकते।

बावली के पास पहुंच कर उस औरत ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "
इस समय धूप बहुत तेज हो रही है मगर इस पेड़ (कदम्ब) की घनी छा !
इस संगमर्मर के चबूतरे पर थोड़ी देर तक बैठने में आपको किसी तरह की
लीफ न होगी, मैं बहुत जल्द (सामने की तरफ इशारा करके) इस कमरे को
कर आपके आराम करने का इन्तजाम करूंगी, केवल आधी घड़ी के लि
मुझे बिदा करें।

इन्द्र०। खैर जाओ मगर इतना बताती जाओ कि तुम दोनों का नाम
जिसमें यदि कोई आवे और कुछ पूछे तो कह सकें कि हमलोग फलाने के मेहमा

औरत०। (हंस कर) जरूर जानना चाहिए, केवल इसलिए नहीं बल्
कामों के लिए हम दोनों बहिनों का नाम जान लेना आपके लिए आवश्य
मेरा नाम 'इन्द्रानी' (दूसरी की तरफ इशारा करके) और इसका नाम 'आ
है। यह मेरी सगी छोटी बहिन है।

इतना कह कर वे औरतें तेजी के साथ एक तरफ चली गई और इ
का कुछ भी इन्तजार न किया कि कुमार कुछ जवाब देंगे या और कोई
पूछेंगे। उन दोनों औरतों के चले जाने बाद कुंअर आनन्दसिंह ने अपने
कहा, "इन दोनों औरतों के नाम पर आपने कुछ ध्यान दिया ?"

इन्द्र०। हां, यदि इनका यह नाम इनके बुजुर्गों का रक्खा हुआ और इनके
का सबसे पहिला साथी नहीं है तो कह सकते हैं कि हम दोनों ने धोखा खा

आनन्द०। जी मेरा भी यही खयाल है, मगर साथ ही इसके मैं य
खयाल करता हूं कि अब हम लोगों को चालाक बनना....

इन्द्र०। (जल्दी से) नहीं नहीं, अब हम लोगों को जब तक छुटकारे की
सूरत दिखाई न दे जाय प्रकट में नादान बने रहना ही लाभदायक होगा।

आनन्द०। निःसंदेह, मगर इतना तो मेरा दिल अब भी कह रहा है
सब हमारी जिन्दगी के धागे में किसी तरह का खिचाव पैदा न करेंगी।

इन्द्र० । मगर उसमें लंगर की तरह लटकने के लिए इतना बड़ा बोझ जरूर लाद देंगी कि जिसका सहन करना असम्भव नहीं तो असह्य अवश्य होगा ।

आनन्द० । हां, अब यदि हमलोगों को कुछ सोचना है तो इसी के विषय में....

इन्द्रजीत० । अफसोस, ऐसे समय में भैरोसिंह को भी इत्तिफाक ने हम लोगों से अलग कर दिया । ऐसे मौकों पर उसकी बुद्धि अनूठा काम किया करती है । (कुछ रुक कर) देखो तो सामने से वह कौन आ रहा है !

आनन्द० । (खुशी भरी आवाज में ताज्जुब के साथ) यह तो भैरोसिंह ही है ! अब कोई परवाह की बात नहीं है अगर यह वास्तव में भैरोसिंह ही है ।

अपने से थोड़ी ही दूर पर दोनों कुमारों ने भैरोसिंह को देखा जो एक कोठरी के अन्दर से निकल कर इन्हीं की तरफ आ रहा था । दोनों कुमार उठ खड़े हुए और मिलने के लिए खुशी-खुशी भैरोसिंह की तरफ रवाना हुए । भैरोसिंह ने भी इन्हें दूर से देखा और तेजी के साथ चल कर इन दोनों भाइयों के पास आया । दोनों भाइयों ने खुशी खुशी भैरोसिंह को गले लगाया और उसे साथ लिए हुए उसी चबूतरे पर चले आए जिस पर इन्द्रानी उनको बैठा गई थी ।

इन्द्रजीत० । (चबूतरे पर बैठ कर) भैरो भाई, यह तिलिस्म का कारखाना है, यहां फूंक फूंक के कदम रखना चाहिए, अस्तु यदि मैं तुम पर शक करके तुम्हें जांचने का उद्योग करूं तो तुम्हें खफा न होना चाहिए ।

भैरो० । नहीं नहीं नहीं, मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूं कि आप लोगों की चालाकी और बुद्धिमानी की बातों से खफा होऊं, तिलिस्म और दुश्मन के घर में दोस्तों की जांच बहुत जरूरी है । बगल वाला मसा और कमर का दाग दिखलाने के अतिरिक्त बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन्हें सिवाय मेरे और आपके दूसरा कोई भी नहीं जानता जैसे 'लड़कपन वाला मजनू' ।

इन्द्रजीत० । (हंस कर) बस बस, मुझे जांच करने की कोई जरूरत नहीं है, अब यह बताओ कि तुम्हारा बटुआ तुम्हें मिला या नहीं ?

भैरो० । (ऐयारी का बटुआ कुमार के आगे रख कर) आपके तिलिस्मी खंजर की बदौलत मेरा यह बटुआ मुझे मिल गया । शुक्र है कि इसमें की कोई चीज नुकसान नहीं गई सब ज्यों की त्यों मौजूद है । (तिलिस्मी खंजर और उसके जोड़ की अंगूठी देकर) लीजिए अपना तिलिस्मी खंजर, अब मुझे इसकी कोई जरूरत नहीं, मेरे लिए मेरा बटुआ काफी है ।

इन्द्र० । (अंगूठी और तिलिस्मी खंजर लेकर) अब यद्यपि तुम्हारा किस्सा

सुनना बहुत जरूरी है क्योंकि हम लोगों ने एक आश्चर्यजनक घटना के ब[illegible] तुम्हें छोड़ा था, मगर इस सब के पहले अपना हाल तुम्हें सुना देना उचित [illegible] पड़ता है क्योंकि एकान्त का समय बहुत कम है और उन दोनों औरतों [illegible] जाने में बहुत विलम्ब नहीं है जिनकी बदौलत हम लोग यहां आए हैं और [illegible] फेर में अपने को पड़ा हुआ समझते हैं।

भैरो०। क्या किसी औरत ने आप लोगों को धोखा दिया ?

इन्द्रजीत०। निश्चय तो नहीं कह सकता कि धोखा दिया मगर जो कुछ [illegible] है उसे सुन के राय दो कि हम लोग अपने को धोखे में फंसा हुआ समझें या [illegible]

इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना कुल हाल भैरोंसिंह से जुदा हो[illegible] बाद से इस समय तक का कह सुनाया। इसके जवाब में अभी भैरोंसिंह ने [illegible] कहा भी न था कि सामने वाले कमरे का दर्वाजा खुला और उसमें से इन्द्रा[illegible]ने [illegible] निकल कर अपनी तरफ आते देखा।

इन्द्रजीत०। (भैरो से) लो वह आ गई, एक तो यही औरत है, इ[illegible] नाम इन्द्रानी है, मगर इस समय वह दूसरी औरत इसके साथ नहीं है जि[illegible] अपनी सगी छोटी बहिन बताती है।

भैरो०। (ताज्जुब से उस औरत की तरफ देख कर) इसे तो मैं पहि[illegible] हूं मगर यह नहीं जानता था कि इसका नाम 'इन्द्रानी' है।

इन्द्रजीत०। तुमने इसे कब देखा ?

भैरो०। तिलिस्मी खंजर लेकर आपसे जुदा होने के बाद बटुआ [illegible] सम्बन्ध में इसने मेरी बड़ी मदद की थी, जब मैं अपना हाल सुनाऊंगा त[illegible] को मालूम होगा कि यह कैसी नेक औरत है, मगर इसकी छोटी बहिन को [illegible] जानता, शायद उसे भी देखा हो।

इतने ही में इन्द्रानी वहां आ पहुंची जहां भैरोंसिंह और दोनों कुमार बैठे [illegible] चीत कर रहे थे। जिस तरह भैरोंसिंह ने इन्द्रानी को देखते ही पहिचान लि[illegible] उसी तरह इन्द्रानी ने भी भैरोंसिंह को देखते ही पहिचान लिया और कहा, [illegible] आप भी यहां आ पहुंचे ? अच्छा हुआ, क्योंकि आपके आने से दोनों कुमार[illegible] दिल बहलेगा, इसके अतिरिक्त मुझ पर भी किसी तरह का शक शुबहा न र[illegible]

भैरो०। जी हां मैं भी यहां आ पहुंचा और आपको दूर से देखते ही [illegible] चान लिया बल्कि कुमार से कह भी दिया कि इन्होंने मेरी बड़ी सहायता की [illegible]

इन्द्रानी०। यह तो बताओ कि स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा चुके हो या [illegible]

भैरो० । हां, मैं स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा चुका हूं और हर तरह से निश्चिन्त हूं ।

इन्द्रानी० । (दोनों कुमारों से) और आप लोग ?

इन्द्र० । हम दोनों भाई भी ।

इन्द्रानी० । अच्छा तो अब आप लोग कृपा करके उस कमरे में चलिए ।

भैरो० । बहुत अच्छी बात है, (दोनों कुमारों से) चलिए ।

भैरोसिंह को लिए हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह उस कमरे में आए जिसे इन्द्रानी ने इनके लिए खोला था । कुमार ने इस कमरे को देख कर बहुत पसन्द किया क्योंकि यह कमरा बहुत बड़ा और खूबसूरती के साथ सजाया हुआ था । इसकी छत बहुत ऊंची और रंगीन थी, तथा दोवारों पर भी मुसौवर ने अनोखा काम किया था । कुछ दीवारों पर जंगल पहाड़ खोह कंदरा घाटी और शिकारगाह तथा बहते हुए चश्मे का अनोखा दृश्य ऐसे अच्छे ढंग से दिखाया गया था कि देखने वाला नित्य पहरों देखा करे और उसका चित्त न भरे । मौके मौके से जंगली जानवरों की तस्वीरें भी ऐसी बनी थीं कि देखने वालों को उसके असली होने का धोखा होता था । दीवारों पर बनी हुई तस्वीरों के अतिरिक्त कागज और कपड़ों पर बनी हुई तथा सुन्दर चौखटों में जड़ी हुई तस्वीरों की भी इस कमरे में कमी न थी । ये तस्वीरें केवल हसीन और नौजवान औरतों की थीं जिनकी खूबसूरती और भाव को देख कर देखने वाला प्रेम से दीवाना हो सकता था । इन्हीं तस्वीरों में इन्द्रानी और आनन्दी की तस्वीरें भी थीं जिन्हें देखते ही कुंअर इन्द्रजीतसिंह हंस पड़े और भैरोसिंह की तरफ देख के बोले, "देखो यह तस्वीर इन्द्रानी की और यह उनकी बहिन आनन्दी की है । उन्हें तुमने न देखा होगा !"

भैरो० । जी इनकी छोटी बहिन को तो मैंने नहीं देखा ।

इन्द्र० । स्वयम् जैसी खूबसूरत हैं वैसी ही तस्वीर भी बनी है । (इन्द्रानी की तरफ देख कर) मगर अब हमें इस तस्वीर के देखने की कोई जरूरत नहीं !

इन्द्रानी० । (हंस कर) बेशक, क्योंकि अब आप स्वतन्त्र और लड़के नहीं रहे ।

इन्द्रानी का जवाब सुन भैरोसिंह तो खिलखिला कर हंस पड़ा मगर आनन्दसिंह ने मुश्किल से हंसी रोकी ।

इस कमरे में रोशनी का सामान (दीवारगीर डोल हांडी इत्यादि) भी बेशकीमत खूबसूरत और अच्छे ढंग से लगा हुआ था । सुन्दर बिछावन और फर्श के अतिरिक्त चांदी और सोने की कई कुर्सियां भी उस कमरे में मौजूद थीं जिन्हें देख

कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने एक सोने की कुर्सी पर बैठने का इरादा किया,
इन्द्रानी ने सभ्यता के साथ रोक कर कहा—"पहिले आप लोग भोजन कर
क्योंकि भोजन का सब सामान तैयार है और ठंडा हो रहा है।"

इन्द्र०। भोजन करने की तो इच्छा नहीं है।

इन्द्रानी०। (चेहरा उदास बना कर) तो फिर आप हमारे मेहमान क्यों
बने थे? क्या आप अपने को बेमुरौवत और झूठा बनाया चाहते हैं?

इन्द्रानी ने कुमार को हर तरह से कायल और मजबूर करके भोजन
के लिए तैयार किया। इस कमरे में छोटा सा एक दर्वाजा दूसरे कमरे में जा
लिए बना हुआ था, इसी राह से दोनों कुमार और भैरोसिंह को लिए हुए इ
कमरे में पहुंची। यह कमरा बहुत ही छोटा और राजाओं के पूजा पाठ
भोजन इत्यादि ही के योग्य बना हुआ था। कुमार ने देखा कि दोनों भाइ
लिए उत्तम से उत्तम भोजन का सामान चांदी और सोने के बर्तनों में तैय
और हाथ में सुन्दर पंखा लिए आनन्दी उसकी हिफाजत कर रही है। इन्द्रा
आनन्दी के हाथ से पंखा ले लिया और कहा, "भैरोसिंह भी आ पहुंचे हैं,
वास्ते भी सामान बहुत जल्द ले आओ।"

आज्ञा पाते ही आनन्दी चली गई और थोड़ी देर में कई औरतों के
भोजन का सामान लिए लौट आई। करीने से सब सामान लगाने बाद उसने
औरतों को बिदा किया जिन्हें अपने साथ लाई थीं।

दोनों कुमार और भैरोसिंह भोजन करने के लिए बैठे, उस समय इन्द्र
सिंह ने भेद भरी निगाह से भैरोसिंह की तरफ देखा और भैरोसिंह ने भी इ
में ही लापरवाही दिखा दी। इस बात को इन्द्रानी और आनन्दी ने भी
लिया कि कुमार को इस भोजन में बेहोशी की दवा का शक हुआ मगर
बोलना मुनासिब न समझ कर चुप रह गईं। जब तक दोनों कुमार भोजन
रहे तब तक आनन्दी पंखा हांकती रही। दोनों कुमार इन दोनों औरतों
बर्ताव देख कर बहुत खुश हुए और मन में कहने लगे कि ये औरतें जितनी
सूरत हैं उतनी ही नेक भी हैं, जिनके साथ ब्याही जायंगी उनके बड़भागी
में कोई सन्देह नहीं (क्योंकि ये दोनों कुमारी मालूम होती थीं)।

भोजन समाप्त होने पर आनन्दी ने दोनों कुमार और भैरोसिंह के
धुलाये और इसके बाद फिर दोनों कुमार और भैरोसिंह इन्द्रानी और आ
के साथ उसी पहिले वाले कमरे में आये। इन्द्रानी ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह को

"अब थोड़ी देर आप लोग आराम करें और मुझे इजाजत दें तो....

इन्द्रजीत०। मेरा जी तुम लोगों का हाल जानने के लिए बेचैन हो रहा है। इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम एक पल के लिए भी कहीं जाओ जब तक कि मेरी बातों का पूरा पूरा जवाब न दे लो मगर यह तो बताओ कि तुम लोग भोजन कर चुकी हो या नहीं!

इन्द्रानी०। जी अभी तो हमलोगों ने भोजन नहीं किया है, जैसी मर्जी हो....

इन्द्रजीत०। तब मैं इस समय नहीं रोक सकता, मगर इस बात का वादा जरूर ले लूंगा कि तुम घण्टे भर से ज्यादे न लगाओगी और मुझे अपने इन्तजार का दुःख न दोगी।

इन्द्रानी०। जी मैं वादा करती हूं कि घण्टे भर के अन्दर ही आपकी सेवा में लौट आऊंगी।

इतना कह कर आनन्दी को साथ लिए हुए इन्द्रानी चली गई और दोनों कुमार तथा भैरोसिंह को बातचीत करने का मौका दे गई।

छठवां बयान

इन्द्रानी और आनन्दी के चले जाने के बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह और भैरोसिंह में यों बातचीत होने लगी :—

इन्द्रजीत०। (भैरो से) असल बात जो कुछ इन्द्रानी से पूछा चाहता था उसका मौका तो अभी तक मिला ही नहीं।

भैरो०। यही कि तुम कौन और कहां की रहने वाली हो इत्यादि....!

इन्द्र०। हां, और किशोरी कामिनी कमलिनी इत्यादि कहां हैं तथा उनसे मुलाकात क्योंकर हो सकती है?

आनन्द०। (भैरो से) इस बात का कुछ पता तो शायद तुम भी दे सकोगे, क्योंकि हम लोगों के पहिले तुम इन्द्रानी को जान चुके हो और कई ऐसी जगहों भी घूम चुके हो जहां हम लोग अभी तक नहीं गए हैं।

इन्द्र०। हां पहिले तुम अपना हाल तो कहो!

भैरो०। सुनिए—अपना बटुआ पाने की उम्मीद में जब मैं उस दर्वाजे के अन्दर गया तो जाते ही मैंने उन दोनों को ललकार के कहा, "मैं भैरोसिंह स्वयं पहुंचा!" इतने ही में वह दर्वाजा जिस राह से मैं उस कमरे में गया था बन्द हो गया। यद्यपि उस समय मुझे एक प्रकार का भय मालूम हुआ परन्तु बटुए को

लालच ने मुझे उस तरफ देर तक ध्यान न देने दिया और मैं सीधा उस नका-
पोश के पास चला गया जिसकी कमर में मेरा बटुआ लटक रहा था।

मैं समझे हुए था कि 'पीला मकरन्द' अर्थात् पीली पोशाक वाला नका-
स्याह नकाबपोश का दुश्मन तो है ही अतएव स्याह नकावपोश का मुकाबला
में पीले मकरन्द से मुझे कुछ मदद अवश्य मिलेगी मगर मेरा ख्याल गलत
मेरा नाम सुनते ही वे दोनों नकावपोश मेरे दुश्मन हो गए और यह कह कर
लड़ने लगे कि 'यह ऐयारी का बटुआ अब तुम्हें नहीं मिल सकता, जब रहे
हम दोनों में से किसी एक के पास ही रहेगा'।

परन्तु मैं इस बात से भी हताश न हुआ। मुझे उस बटुए की लालच
कम न थी कि उन दोनों के धमकाने से डर जाता और अपने बटुए के
नाउम्मीद होकर अपने बचाव की सूरत देखता, इसके अतिरिक्त आपका ति-
खंजर भी मुझे हताश नहीं होने देता था अस्तु मैं उन दोनों के वारों का
उन्हें देने और दिल खोल कर लड़ने लगा और थोड़ी ही देर में विश्वास करा
कि राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का मुकाबला करना हंसी खेल नहीं है।*

थोड़ी देर तक तो दोनों नकावपोश मेरा वार बहुत अच्छी तरह बचा-
गये मगर इसके बाद जब उन दोनों ने देखा कि अब उनमें वार बचाने की
नहीं रही और तिलिस्मी खंजर जिस जगह बैठ जायगा दो टुकड़े किए
रहेगा, तब पीले मकरन्द ने ऊंची आवाज में कहा, "भैरोसिंह ठहरो ठहरो,
मेरी बात सुन लो तब लड़ना। ओ स्याह नकाबवाले, क्यों अपनी जान का
बन रहा है? जरा ठहर जा और मुझे भैरोसिंह से दो दो बातें कर लेने दे।

पीले मकरन्द की बात सुन कर स्याह नकावपोश ने और साथ ही
लड़ाई से हाथ खैंच लिया मगर तिलिस्मी खंजर की रोशनी को कम होने न
इसके बाद पीले मकरन्द ने मुझसे पूछा, "तुम हम लोगों से क्यों लड़ रहे

मैं०। (स्याह नकाबपोश की तरफ बता कर) इसके पास मेरा ऐयारी
बटुआ है जिसे मैं लिया चाहता हूं।

पीला मकरन्द०। तो मुझसे क्यों लड़ रहे हो?

मैं०। तुमसे नहीं लड़ता बल्कि तुम खुद ही मुझसे लड़ रहे हो!

पीला मक०। (स्याह नकावपोश से) क्यों, अब क्या इरादा है,
बटुआ खुशी से इन्हें दे दोगे या लड़ कर अपनी जान दोगे?

* बहुत ठीक, सत्य वचन।

स्याह नकाबपोश०। जब बटुएका मालिक स्वयम् आ पहुंचा है तो बटुआ देने में मुझे क्योंकर इनकार हो सकता है? हां यदि ये न आते तो मैं बटुआ कदापि न देता।

पीला मक०। जब ये न आते तो मैं भी देख लेता कि तुम वह बटुआ मुझे कैसे नहीं देते, खैर अब इनका बटुआ इन्हें दे दो और पीछा छुड़ाओ!

स्याह नकाबपोश ने बटुआ खोल कर मेरे आगे रख दिया और कहा, "अब तो मुझे छुट्टी मिली ?" इसके जवाब में मैंने कहा, "नहीं, पहिले मुझे देख लेने दो कि मेरी अनमोल चीजें इसमें हैं या नहीं।"

मैंने उस बटुए के बन्धन पर निगाह पड़ते ही पहचान लिया कि मेरे हाथ की दी हुई गिरह ज्यों की त्यों मौजूद है तथापि होशियारी के तौर पर बटुआ खोल कर देख लिया और जब निश्चय हो गया कि मेरी सब चीजें इसमें मौजूद हैं तो खुश होकर बटुआ कमर में लगा कर स्याह नकाबपोश से बोला, "अब मेरी तरफ से तुम्हें छुट्टी है, मगर यह तो बता दो कि कुमार के पास किस राह से जा सकता हूं ?" इसका जवाब स्याह नकाबपोश ने यह दिया कि 'यह सब हाल मैं नहीं जानता, तुम्हें जो कुछ पूछना है पीले मकरन्द से पूछ लो'।

इतना कह कर स्याह नकाबपोश न मालूम किधर चला गया और मैं पीले मकरन्द का मुंह देखने लगा। पीले मकरन्द ने मुझसे पूछा, "अब तुम क्या चाहते हो ?"

मैं०। अपने मालिक के पास जाना चाहता हूं!

पीला मक०। तो जाते क्यों नहीं ?

मैं०। क्या उस दरवाजे की राह जा सकूंगा जिधर से आया था ?

पीला मक०। क्या तुम देखते नहीं कि वह दर्वाजा बन्द हो गया है और अब तुम्हारे खोलने से नहीं खुल सकता!

मैं०। तब मैं क्योंकर बाहर जा सकता हूं ?

इसके जवाब में पीले मकरन्द ने कहा, "तुम मेरी सहायता के बिना यहां से निकल कर बाहर नहीं जा सकते क्योंकि रास्ता बहुत कठिन और चक्करदार है, खैर तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ मैं तुम्हें यहां से बाहर कर दूंगा।"

पीले मकरन्द की बात सुन कर मैं उसके साथ साथ जाने के लिए तैयार हो गया मगर फिर भी अपना दिल भरने के लिए मैंने एक दफे उस दर्वाजे को खोलने का उद्योग किया जिधर से उस कमरे में गया था। जब वह दर्वाजा न खुला तब लाचार हो कर मैंने पीले मकरन्द का सहारा लिया मगर दिल में इस बात का ख्याल जमा रहा कि कहीं वह मेरे साथ दगा न करे।

पीले मकरन्द ने चिराग उठा लिया और मुझे अपने पीछे पीछे आने के लिए कहा तथा मैं तिलिस्मी खंजर हाथ में लिए हुए उसके साथ रवाना हुआ। पीले मकरन्द ने विचित्र ढंग से कई दर्वाजे खोले और मुझे कई कोठरियों में घुमाता हुआ मकान के बाहर ले गया। मैं तो समझे हुए था कि अब आपके पास पहुंचा चाहता हूं मगर जब बाहर निकलने पर देखा तो अपने को किसी और ही मकान के दर्वाजे पर पाया। चारो तरफ सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी और मैं ताज्जुब की निगाहों से चारों तरफ देख रहा था। उस समय पीले मकरन्द ने मुझे उस मकान के अन्दर चलने के लिए कहा मगर इस जगह वह स्वयं पीछे हो गया और मुझे आगे चलने के लिए बोला। उसकी इस बात से मुझे शक हुआ, मैंने उससे कहा कि 'जिस तरह अभी तक तुम मेरे आगे आगे चलते आए हो उसी तरह अब भी इस मकान के अन्दर क्यों नहीं चलते? मैं तुम्हारे पीछे चला चलूंगा'। इसके जवाब में पीले मकरन्द ने सिर हिलाया और कुछ कहा ही चाहता था कि मेरे पीछे की तरफ से आवाज आई, "ओ भैरों! खबरदार! इस मकान के अन्दर पैर न रखना, और इस पीले मकरन्द को पकड़ रखना, भागने न पावे!"

मैं घूम कर पीछे की तरफ देखने लगा कि यह आवाज देने वाला कौन है इतने ही में इस इन्द्रानी पर मेरी निगाह पड़ी जो तेजी के साथ चल कर मेरी तरफ आ रही थी। पलट कर मैंने पीले मकरन्द की तरफ देखा तो उसे वहां न पाया, न मालूम वह यकायक क्योंकर गायब हो गया। जब इन्द्रानी मेरे पास पहुंची तो उसने कहा, "तुमने बड़ी भूल की जो उस शैतान मकरन्द को पकड़ न लिया। उसने तुम्हारे साथ धोखेबाजी की। बेशक वह तुम्हारे बटुए की लालच में तुम्हारी जान लिया चाहता था। ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि मुझे खबर लग गई और मैं दौड़ी हुई यहां तक चली आई। वह कम्बख्त मुझे देखते ही भाग गया।"

इन्द्रानी की बात सुन कर मैं ताज्जुब में आ गया और उसका मुंह देखने लगा। सबसे ज्यादे ताज्जुब तो मुझे इस बात का था कि इन्द्रानी जैसी खूबसूरत और नाजुक औरत को देखते ही वह शैतान मकरन्द भाग क्यों गया। इसके अतिरिक्त देर तक तो मैं इन्द्रानी की खूबसूरती ही को देखता रह गया। (मुस्कुरा कर) माफ कीजिए, बुरा न मानिएगा, क्योंकि मैं सच कहता हूं कि इन्द्रानी को मैंने किशोरी से भी बढ़ कर खूबसूरत पाया। सुबह के सुहावने समय में

चेहरा दिन की तरह दमक रहा था !

इन्द्रजीत० । यह तुम्हारी खुशनसीबी थी कि सुबह के वक्त ऐसी खूबसूरत औरत का मुंह देखा।

भैरो० । उसी का यह फल मिला कि जान बच गई और आप से मिल सका।

इन्द्रजीत० । खैर तब क्या हुआ !

भैरो० । मैंने धन्यवाद देकर इन्द्रानी से पूछा कि 'तुम कौन हो और यह मकरन्द कौन था' ? इसके जवाब में इन्द्रानी ने कहा कि 'यह तिलिस्म है, यहां के भेदों को जानने का उद्योग न करो, जो कुछ आप से आप मालूम होता जाय उसे समझते जाओ। इस तिलिस्म में तुम्हारे दोस्त और दुश्मन बहुत हैं, अभी तो आए हो, दो चार दिन में बहुत सी बातों का पता लग जाएगा, हां अपने बारे में इतना जरूर कह दूंगी कि इस तिलिस्म की रानी हूं और तुम्हें तथा दोनों कुमारों को अच्छी तरह जानती हूं'।

इन्द्रानी इतना कह के चुप हो गई और पीछे की तरफ देखने लगी। उसी समय और भी चार पांच औरतें वहां आ पहुंचीं जो खूबसूरत कमसिन और अच्छे गहने कपड़े पहिरे हुए थीं। मैंने किशोरी कामिनी वगैरह का हाल इन्द्रानी से पूछना चाहा मगर उसने बात करने की मोहलत न दी और यह कह कर मुझे एक औरत के सुपुर्द कर दिया कि 'यह तुम्हें कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंचा देगी'। इतना कह कर बाकी औरतों को साथ लिए हुए इन्द्रानी चली गई और मुझे तरद्दुद में छोड़ गई। अन्त में उसी औरत की मदद से मैं यहां तक पहुंचा।

इन्द्रजीत० । आखिर उस औरत से भी तुमने कुछ पूछा या नहीं ?

भैरो० । पूछा तो बहुत कुछ मगर उसने जवाब एक बात का भी न दिया मानो वह कुछ सुनती ही न थी। हां एक बात कहना तो मैं भूल ही गया।

इन्द्र० । वह क्या ?

भैरो० । इन्द्रानी के चले जाने के बाद जब मैं उस औरत के साथ इधर आ रहा था तब रास्ते में एक लपेटा हुआ कागज मुझे मिला जो जमीन पर इस तरह पड़ा हुआ था जैसे किसी राह चलते की जेब से गिर गया हो। (कमर से कागज निकाल कर और कुंअर इन्द्रजीतसिंह के हाथ में दे कर) लीजिए पढ़िए, मैं तो इसे पढ़ कर पागल सा हो गया था।

भैरोसिंह के हाथ से कागज लेकर कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने पढ़ा और उसे अच्छी तरह देख कर भैरोसिंह से कहा, "बड़े आश्चर्य की बात है, मगर यह हो नहीं सकता,

क्योंकि हमारा दिल हमारे कब्जे में नहीं है और न हम किसी के आधीन

आनन्द०। भैया जरा मैं भी देखूं यह कागज कैसा है और इसमें क्या लिखा

इन्द्रजीत० । (वह कागज देकर) लो देखो ।

आनन्द० । (कागज पढ़ कर और उसे अच्छी तरह देख कर) यह तो जबर्दस्ती है, मानो हम लोग कोई चीज ही नहीं हैं । (भैरोसिंह से) जिस यह चीठी तुमने जमीन पर से उठाई थी उस समय उस औरत ने भी देख तुमसे कुछ कहा था कि नहीं जो तुम्हारे साथ थी ?

भैरो० । उसे इस बात की कुछ भी खबर नहीं थी क्योंकि वह मेरे आगे चल रही थी । मैंने जमीन पर से चीठी उठाई भी और पढ़ी भी मगर उसे भी मालूम न हुआ । मुझे तो शक होता है कि वह गूंगी और बहरी अथवा से ज्यादे सूधी और बेवकूफ थी ।

आनन्द०।इस पर मोहर इस ढंग की पड़ी हुई है जैसे किसी राजदर्बार

भैरो० । बेशक ऐसी ही मालूम पड़ती है । (हंस कर इन्द्रजीतसिंह से) आपके लिए तो पौ बारह है, किस्मत का धनी होना इसे कहते हैं !

इन्द्र० । तुम्हारी ऐसी की तैसी ।

पाठकों के सुबीते के लिए हम उस चीठी की नकल यहां लिख देते हैं कर और देख कर दोनों कुमारों और भैरोसिंह को ताज्जुब मालूम हुआ

"पूज्यवर,

पत्र पाकर चित्त प्रसन्न हुआ । आपकी राय बहुत अच्छी है । उन दो लिए कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ऐसा वर मिलना कठिन है, दोनों कुमारों को भी ऐसी स्त्री नहीं मिल सकती । बस अब इसमें सोच करने की कोई जरूरत नहीं, आपकी आज्ञानुसार मैं आठ पहर के अन्दर सामान दुरुस्त कर दूंगा । बस परसों ब्याह हो जाना ही ठीक है। बड़े तिलिस्म में जो कुछ दहेज की रकम रख गये हैं वह इन्हीं दोनों कुमारों है । यद्यपि इन दोनों का दिल चुटीला हो चुका है परन्तु हमारा प्रताप कोई चीज है ? जब तक दोनों कुमार आपकी आज्ञा न मानेंगे तब तक सकते हैं, अन्त [illegible] वह होना आवश्यक है जो आप चाहते हैं ।

मुहर

द०—मु०

इस चीठी को कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने पुनः पढ़ा और ताज्जुब करते

छोटे भाई की तरफ देख के कहा, "ताज्जुब नहीं कि यह चीठी किसी ने दिल्लगी के तौर पर लिख कर भैरोसिंह के रास्ते में डाल दी हो और हम लोगों को तरद्दुद में डाल कर तमाशा देखा चाहता हो ?"

आन० । कदाचित ऐसा ही हो। अगर कमलिनी से मुलाकात हो गई होती तो....

भैरो० । तब क्या होता ? मैं यह पूछता हूं कि इस तिलिस्म के अन्दर आकर आप दोनों भाइयों ने क्या किया ? अगर इसी तरह से समय बिताया जायगा तो देखियेगा कि आगे चल कर क्या क्या होता है ।

इन्द्र० । तो तुम्हारी क्या राय है, बिना समझे बूझे तोड़ फोड़ मचाऊं ?

भैरो० । बिना समझे बूझे तोड़ फोड़ मचाने की क्या जरूरत है ? तिलिस्मी किताब और तिलिस्मी बाजे से आपने क्या पाया और वह किस दिन काम आवेगा ? क्या इन बागों का हाल उसमें लिखा हुआ न था ?

इन्द्रजीत० । लिखा हुआ तो था मगर साथ ही इसके यह भी अन्दाज मिलता था कि तिलिस्म के ये हिस्से टूटने वाले नहीं हैं ।

भैरो० । यह तो मैं भी बिना तिलिस्मी किताब पढ़े ही समझ सकता हूं कि तिलिस्म के ये हिस्से टूटने वाले नहीं हैं, अगर टूटने वाले होते तो किशोरी कामिनी वगैरह को राजा गोपालसिंह हिफाजत के लिए यहां न पहुंचा देते, मगर यहां से निकल जाने का या तिलिस्म के उस हिस्से में पहुंचने का रास्ता तो जरूर होगा जिसे आप तोड़ सकते हैं ।

आनन्द० । हां इसमें क्या शक है ।

भैरो० । अगर शक नहीं है तो उसे खोजना चाहिए ।

इतने ही में इन्द्रानी और आनन्दी भी आ पहुंची जिन्हें देख दोनों कुमार बहुत प्रसन्न हुए और इन्द्रजीतसिंह ने इन्द्रानी से कहा—"मैं बहुत देर से तुम्हारे आने का इन्तजार कर रहा था।"

इन्द्रानी० । मेरे आने में वादे से ज्यादे देर तो नहीं हुई ।

इन्द्र० । न सही, मगर ऐसे आदमी के लिए जिसका दिल तरह तरह के तरद्दुदों और उलझनों में पड़ कर खराब हो रहा हो, इतना इन्तजार भी कम नहीं है।

इस समय इन्द्रानी और आनन्दी यद्यपि सादी पोशाक में थीं मगर किसी तरह की सजावट की मुहताज न रहने वाली उनकी खूबसूरती, देखने वाले का दिल, चाहे वह परले सिरे का त्यागी क्यों न हो, अपनी तरफ खैंचे बिना नहीं रह सकती थी । नुकीले हर्बों से ज्यादे काम करने वाली उनकी बड़ी बड़ी आंखों में

मारने और जिलाने वाली दोनों तरह की शक्तियां मौजूद थीं। गाले इत्तिफाक से आ पड़ी हुई घुंघराली लटें शान्त बैठे हुए मन को भी चानु कर अपनी तरफ मुतवजह कर रही थीं। सूधेपन और नेकचलनी का देने वाली सीधी और पतली नाक तो जादू का काम कर रही थी मगर खूबसूरत पतले और लाल ओठों को हिलते देखने और उनमें से तुले हुए मन लुभाने वाले शब्दों के निकलने की लालसा से दोनों कुमारों को छु नहीं मिल सकता था और उनकी सुराहीदार गर्दनों पर गर्दन देने वाली कमी नहीं हो सकती थी। केवल इतना ही नहीं, उनके सुन्दर सुडौल और आकार वाले अंगों की छटा बड़े बड़े कवियों और चित्रकारों को भी चक्कर डाल कर लज्जित कर सकती थीं।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के आग्रह से वे दोनों उनके बैठ गईं मगर अदब का पल्ला लिए और सर नीचा किए हुए।

इन्द्रानी०। इस जल्दी और थोड़े समय में हम लोग आपकी खातिर और मेहमानी का इन्तजाम कुछ भी न कर सकीं मगर मुझे आशा है कि देर के बाद इस कसूर की माफी का इन्तजाम अवश्य कर सकूंगी।

इन्द्रजीत०। इतना क्या कम है कि मुझ जैसे नाचीज मुसाफिर के यहां की रानी होकर तुमने ऐसा अच्छा बर्ताव किया। अब आशा है कि तरह तुमने अपने बर्ताव से मुझे प्रसन्न किया है, उसी तरह मेरे सवालों का देकर मेरा सन्देह भी दूर करोगी।

इन्द्रानी०। आप जो कुछ पूछना चाहते हों पूछें, मुझे जवाब देने में तरह का उज्र न होगा।

इन्द्रजीत०। किशोरी कामिनी कमलिनी और लाडिली वगैरह इस ति के अन्दर आई हैं?

इन्द्रानी०। जी हां आई तो हैं?

इन्द्रजीत०। क्या तुम जानती हो कि इस समय वे सब कहां हैं?

इन्द्रानी०। जी हां, मैं अच्छी तरह जानती हूं। इस बाग के पीछे सटा एक और तिलिस्मी बाग है, सभों को लिए हुए कमलिनी उसी में चली ए और उसी में रहती हैं!

इन्द्रजीत०। क्या हम लोगों को तुम उनके पास पहुंचा सकती हो?

इन्द्रानी०। जी नहीं।

इन्द्रजीत० । क्यों ।

इन्द्रानी० । वह बाग एक दूसरी औरत के आधीन है जिससे बढ़ कर मेरी दुश्मन इस दुनिया में कोई नहीं ।

इन्द्र० । तो क्या तुम उस बाग में कभी नहीं जातीं ?

इन्द्रानी० । जी नहीं, क्योंकि एक तो दुश्मन के खयाल से मेरा जाना वहां नहीं होता, दूसरे उसने रास्ता भी बन्द कर दिया है, इसी तरह मैं उसके पक्षपातियों को अपने बाग में नहीं आने देती ।

इन्द्र० । तो हमारी उनकी मुलाकात क्योंकर हो सकती है ?

इन्द्रानी० । यदि आप उन सभों से मिला चाहें तो तीन चार दिन और सब्र करें क्योंकि अब ईश्वर की कृपा से ऐसा प्रबन्ध हो गया है कि तीन चार दिन के अन्दर ही वह बाग मेरे कब्जे में आ जाय और उसका मालिक मेरा कैदी बने । मेरे दारोगा ने तो कमलिनी को उस बाग में जाने से मना किया था मगर अफसोस कि उसने दारोगा की बात न मानी और धोखे में पड़ कर अपने को एक ऐसी जगह जा फंसाया जहां से हम लोगों का सम्बन्ध कुछ भी नहीं ।

इन्द्र० । तो क्या तुम लोग राजा गोपालसिंह के आधीन नहीं हो ?

इन्द्रानी० । हम लोग जरूर राजा गोपालसिंह के आधीन हैं, और मैं यह जानती हूं कि आप यहां के तिलिस्म को तोड़ने के लिए आए हैं अस्तु इस बात को भी जानते होंगे कि यहां के बहुत से ऐसे हिस्से हैं जिन्हें आप तोड़ नहीं सकेंगे ।

इन्द्र० । हां जानते हैं ।

इन्द्रानी० । उन्हीं हिस्सों में से जो टूटने वाले नहीं हैं कई दर्जे ऐसे हैं जो केवल सैर तमाशे के लिए बनाए गए हैं और वहां जमानिया का राजा प्रायः अपने मेहमानों को भेज कर सैर तमाशा दिखाया करता है, अस्तु इस लिए कि वह जगह हमेशे अच्छी हालत में बनी रहे हम लोगों के कब्जे में दे दी गई है और नाम मात्र के लिए हम लोग तिलिस्म की रानी कहलाती हैं, मगर हां इतना तो जरूर है कि हमलोगों को सोना चांदी और जवाहिरात की (यहां की बदौलत) कमी नहीं है ।

इन्द्र० । जिन दिनों राजा गोपालसिंह को मायारानी ने कैद कर लिया था उन दिनों यहां की क्या अवस्था थी ? मायारानी भी कभी यहां आती थी या नहीं ?

इन्द्रानी० । जी नहीं, मायारानी को इन सब बातों और जगहों की कुछ खबर न थी इसलिए वह अपने समय में यहां कभी नहीं आई और तब तक हमलोग स्वतन्त्र बने रहे । अब इधर जब से आपने राजा गोपालसिंह को कैद से छुड़ा कर

हम लोगों को पुनः जीवनदान दिया है तब से केवल तीन दफे राजा गोपाल
यहां आए हैं और चौथी दफे परसों मेरी शादी में यहां आवेंगे !

इन्द्र० । (चौंक कर) क्या परसों तुम्हारी शादी होने वाली है ?

इन्द्रानी० । (कुछ शर्मा कर) जी हां, मेरी और (आनन्दी की तरफ
करके) मेरी इस छोटी बहिन की भी ।

इन्द्र० । किसके साथ ?

इन्द्रानी० । सो तो मुझे मालूम नहीं ।

इन्द्र० । शादी करने वाले कौन हैं ? तुम्हारे मां बाप होंगे ?

इन्द्रानी० । जी मेरे मां बाप नहीं हैं केवल गुरुजी महाराज हैं जिनको
मुझे मां बाप की आज्ञा से भी बढ़ कर माननी पड़ती है ।

भैरो० । (इन्द्रानी से) इस तिलिस्म के अन्दर कल परसों में किसी और
ब्याह भी होने वाला है ?

इन्द्रानी० । नहीं ।

भैरो० । मगर हमने सुना है ।

इन्द्रानी०। कदापि नहीं, अगर ऐसा होता तो हमलोगों को पहिले खबर

इन्द्रानी का जवाब सुन कर भैरोसिंह ने मुस्कुराते हुए कुंअर इन्द्रजीत
और आनन्दसिंह की तरफ देखा और दोनों कुमारों ने भी उसका मतलब
कर सर नीचा कर लिया ।

इन्द्रजीत०। (इन्द्रानी से) क्या तुम लोगों में पर्दे का कुछ खयाल नहीं

इन्द्रानी० । पर्दे का खयाल बहुत ज्यादे रहता है मगर उस आदमी
का बर्ताव करना पाप समझा जाता है जिसको ईश्वर ने तिलिस्म तोड़ने की
दी है तिलिस्म तोड़ने वाले को हम ईश्वर समझें यही उचित है ।

आनन्द० । तो तुम राजा गोपालसिंह के पास जा सकती हो या हमारी
उनके पास पहुंचा सकती हो ?

इन्द्रानी० । मैं स्वयं राजा गोपालसिंह के पास जा सकती हूं और अपना
भेज सकती हूं मगर आजकल ऐसा करने का मौका नहीं है, क्योंकि आजकल
रानी वगैरह खास बाग में आई हुई हैं और उनसे तथा राजा गोपालसिंह
जदी हो रही है, शायद यह बात आपको भी मालूम होगी ।

इन्द्रजीत० । हां मालूम है ।

इन्द्रानी० । ऐसी अवस्था में हमलोगों का या हमारे आदमियों का वहां

अनुचित ही नहीं बल्कि दुःखदाई भी हो सकता है।

इन्द्रजीत०। हां सो तो जरूर है।

इन्द्रानी०। मगर मैं आपका मतलब समझ गई, आप शायद उसके विषय में राजा गोपालसिंह को लिखा चाहते हैं जिसके हिस्से में किशोरी कामिनी वगैरह दी हुई हैं, मगर ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है, दो रोज सब्र कीजिये तब तक स्वयं राजा गोपालसिंह ही यहां आकर आपसे मिलेंगे।

इन्द्रजीत०। अच्छा यह बताओ कि हमारी चीठी किशोरी या कमलिनी के पास पहुंचवा सकती हो ?

इन्द्रानी०। जी हां बल्कि उसका जवाब भी मंगवा सकती हूं, मगर ताज्जुब की बात है कि कमलिनी ने आपके पास कोई पत्र क्यों नहीं भेजा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्हें आप लोगों का यहां आना मालूम है।

इन्द्रजीत०। शायद कोई सबब होगा, अच्छा तो मैं कमलिनी के नाम से एक चीठी लिख दूं ?

इन्द्रानी०। हां लिख दीजिये, मैं उसका जवाब मंगा दूंगी।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने भैरोसिंह की तरफ देखा। भैरोसिंह ने अपने बटुए में से कलम दावात और कागज निकाल कर कुमार के सामने रख दिया और कुमार ने कमलिनी के नाम से इस मजमून की चीठी लिख और बन्द कर इन्द्रानी के हवाले कर दी :—

प्यारी....कमलिनी,

यह तो मुझे मालूम ही है कि किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी और लाडिली वगैरह को साथ लेकर राजा गोपालसिंह की इच्छानुसार तुम यहां आई हो, मगर मुझे अफसोस इस बात का है कि तुम्हारा दिल जो किसी समय मक्खन की तरह मुलायम था, अब फौलाद की तरह ठस हो गया। इस बात का तो विश्वास हो ही नहीं सकता कि तुम इच्छा करके भी मुझसे मिलने में असमर्थ हो, परन्तु इस बात का गुमान अवश्य हो सकता है कि किसी तरह का कसूर न होने पर भी तुमने मुझे दूध की मक्खी की तरह अपने दिल से निकाल कर फेंक दिया। खैर तुम्हारे दिल की मजबूती और कठोरता का परिचय तो तुम्हारे अनूठे कामों ही से मिल चुका था परन्तु किशोरी के विषय में अभी तक मेरा दिल इस बात की गवाही नहीं देता कि वह भी मुझे तुम्हारी ही तरह अपने दिल से भुला देने की ताकत रखती है। मगर क्या किया जाय ? पराधीनता की बेड़ी उसके पैरों में है और लाचारी की

मुहर उसके होठों पर ! अस्तु इन सब बातों का लिखना तो अब वृथा ही है, तुम अपनी आप मुख्तार हो, मुझसे मिलो चाहे न मिलो यह तुम्हारी इच्छा मगर अपना तथा अपने साथियों का कुशल मंगल तो लिख भेजो, या यदि मुझे इस योग्य भी नहीं समझतीं तो जाने दो ।

क्या कहें, किसका—इन्द्र

कुंअर आनन्दसिंह की भी इच्छा थी कि अपने दिल का कुछ हाल वे और लाडिली को लिखें परन्तु कई बातों का खयाल कर रह गए। इन्द्रानी इन्द्रजीतसिंह की लिखी हुई चीठी लेकर उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई बहिन को साथ लिए चली गई कि 'अब मैं चिराग जले के बाद आप लोगों से मिलूंगी, तब तक आप लोग यदि इच्छा हो तो इस बाग की सैर करें मगर मकान के अन्दर जाने का उद्योग न करें ।

सातवां बयान

अब हम थोड़ा सा हाल राजा गोपालसिंह का लिखते हैं। जब वह ब पर से झांकने वाला आदमी मायारानी के चलाए हुए तिलिस्मी तमंचे की से बेहोश होकर नीचे आ गिरा और भीमसेन उसके चेहरे की नकाब हटाते सूरत देखने पर चौंक कर बोल उठा कि 'वाह वाह, यह तो राजा गोपाल तब मायारानी बहुत ही प्रसन्न हुई और भीमसेन से बोली, "बस अब विलम्ब उचित नहीं है, एक ही बार में सिर धड़ से अलग कर देना चाहिए।"

भीम० । नहीं, इसे एकदम से मार डालना उचित न होगा बल्कि कैद तिलिस्म का कुछ हाल मालूम करना लाभदायक होगा।

माया० । मैंने इसे कैद में रख कर हद्द से ज्यादे तकलीफें दीं तब तो तिलिस्म का कुछ हाल कहा ही नहीं अब क्या कहेगा, बस इसे मार डालना मुनासिब है।

इसके जवाब में उसी बरामदे पर से जिस पर से वह आदमी लुढ़क कर आया था किसी ने कहा, "तिलिस्म का हाल जानने का शौक अभी तक न हुआ है ? इस बात की खबर नहीं कि अब तुम लोगों के मरने में केवल साढ़े की देर रह गई है।"

सभों ने चौंक कर ऊपर की तरफ देखा और पुनः एक आदमी को उसी मदे में टहलता हुआ पाया मगर अबकी दफे इस आदमी का चेहरा नकाब से

था और एक जलती हुई मोमबत्ती वायें हाथ में मौजूद थी जिससे उसका रोबीला चेहरा साफ साफ दिखाई दे रहा था। मायारानी और उसके साथियों को यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि यह दूसरा आदमी भी राजा गोपालसिंह ही मालूम होता था वल्कि वनिस्वत पहिले आदमी के ठीक राजा गोपालसिंह मालूम होता था। इस कैफियत ने मायारानी का कलेजा हिला दिया और वह डर से कांपती हुई उसको इस तरह देखने लगी जैसे कोई व्याघ्र जंगल में अकस्मात् आ पड़े हुए शेर की तरफ देखता हो।

सभी को अपनी तरफ ताज्जुब के साथ देखते देख उस आदमी ने पुनः कहा, "न तो वह राजा गोपालसिंह है और न उसको जुबानी तिलिस्म का कोई भेद ही तुम लोगों को मालूम हो सकता है। अरे ओ कम्बख्त मायारानी, तू तो वर्षों मेरे साथ रह चुकी है, क्या तू भी मुझे नहीं पहिचानती! राजा गोपालसिंह मैं हूं या वह है? तू उसके नाटे कद को नहीं देखती? अगर वह गोपालसिंह होता तो क्या उस तिलिस्मी तमंचे की एक गोली खाकर गिर पड़ता! भला मुझ पर भी एक नहीं पचास गोली चला, देख क्या असर होता है!"

नये गोपालसिंह की इस बात ने मायारानी की रही सही ताकत भी हवा कर दी और अब उसे अपने सामने मौत की सूरत दिखाई देने लगी। यद्यपि उसने इस गोपालसिंह पर भी तिलिस्मी तमंचा चलाने का इरादा किया था मगर अब उसके हाथों में इतनी ताकत न रही कि तमंचे में गोली डाल कर चला सके। उसी की तरह उसके साथी भी घबड़ा कर इस नये राजा गोपालसिंह की तरफ देखने और अपने मन में सोचने लगे, "व्यर्थ इस मायारानी के फेर में पड़ कर यहां आये।"

इस नये गोपालसिंह ने पुनः पुकार कर मायारानी से कहा, "हां सोचती क्या है, तिलिस्मी तमंचा चला और तमाशा देख, या कह तो मैं स्वयं तेरे पास चला आऊं! और भीमसेन वगैरह, तुम लोग क्यों इसके फेर में पड़ कर अपनी अपनी जान दे रहे हो! क्या तुम समझ रहे हो कि यह तिलिस्म की रानी हो जाएगी और तुम्हें अपना हिस्सेदार बना लेगी! कदापि नहीं, अब इसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती और मैं अभी नीचे आकर तुम सभों का काम तमाम करता हूं। हां अगर तुम लोग अपनी जान बचाना चाहते हो तो मैं तुम्हें कहता हूं कि मायारानी का खयाल न करके उसे इसी जगह छोड़ दो और तुम लोग उस सफेद संगमर्मर के चबूतरे पर भाग कर चले जाओ, खबरदार दूसरी जगह मत खड़े होना और मेरे नीचे आने के पहिले ही यहां से हट कर उस चबूतरे पर चले जाना नहीं तो पछताओगे!"

इतना कह कर नए गोपालसिंह ने मोमबत्ती नीचे फेंक दी और पीछे तरफ हट कर उन लोगों की नजरों से गायब हो गए।

अब भीमसेन और माधवी वगैरह को निश्चय हो गया कि मायारानी के कुछ न होगा और इसका साथ करके हम लोगों ने व्यर्थ ही अपने को आफ लए फंसाया। इस तिलिस्मी बाग तथा राजा गोपालसिंह की माया का पता लगता, अस्तु अब मायारानी का साथ देना और गोपालसिंह की बात न मा निःसन्देह अपना गला अपने हाथ से काटना है! इतना सोचते सोचते ही वे गोपालसिंह के कहे मुताबिक उस संगमर्मर के चबूतरे पर चले गए जो उनसे ही दूर पर उनके पीछे की तरफ पड़ता था।

होना तो ऐसा ही चाहिए था कि गोपालसिंह की बातों से डर कर रानी भी उन लोगों के साथ ही साथ उसी संगमर्मर वाले चबूतरे पर चली मगर न मालूम क्या सोच कर उसने ऐसा न किया और वहां से. भाग क फौजी सिपाहियों की भीड़ में जा छिपी जो इस बाग में खड़े हुए इनकी बातें नहीं सकते थे मगर ताज्जुब के साथ सब कुछ देख जरूर रहे थे।

वह संगमर्मर का चबूतरा जिस पर भीमसेन वगैरह चले गए थे उनके के थोड़ी ही देर बाद इस तेजी के साथ जमीन के अन्दर धंस गया कि उन को कूद कर भागने की भी मोहलत न मिली। कुछ देर बाद उन सभों मालूम कहां उलट कर वह चबूतरा फिर ऊपर चला आया और ज्यों अपने स्थान पर जम गया।

इस समय केवल सुबह की सुफेदी ही ने चारों तरफ अपना दखल लिया था बल्कि आसमान पर पूरब तरफ सूर्य की लालिमा भी कुछ दूर चुकी थी, इसलिए उस चबूतरे पर जाने वाले भीमसेन और माधवी वगै जो हाल हुआ वह माधवी के फौजी सिपाहियों ने भी बखूबी देख लिया। मालिक और उनके साथियों की यह दशा देख फौजी सिपाही घबड़ा चाहने लगे कि यदि कहीं रास्ता मिल जाय तो हम लोग भी यहां से अपनी जान बचावें। उन्हें अपने झुण्ड में मायारानी का आ जाना बहुत मालूम हुआ और उन्होंने बड़ी बेमुरौवती के साथ मायारानी से कहा, "तु ही बदौलत हम लोगों की यह दशा हुई और हमारे मालिकों पर भी आफ अस्तु अब तुम हमारी मण्डली में से चली जाओ नहीं तो हमलोग जूते से तुम्हा की खबर लेंगे, तुम्हारे चले जाने बाद हम लोगों पर जो कुछ बीतेगी सह

अफसोस, अपनी करतूतों के कारण आज मायारानी इस दशा को प

कि अदने सिपाहियों की झिड़की सहे और जूतियां खाय। सिपाहियों की बात जब मायारानी ने न मानी तो कई सिपाहियों ने जूतियों से उसकी खबर ली, और उसी समय ऊपर से किसी के पुकारने की आवाज आई।

जिस जगह ये सिपाही लोग थे उससे थोड़ी ही दूर पर एक बुर्ज था। इस समय उसी बुर्ज पर चढ़े हुए राजा गोपालसिंह को उन सिपाहियों ने देखा और मालूम किया कि यह आवाज उन्हीं ने दी थी।

गोपालसिंह की कैफियत देख कर सिपाहियों का कलेजा पहिले ही दहल चुका था अस्तु अब इस बात का हौसला नहीं कर सकते थे कि उनका मुकाबला करें। उन्हें देखने के साथ ही उस फौज का अफसर हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया और बोला, "आज्ञा!"

गोपालसिंह ने कहा, "हम खूब जानते हैं कि तुम लोग बेकसूर हो और जो कुछ कसूर है वह तुम्हारे मालिकों का है, सो तुमने देख ही लिया कि वे अपनी सजा को पहुंच गये, अब वे जीते नहीं हैं जो तुमसे आकर मिलेंगे, अस्तु अब तुम लोगों को हुक्म दिया जाता है कि तुम लोग अपनी अपनी जान बचा कर यहां से निकल जाओ। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम्हारे जाने के लिए दर्वाजा खोल दिया जाय और तुम लोग बाग से बाहर होकर जहां इच्छा हो चले जाओ। यदि तुम लोग चाहोगे और नेकचलनी का वादा करोगे तो हमारी फौज में तुम लोगों को जगह भी मिल जायगी।"

फौजी अफसर०। (हाथ जोड़े हुए) आप स्वयं राजा हैं और जानते हैं कि सिपाही लोग तनख्वाह के वास्ते लड़ते हैं। जो राज्य या जमीन के वास्ते लड़े और सिपाहियों को तनख्वाह दे, कसूर उसी का समझा जाता है। हमारे मालिक नादान थे, आपके प्रताप का ख्याल न करके मायारानी की बातों में आकर नष्ट हो गए, अब हम लोग आपके आधीन हैं और चाहते हैं कि हम लोगों को इस फंदे से छुटकारा ही नहीं बल्कि आपके सरकार में नौकरी भी मिले, इस समय हम लोग अपने को आप ही का तावेदार समझते हैं।

गोपाल०। अच्छा तो जैसा चाहते हो वैसा ही होगा। इस समय से तुम्हें अपना नौकर समझ के हुक्म दिया जाता है कि मायारानी जो तुम लोगों के बीच में चली आई है जूतियां लगा कर अलग कर दी जाय और तुम लोग (हाथ का इशारा करके) उस तरफ की दीवार के पास चले जाओ। वहां तुम्हें एक छोटा सा दर्वाजा खुला हुआ दिखाई देगा, बस उसी राह से तुम लोग बाहर चले जाना और किसी मैदान में डेरा जमाना। हमारा राजदीवान स्वयम् तुम्हारे पास पहुंच कर

सब इन्तजाम कर देगा। मगर खबरदार, इस बात का खूब खयाल रखना कि मायारानी तुम लोगों के साथ बाहर न जाने पावे और तुम लोगों में से एक आदमी भी उसका साथ न दे।

फौजी अफसर०। जो हुक्म।

मायारानी वेइज्जत होही चुकी थी मगर फिर भी दूर खड़ी यह सब कार्रवाई देख और बातें सुन रही थी। उसे इन सिपाहियों की नमकहरामी पर बड़ा क्रोध आया और वह वहां से भाग कर पश्चिम की तरफ वाले दालान में चली गई तथा एक कोठरी के अन्दर घुस कर गायब हो गई। शायद इस कोठरी में कोई तहखाना या रास्ता था जिसका हाल उसे मालूम था। उसी राह से होकर वह मकान की दूसरी मञ्जिल पर चली गई और उसी जगह से छिप कर तिलिस्मी तमंचे की गोली उन फौजी सिपाहियों पर चलाने लगी जो राजा गोपालसिंह की आज्ञानुसार दर्वाजे की तरफ जा रहे थे। इन गोलियों की तासीर का हाल हम पहिले कई जगह लिख आये हैं और बता आए हैं कि इन गोलियों में से निकला हुआ धूआं आला दर्जे की वेहोशी का असर बात की बात में पैदा करता था, अस्तु वे सिपाहियों को दर्वाजे तक पहुंचने की भी मोहलत न मिली और तीन ही चार गोलियों में से निकले धूएं ने उन सभों को वेहोश करके जमीन पर लिटा दिया।

अपनी इस कार्रवाई को देख कर मायारानी बहुत प्रसन्न हुई मगर उसकी प्रसन्नता ज्यादा देर तक कायम न रही क्योंकि उसी समय उसने राजा गोपालसिंह को उन सिपाहियों की तरफ जाते देखा। वह ताज्जुब में आकर उसी जगह से देखने लगी कि अब क्या होता है। उसने देखा कि राजा गोपालसिंह ने उन सिपाहियों के मध्य में पहुंच कर एक गोला जमीन पर पटका जो गिरते ही बड़ी आवाज के साथ फट गया और उसमें से इतना ज्यादा धूआं निकला कि उसने क्रमशः फैल कर हर तरफ से उन सिपाहियों को घेर लिया और फिर हलका होकर आस्मान की तरफ उठ गया। उस धूएं की तासीर से सब सिपाहियों की बेहोशी जाती रही और वे लोग उठ कर ताज्जुब के साथ एक दूसरे का मुंह देखने लगे। सिपाहियों के अफसर ने अपने पास राजा गोपालसिंह को मौजूद पाया और निगाह पड़ते ही हाथ जोड़ कर बोला, "आपने तो हम लोगों को बाहर जाने की आज्ञा दे दी थी, फिर हम लोग वेहोश क्यों कर दिए गये।"

इसके जवाब में गोपालसिंह ने कहा, "तुम लोगों को हमने नहीं किन्तु कम्बख्त मायारानी ने बेहोश किया था, हमने यहां पहुंच कर तुम लोगों की बेहोशी दूर कर दी, अब तुम लोग एक सायत भी विलम्ब न करो और ...

उस अफसर ने झुक कर सलाम किया और अपने साथियों को कुछ इशारा करके वहां से चल पड़ा। यह हाल देख मायारानी ने पुनः तिलिस्मी तमंचे की गोलियां उन लोगों पर चलाईं मगर इसका असर कुछ भी न हुआ और वे सब सिपाही राजा गोपालसिंह की बदौलत थोड़ी ही देर में इस तिलिस्मी बाग के बाहर हो गए। फिर मायारानी को यह भी मालूम न हुआ कि राजा गोपालसिंह कहां गए और क्या हुए।

आठवां बयान

वास्तव में भूतनाथ का हाल बड़ा ही विचित्र है। अभी तक उसका असल भेद खुलने में नहीं आता। वह जहां जाता है वहां ही एक विचित्र घटना देखने में आती है, जिससे मिलता है उसी से एक नई बात पैदा होती है, और जब जो कुछ करता है उसी में एक अनूठापन मालूम होता है। इस समय वह बलभद्रसिंह के साथ चुनारगढ़ वाले तिलिस्म में मौजूद है और वहां पहुंचने के साथ ही वह सुन चुका है कि कल राजा बीरेन्द्रसिंह भी इस जगह आने वाले हैं। बीरेन्द्रसिंह को तो आए हुए आज कई दिन हो चुके होते मगर उन्होंने जान बूझ कर रास्ते में बहुत देर लगा दी। नकली किशोरी कामिनी और कमला के क्रिया कर्म का बखेड़ा (जिसका करना लोगों को धोखे में डालने के लिए आवश्यक था) चुनार में ले जाना उन्होंने पसन्द न किया बल्कि रास्ते ही में निपटा डालना उचित जाना, इसलिए पन्द्रह बीस दिन की देर उन्हें रास्ते ही में हो गई और इसी से वहां पहुंच जाने पर भूतनाथ ने सुना कि राजा बीरेन्द्रसिंह कल आने वाले हैं।

उस खंडहर में पहुंचने पर रात के समय भूतनाथ ने जो कुछ तमाशा देखा था उसका विचित्र हाल तो हम ऊपर के किसी बयान में लिख ही चुके हैं, आज उसी के आगे का हाल लिख कर हम अपने पाठकों के चित्त में भूतनाथ की तरफ से पुनः एक तरह का खुटका पैदा किया चाहते हैं।

बलभद्रसिंह ने जब अपने सिर्हाने वाला लिफाफा उठा कर शमादान के सामने खोला तो उसके अन्दर से एक अंगूठी निकली जिसे देखते ही वह चिल्ला उठा और तब बिना कुछ कहे अपनी चारपाई पर आकर बैठ गया। भूतनाथ ने उससे पूछा, "क्यों यह अंगूठी कैसी है और इसे देख कर तुम घबड़ा क्यों गए?"

बलभद्र०। इस अंगूठी ने मुझे कई ऐसी बातें याद दिला दीं जिन्हें स्वप्न की तरह कभी कभी याद करके मैं चौंक पड़ता था, मगर आज नहीं फिर कभी मैं इसका खुलासा हाल तुमसे कहूंगा।

भूत०। भला देखो तो सही उस लिफाफे के अन्दर कोई चीठी भी है या केवल

यह अंगूठी ही थी।

बलभद्र०। (लिफाफा भूतनाथ के हाथ में देकर) लो तुम्हीं देखो।

भूत०। (शमादान के पास लिफाफा ले जाकर और उसे अच्छी तरह दे कर) हां हां इसमें चीठी भी तो है।

बलभद्र०। (भूतनाथ के पास जा कर) देखें।

भूतनाथ ने वह चीठी बलभद्रसिंह के हाथ में दी और बलभद्रसिंह ने बड़े ध्या से उसे पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

"यह अंगूठी दे कर तुम्हें विश्वास दिलाते हैं कि तुम हमारे हो और हम तुम्हारे हैं। भूतनाथ को अपना सच्चा सहायक समझो और जो कुछ वह कहे करो। भूतनाथ यह नहीं जानता कि हम कौन हैं मगर हम कल उससे मिलक अपना परिचय देंगे और जो कुछ कहना होगा कहेंगे।"

इस चीठी को पढ़कर दोनों के जी में एक तरह का खुटका पैदा हो गया औ बिना कुछ विशेष बातचीत किये दोनों अपनी अपनी चारपाई पर जाकर लेट र मगर बची हुई रात दोनों ने अपनी आंखों में ही काटी, किसी को नींद न आई

दूसरे दिन सवेरे ही पन्नालाल उन दोनों के पास पहुंचे और रात भर कुशल मंगल पूछा। दोनों ही ने दुनियादारी के तौर पर कुशल मंगल कह कर ब चीत की मगर रात के विचित्र हाल को अपने दिल के अन्दर ही छिपा रक्खा।

दिन भर इन दोनों का बड़े चैन और आराम से बीता। जीतसिंह से भी मुला कात और कई तरह की बातें हुईं मगर जीतसिंह और उनकी आज्ञानुसार किसी ऐया ने भी उन दोनों से मुकदमे की बाबत किसी तरह का सवाल न किया क्योंकि य बात पहिले से ही तय पा चुकी थी कि बिना राजा बीरेन्द्रसिंह के आये इस बा में किसी तरह की बातचीत भूतनाथ से न की जायगी।

आज किसी समय राजा बीरेन्द्रसिंह के आने की खबर थी मगर वे न आये संध्या के समय हरकारे ने आकर जीतसिंह को खबर दी कि राजा साहब कल संध्या के समय यहां आवेंगे, भूतनाथ और बलभद्रसिंह के आने की खबर उन्हें हो गई है

संध्या होने के साथ ही भूतनाथ और बलभद्रसिंह के दिल में धुकधुकी पैदा हो गई कि देखा चाहिये कि आज की रात कैसे गुजरती है, तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से कौन निकलता है, और क्या कहता है।

रात आधी से ज्यादे जा चुकी है, कल की तरह आज भी इस लम्बे चौड़े मकान के अन्दर सन्नाटा छाया हुआ है। भूतनाथ और बलभद्रसिंह अपनी अपनी चारपाई पर लेटे हुए हैं मगर नींद किसी की आंखों में नहीं है और दोनों का ध्यान

उसी तिलिस्मी चबूतरे की तरफ है। कल की तरह आज भी उस चबूतरे वाले दालान में कन्दील जल रही है जिसके सबब से वह पत्थर वाला चबूतरा साफ दिखाई दे रहा है।

भूतनाथ ने देखा कि कल की तरह आज भी इस पत्थर वाले चबूतरे का दर्वाजा खुला और उसके अन्दर से एक आदमी स्याह लबादा ओढ़े हुए निकला। धीरे धीरे घूमता फिरता वह उस कमरे के दर्वाजे पर पहुंचा जिसमें भूतनाथ और बलभद्रसिंह आराम कर रहे थे। कमरे का दर्वाजा खुलने के साथ ही वे दोनों उठ बैठे और उस आदमी को कमरे के अन्दर पैर रखते हुए देखा।

उस आदमी ने हाथ के इशारे से बलभद्रसिंह को बैठने के लिए कहा और भूतनाथ को अपने पास बुलाया। भूतनाथ चारपाई के नीचे उतर पड़ा और अपना तिलिस्मी खंजर जो खूंटी के साथ लटक रहा था लेकर उस आदमी के पास गया। वह आदमी भूतनाथ को अपने साथ कमरे के बाहर वाले दालान में ले गया और वहां से सीढ़ी की राह नीचे उतरने के लिए कहा। भूतनाथ भी चुपचाप उसके साथ नीचे चला गया।

यहां भी एक कन्दील जल रही थी और चारों तरफ सन्नाटा था। उस आदमी ने अपना चेहरा खोल दिया और भूतनाथ को अपनी तरफ अच्छी तरह देखने के लिए कहा। भूतनाथ सूरत देखते ही चौंक पड़ा और बोला—"हैं, यह मैं किसकी सूरत देख रहा हूं! क्या धोखा तो नहीं है!"

आदमी०। नहीं नहीं, कोई धोखा नहीं है, 'मेमकुलचे' कहने से शायद तुम्हारा शक जाता रहेगा।

भूतनाथ०। हां अब मेरा शक जाता रहा, मगर आप यहां कहां? क्या मुझे किसी तरह का विचित्र हुक्म दिया जायगा? या मुझे राजा साहब से माफी मांगने की मोहलत ही न मिलेगी?

आदमी०। हां तुम्हें एक विचित्र हुक्म दिया जायगा, मगर यह बताओ कि राजा साहब के बारे में तुमने क्या सुना है! वे कब तक यहां आयेंगे!

भूत०। राजा बीरेन्द्रसिंह कल यहां अवश्य आ जायंगे, आज हरकारे ने आ कर यह पक्की खबर जीतसिंह को दी है!

आदमी०। (कुछ सोच कर) तब तो बड़ी मुश्किल हुई, हमारे लिए नहीं बल्कि तुम्हारे लिए।

भूत०। (कांप कर) सो क्या! मैंने अब कौन सा नया अपराध किया है?

आदमी०। नया अपराध किया तो नहीं मगर करना पड़ेगा।

भूत० । नहीं नहीं, मैं अब कोई अपराध न करूंगा, जो कुछ कर चुका उसी का कलंक मिटाना मुश्किल हो रहा है !

आदमी० । मगर क्या किया जाय, लाचारी है, अपराध तो करना ही होगा और सो भी इसी समय ।

भूत० । (कुछ सोच कर) भला यह तो बताइए कि वह अपराध है क्या और मुझे क्या करना होगा !

आदमी० । यह तो जानते ही हो कि बलभद्रसिंह हमारा है

भूत० । जी हां मगर इस समय तो मेरी जान बचाने वाला है ।

आदमी० । बेशक ।

भूत० । तब आप क्या चाहते हैं ?

आदमी० । यही कि इस समय बलभद्रसिंह को बेहोश करके हमारे हवाले कर दो । हम तो उन्हें कल ही उठा ले गये होते मगर कल हमें निश्चय हो गया था कि तुम जाग रहे हो और लड़ने के लिए अवश्य तैयार हो जाओगे, इसलिए सोचा कि पहिले तुम्हें अपना परिचय दे लें तब यह काम करें जिसमें तुम्हारा दिल भी खुटके में न रहे ।

भूत० । मगर यह तो बड़ी मुश्किल होगी । अच्छा कल राजा बीरेन्द्रसिंह से उनकी मुलाकात करा लेने दीजिए ।

आदमी० । यह नहीं हो सकता, उन्हें हम आज ही ले जायेंगे नहीं तो हमारा बहुत हर्ज होगा और उस हर्ज में तुम्हारा भी नुकसान है ।

भूत० । हाय, नुकसान और दुःख भोगने के लिए तो मैं पैदा ही हुआ हूं ! न जाने मेरी किस्मत में निश्चिन्त होना भी बदा है या नहीं । राजा बीरेन्द्रसिंह सुन चुके हैं कि भूतनाथ बलभद्रसिंह को छुड़ा लाया है, अब अगर इस समय आप उन्हें ले जायंगे और कल राजा बीरेन्द्रसिंह उन्हें मुझसे मांगेंगे तो क्या जवाब दूंगा ?

आदमी० । कह देना कि मैं रात को सोया हुआ था न मालूम बलभद्रसिंह कहां चले गए, मुझे कुछ खबर नहीं, आप अपने पहरे वालों से पूछिए ।

भूत० । हां यदि आप न मानेंगे तो ऐसा ही करना पड़ेगा ।

आदमी० । तो बस अब विलम्ब न करो, झटपट जाओ और उन्हें बेहोश करके हमारे पास ले आओ ।

भूत० । जिस समय मैंने बलभद्रसिंह को छुड़ाया था उस समय उन्हें विश्वास नहीं होता था कि मैं उनके साथ नेकी कर रहा हूं, बड़ी मुश्किल से तो उन्हें विश्वास दिलाया इस समय आप जानते हैं कि वे भी जाग रहे हैं, आप खुद

उन्हें बैठे रहने के लिए कह आए हैं, अब मैं उन्हें जबर्दस्ती बेहोश करूंगा तो उनके दिल में क्या आवेगा ! क्या वे यह नहीं समझेंगे कि भूतनाथ ने नेकनीयती के साथ मेरी जान नहीं बचाई थी।

आदमी०। अगर ऐसा समझेंगे तो समझें, तुम सोच क्या रहे हो ! क्या मेरा हुक्म न मानोगे ?

भूत०। मेरी क्या मजाल जो आपका हुक्म न मानूं।

इतने ही में उसी तरह का स्याह लबादा ओढ़े और भी एक आदमी वहां आ पहुंचा। भूतनाथ समझ गया कि वह आदमी इसी का साथी है और कल भी यहां आया था। इस नए आए हुए आदमी ने पहिले आदमी से खास बोली (भाषा) में कुछ बातचीत की जिसे भूतनाथ कुछ भी न समझ सका, इसके बाद उसने परदा हटा के अपनी सूरत भूतनाथ को दिखा दी।

अब भूतनाथ के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा और वह एक दम घबड़ा के बोला, "नहीं नहीं, मैं जागता नहीं हूं बल्कि जो कुछ देख रहा हूं सब स्वप्न है !"

दूसरा आदमी०। भूतनाथ तुम पागल हो गए हो !

भूत०। बेशक यही बात है, या तो मैं स्वप्न देख रहा हूं या पागल हो गया हूं।

पहिला आदमी०। न तो तुम स्वप्न देख रहे हो और न पागल ही हो गए हो, जो कुछ देख सुन रहे हो सब ठीक है। अच्छा अब तुम हम लोगों के साथ आओ, किसी दूसरी जगह अंधेरे में खड़े होकर बातचीत करेंगे, यहां केवल इसलिए खड़े हो गये थे कि तुम्हें अपनी सूरत दिखा दें।

इतना कह कर वे दोनों आदमी भूतनाथ का हाथ पकड़े हुए दूसरे दालान में चले गए जहां बिलकुल अंधकार था और यहां बातचीत करने लगे। इस जगह उन तीनों में जो कुछ बातें हुईं वह ऐयारी भाषा में हुईं इसलिए लिख न सके मगर आगे चल कर इन बातों का जो कुछ नतीजा निकलेगा पाठकों को मालूम हो जायगा। हां इतना कह देना जरूरी है कि डेढ़ घण्टे तक उन तीनों में खूब बातें होती रहीं, इस बीच में दो दफे भूतनाथ के बड़े जोर से हंसने की आवाज आई, ताज्जुब नहीं कि वह आवाज बलभद्रसिंह के कानों तक भी पहुंची हो। इसके बाद भूतनाथ वहां से रवाना होकर बलभद्रसिंह के पास आया, देखा कि अभी तक वह बैठे हुए हैं और भूतनाथ का इन्तजार कर रहे हैं।

भूतनाथ को देखते ही बलभद्रसिंह बोले, "आओ आओ भूतनाथ, मेरे पास बैठ जाओ और बताओ कि क्या हुआ ! वह आदमी कौन था जो तुम्हें ले गया था ?"

"मैं सब विचित्र हाल आपसे कहता हूं।" यह कहता हुआ भूतनाथ, बलभद्रसिंह

के पास बैठ गया, मगर इस तरह पर सट कर बैठा कि उसकी कमर में लगा
तिलिस्मी खंजर बलभद्रसिंह के बदन के साथ छू गया और वह उसी समय
कर बेहोश हो गये।

बलभद्रसिंह के बेहोश हो जाने के बाद भूतनाथ ने उनकी गठरी बांध
नीचे उतार कर दोनों विचित्र आदमियों के पास ले गया। उन दोनों ने
तिलिस्मी चबूतरे के पास पहुंचा देने के लिए कहा और भूतनाथ उसे तिलि
चबूतरे के पास ले गया, तब वे दोनों आदमी बलभद्रसिंह को लेकर चबूतरे के
चले गये, चबूतरे का पल्ला बन्द हो गया और भूतनाथ कुछ सोचता वि
अपनी चारपाई पर आकर लेट रहा।

नौवां बयान

सवेरा हो जाने पर जब भूतनाथ और बलभद्रसिंह से मिलने के लिए पन्ना
तिलिस्मी खण्डहर के अन्दर नम्बर दो वाले कमरे में गये तो भूतनाथ को चा
पर सोये पाया और बलभद्रसिंह को वहां न देखा। पन्नालाल ने भूतनाथ को
कर पूछा, "आज तुम इस समय तक खुर्राटे ले रहे हो, यह क्या मामला है

भूतनाथ०। बलभद्रसिंहजी ने गप्प शप्प में तीन पहर रात बैठे ही बैठे
दी इसलिए सोने में बहुत कम आया और अभी तक आंख नहीं खुली, आइये बै

पन्ना०। बलभद्रसिंहजी कहां हैं ?

भूतनाथ०। मुझे क्या खबर, इसी जगह कहीं होंगे, मुझे तो अभी आपने
से जगाया है।

पन्ना०। मगर मैंने तो उन्हें कहीं भी नहीं देखा!

भूतनाथ०। किसी पहरे वाले से पूछिये, शायद हवा खाने के लिए कहीं
चले गये हों।

बलभद्रसिंह को वहां न पाकर पन्नालाल को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और
नाथ भी घबड़ाया सा दिखाई देने लगा। पहिले तो पन्नालाल और भूतनाथ
ही ने उन्हें खण्डहर वाले मकान के अन्दर खोजा मगर जब कुछ पता न लगा
फाटक पर आकर पहरे वालों से पूछा। पहरे वालों ने भी उन्हें देखने से
करके कहा कि 'हम लोगों ने बलभद्रसिंहजी को फाटक के बाहर निकलते
देखा अस्तु हम लोग उनके बारे में कुछ नहीं कह सकते'।

बलभद्रसिंह कहां चले गये ? आस्मान पर उड़ गये, दीवार में घुस गये
जमीन के अन्दर समा गये, क्या हुए ? इस बात ने सभों को तरद्दुद में डाल दि
धीरे धीरे जीतसिंह को भी इस बात की खबर हुई। जीतसिंह स्वयं उस

ले मकान में गये और तमाम कमरों कोठरियों और तहखानों को देख डाला गर बलभद्रसिंह का पता न लगा। भूतनाथ से भी तरह तरह के सवाल किये मगर इससे भी कुछ फायदा न हुआ।

संध्या के समय राजा बीरेन्द्रसिंह की सवारी उस तिलिस्मी खण्डहर के पास पहुंची और राजा बीरेन्द्रसिंह तथा तेजसिंह वगैरह सब कोई उसी खण्डहर वाले कान में उतरे। पहर भर रात जाते तक तो इन्तजामी हो हल्ला मचता रहा, के बाद लोगों को राजा साहब से मुलाकात करने की नौबत पहुंची, मगर राजा हब ने वहां पहुंचने के साथ ही भूतनाथ और बलभद्रसिंह का हाल जीतसिंह से छा था और बलभद्रसिंह के बारे में जो कुछ हुआ था उसे उन्होंने राजा साहब कह सुनाया था। पहर रात जाने बाद जब भूतनाथ आज्ञानुसार दर्बार में हाजिर आ तब राजा बीरेन्द्रसिंह ने उससे पूछा, "कहो भूतनाथ, अच्छे तो हो ?"

भूतनाथ०। (हाथ जोड़ कर) महाराज के प्रताप से प्रसन्न हूं।

बीरेन्द्र०। सफर में हमको जो कुछ रंज और गम हुआ तुमने सुना ही होगा ?

भूतनाथ०। ईश्वर न करे महाराज को कभी रंज और गम हो मगर हां यानुकूल जो कुछ होना था हो ही गया।

वीरेन्द्र० ! (ताज्जुब से) क्या तुम्हें इस बारे में कुछ मालूम हुआ है ?

भूतनाथ०। जी हां !

बीरेन्द्र०। कैसे ?

भूतनाथ०। इसका जवाब देना तो कठिन है, क्योंकि भूतनाथ बनिस्बत जबान र कान के अन्दाज से ज्यादे काम लेता है।

वीरेन्द्र०। (मुस्कुरा कर) तुम्हारी होशियारी और चालाकी में तो कोई शक ं है मगर अफसोस इस बातका है कि तुम्हारे रहस्य तुम्हारी ही तरह द्विविधा डालने वाले हैं। अभी कल की बात है कि हमको तुम्हारे बारे में इस बातकी खबरी मिली थी कि तुम बलभद्रसिंह को किसी भारी कैद से छुड़ा कर ले आये, र आज कुछ और ही बात सुनाई पड़ रही है।

भूतनाथ०। जी हां, मैं तो हर तरह से अपनी किस्मत को सुलझाने का ग करता हूं मगर विधाता ने उसमें ऐसी उलझन डाल दी है कि मालूम पड़ता कि अब इस शरीरको चुनारगढ़ के कैदखाने का आनन्द अवश्य भोगना ही पड़ेगा।

वीरेन्द्र०। नहीं नहीं भूतनाथ, यद्यपि बलभद्रसिंह का यकायक गायब हो ना तरह तरह के खुटके पैदा करता है मगर हमें तुम्हारे ऊपर किसी तरह का देह नहीं हो सकता। अगर तुम्हें ऐसा करना ही होता तो इतनी आफत उठा

कर उन्हें क्यों छुड़ाते और क्यों यहां तक लाते ! अस्तु तुम हमारी तरफ से तो बेफिक्र रहो मगर इस बात के जानने का उद्योग जरूर करो कि वह कहां गए और क्या हुए।

भूतनाथ०। (सलाम कर के) ईश्वर आपको सदैव प्रसन्न रक्खे, मैं प्रण करता हूं कि एक सप्ताह के अन्दर ही बलभद्रसिंह का पता लगा कर सरकार में उपस्थित करूंगा।

वीरेन्द्र०। शाबाश, अच्छा अब तुम जाकर आराम करो।

आज्ञानुसार भूतनाथ वहां से उठ कर अपने डेरे पर चला गया और लोग भी अपने ठिकाने कर दिये गए। जब राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह रह गए तब उन दोनों में यों बातचीत होने लगी :—

वीरेन्द्र०। कुछ समझ में नहीं आता कि यह रहस्य कैसा है ? भूतनाथ की बातों से तो किसी तरह का खुटका नहीं होता।

तेज०। जहां तक पता लगाया गया है उससे यही जाहिर होता है कि बलभद्रसिंह इस इमारत के बाहर नहीं गए, मगर इस बात पर भी विश्वास करना कठिन हो रहा है।

वीरेन्द्र०। निःसन्देह ऐसा ही है !

तेज०। अब देखा चाहिए भूतनाथ एक सप्ताह के अन्दर क्या कर दिखाता है।

वीरेन्द्र०। यद्यपि मैंने भूतनाथ की दिलमजई कर दी है परन्तु चित्त शान्त नहीं हो सकता। खैर जो भी हो, मगर तुम उसे अपनी हिफाजत में रक्खो और पता लगाओ कि यह मामला कैसा है।

तेज०। ऐसा ही होगा !

दसवां बयान

मायारानी ने जब समझा कि वे फौजी सिपाही इस बाग के बाहर हो गये और गोपालसिंह को भी वहां न देखा तब हिम्मत करके अपने ठिकाने से निकली और पुनः बाग में आकर उस तरफ रवाना हुई जिधर उस गोपालसिंह को छोड़ आई थी जो उसके चलाए हुए तिलिस्मी तमंचे की गोली के असर से बेहोश होकर बरामदे के नीचे आ रहा था, मगर वहां पहुंचने के पहिले ही उसने दूसरे कूएं के ऊपर एक गोपालसिंह को देखा जिसे फौजी सिपाहियों ने मिट्टी से पाट दिया था। मायारानी एक पेड़ की आड़ में खड़ी हो गई और उसने वहीं से तिलिस्मी तमंचे वाली एक गोली उसने इस गोपालसिंह पर चलाई। गोली लगते ही गोपालसिंह लुढ़क कर जमीन पर आ रहा और मायारानी दौड़ती हुई

पास जा पहुंची। थोड़ी देर तक तो उसकी सूरत देखती रही, इसके बाद कमर से खंजर निकाल कर गोपालसिंह का सर काट डाला और तब खुश भरी निगाहों से चारों तरफ देखने लगी, यद्यपि उसे पूरा विश्वास न था कि मैंने असली गोपालसिंह को मार डाला है।

यद्यपि दिन बहुत चढ़ चुका था मगर अभी तक उसे जरूरी कामों से निपटने या कुछ खाने पीने की परवाह न थी या यों कहिए कि उसे इन बातों की मोहलत ही नहीं मिल सकी थी। गोपालसिंह की लाश को उसी जगह छोड़ कर वह बाग के तीसरे दर्जे में जाने की नीयत से अपने दीवानखाने में आई और उसी मामूली राह से बाग के तीसरे दर्जे में चली गई जिस राह से एक दिन तेजसिंह वहां पहुंचाए गए थे।

वहां भी उसने दूर ही से नम्बर दो वाली कोठरी के दर्वाजे पर एक गोपालसिंह को बैठे बल्कि कुछ करते हुए देखा। मायारानी ताज्जुब में आकर थोड़ी देर तक तो उस गोपालसिंह को देखती रही इसके बाद उसे भी उसी तिलिस्मी तमञ्चे वाली गोली का निशाना बनाया। जब वह भी बेहोश होकर जमीन पर लेट गया तब मायारानी ने वहां पहुंच कर उसका भी सर काट डाला और एक लम्बी सांस लेकर आप ही आप बोली, "क्या अब भी असली गोपालसिंह न मरा होगा! मगर अफसोस, उस एक गोपालसिंह पर तो ऐसी गोली ने कुछ भी असर न किया था। कदाचित असली गोपालसिंह वही हो!"

इसके जवाब में किसी ने कोठरी के अन्दर से कहा, "हां असली गोपालसिंह यह भी न था और असली गोपालसिंह अभी तक नहीं मरा!"

इस बात ने मायारानी का कलेजा दहला दिया और वह कांपती हुई ताज्जुब के साथ कोठरी के अन्दर देखने लगी।

अकस्मात् कोठरी के अन्दर से निकलते हुए नानक पर मायारानी की निगाह पड़ी। नानक को देखते ही मायारानी का पुराना क्रोध (जो नानक के बारे में था) पुनः उसके चेहरे पर दिखाई देने लगा। वह कुछ देर तक तो नानक को देखती रही और इसके बाद उसे तिलिस्मी गोली का निशाना बनाना चाहा मगर नानक मायारानी की अवस्था देख कर हंस पड़ा और बोला, "क्या अब भी आप मुझे अपना पक्षपाती नहीं समझतीं?"

माया०। क्यों? तूने कौन सा ऐसा काम किया है जिससे मैं तुझे अपना पक्षपाती समझूं?

नानक०। क्या आपको इस बात की खबर न लगी होगी कि राजा बीरेन्द्र-

सिंह और उनके खानदान तथा ऐयारों से मेरी गहरी दुश्मनी हो गई? आप
गिरफ्तार करके दोषी ठहराया गया, बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने उसे बहुत तंग
और इसी के साथ ही साथ मेरी भी बहुत बड़ी बेइज्जती की। मेरा बाप
बचाव की फिक्र कर रहा है और मैं उन सभों से बदला लेने का बन्दोबस्त
रहा हूं। इस समय मैं इसलिए यहां आया हूं कि आप मेरी सहायता करें
मैं आपका साथ दूं।

माया०। यदि तेरा कहना वास्तव में सच है तो बड़ी खुशी की बात है।

नानक०। जो कुछ मैं कह रहा हूं उसके सच होने में किसी तरह का
न कीजिए, मैं उन लोगों की बुराई में जान तक खर्च करने का संकल्प कर चुका

माया०। यदि तू पहिले ही मेरी बात मान चुका होता तो आज मुझे
तुझे दोनों ही को यह दिन देखना नसीब न होता। खैर आज भी अगर
पर आ जाय तो हम लोग मिल जुल कर बहुत कुछ कर सकते हैं।

नानक०। उन दिनों मुझे हरी हरी सूझती थी और उस दरबार में
कुछ पाने की आशा थी मगर इस बात की खबर न थी कि उनके ऐयार
मण्डली के सिवाय किसी नए या दूसरे ऐयार को अपने दर्बार में देखना पसन्द
करते। मुझे कमलिनी ने जितनी उम्मीदें दिलाई थीं उनका एक अंश भी
निकला, उल्टे मेरा बाप दोषी ठहराया गया।

माया०। भूतनाथ पर जो कुछ इल्जाम लगाया गया है मुझे उसकी पूरी
खबर लग चुकी है। अब भूतनाथ बिना मेरी मदद के किसी तरह अपनी
नहीं बचा सकता और न वह बलभद्रसिंह का ही पता लगा सकता है। सच
है कि भूतनाथ ने मुझे भी बड़ा धोखा दिया।

नानक०। उन दिनों जो कुछ उन्होंने किया सो किया क्योंकि कमलिनी
दिखाई हुई उम्मीदों ने उन्हें भी अन्धा कर दिया था, मगर अब तो उन्हें कमलिनी
से भी दुश्मनी हो गई है, और मैं भी यह सुन कर कि कमलिनी वगैरह को
गोपालसिंह ने इसी बाग में लाकर रक्खा है उससे बदला लेने का खयाल
यहां आया हूं।

माया०। यहां का रास्ता तुझे किसने बताया?

नानक०। यहां के बहुत से रास्तों का हाल कमलिनी ने ही मुझे बता
या, मैं एक दफे यहां पहिले भी आ चुका हूं।

माया०। कब?

नानक०। जब तेजसिंह को आपने कैद किया था और जब चंडूल ने बा

प लोगों को छकाया था।

माया०। (उन बातों की याद से कांप कर) तब तो तुम्हें मालूम होगा कि चंडूल कौन था।

नानक०। वह कमलिनी थी और मैं उसके साथ था।

माया०। (कुछ सोच कर) हां........ठीक है। प........तब तो तुम्हें........ च्छा........अच्छा तुम मेरे पास आओ, पहिले मैं निश्चय कर लूं कि तुम ईमान- री से साथ देने के लिए तैयार हो या यह सब बातें धोखा देने के लिए कह रहे , इसके बाद अगर तुम सच्चे निकले तो हम दोनों आदमी मिल कर बहुत बड़ा म कर सकेंगे और तुम्हें भी बहुत सी....खैर तुम इधर आओ और मेरे साथ कान्त में चलो।

नानक०। (मायारानी के पास आकर) और यहां तीसरा कौन है जो हम गों की बातें सुनेगा!

माया०। चाहे न हो मगर शक तो है।

मायारानी नानक को लिए दूसरी तरफ चली गई।

ग्यारहवां बयान

संध्या होने में अभी दो घण्टे से कुछ ज्यादे देर थी जब कुंअर इन्द्रजीतसिंह नन्दसिंह और भैरोसिंह कमरे से बाहर निकल कर बाग के उस हिस्से में घूमने गे जो तरह तरह के खुशनुमा पेड़ फूल पत्तों गमलों और फैली हुई लताओं से न्दर और सुहावना मालूम पड़ता था क्योंकि इन तीनों को इन्द्रानी के मुंह से कले हुए ये शब्द बखूबी याद थे कि 'मगर आप लोग किसी मकान के अन्दर ने का उद्योग न करें'!

भैरो०। (घूमते हुए एक फूल तोड़ कर) यहां एक तो बागीचे के लिए बहुत म जमीन छोड़ी गई है दूसरे जो कुछ जमीन छोड़ी गई है उसमें भी काम खूबी र खूबसूरती के साथ नहीं लिया गया है, जहां पर जिस ढंग के पेड़ होने चाहिये से नहीं लगाए गए हैं।

आनन्द०। बाग के शौकीन लोग प्रायः बेला चमेली जुही और गुलाब इत्यादि शबूदार फूलों के पेड़ क्यारियों के बीच में लगाते हैं।

इन्द्रजीत०। ऐसा न होना चाहिए, क्यारियों के अन्दर केवल पहाड़ी गुल टों के ही लगाने में मजा है, जूही बेला मोतियां इत्यादि देशी खुशबूदार फूलों रविशों के दोनों तरफ लगाना चाहिए जिसमें सैर करने वाला घूमता फिरता ब चाहे एक दो फूल तोड़ के सूंघ सके।

आनन्द० । बेशक, ऐसा न होना चाहिए कि खुशबूदार फूल तोड़ने को में कहीं सैर करने वाला बुद्धि विसर्जन कर के क्यारी के बीच में पैर रखे जूते समेत फिल्ली तक जमीन के अन्दर जा रहे क्योंकि सिंचाव का पानी में जमा होकर कीचड़ करता है, इसलिए क्यारियों के बीच में उन्हीं पेड़ का होना आवश्यक है जिन्हें केवल देखने ही से तृप्ति हो जाय और जिनमें सर्दी और पानी के बर्दाश्त करने की ताकत हो।

भैरो० । मेरी भी यही राय है, मगर साथ ही इसके यह भी कहूंगा कि के पेड़ रविशों के दोनों तरफ न लगाने चाहिए जिसमें कांटों की वदौ करने वाले के (यदि वह भूल से कुछ किनारे की तरफ जा रहे तो) कपड़ों हो जाय, उसके लिए क्यारी अलग ही होनी चाहिए जिसकी जमीन बहुत न

इन्द्रजीत० । ठीक है, इसी तरह चमेली के पेड़ों की कतार भी ऐसी लगाना चाहिए जहां टट्टी बना कर आड़ कर देने का इरादा हो।

भैरो० । आड़ का काम तो मेंहदी की टट्टी से भी लिया जाता है।

इन्द्रजीत० । हां लिया जाता है मगर जमीन के उस हिस्से में जो बीच या खास जलसे वाली इमारत से कुछ दूर हो, क्योंकि मेंहदी जब फूलती अपने सिवाय और फूलों की खुशबू का आनन्द लेने की इजाजत नहीं देती

आनंद० । जैसे कि अब भैरोंसिह को हम लोग अपने साथ चलने की इजाजत

भैरो० । (चौंक कर) हैं, इसका क्या मतलब ?

आनन्द० । इसका मतलब यही है कि अब आप थोड़ी देर के लिए हम भाइयों का पिण्ड छोड़िये और कुछ दूर हट कर उधर की रविशों पर पैर

भैरो० । (कुछ चिढ़ कर) क्या अब मुझ ऐसे साथी और ऐयार से छिपाने की नौबत आ गई ?

आनन्द० । (इन्द्रजीतसिंह का इशारा पा कर) हां, और इसलिए छिपाने का कायदा तुम्हारी तरफ से जारी हो गया।

भैरो० । सो कैसे ?

आनन्द० । अपने दिल से पूछो।

भैरो० । क्या मैं वास्तव में भैरोंसिह नहीं हूं ?

आनन्द० । तुम्हारे भैरोंसिह होने में कोई शक नहीं है बल्कि तुम्हारी की सचाई में शक है।

भैरो० । यह शक कब से हुआ ?

आनन्द० । जब से तुमने स्वयम् कहा कि राजा गोपालसिंह ने तुम्हें इस

में पहुंचाती समय ताकीद कर दी थी कि सब काम कमलिनी की आज्ञानुसार करना, यहां तक कि यदि कमलिनी तुम्हें सामना हो जाने पर भी कुमार से मिलने के लिए मना करे तो तुम कदापि न मिलना।*

भैरो०। (कुछ सोच कर) हां ठीक है, मगर आपको यह कैसे निश्चय हुआ कि मैंने राजा गोपालसिंह की बात मान ली?

इन्द्र०। यह इसी से मालूम हो गया कि तुमने अपने बटुए का जिक्र करती समय तिलिस्मी खंजर का जिक्र छोड़ दिया।

भैरो०। (कुछ सोच कर और शर्मा कर) बेशक यह मुझसे भूल हुई।

आनन्द०। कि उस तिलिस्मी खंजर के लिए भी कोई अनूठा किस्सा गढ़ कर हम लोगों को सुना न दिया।

भैरो०। (और भी शर्मा कर) नहीं ऐसा नहीं है, उस समय मैं इतना कहना भूल गया कि ऐयारों के बटुए के साथ साथ वह तिलिस्मी खंजर मुझे उस नकाबपोश या पीले मकरन्द से नहीं मिला, उन्होंने कसम खा कर कहा कि तुम्हारा खंजर हममें से किसी के पास नहीं है।

आनन्द०। हां—और तुमने मान लिया!

भैरो०। (हिचकता हुआ) इस जरा सी भूल के हो जाने पर ऐसा न होना चाहिये कि आप लोग अपना विश्वास मुझ पर से उठा लें।

इन्द्रजीत०। नहीं नहीं, इससे हमलोगों का खयाल ऐसा नहीं हो सकता कि तुम भैरोंसिंह नहीं हो या अगर हो भी तो हमारे दुश्मनों के साथी बन कर हमें नुकसान पहुंचाया चाहते हो? कदापि नहीं। हम लोग अब भी तुम्हारा उतना ही भरोसा रखते हैं जितना पहिले रखते थे, मगर कुछ देर के लिए जिस तरह तुम असली बातों को छिपाते हो उसी तरह हम भी छिपावेंगे।

अभी भैरोंसिंह इस बात का जवाब सोच ही रहा था कि सामने से एक औरत आती हुई दिखाई पड़ी। तीनों का ध्यान उसी तरफ चला गया। कुछ पास आने पर ध्यान देने पर दोनों कुमारों ने उसे पहिचान लिया कि इसे हम इस बाग में आने के पहिले इन्द्रानी और आनन्दी के साथ नहर के किनारे देख चुके हैं।

आनन्द०। यह भी उन्हीं औरतों में से है जिन्हें हम लोग इन्द्रानी और आनन्दी के साथ पहिले बाग में नहर के किनारे देख चुके हैं!

इन्द्रजीत०। बेशक, मगर सब की सब एक ही खानदान की मालूम पड़ती हैं यद्यपि उम्र में इन सभों के बहुत फर्क नहीं है।

आनन्द०। देखा चाहिए यह क्या सन्देशा लाती है।

* देखिये सत्रहवां भाग, चौदहवां बयान।

इतने में वह औरत कुमार के पास आ पहुंची और हाथ जोड़ कर दोनों की तरफ देखती हुई बोली, "इन्द्रानी और आनन्दी ने हाथ जोड़ कर आप से इस बात की माफी मांगी है कि अब वे दोनों आप लोगों के सामने हाजिर नहीं हो सकतीं।"

इन्द्रजीत०। (ताज्जुब से) सो क्यों?

औरत०। उन्हें इस बात का बहुत रंज है कि वे आप लोगों की खातिर अच्छी तरह से न कर सकीं और उनके गुरु महाराज ने उन्हें आप लोगों का सामना करने से रोक दिया।

इन्द्रजीत०। आखिर इसका कोई सबब भी है?

औरत०। इसके सिवाय तो और कोई सबब नहीं जान पड़ता कि उन की शादी आप दोनों भाइयों के साथ होने वाली है।

इन्द्रजीत०। (ताज्जुब के साथ) मुझसे और आनन्द से!

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीत०। हमारे या हमारे बुजुर्गों की इच्छा के बिना ही।

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीत०। चाहे हम लोग राजी हों या न हों?

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीत०। तब तो यह खासी जबर्दस्ती ठहरी!

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीत०। क्या उनके गुरु महाराज में इतनी सामर्थ्य है कि अपनी इच्छानुसार हम लोगों के साथ बर्ताव करें?

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीत०। (झुंझला कर) कभी नहीं, कदापि नहीं!

आनन्द०। ऐसा हो ही नहीं सकता! (औरत से, जो जाने के लिए मुंह फेर चुकी थी) क्या तुम जाती हो?

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीत०। बस इतना ही कहने के लिए आई थीं?

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीत०। क्या भेजने वालों ने तुम्हें कह दिया था कि 'जी हां' और कुछ मत बोलना?

औरत०। जी हां।

इन्द्रजीतसिंह की झुंझलाहट देख कर उस औरत को भी हंसी आ

वह मुस्कुराती हुई जिधर से आई थी उधर ही चली गई तथा थोड़ी दूर जाकर नजरों से गायब हो गई। तब भैरोंसिंह ने दिल्लगी के तौर पर कुमार से कहा, "आप लोगों की खुशकिस्मती का कोई ठिकाना है! रम्भा और उर्वशी के समान औरतें जबर्दस्ती आप लोगों के गले मढ़ी जाती हैं, तिस पर मजा यह कि आप लोग नखरा करते हैं। ऐसा ही है तो मुझे कहिए मैं आपकी सूरत बन कर ब्याह कर लूं।

इन्द्रजीत०। तब कमला किसके नाम की हांडी चढ़ावेगी?

भैरो०। अजी कमला से क्या जाने कब मुलाकात हो और क्या हो! यह तो परोसी हुई थाली ठहरी।

इन्द्रजीत०। ठीक है मगर भैरोंसिंह, जहां तक मेरा ख्याल है मैं समझता हूं कि तुम्हें इस ब्याह शादी वाले मामले की कुछ न कुछ खबर जरूर है।

भैरो०। अगर खबर हो भी तो अब मैं कुछ कहने का साहस नहीं कर सकता।

आनन्द०। सो क्यों।

भैरो०। इसलिए कि आप लोग मुझे झूठा समझ चुके हैं।

इन्द्र०। सो तो जरूर है।

भैरो०। (चिढ़ कर) अगर ऐसा ही खयाल है तो अब मैं आप लोगों के साथ रहना भी मुनासिब नहीं समझता।

इन्द्र०। मेरी भी यही राय है।

भैरो०। अच्छा तो (सलाम करता हुआ) जय माया की।

इन्द्र०। जय माया की।

आनन्द०। जय माया की, मगर यह तो मालूम हो कि आप जायंगे कहां?

भैरो०। इससे आपको कोई मतलब नहीं।

इन्द्र०। हां साहब इससे हमलोगों को मतलब नहीं, आप जाइए और जल्द जाइए।

इसके जवाब में भैरोंसिंह ने कुछ भी न कहा और वहां से रवाना होकर पूरब तरफ वाली इमारत के नीचे वाली एक कोठरी में घुस गया, इसके बाद मालूम न हुआ कि भैरोंसिंह का क्या हुआ या वह कहां गया। उसके जाने बाद दोनों कुमार भी धीरे धीरे उसी कोठरी में चले गए मगर वहां भैरोंसिंह दिखाई न पड़ा और न उस कोठरी में से किसी तरफ जाने का रास्ता ही मालूम हुआ।

इन्द्र०। (आनन्द से) क्यों हम लोगों का ख्याल ठीक निकला न!

आनन्द०। निःसन्देह वह झूठा था, अगर ऐसा न होता तो जानकारों की तरह इस कोठरी में घुस कर गायब न हो जाता।

इन्द्र०। बात तो यह है कि तिलिस्म के इस भाग में बहुत समझ बूझ कर काम करना चाहिए जहां की आबोहवा अपनों को भी पराया कर देती है।

आनन्द०। मामला तो कुछ ऐसा ही नजर आता है। मेरी राय में तो अब चुपचाप बैठना भी व्यर्थ जान पड़ता है। यहां से किसी तरफ जाने का करना चाहिए।

इन्द्र०। अब आज की रात तो सब्र करके बिता दो, कल सवेरे कुछ न बन्दोबस्त जरूर करेंगे।

इसके बाद दोनों भाई वहां से हटे और टहलते हुए बावली के पास संगमर्मर वाले चबूतरे पर बैठ गए। उसी समय उन्होंने एक आदमी को वाली इमारत के अन्दर से निकल कर अपनी तरफ आते देखा।

यह शख्स वही बुड्ढा दारोगा था जिससे पहिले बाग में मुलाकात हो थी, जिसने नानक को गिरफ्तार किया था और जिसके दिए हुए कमन्द सहारे दोनों कुमार उस दूसरे बाग में उतर कर इन्द्रानी और आनन्दी से मिले

जब वह कुमार के पास पहुंचा तो साहब सलामत के बाद कुमारों ने इज्जत के साथ अपने पास बैठाया और यों बातचीत होने लगी :—

इन्द्रजीत०। आज पुनः आपसे मुलाक़ात होने की आशा तो न थी?

दारोगा०। बेशक मुझे भी इस बात का गुमान न था परन्तु एक आव कार्य के कारण मुझे आप लोगों की सेवा में उपस्थित होना पड़ा। क्षमा कीजि जिस समय आप कमन्द के सहारे उस बाग में उतरे थे उस समय मुझे इस की कुछ भी खबर न थी कि उन औरतों में जिन्हें देख कर आप उस बाग थे दो औरतें ऐसी हैं जिन्हें और बातों के अतिरिक्त यहां की रानी कहलाने प्रतिष्ठा भी प्राप्त है। जिन्दगी का पिछला भाग इस बुढ़ौती के लिबास में रहा हूं इसलिए आंखों की रोशनी और ताकत ने भी एक तौर पर जवाब दे दिया है, इसीलिए मैं उन औरतों को भी पहिचान न सका।

इन्द्र०। खैर तो यह बात ही क्या थी जिसके लिए आप माफी मांग और इससे मेरा हर्ज भी क्या हुआ? आप उस काम की फिक्र कीजिए लिए आपको यहां आने की तकलीफ उठानी पड़ी।

दारोगा०। इस समय वे ही दोनों अर्थात् इन्द्रानी और आनन्दी मेरे यहां का सबब हुई हैं। मैं आपके पास इस बात की इत्तिला करने के लिए भेजा हूं कि परसों उन दोनों औरतों की शादी आप दोनों भाइयों के साथ होने आशा है कि आप दोनों भाई इसे स्वीकार करेंगे।

इन्द्र०। मैं अफसोस के साथ यह जवाब देने पर मजबूर हूं कि हम लो शादी को मंजूर नहीं कर सकते और इसके कई सबब हैं।

दारोगा०। ठीक है, मुझे भी पहिले पहिल यही जवाब सुनने की आश

मगर मैं आपको अपनी तरफ से भी नेकनीयती के साथ यह राय दूंगा कि आप इस शादी से इन्कार न करें और मुझे उन सब बातों के कहने का मौका न दें जिन्हें लाचारी की हालत में निवेदन करके समझाना पड़ेगा कि आप इस शादी से इन्कार नहीं कर सकते, बाकी रही यह बात कि इन्कार करने के कई सबब हैं, सो यद्यपि मैं उन कारणों के जानने का दावा तो नहीं कर सकता मगर इतना तो जरूर कह सकता हूं कि सबसे बड़ा सबब जो है वह केवल मुझी को नहीं बल्कि सभों को यहां तक कि इन्द्रानी और आनन्दी को भी मालूम है। परन्तु मैं आपको भरोसा दिलाता हूं कि किशोरी और कामिनी को भी इस शादी से किसी तरह का दुख न होगा क्योंकि उन्हें इस बात की पूरी पूरी खबर है कि यह शादी ही आपकी और उनकी मुलाकात का सबब होगी, बिना इस शादी के हुए वे आपको और आप उन्हें देख भी नहीं सकते।

इन्द्र०। मैं आपकी बातों पर विश्वास करने की कोशिश करूंगा परन्तु और सब बातों को किनारे रख कर मैं आपसे पूछता हूं कि यह शादी किस रीति के अनुसार हो रही है? विवाह के आठ प्रकार शास्त्र ने कहे हैं, यह उनमें से कौन सा प्रकार है और ऐसी शादी का नतीजा क्या निकलेगा? यद्यपि इसमें मेरी कुछ हानि नहीं हो सकती परन्तु मेरी अनिच्छा के कारण जो कुछ हानि हो सकती है इसका विचार लड़की वाले के सिर है।

दारोगा०। ठीक है, मगर जहां तक मैं सोचता हूं इन सब बातों पर अच्छी तरह विचार किया जा चुका है और ज्योतिषी ने भी निश्चय दिला दिया है कि इस शादी का नतीजा दोनों तरफ बहुत अच्छा निकलेगा। यद्यपि आप इस समय प्रसन्न नहीं होते परन्तु अन्त में बहुत ही प्रसन्न होंगे। अच्छा इस समय तो मैं जाता हूं क्योंकि मैं केवल इत्तिला करने के लिए आया था वादविवाद करने के लिए नहीं, परन्तु इसका जवाब पाने के लिए कल प्रातःकाल अवश्य आऊंगा।

इतना कह कर दारोगा उठ खड़ा हुआ और जवाब का इन्तजार कुछ भी न करके जिधर से आया था उधर ही चला गया। उसके जाने के बाद कुछ देर तक तो दोनों भाई उसी जगह बातचीत करते रहे और इसके बाद जरूरी कामों से छुट्टी पा और उसी बावली पर संध्या वन्दन कर पुनः उस कमरे में चले आये जिसमें दोपहर तक बिता चुके थे। इस समय संध्या हो चुकी थी और कुमारों को यह देख कर ताज्जुब हो रहा था कि उस कमरे में रोशनी हो चुकी थी मगर किसी गैर की सूरत दिखाई नहीं पड़ती थी।

कुमार को उस कमरे में गए बहुत देर न हुई होगी कि इन्द्रानी और आनन्दी वहां आ पहुंचीं जिन्हें देख कुमार बहुत खुश हुए और इन्द्रजीतसिंह ने इन्द्रानी से

कहा, "तुमने तो कहला भेजा था कि अब मैं मुलाकात नहीं कर सकती!"

इन्द्रानी० । बेशक ऐसा ही है मगर मैं छिप कर आपसे कुछ कहने के लि आई हूं ।

इन्द्रजीत० । वह कौन सी बात है जिसने तुम्हें छिप कर यहां आने के लि मजबूर किया और वह कौन सा कसूर है जिसने मुझे तुम्हारा मेहमान....

इन्द्रानी० । (बात काट कर और मुस्कुरा कर) मैं आपकी सब बातों जवाब दूंगी, आप मेहरबानी करके जरा मेरे साथ इस दूसरे कमरे में आइये।

इन्द्रजीत० । क्या मेरी चीठी का जवाब भी लाई हो ?

इन्द्रानी० । जी हां, जवाब की चीठी भी इसी समय आपको दूंगी। (इन्द्रजी सिंह और आनन्दसिंह को उठते देख कर आनन्दसिंह से) आप इसी जगह ठहरि (आनन्दी से) तू भी इसी जगह ठहर मैं अभी आती हूं ।

इन्द्रजीतसिंह यद्यपि इन्द्रानी के साथ शादी करने से इन्कार करते थे मग इन्द्रानी और आनन्दी की खूबसूरती बुद्धिमानी सभ्यता और उनकी मीठी बातें इ योग्य न थीं कि कुमार के दिल पर गहरा असर न करतीं और सामना होने उसे अपनी तरफ न खेंचतीं । इन्द्रजीतसिंह इन्द्रानी की बात से इन्कार न कर और खुशी खुशी उसके साथ दूसरे कमरे में चले गये ।

हम नहीं कह सकते कि इन्द्रजीतसिंह और इन्द्रानी में दो घण्टे तक क्या ब हुई और इधर आनन्दसिंह और आनन्दी में कैसी ठहरी, मगर इतना जरूर क कि जब इन्द्रजीतसिंह और इन्द्रानी दोनों आदमी लौट कर कमरे में आये तो ब खुश थे और इसी तरह आनन्दी और आनन्दसिंह के चेहरे पर भी खुशी की निशा पाई जाती थी । इन्द्रानी और आनन्दी के चले जाने बाद कई औरतें खाने का सामान लेकर हाजिर हुईं और दोनों भाई भोजन कर के सो रहे । सुबह जब वह दारोगा अपनी बातों का जवाब लेने के लिए आया तो दोनों कुमार उ खुशी खुशी मिले और बोले कि हम दोनों भाइयों को इन्द्रानी और आनन्दी साथ ब्याह करना स्वीकार है ।

बारहवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने इन्द्रानी और आनन्दी से ब्याह क स्वीकार कर लिया और इस सबब से उस छोटे से बाग में ब्याह की तैयारी दि देने लगी । इन दोनों कुमारों के ब्याह का बयान घूमधाम से लिखने के हमारे पास कोई मसाला नहीं है । इस शादी में न तो बारात है न बाराती गाना है न बजाना, न धूम है न धड़क्का, न महफिल है न ज्याफत, अगर बयान किया भी जाय तो किसका । हां इसमें कोई शक नहीं कि ब्याह कराने

पण्डित अविद्वान और लालची न थे, तथा शास्त्र की रीति से ब्याह कराने में किसी तरह की त्रुटि भी दिखाई नहीं देती थी। बावली के ऊपर संगमर्मर वाला चबूतरा ब्याह का मड़वा बनाया गया था और उसी पर दोनों शादियां एक साथ ही हुई थीं, अस्तु ये बातें भी इस योग्य नहीं कि जिनके बयान में तूल दिया जाय और दिलचस्प मालूम हों, हां इस शादी के सम्बन्ध में कुछ बातें ऐसी जरूर हुईं जो ताज्जुब और अफसोस की थीं और उनका बयान इस जगह कर देना हम आवश्यक समझते हैं।

इन्द्रानी के कहे मुताबिक़ कुंअर इन्द्रजीतसिंह को आशा थी कि राजा गोपालसिंह से मुलाकात होगी मगर ऐसा न हुआ। ब्याह के समय पांच सात औरतों के (जिन्हें कुमार देख चुके थे मगर पहिचानते न थे) अतिरिक्त केवल चार मर्द वहां मौजूद थे। एक वही बुड्ढा दारोगा, दूसरे ब्याह कराने वाले पण्डितजी, तीसरे एक आदमी और जो पूजा इत्यादि की सामग्री इधर से उधर समयानुकूल रखता था और चौथा आदमी वह था जिसने कन्यादान (दोनों) किया था। चाहे वह इन्द्रानी और आनन्दी का बाप हो या गुरु हो या चाचा इत्यादि जो कोई भी हो, मगर उसकी सूरत देख कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। यद्यपि उसकी उम्र पचास से ज्यादे न थी मगर वह साठ वर्ष से भी ज्यादे उम्र का बुड्ढा मालूम होता था। उसके खूबसूरत चेहरे पर जर्दी छाई थी, बदन में हड्डी ही हड्डी दिखाई देती थी, और मालूम होता था कि इसकी उम्र का सब से बड़ा हिस्सा रंज गम और मुसीबत ही में बीता है। इसमें कोई शक नहीं कि यह किसी जमाने में खूबसूरत दिलेर और बहादुर रहा होगा, मगर अब तो अपनी सूरत शक्ल से देखने वालों के दिल में दुःख ही पैदा करता था। दोनों कुमार ताज्जुब की निगाहों से उसे देखते रहे और उसका असल हाल जानने की उत्कण्ठा उन्हें बेचैन कर रही थी।

कन्यादान हो जाने के बाद दोनों कुमारों ने अपनी अपनी उंगली से अंगूठी उतार कर अपनी अपनी स्त्री को (निशानी या तोहफे के तौर पर) दी और इसके बाद सभों की इच्छानुसार दोनों भाई उठ उसी कमरे में चले गये जो एक तौर पर उनके बैठने या रहने का स्थान हो चुका था। इस समय रात घण्टे भर से कुछ कम बाकी थी।

दोनों कुमारों को उस कमरे में बैठे पहर भर से ज्यादे बीत गया मगर किसी ने आकर खबर न ली कि वे दोनों क्या कर रहे हैं और उन्हें किसी चीज की जरूरत है या नहीं। आखिर राह देखते देखते लाचार होकर दोनों कुमार कमरे के बाहर निकले और इस समय बाग में चारो तरफ सन्नाटा देख कर उन्हें बड़ा ही ताज्जुब हुआ। इस समय न तो उस बाग में कोई आदमी था और न ...

में से ही कुछ दिखाई देता था, यहां तक कि उस संगमर्मर के चबूतरे पर भी (
पर ब्याह का मड़वा था) हर तरह से सफाई थी और यह नहीं मालूम हो
कि आज रात को इस पर कुछ हुआ था।

बेशक यह बात ताज्जुब की थी बल्कि इससे भी बढ़ कर यह बात
की थी कि दिन भर बीत जाने पर भी किसी ने उनकी खबर न ली। जरूरी
से छुट्टी पाकर दोनों कुमारों ने बावली में स्नान ध्यान किया और
फल जो कुछ उस बागीचे में मिल सके खाकर उसी पर सन्तोष किया।

दोनों भाइयों ने तरह तरह के सोच विचार में दिन ज्यों त्यों करके
दिया मगर संध्या होते होते जो कुछ वहां पर उन्होंने देखा उसके बर्दाश्त
की ताकत उन दोनों के कोमल कलेजों में न थी। संध्या होने में थोड़ी
थी जब उन दोनों ने उस बुड्ढे दारोगा को तेजी के साथ अपनी तरफ आ
देखा। उसकी सूरत पर हवाई उड़ रही थी और वह घबड़ाया हुआ सा
पड़ रहा था। आने के साथ ही उसने कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख के
"बड़ा अन्धेर हो गया! आज का दिन हम लोगों के लिए प्रलय का दिन था
लिए आपकी सेवा में उपस्थित न हो सका !!"

इन्द्रजीत०। (घबड़ाहट और ताज्जुब के साथ) क्या हुआ ?

दारोगा०। आश्चर्य है कि इसी बाग में दो दो खून हो गये और आपको
मालूम न हुआ !!

इन्द्रजीत०। (चौंक कर) कहां और कौन मारा गया ?

दारोगा०। (हाथ का इशारा करके) उस पेड़ के नीचे चल कर देखें
आपको मालूम होगा कि एक दुष्ट ने इन्द्रानी और आनन्दी को इस दुनिया से
दिया, लेकिन बड़ी कारीगरी से मैंने खूनी को गिरफ्तार कर लिया है।

यह एक ऐसी बात थी जिसने इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के होश
दिए। दोनों घबड़ाए हुए उस बुड्ढे दारोगा के साथ पूरब तरफ चले गये
एक पेड़ के नीचे इन्द्रानी और आनन्दी की लाश देखी। उनके बदन में कपड़े
गहने सब वही थे जो आज रात को ब्याह के समय कुमार ने देखे थे, और
ही एक पेड़ के साथ बंधा हुआ नानक भी उसी जगह मौजूद था। उन दोनों
देखने के साथ ही इन्द्रजीतसिंह ने नानक से पूछा, "क्या इन दोनों को तूने मारा

इसके जवाब में नानक ने कहा, "हां, इन दोनों को मैंने मारा है और
पाने का काम किया है, ये दोनों बड़ी ही शैतान थीं !"

* अठारहवां भाग समाप्त *

मुद्रक—लहरी प्रेस, वाराणसी।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

उन्नीसवां भाग

पहिला बयान

अट्ठारहवें भाग के अन्त में हम इन्द्रानी और आनन्दी का मारा जाना लिख [आ]ये हैं और यह भी लिख चुके हैं कि कुमार के सवाल करने पर नानक ने अपना [दो]ष स्वीकार किया और कहा—"इन दोनों को मैंने ही मारा और इनाम पाने [का] काम किया है, ये दोनों बड़ी शैतान थीं।"

एक तो इनके मारे जाने ही से दोनों कुमार दुःखी हो रहे थे, दूसरे नानक के उद्दण्डता के साथ जवाब देने ने उन्हें अपने आपे से बाहर कर दिया। कुंअर [आ]नन्दसिंह ने तलवार के कब्जे पर हाथ रख कर बड़े भाई की तरफ देखा अर्थात् [इशा]रे ही में पूछा कि यदि आज्ञा हो तो नानक को दो टुकड़े कर दिया जाय। कुंअर [आ]नन्दसिंह के इस भाव को नानक भी समझ गया और हंसता हुआ बोला, "आश्चर्य कि आपके दुश्मनों को मार कर भी मैं दोषी ठहराया जाता हूं।"

इन्द्रजीत०। क्या ये दोनों हमारी दुश्मन थीं ?

नानक०। बेशक।

इन्द्रजीत०। इसका सबूत क्या है ?

नानक०। केवल ये दोनों लाशें।

इन्द्रजीत०। इसका क्या मतलब ?

नानक०। यही कि इन दोनों का चेहरा साफ करने पर आपको मालूम हो [जा]यगा कि ये दोनों वास्तव में मायारानी और माधवी थीं।

इन्द्रजीत० । (चौंक कर ताज्जुब से) हैं, मायारानी और माधवी

नानक० । (बात पर जोर देकर) जी हां मायारानी और माधवी

इन्द्रजीत० (आश्चर्य और क्रोध से बूढ़े दारोगा की तरफ देख कर सुनते हैं नानक क्या कह रहा है ?

दारोगा० । नहीं कदापि नहीं, नानक झूठा है ।

नानक० । (लापरवाही से) कोई हर्ज नहीं, यदि कुमार चाहेंगे तो मालूम हो जायेगा कि झूठा कौन है ।

दारोगा० । बेशक, कोई हर्ज नहीं मैं अभी बावली में से जल लाकर चेहरा धोकर अपने को सच्चा साबित करता हूं ।

इतना कह कर दारोगा जोश दिखाता हुआ बावली की तरफ चला फिर लौट कर न आया ।

पाठक, आप समझ सकते हैं कि नानक की बातों ने कुंअर इन्द्रजीत आनन्दसिंह के कोमल कलेजों के साथ कैसा बर्ताव किया होगा ? आनन्द इन्द्रानी वास्तव में मायारानी और माधवी हैं इस बात ने दोनों कुमारों ज्यादा बेचैन कर दिया और दोनों अपने किए पर पछताते हुए क्रोध भरी निगाहों से बराबर एक दूसरे को देखते हुए मन में सोचने लगे कि दोनों से कैसी भूल हो गई ! यदि कहीं यह हाल कमलिनी और लाडिली तथा और कामिनी को मालूम हो गया तो क्या वे सब मारे तानों के हम कलेजों को चलनी न कर डालेंगी ! अफसोस, उस बुड्ढे दारोगा ही ने हमारे सच्चे साथी भैरोसिंह ने भी हमारे साथ दगा की । उसने कहा था ने मेरी सहायता की थी इत्यादि मगर यह कदापि सम्भव नहीं कि मायारानी सिंह की सहायता करे । अफसोस, क्या अब यह जमाना आ गया कि सच्चे भी अपने मालिकों के साथ दगा करें ।

कुछ देर तक इसी तरह की बातें दोनों कुमार सोचते और दारोगा का इन्तजार करते रहे । आखिर आनन्दसिंह ने अपने बड़े भाई से कहा होता है कि वह कम्बख्त बुड्ढा दारोगा डर के मारे भाग गया, यदि आज्ञा मैं जाकर पानी लाने का उद्योग करूं ।'' इसके जवाब में कुंअर इन्द्रजीत पानी लाने का इशारा किया और आनन्दसिंह बावली की तरफ रवाना

थोड़ी ही देर में कुंअर आनन्दसिंह अपना पटूका पानी से तर कर और यह कहते हुए इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंचे "बेशक दारोगा भाग

उसी पटूके के जल से दोनों लाशों का चेहरा साफ किया गया और उसी समय लूम हो गया कि नानक ने जो कुछ कहा सब सच है, अर्थात् वे दोनों लाशें वास्तव मायारानी तथा माधवी की ही हैं।

अब दोनों भाइयों के रंज और गम का कोई हद न रहा। सकते की हालत खड़े हुए पत्थर की मूरत की तरह वे उन दोनों लाशों की तरफ देख रहे थे। छ देर के बाद कुँअर आनन्दसिंह ने एक लम्बी सांस लेकर कहा, "वाह रे भैरो-ह, जब तुम्हारा यह हाल है तब हम लोग किस पर भरोसा कर सकते हैं!"

इसके जवाब में पीछे की तरफ से आवाज आई, "भैरोसिंह ने क्या कसूर किया जो आप उस पर आवाजें कस रहे हैं!"

दोनों कुमारों ने घूम कर देखा तो भैरोसिंह पर निगाह पड़ी। भैरोसिंह ने पुनः हा; "जिस दिन आप इस बात को सिद्ध कर देंगे कि भैरोसिंह ने आपके साथ दगा उस दिन जीते जी भैरोसिंह को इस दुनिया में कोई भी न देख सकेगा।"

इन्द्रजीत०। आशा तो ऐसी ही थी मगर आज कल तुम्हारे मिजाज में कुछ आ गया है।

भैरो०। कदापि नहीं।

इन्द्रजीत०। अगर ऐसा न होता तो तुम बहुत सी बातें मुझसे छिपा कर मुझे फत में न डालते।

भैरो०। (कुमार के पास जाकर) मैंने कोई बात आपसे नहीं छिपाई और जो आप समझे हुए हैं वह आपका भ्रम है।

इन्द्रजीत०। क्या तुमने नहीं कहा था कि इन्द्रानी तुम्हें इस तिलिस्म में मिली और उसने तुम्हारी सहायता की थी?

भैरो०। कहा था और बेशक कहा था।

इन्द्रजीत०। (उन दोनों लाशों की तरफ इशारा करके) फिर यह क्या मामला तुम देख रहे हो कि ये किसकी लाशें हैं?

भैरो०। मैं जानता हूं कि ये मायारानी और माधवी की लाशें हैं जो नानक हाथ से मारी गई हैं, मगर इससे मेरा कोई कसूर साबित नहीं होता और न बात ही झूठी होती है। सम्भव है कि इन दोनों ने जिस तरह आपको धोखा या उसी तरह आपका मित्र और साथी समझ कर मुझे भी धोखा दिया हो।

इन्द्रजीत०। (कुछ सोच कर) खैर, एक नहीं, मैं और भी कई बातों तुम्हें झूठा साबित करूंगा।

भैरो० । दिल्लगी के शब्दों को छोड़ कर आप मेरी एक बात भी झूठी नहीं कर सकते ।

इन्द्रजीत० । सो सब कुछ नहीं, इन पेचीली बातों को छोड़ कर तुम्हें साफ मेरी बातों का जवाब देना होगा ।

भैरो० । मैं बहुत साफ साफ आपकी बातों का जवाब दूंगा, आपको जो पूछना हो पूछें ।

इन्द्रजीत० । तुम हम लोगों से विदा होकर कहां गए थे, अब कहां से आते हो, और इन लाशों की खबर तुम्हें कैसे मिली ?

भैरो० । आप तो एक साथ बहुत से सवाल कर गए जिनका जवाब थोड़े में हो ही नहीं सकता । बेहतर होगा कि आप यहां से चल कर उस कमरे और किसी ठिकाने बैठें और जो कुछ मैं जवाब देता हूं उसे गौर से सुनें । पूरा यकीन है कि निःसन्देह आप लोगों के दिल का खुटका निकल जाएगा और आप लोग मुझे बेकसूर समझेंगे, इतना ही नहीं मैं और भी कई बातें आपसे

इन्द्रजीत० । इन दोनों लाशों को और नानक को यों ही छोड़ दिया

भैरो० । क्या हर्ज है अगर यों ही छोड़ दिया जाय !

नानक० जब कि मैंने आप लोगों के साथ किसी तरह की बुराई नहीं की है तो फिर मुझे इस बेबसी की हालत में क्यों छोड़ जाते हैं ? यदि मुझे छुट्टी न मिले तो कम से कम कैद से तो छुट्टी मिल जाय !

इन्द्रजीत० । ठीक है, मगर अभी हमें यह मालूम होना चाहिए कि तू तिलिस्म के अन्दर क्योंकर और किस नियत से आया था, क्योंकि उस बाग में तेरी बदनीयती का हाल मालूम हो चुका जब दारोगा ने तुझे

नानक० । मगर आपको दारोगा की बदनीयती का हाल भी मालूम हो चुका है ।

भैरो० । इस पचड़े से हमें कोई मतलब नहीं, अभी राजा गोपालसिंह का आदमी इसको लेने के लिए आता होगा, इसे उसके हवाले कर दीजिएगा ।

इन्द्र० । अगर ऐसा हो तो बहुत अच्छी बात है, मगर क्या तुम्हें मालूम है कि राजा गोपालसिंह का आदमी आयेगा ? क्या इस मामले की खबर उन्हें लग गई है ?

भैरो० । जी हां ।

इन्द्र० । क्योंकर ?

भैरो० । सो तो मैं नहीं जानता मगर कमलिनी की जुबानी जो कुछ सुना है कहता हूं ।

इन्द्र० । तो क्या तुमसे और मैं कमलिनी से मुलाकात हुई थी ? इस समय व कहां हैं ?

भैरो० । जी हां हुई थी और मैं आपकी मुलाकात उन लोगों से करा सकता । (हाथ का इशारा कर के) वे सब उस तरफ वाले बाग में हैं, और इस समय उन्हीं के साथ था (रुक कर और सामने की तरफ देख कर) वह देखिए, राजा ालसिंह का आदमी आ पहुंचा ।

दोनों भाइयों ने ताज्जुब के साथ उस तरफ देखा । वास्तव में एक आदमी रहा था जिसने पास पहुंच कर एक चीठी इन्द्रजीतसिंह के हाथ में दी और , "मुझे राजा गोपालसिंह ने आपके पास भेजा है ।"

इन्द्रजीतसिंह ने उस चीठी को बड़े गौर से देखा । राजा गोपालसिंह का हस्ता- और खास निशान भी पाया । जब निश्चय हो गया कि यह चीठी राजा ालसिंह ही की लिखी है तब पढ़ के आनन्दसिंह को दे दिया । उस पत्र में ल इतना लिखा हुआ था :—

"आप नानक तथा मायारानी और माधवी की लाश को इस आदमी के हवाले के अलग हो जायं और जहां तक जल्दी हो सके तिलिस्म का काम पूरा करें ।"

इन्द्रजीतसिंह ने उस आदमी से कहा, "नानक और ये दोनों लाशें तुम्हारे र हैं, तुम जो मुनासिब समझो करो, मगर राजा गोपालसिंह को कह देना कि तक वह इस बाग में मुझसे जरूर मिल लें ।" इसके जवाब में उस आदमी ने हुत अच्छा" कहा और दोनों कुमार तथा भैरोसिंह वहां से रवाना होकर बावली आए । तीनों ने उस बावली में स्नान करके अपने कपड़े सूखने के लिए पेड़ों फैला दिए और इसके बाद ऊपर वाले चबूतरे पर बैठ कर बातचीत करने लगे ।

दूसरा बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने एक लम्बी सांस लेकर भैरोसिंह से कहा, "भैरोसिंह, बात का तो मुझे गुमान भी नहीं हो सकता कि तुम स्वप्न में भी हम लोगों साथ बुराई करने का इरादा करोगे, मगर तुम्हारे झूठ बोलने ने हम लोगों को बी कर दिया । अगर तुमने झूठ बोल कर हम लोगों को धोखे में न डाला होता आज इन्द्रानी और आनन्दी वाले मामले में पड़ कर हमने अपने मुंह में अपने

हाथ से स्याही न मली होती। यद्यपि इन दोनों औरतों के बारे में तरह
विचार मन में उठते थे मगर इस बात का गुमान कब हो सकता था कि
मायारानी और माधवी होंगी! ईश्वर ने बड़ी कुशल की कि शादी होने
आधी घड़ी के लिए भी उन दोनों कम्बख्तों का साथ न हुआ, अगर होता
ही धर्म संकट में जान फंस जाती। मैं यह समझता हूं कि राजा गोपाल
आज्ञानुसार आज कल तुम कमलिनी वगैरह का साथ दे रहे हो, शायद ऐसे
में भी कोई फायदा ही होगा, मगर इस बात पर हमारा खयाल कभी नहीं
सकता कि इतनी बढ़ी चढ़ी दिल्लगी करने की किसी ने तुम्हें इजाजत दी
नहीं नहीं इसे दिल्लगी नहीं कहना चाहिए, यह तो इज्जत और हुर्मत
में मिला देने वाला काम है। भला तुम ही बताओ कि किशोरी और
वगैरह तथा और लोगों के सामने अब हम अपना मुंह क्योंकर दिखावेंगे!

भैरो०। और लोगों की बातें तो जाने दीजिए क्योंकि इस तिलिस्म
जो कुछ हो रहा है इसकी खबर बाहर वालों को हो ही नहीं सकती, हां
कामिनी और कमला वगैरह अवश्य ताना मारेंगी क्योंकि उनको इस
की पूरी खबर है और वे लोग इसी बगल वाले बाग में मौजूद भी हैं,
सच कहता हूं कि इस मामले में मैं बिल्कुल बेकसूर हूं! इसमें कोई
कमलिनी की इच्छानुसार मैं बहुत सी बातें आप लोगों से छिपा गया
इन्द्रानी के मामले में मैं भी धोखा खा गया। मैंने ही नहीं बल्कि कमलिनी ने
समझा था कि इन्द्रानी और आनन्दी इस तिलिस्म की रानी हैं। खैर अब
कुछ होना था वह हो चुका, रंज को दूर कीजिए और चलिए, मैं आपको
लिनी वगैरह से मुलाकात कराऊं।

इन्द्रजीत०। नहीं अभी मैं उन लोगों से मुलाकात न करूंगा, कुछ
बाद देखा जायगा।

आनन्द०। जी हां मेरी भी यही राय है। अफसोस माधवी की
कलाई पर भी उस समय कुछ ध्यान नहीं गया, यद्यपि यह एक मामूली
बात थी!

भैरो०। नहीं नहीं, ऐसा खयाल न कीजिए, जब आप अपना दिल
छोटा कर लेंगे तब किसी भारी काम को क्योंकर करेंगे? इसे भी जाने
आप यह बताइये कि इसमें किशोरी या कमलिनी वगैरह का क्या कसूर
आप उनसे मुलाकात तक भी न करेंगे? शादी ब्याह का शौक बढ़ा

हुई आपसे, कमलिनी ने भला क्या किया ? (चौंक कर) खैर आप उनके पास जाइए, वह देखिए कमलिनी खुद ही आपके पास चली आ रही हैं !

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अफसोस और रंज से झुका सिर उठा देखा तो कमलिनी पर निगाह पड़ी जो धीरे धीरे चलती और मुस्कुराती हुई इन्हीं लोगों की तरफ आ रही थी।

तीसरा बयान

नानक को लिए हुए मायारानी दूसरी तरफ चली गई मगर जिस जगह जाना चाहती थी वहां पहुंचने के पहिले ही उसने पुनः एक गोपालसिंह को अपने से कुछ दूर पर देखा और उसी समय तिलिस्मी तमंचे में गोली भर कर निशाना सर किया। गोली उसके घुटने पर लग कर फूट गई और उसमें से निकला हुआ बेहोशी का धुआं उसके चारों तरफ फैल गया मगर उसका असर गोपालसिंह पर कुछ भी न हुआ। गोपालसिंह तेजी के साथ लपक कर मायारानी के पास चले आये और बोले, "मैं वह नकली गोपालसिंह नहीं हूं जिस पर इस तमंचे का कुछ असर हो, मैं असली गोपालसिंह हूं और तुझसे यह पूछने के लिए आया हूं कि बता अब तेरे साथ क्या सलूक किया जाय ?"

यह कैफियत देख कर मायारानी घवड़ा गई और उसे निश्चय हो गया कि अब उसकी मौत सामने आ खड़ी हुई है जो एक पल के लिए भी उसका मुलाहिजा न करेगी, अस्तु वह गोपालसिंह की बात का कुछ जवाब न दे सकी और नानक की तरफ देखने लगी। गोपालसिंह ने यह कह कर कि 'नानक की तरफ क्या देख रही है मेरी तरफ' ! एक तमाचा उसके गाल पर इस जोर से मारा कि वह इस सदमे को बर्दाश्त न कर सकी और चक्कर खा कर जमीन पर बैठ गई। गोपालसिंह ने अपनी जेब में से कुछ निकाल कर उसे जबर्दस्ती सुंघाया जिससे वह बेहोश होकर जमीन पर लेट गई।

इसके बाद गोपालसिंह ने नानक की तरफ जो डर के मारे खड़ा कांप रहा था देखा और कहा—

गोपाल०। कहो नानक, तुम यहां कैसे आ गये ? क्या उस भुवनमोहिनी के प्रेम में कमी तो नहीं हो गई या मनोरमा को खोजते हुए तो नहीं आ गए ?

नानक०। (डरता हुआ हाथ जोड़ कर) जी मैं कमलिनीजी से मिलने के लिए आया था क्योंकि वे मुझ पर कृपा रखती हैं और जब जब मुझे ग्रहदशा आकर

घेरती है तब तब सहायता करती हैं। मुझे यह खबर लगी थी कि वे इस[illegible] आई हुई हैं।

गोपाल०। मगर यहां आकर कमलिनी की जगह मायारानी से मदद[illegible] की नौबत आ गई, बल्कि क्या ताज्जुब कि इसी के साथ तुम यहां आये [illegible]

नानक०। जी नहीं मेरा इसका साथ भला क्योंकर हो सकता है, क्यों[illegible] मेरी पुरानी दुश्मनी है और इसने धोखा देकर मेरे बाप को ऐसी आफत में [illegible] दिया है कि अभी तक उसे किसी तरह छुटकारा नहीं मिलता।

गोपाल०। वह सब जो कुछ है मैं खूब जानता हूं। तुमने अपने बाप के [illegible] कुछ कोशिश की वह भी किसी से छिपी नहीं है तथा तारासिंह ने तुम्हारे यहां [illegible] जो कुछ तुम्हारा हाल मालूम किया है वह भी मुझे मालूम है। अच्छा अब मैं [illegible] कि तुम तारासिंह से बदला लेने यहां आये हो। मगर यह तो बताओ कि[illegible] राह से तुम यहां आए?

नानक०। जी नहीं, यह बात नहीं है, भला मैं तारासिंह से क्या बद[illegible] सकूंगा? तारासिंह ही से नहीं बल्कि राजा बीरेन्द्रसिंह के किसी भी ऐयार का [illegible] बला करने की हिम्मत मेरे में नहीं, मगर तारासिंह ने जो कुछ सलूक मेरे [illegible] किया है उसका रंज जरूर है और मैं कमलिनी से इसी बात की शिकायत [illegible] यहां आया था क्योंकि मुझे उनका बड़ा भरोसा रहता है और यहां आने का [illegible] भी उन्होंने ही उस समय मुझे बताया था जब कम्बख्त मायारानी की बदौल[illegible] यहां कैद थे और पागल बने हुए तेजसिंह यहां आए हुए थे।

गोपाल०। हां ठीक है, मगर मैं समझता हूं कि साथ ही इसके तुम उन [illegible] के जानने का भी इरादा करके आए होंगे जो गूंगी रामभोली की बदौलत यहां [illegible] पर तुमने देखा था......

नानक०। जी हां इसमें कोई शक नहीं कि मैं उन भेदों को भी जानना [illegible] हूं, परन्तु यह बात बिना आपकी कृपा के......

गोपाल०। नहीं नहीं, उन भेदों का जानना तुम्हारे लिए बहुत ही मुश्कि[illegible] क्योंकि तुम्हारी गिनती ईमानदार ऐयारों में नहीं हो सकती। यद्यपि वह सब [illegible] मुझे मालूम है, लाडिली ने तुम्हारा अनूठा हाल पूरा पूरा बयान किया था [illegible] उसी को रामभोली समझ कर तुम यहां आए भी थे, मगर जो कुछ तुमने यहां [illegible] देखा उसका सबब बयान करना मैं उचित नहीं समझता, फिर भी इतना [illegible] कहूंगा कि वह अनोखी तस्वीर जो दारोगा वाले अजायबघर के बंगले में तुमने दे[illegible]

वास्तव में कुछ न थी या अगर थी तो केवल तुम्हारी रामभोली की निरी शरारत।

नानक०। और वह कूएं वाला हाथ ?

गोपाल०। वह तुम्हारे बुजुर्ग धनपत का साथा था। (कुछ सोच कर) मगर नानक, मुझे इस बात का अफसोस है कि तुम अपनी जवानी हिम्मत लियाकत और ऐयारी तथा बुद्धिमानी का खून बुरी तरह कर रहे हो। इसमें कोई शक नहीं कि अगर तुम इश्क और मुहब्बत के झगड़ों में न पड़े होते तो समय पर अपने बाप की सहायता करने लायक होते। अब भी तुम्हारे लिए उचित यही है कि तुम अपने खयालों को सुधार कर इज्जत पैदा करने की कोशिश करो और किसी के साथ दुश्मनी करने या बदला लेने का खयाल दिल से दूर कर दो। इस थोड़ी सी जिन्दगी में मामूली ऐशोआराम के लिए अपना परलोक बिगाड़ना पढ़े लिखे बुद्धिमानों का काम नहीं है। अच्छे लोग मौत और जिन्दगी का फैसला एक अनूठे ढंग पर करते हैं। उनका खयाल है कि दुनिया में वह कभी मरा हुआ तब तक न समझा जायगा जब तक उसका नाम नेकी के साथ सुना या लिया जायगा, और जिसने अपने माथे पर बुराई का टीका लगा लिया वह मुर्दे से भी बढ़ कर है। दुष्ट लोग यदि किसी कारण मनुष्य को चींटी समझने लायक हो भी जायं तो भी कोई बात नहीं मगर ईश्वर की तरफ से वे किसी तरह निश्चिन्त नहीं हो सकते और अपने अपने कामों का फल अवश्य पाते हैं। क्या इन्हीं राजा बीरेन्द्रसिंह और मेरे किस्से से तुम यह नसीहत नहीं ले सकते? क्या तुम मायारानी माधवी अग्निदत्त और शिवदत्त वगैरह से भी अपने को बढ़ कर समझते हो और नहीं जानते कि उन लोगों का अन्त किस तरह हुआ और हो रहा है ? फिर किस भरोसे पर तुम अपने को बुरी राह चलाया चाहते हो ? निःसन्देह तुम्हारा बाप बुद्धिमान है जो एक नामी और अद्भुत शक्ति रखने वाला अमीर ऐयार होने और हर तरह की बेइज्जती सहने पर भी राजा बीरेन्द्रसिंह का कृपापात्र बनने का ध्यान अपने दिल से दूर नहीं करता, और तुम उसी भूतनाथ के लड़के हो जो अपने दिल को भी काबू में नहीं रख सकते!

इस तरह की बहुत सी नसीहत भरी बातें राजा गोपालसिंह ने इस ढंग से नानक को कहीं कि उसके दिल पर असर कर गईं। वह राजा गोपालसिंह के पैरों पर गिर पड़ा और जब उन्होंने उसे दिलासा देकर उठाया तो हाथ जोड़ के अपनी डबडबाई हुई आंखें नीचे किये हुए बोला, "मेरा अपराध क्षमा कीजिये! यद्यपि मैं क्षमा मांगने योग्य नहीं हूं परन्तु आपकी उदारता मुझे क्षमा देने योग्य है। अब मुझे अपनी तावेदारी में लीजिये और हर तरह से आजमा कर देखिये कि आपकी

नसीहत का असर मुझ पर कैसा पड़ा और अब मैं किस तरह आपकी खिदमत करता हूं।"

इसके जवाब में गोपालसिंह ने कहा, "अच्छा हम तुम्हारा कसूर माफ करके तुम्हारी दर्खास्त कबूल करते हैं। तुम मेरे साथ आओ और जो कुछ मैं कहूं सो करो।"

चौथा बयान

कमलिनी को देख कर दोनों कुमार शर्माए और मन में तरह तरह की बातें सोचने लगे। देखते देखते कमलिनी उनके पास आ गई और प्रणाम करके बोली, "आप यहां जमीन पर क्यों बैठे हैं? उस कमरे में चल कर बैठिए जहां फर्श बिछा है और सब तरह का आराम है।"

इन्द्र०। मगर वहां अंधकार तो जरूर होगा?

कम०। जी नहीं वहां बखूबी रोशनी हो रही होगी, (मुस्कुरा कर) क्योंकि यहां की रानी के मर जाने से यह बाग एक सुघड़ रानी के अधिकार में आ गया है और उसने आपकी खातिर में रोशनी जरूर कर रक्खी होगी।

इन्द्र०। (कुछ शर्मिन्दगी के साथ) बस रहने दीजिए, मैं यहां की रानी का मेहमान नहीं बनता, जो कुछ बनना था सो बन चुका, अब तो तुम्हारी दिल्लगी का निशाना बनूंगा।

कमलिनी०। (हाथ जोड़ के) मेरी क्या मजाल जो आपसे दिल्लगी करूं, अब से आप मेरे मेहमान बनिए और यहां से उठिये।

इन्द्र०। क्या तुम नहीं जानतीं कि यहां अपने भी पराए होकर दुःख देने के लिए तैयार हो जाते हैं?

भैरो०। (कमलिनी से) आपने खयाल किया या नहीं? यह मेरी पूजा हो रही है।

कम०। होनी ही चाहिये, आप इसी योग्य हैं। (इन्द्रजीतसिंह से) मगर आप मुझ लौंडी पर किसी तरह का शक न करें। यदि आप यह समझते हों कि मैं वास्तव में कमलिनी नहीं हूं तो मैं बहुत सी बातें उस जमाने की आपको याद दिला के अपने पर विश्वास करा सकती हूं जिस जमाने में आप तालाब वाले तिलिस्मी मकान में मेरे साथ रहते थे। (उस समय की दो तीन गुप्त बातों का इशारा करके) कहिए अब भी मुझ पर शक है?

इन्द्र०। (बनावटी मुस्कुराहट के साथ) नहीं अब तुम पर शक तो किसी तरह का नहीं है मगर रंज जरूर है।

कम० । रंज ! सो किस बात का ?

इन्द्र० । इस बात का कि यहां आने पर तुमने जान बूझ के अपने को मुझसे छिपाया और मुझे तरद्दुद में डाला !

कम० । (हंस कर और कुमार का हाथ पकड़ के) अच्छा आप यहां से उठिये और उस कमरे में चलिए तो मैं आपकी सब बातों का जवाब दूंगी। आप तो जरा सी बात में रंज हो जाते हैं। अगर आपके साथ किसी तरह का मसखरा-पन किया या हम लोगों को आपसे मिलने नहीं दिया तो आपकी भावज साहेबा ने, अस्तु आपकी ऐसी बातों का जवाब भी वे ही देंगी और उनसे भी उसी कमरे में मुलाकात होगी ।

इन्द्र० । मेरी भावज साहेबा ! सो कौन, क्या लक्ष्मीदेवी ?

कम० । जी हां, वे उसी कमरे में बैठी आपका इन्तजार कर रही हैं, चलिए ।

इन्द्र० । हां उनसे तो मैं जरूर मिलूंगा । जब से मैंने यह सुना है कि 'तारा वास्तव में लक्ष्मीदेवी है' तभी से मैं उनसे मिलने के लिए बेताब हो रहा हूं ।

यह कह कर इन्द्रजीतसिंह उठ खड़े हुए और अपने सूखे हुए कपड़े पहिर कर कमलिनी के साथ उसी कमरे की तरफ चले जिसमें पहिले भी कई दफे आराम कर चुके थे । उनके पीछे पीछे आनन्दसिंह और भैरोसिंह भी गए !

इस समय कमलिनी मामूली ढंग में न थी बल्कि बेशकीमत पौशाक और गहनों से अपने को सजाए हुए थी । एक तो यों ही किशोरी के मुकाबिले की खूबसूरत और हसीन थी तिस पर इस समय की बनावट और शृंगार ने उसे और भी उभाड़ रक्खा था । यद्यपि आज उससे मिलने के पहिले कुमार तरहतरह की बातें सोच रहे थे और इन्द्रानी तथा आनन्दी वाले मामले से शर्मिन्दा होकर जल्दी उससे मिलना नहीं चाहते थे मगर जब सामने आकर खड़ी हो गई तो सब बातें एक तरह पर थोड़ी देर के लिए भूल गये और खुशी खुशी उसके साथ चल कर उस कमरे में जा पहुंचे ।

इस कमरे का दर्वाजा मामूली ढंग पर बन्द था जो कमलिनी के धक्का देने से खुल गया और ज्यादे रोशनी के सबब भीतर के जगमगाते हुए सामान तथा कई औरतों पर दोनों कुमारों की निगाह पड़ी जो उन्हें देखते ही उठ खड़ी हुईं और जिनमें से एक को छोड़ बाकी की सभी ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह को और कई ने आनन्दसिंह को भी प्रणाम किया ।

वह औरत जिसने कुमार को सलाम नहीं किया लक्ष्मीदेवी थी और वह राजा

गोपालसिंह की जुवानी सुन चुकी थी कि दोनों कुमार उनके छोटे भाई हैं
दोनों कुमारों ने स्वयं लक्ष्मीदेवी को सलाम किया और उनकी पिछली अवस्था
पर अफसोस करके पुनः जमानिया की रानी बनने पर प्रसन्नता के साथ मुबारक
बाद देने बाद और विषयों में भी देर तक उससे बातें करते रहे। इसके बाद किशोरी
कामिनी इत्यादि से बातचीत की नौबत पहुंची। किशोरी और इन्द्रजीतसिंह में तथा
कामिनी और आनन्दसिंह में सच्ची और बढ़ी चढ़ी मुहब्बत थी परन्तु धर्म लज्जा
और सभ्यता का पल्ला भी उन लोगों ने मजबूती के साथ पकड़ा हुआ था, इस
लिए यद्यपि यहां पर कोई बड़ी बूढ़ी औरत मौजूद न थी जिससे विशेष लज्जा
करनी पड़ती तथापि इन चारो ने इस समय बनिस्बत जुबान के विशेष करके आंखों
के इशारों तथा भावों ही में अपने दुःख दर्द और जुदाई के सदमे को झलका
उपस्थित अवस्था तथा इस अनोखे मेल मिलाप पर प्रसन्नता प्रकट की। कमलिनी
लाडिली कमला सयूं और इन्दिरा आदि से भी कुशल क्षेम पूछने बाद इन लोगों
में यों बातें होने लगीं :—

इन्द्र०। (लक्ष्मीदेवी से) आपको इस बात की शिकायत तो जरूर होगी
आपको हद्द से ज्यादे दुःख भोगना पड़ा मगर यह जान कर आप अपना दुःख
भूल गई होंगी कि भाई साहब ने कम्बख्त मायारानी की बदौलत जो कुछ
भोगा उसे भी कोई साधारण मनुष्य सहन नहीं कर सकता।

लक्ष्मीदेवी०। निःसन्देह ऐसा ही है, क्योंकि मुझे तो किसी न किसी तरह
आजादी की हवा मिल भी रही थी मगर उन्हें अंधेरी कोठरी में जिस तरह
पड़ा वैसा ईश्वर न करे किसी दुश्मन को भी नसीब हो।

इन्द्र०। (मुस्कुरा कर) मगर मैंने तो सुना था कि आप उनसे नाराज
गई हैं और जमानिया जाने में.......

कम०। (हंस कर) ये बनिस्बत उनके जिन्न को ज्यादे पसन्द करती

लक्ष्मी०। वास्तव में उन्होंने बड़ा भारी धोखा दिया था।

इन्द्र०। जैसा कि आपने तारा बन कर कमलिनी को धोखा दिया था।

कमला०। आपने ठीक कहा, क्योंकि ऐयारी दोनों ही ने की थी।

कम०। ओफ, जब मैं वह समय याद करती हूं जब ये तारा बन
मेरे यहां रहती और ऐयारी का काम करती थीं, तो मुझे आश्चर्य होता है। वा
में इनकी ऐयारी बहुत अच्छी होती थी और ये दुश्मनों का पता खूब लगाती
रोहतासगढ़ पहाड़ी के नीचे जब मायारानी का ऐयार कंचनसिंह को मार

आपको रथ पर सुला के ले गया था तब भी इन्होंने मुझे वह खबर कुछ ही देर पहिले पहुंचाई थी।

इन्द्र०। (ताज्जुब से) हां! तब तो इनका बहुत बड़ा अहसान मेरी गर्दन पर भी है! ओफ, वह जमाना भी कैसा भयानक था! मजा तो यह था कि दुश्मन लोग आपुस में लड़ मरते थे पर एक की दूसरे को खबर नहीं होती थी। देखो रोहतासगढ़ में मायारानी की चमेली ने तो माधवी पर वार किया और माधवी को मरते दम तक इस बात का पता न लगा। अगर पता लग जाता तो क्या आज दिन माधवी मायारानी के साथ मिल कर यहां के तिलिस्मी बाग में आने की हिम्मत कभी करती?

कम०। कदापि नहीं, (हंस कर) मगर आश्चर्य तो यह है कि जिस माधवी और मायारानी ने इतना ऊधम मचा रक्खा था उन्हीं दोनों से आपने शादी कर ली। अफसोस तो यही कि उनके पापों ने उन्हें बचने न दिय। और हम लोगों को मुबारकबाद देने का मौका न मिला!

इन्द्र०। (शर्मा कर) तुम तो......!

लक्ष्मी०। (कुमार की बात काट कर कमलिनी से) बहिन तुम भी कैसी शोख हो! कई दफे तुमसे कह चुकी कि इस बात का जिक्र न करना मगर आखिर तुमने न माना! खैर अगर कुमार ने शादी किया तो किया फिर तुम्हें क्या? तुम ताना मारने वाली कौन? और फिर भूलचूक की बात ही क्य. है, इन्होंने कुछ जान बूझ के तो शादी की ही नहीं धोखे में पड़ गये। खबरदार अब इस बात का जिक्र कोई करने न पाये। (कुमार से) हां तो बताइए कि हम लोगों का हाल आपको कुछ मालूम हुआ या नहीं?

इन्द्र०। मैं तो बहुत दिनों से तिलिस्म के अन्दर हूं मगर बाहर का हाल जिसमें आप लोगों का हाल भी मिला हुआ था भाई साहब (गोपालसिंह) बराबर सुना दिया करते थे और जो कुछ नहीं मालूम वह अब मालूम हो जायगा, क्योंकि ईश्वर की कृपा से आप लोगों का बहुत अच्छा समागम हुआ है, एक दूसरे की बीती कहने सुनने का मौका आज से बढ़ कर फिर न मिलेगा। साथ ही इसके मैं यह भी कहूंगा कि आप (कमलिनी की तरफ इशारा करके) इन्हें बात बात में डांटने या दबाने की तकलीफ न करें, ये जितना और जो कुछ मुझे कहें कहने दीजिए क्योंकि मैं इनके हाथ बिका हुआ हूं, इन्होंने हम लोगों के साथ जो कुछ सलूक किया है वह किसी से छिपा नहीं है और न उसका बोझ हम लोगों के सर से कभी उतर सकता है...

कम० । बस बस बस, ज्यादे तरीफों की भरमार न कीजिए। आप.... (सयू की तरफ देख के) चाची क्षमा कीजिए और जरा इस कमरे में (दोनों कुमारों और भैरोंसिंह की तरफ बता कर) इन लोगों के लिए खाने इन्तजाम कीजिए।

सयू कमलिनी का मतलब समझ गई कि उसके सामने हंसी दिल्लगी करते इन लोगों को शर्म मालूम होती है और उचित भी यही है, अस्तु वह दूसरे कमरे में चली गई और तब कमलिनी ने पुनः इन्द्रजीतसिंह से कहा, "हां आप मेरे हाथ बिके हुए हैं तो कोई चिन्ता नहीं, मैं आपको बड़ी खातिर अपने पास रक्खूंगी।"

किशोरी० (मुस्कुराती हुई) इनकी तावीज बना के गले में पहिर

कम० । जी नहीं गले तो ये तुम्हारे मढ़े जायंगे, मैं तो इन्हें हाथ लिए फिरूंगी।

लक्ष्मीदेवी० । बल्कि चुटकियों पर, क्योंकि तुम ऐसी ही शोख और हो ! (कुमार से) आज हम लोगों के लिए बड़ी खुशी का दिन है, ईश्वर भागों से यह दिन दिखाया है, अतएव अगर हम लोग हंसी दिल्लगी में कुछ कह जायं तो रंज न मानिएगा।

इन्द्रजीत० । ताज्जुब है आप कि रंज होने का जिक्र करती हैं! क्या आप बात को नहीं जानतीं कि इन्हीं बातों के लिए हम लोग कब से तरस रहे हैं! (कमलिनी की तरफ देख के और मुस्कुरा के) मगर आशा है कि अब तरसना न पड़े

कमलिनी० । यह तो (किशोरी की तरफ बता के) इन्हें कहिए, तरसने बात का जवाब तो यही ही दे सकेंगी।

किशोरी० । ठीक है, क्योंकि आदमी जब किसी के हाथ बिक जाता है आजादी की हवा खाने के लिये उसे तरसना ही पड़ता है।

इन्द्रजीत० । (बात का ढंग दूसरी तरफ बदलने की नीयत से कमलिनी की तरफ देख कर) हां यह तो बताओ कि नानक से और तुम लोगों से मुलाकात हुई थी या नहीं ?

कमलिनी० । जी नहीं, उस पर तो आपको बड़ा रंज होगा !

इन्द्रजीत० । हां इसलिये कि उसने अपनी चाल चलन को बहुत बिगाड़ है। (कमला से) तुमने यह तो सुना ही होगा कि नानक भूतनाथ का लड़का और भूतनाथ तुम्हारा पिता है !

कमला० । जी हां मैं सुन चुकी हूं, मगर वे (लम्बी सांस लेकर) आज कल अपनी भूलों के सबब आप लोगों के मुर्जरिम बन रहे हैं !

इन्द्रजीत० । चिन्ता मत करो, पिछले जमाने में अगर भूतनाथ से किसी तरह का कसूर हो गया तो क्या हुआ, आज कल वह हम लोगों का काम बड़ी खूबी और नेकनीयती के साथ कर रहा है और तुम विश्वास रक्खो कि उसका सब कसूर माफ किया जायगा ।

कमला० । यदि आप की कृपा हो तो सब अच्छा ही होगा, (कमलिनी की तरफ इशारा करके) इन्होंने भी मुझे ऐसी ही आशा दिलाई है ।

लक्ष्मीदेवी० । इनका तो वह ऐयार ही ठहरा, इन्हीं के दिए हुए तिलिस्मी खंजर की बदौलत उसने बड़े बड़े काम किए और कर रहा है । हां खूब याद आया, (इन्द्रजीतसिंह से) मैं आपसे एक बात पूछूंगी ।

इन्द्रजीत० । पूछिये ।

लक्ष्मीदेवी० । तालाब वाले तिलिस्मी मकान से थोड़ी दूर पर जंगल में एक खूबसूरत नहर है और वहीं पर किसी योगिराज की समाधि है ....

इन्द्रजीत० । हां हां, मैं उस स्थान का हाल जानता हूं । यद्यपि मैं वहां कभी गया नहीं, मगर 'रिक्तगन्थ' की बदौलत मुझे वहां का हाल बखूबी मालूम हो गया है, (कमलिनी की तरफ देख कर) इन्हें भी तो मालूम ही होगा क्योंकि वह 'रिक्तगन्थ' बहुत दिनों तक इनके पास था ।

कम० । जी हां, उसी रिक्तगन्थ की बदौलत मुझे उसका कुछ हाल मालूम हुआ था और उसी जगह से वह तिलिस्मी खंजर और नेजा मैंने निकाला था* मगर मैं उस रिक्तगन्थ की लिखावट अच्छी तरह समझ नहीं सकती थी इसलिए उसका ठीक ठीक और पूरा हाल मैं न जान सकी ।

लक्ष्मी० । इसी सबब से मेरी बातों का ठीक जवाब न दे सकी तब मैंने सोचा कि आपसे मुलाकात होने पर पूछूंगी कि क्या वहां भी कोई तिलिस्म है ?

इन्द्र० । जी नहीं, वहां कोई तिलिस्मी नहीं है । जिस दार्शनिक महात्मा की वह समाधि है, उन्होंने यह तिलिस्म तथा रोहतासगढ़ का तहखाना, तालाब वाला तिलिस्मी खंडहर जिसमें मैं मुर्दा बना कर पहुंचाया गया था, अथवा जिसमें किशोरी कामिनी और भैरोसिंह वगैरह फंस गये थे बनवाया है, और चुनारगढ़ वाला तिलिस्म

---

* देखिए छठवां भाग, तीसरा बयान ।

† देखिए तीसरा भाग, पहिला बयान ।

उनके गुरु का बनवाया हुआ है, यहां के राजा जिन्होंने यह तिलिस्म बनवाया उन्हीं के शिष्य थे। उन महात्मा ने जीते जी समाधि ले ली थी और उन्होंने योगाश्रम भी उसी स्थान में बनवाया था। कमलिनी ने तिलिस्मी खंजर उसी आश्रम से निकाला होगा क्योंकि वहां भी वड़ी वड़ी अनूठी चीजें हैं।

कम०। जी हां, और उसी जगह मैंने इस बात की कसम भी खाई थी कि 'भूतनाथ और नानक को अपना भाई समझूंगी, अगर ये लोग हमलोगों के साथ दगा न करेंगे'। यद्यपि यह आश्चर्य की बात है कि अभी तक भूतनाथ के हाल का सही सही पता नहीं लगता फिर भी चाहे जो हो यह तो मैं जरूर कहूंगी कि भूतनाथ ने हम लोगों के साथ बड़ी नेकियां की हैं।

इन्द्र०। इसमें किसी को क्या शक हो सकता है? भूतनाथ वास्तव में भारी ऐयार है। हां यह तो बताओ कि नानक यहां कैसे आ पहुंचा?

कम०। भला मैं इस बात को क्या जानूं?

आनन्द०। (मुस्कुराते हुए) अपनी रामभोली को खोजता हुआ आया।

लाडिली०। उसे मालूम हो चुका है कि उसकी रामभोली को मौत हो गई।

आनन्द०। खैर उसकी तस्वीर खोजने आया होगा!

लाडिली०। या किसी की बारात में आया होगा!

लाडिली की इस आखिरी बात ने सभों को हंसा दिया और आनन्दसिंह बात कर चुप हो रहे।

इन्द्र०। (कमलिनी से) इस बात का कुछ पता न लगा कि अग्निदत्त को किसने मारा था! (किशोरी से) शायद इसका जवाब तुम दे सकती हो?

किशोरी०। अग्निदत्त को मायारानी के ऐयारों ने मारा था* और उन्हीं ऐयारों ने मुझे ले जाकर उस तिलिस्मी खंडहर में कैद किया था।

भैरो०। (कमलिनी से) हां खूब याद आया, हमने सुना था कि उस समय जब हम लोग शाहदर्वाजा बन्द हो जाने के कारण दुःखी हो रहे थे तब आपने विचित्र ढंग से वहां पहुंच कर हम लोगों की सहायता की थी। आपको इस बात की खबर कैसे मिली थी?†

कम०। (लक्ष्मीदेवी की तरफ इशारा करके) उन दिनों ये ऐयारी कर रही

---

*देखिए पांचवां भाग, चौथा बयान।

†देखिये छठवां भाग, पहिला बयान।

और इन्होंने ही उन बातों की खबर पहुंचाई थी तथा यह भी कहा था कि 'खंडहर वाली बावली साफ हो गई है'। उस बावली में पहुंचने का रास्ता उसी योगिराज की समाधि के पास ही से है। अगर वह बावली खुद कर साफ न हो गई होती तो मैं शाहदर्वाजा खोल न सकती क्योंकि ऊपर की तरफ से खंडहर के अन्दर पहुंचना कठिन हो रहा था और भीतर मायारानी के आदमी उस तहखाने में जा पहुंचे थे। वह भी बड़ा कठिन समय था।

कमला०। उसी समय राजा शिवदत्त भी वहां आकर........

कम०। हां, उस समय भी भूतनाथ ने बड़ी मदद दी, रूहा बन कर अगर वह राजा शिवदत्त को पकड़ न लिए होता तो गजब ही हो जाता‡।

भैरो०। मैं तो कुमार की जिन्दगी से बिल्कुल ही नाउम्मीद हो गया था।

कम०। (कुमार से) हां यह तो बताइये कि आप वहां किस तरह पहुंचाये गये। इसमें तो कोई शक नहीं कि आपको मायारानी के आदमियों ने गिरफ्तार किया मगर इस बात का पता अभी तक न लगा कि उस मकान के अन्दर आप तथा देवीसिंह वगैरह ने क्या देखा कि हंसते हंसते उसके अन्दर कूद गये* और कूदने के बाद फिर क्या हुआ ?

इन्द्र०। कूद पड़ने के बाद फिर मुझे तनोवदन की सुध न रही और यही हाल उन सभों का भी हुआ जो मेरे पहिले उसके अन्दर कूद चुके थे मगर यह अभी बताऊंगा कि उसके अन्दर कौन सी हंसाने वाली चीज थी।

कम०। यही बात हम लोगों ने जब देवीसिंह से पूछी थी तो उन्होंने भी इनकार करके कहा था कि 'माफ कीजिए, उस विषय में तब तक कुछ न कहूंगा जब तक इन्द्रजीतसिंह मेरे सामने मौजूद न होंगे क्योंकि उन्होंने इस बात को छिपाने के लिए मुझे सख्त ताकीद कर दी है'†। ताज्जुब है कि आपने अपने साथियों को भी इस तरह की ताकीद कर दी और आज स्वयं भी उसके बताने से इनकार करते हैं?

इन्द्र०। उसमें कोई ऐसी बात नहीं थी जिसके बताने में मुझे परहेज हो मगर मैं चाहता हूं कि वही तमाशा तुम लोगों को तथा और अपने सभों को दिखा कर बताऊं कि उस मकान के अन्दर बस यही था, निःसन्देह तुम लोगों की भी वही दशा होगी।

कम०। तो आज ही वह तमाशा क्यों नहीं दिखाते ?

---

‡ देखिए छठवां भाग, दूसरा बयान।

* देखिए छठवां भाग, चौथा बयान।

† देखिये दसवां भाग, तीसरा बयान।

इन्द्र० । आज वह तमाशा मैं नहीं दिखा सकता, हां भाई साहब (गोपालसिंह) अगर चाहें तो दिखा सकते हैं, मगर इसके लिए जल्दी ही क्या है ?

लक्ष्मी० । खैर जाने दीजिये, आखिर एक न एक दिन मालूम हो ही जाएगा। अच्छा यह बताइये कि आप जब इस तिलिस्म में या इसके बगल वाले बाग में थे तो उस बुड्ढे तिलिस्मी दारोगा से मुलाकात हुई थी या नहीं ?

इन्द्र० । हां हुई थी, बड़ा ही शैतान है, क्या तुम लोगों से वह नहीं मिला ?

लक्ष्मी० । भला वह कभी बिना मिले रह सकता है ? उसने तो हम लोगों को धोखे में डालना चाहा था मगर तुम्हारे भाई साहब ने पहिले ही उसकी शैतानी से हम लोगों को होशियार कर दिया था इसलिए हम लोगों का वह कुछ बिगाड़ न सका।

कम० । मगर आपने उसकी बात मान ली और इसलिये उसने भी खुश होकर आपकी शादी करा दी । आपको तो उसका अहसान मानना चाहिए।

लक्ष्मी० । (कमलिनी को झिड़क कर) फिर तुम उसी रास्ते पर चलीं ! खाह एक आदमी को........

इन्द्रजीत० । अबकी अगर वह मुझे मिले तो उसे बिना मारे कभी न छोड़ूं, चाहे जो हो ।

इन्द्रजीतसिंह की इस बात पर सब हंस पड़े और इसके बाद लक्ष्मीदेवी ने इन्द्रजीत से कहा, "अच्छा अब यह बताइये कि मेरे चले जाने बाद आपने तिलिस्म में क्या किया और क्या देखा ?"

इसी समय सर्यू भी वहां आ पहुंची और बोली, "चलिये पहिले खा पी लीजिये तब बातें कीजिये ।"

लक्ष्मीदेवी के जिद्द करने से दोनों कुमारों को उठना पड़ा और भोजन इत्यादि से छुट्टी पाने बाद फिर उसी ठिकाने बैठ कर गप्पें उड़ने लगीं । कुमार ने बिल्कुल हाल बयान किया और वे सब आश्चर्य से सब कथा सुनती रहीं। इसके बाद कुमार ने इन्दिरा से उसका बाकी किस्सा पूछा ।

पांचवां बयान

दूसरे दिन तेजसिंह को उसी तिलिस्मी इमारत में छोड़ कर और जीतसिंह को साथ लेकर राजा वीरेन्द्रसिंह अपने पिता से मिलने के लिए चुनार गए। मुलाकात होने पर वीरेन्द्रसिंह ने पिता के पैरों पर सर रक्खा और उन्होंने आशीर्वाद देने बाद बड़े प्यार से उठा कर छाती से लगाया और सफर का हाल चाल पूछा।

राजा साहब की इच्छानुसार एकान्त हो जाने पर बीरेन्द्रसिंह ने सब हाल अपने पिता से बयान किया जिसे वे बड़ी दिलचस्पी के साथ सुनते रहे। इसके बाद पिता के साथ ही साथ महल में जाकर अपनी माता से मिले और संक्षेप में सब हाल कह कर बिदा हुए तब चन्द्रकान्ता के पास गए और उसी जगह चपला तथा चम्पा से मिल कर देर तक अपने सफर का दिलचस्प हाल कहते रहे।

दूसरे दिन राजा बीरेन्द्रसिंह अपने पिता के पास एकान्त में बैठे हुए बातों में राय ले रहे थे जब जमानिया से आए हुए एक सवार की इत्तिला मिली जो राजा गोपालसिंह की चीठी लाया था। आज्ञानुसार वह हाजिर किया गया, सलाम करके उसने राजा गोपालसिंह की चीठी दी और तब बिदा होकर बाहर चला गया।

यह चीठी जो राजा गोपालसिंह ने भेजी थी नाम ही को चीठी थी। असल में यह एक ग्रंथ ही मालूम होता था जिसमें राजा गोपालसिंह ने दोनों कुमार किशोरी कामिनी सर्यू तारा मायारानी और माधवी इत्यादि का खुलासा किस्सा जो कि हम ऊपर के बयानों में लिख आये हैं और जो राजा बीरेन्द्रसिंह को अभी मालूम नहीं हुआ था तथा अपने यहां का भी कुछ हाल लिख भेजा था और साथ ही यह भी लिखा कि 'आप लोग उसी खंडहर वाली नई इमारत में रह कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के मिलने का इन्तजार करें" इत्यादि।

राजा सुरेन्द्रसिंह को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हम और राजा गोपालसिंह असल में एक ही खानदान की यादगार हैं और इन्द्रजीतसिंह तथा आनन्दसिंह से भी अब बहुत जल्द मुलाकात हुआ चाहती है, अस्तु यह बात तै पाई कि सब कोई उसी तिलिस्मी खन्डहर वाली नई इमारत में चल कर रहें और उसी जगह भूतनाथ का हाल चाल मालूम करें। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात राजा सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह महारानी चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा वगैरह सभों की सवारी वहां आ पहुंची और मायारानी दारोगा तथा और कैदियों को भी उसी जगह लाकर रखने का इन्तजाम किया गया।

हम बयान कर चुके हैं कि इस तिलिस्मी खंडहर के चारो तरफ अब बहुत बड़ी इमारत बन कर तैयार हो गई है जिसके बनवाने में जीतसिंह ने अपनी बुद्धिमानी का नमूना बड़ी खूबी के साथ दिखाया है—इत्यादि। अस्तु इस समय उन लोगों को यहां ठहरने में तकलीफ किसी तरह की नहीं हो सकती थी बल्कि हर तरह का आराम था।

पश्चिम तरफ वाली इमारत के ऊपर वाले खंडों में कोठरियां और बाला-

खानों के अतिरिक्त बड़े बड़े कमरे थे जिनमें से चार कमरे इस समय बहुत अच्छी तरह सजाए गये थे और उनमें महाराज सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह का डेरा था। यहां भूतनाथ के डेरे वाला बारह नम्बर का कमरा ठीक सामने पड़ता था और वह तिलिस्मी चबूतरा भी यहां से उतना ही साफ दिखाई देता था जितना भूतनाथ के डेरे से।

इन कमरों के पिछले हिस्से में बाकी लोगों का डेरा था और बचे हुए ऐयारों को इमारत के बाहरी हिस्से में स्थान मिला था और उस तरफ थोड़े फौजी सिपाहियों और शागिर्द पेशे वालों को भी जगह दी गई थी।

इस जगह राजा साहब और जीतसिंह तथा तेजसिंह के भी आ जाने से भूतनाथ तरद्दुद में पड़ गया और सोचने लगा कि 'उस तिलिस्मी चबूतरे के अन्दर से निकल कर मुझसे मुलाकात करने वाले या बलभद्रसिंह को ले जाने वाले आदमी का हाल कहीं राजा साहब या उनके ऐयारों को मालूम न हो जाय और मैं किसी नई आफत में न फंस जाऊं क्योंकि उनका पुनः उस चबूतरे के नीचे से निकल कर मुझसे मिलने आना कोई आश्चर्य की बात नहीं है'।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है। राजा बीरेन्द्रसिंह अपने कमरे के बारामदे में फर्श पर बैठे अपने मित्र तेजसिंह से धीरे धीरे कुछ बातें कर रहे हैं। कमरे के अन्दर इस समय एक हलकी रोशनी हो रही है सही, मगर कमरे का दरवाजा घूमा रहने के सबब यह रोशनी बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह तक नहीं पहुंचती थी जिससे ये दोनों एक प्रकार से अंधकार में बैठे हुए थे और दूर से इन दोनों को कोई देख नहीं सकता था। नीचे बाग में लोहे के बड़े बड़े खम्भों पर लालटेनें जल रही थीं फिर भी बाग की घनी सब्जी और लताओं का सहारा उसमें छिप कर घूमने वालों के लिए कम न था। उस दालान में भी कंदील जल रही थी जिसमें तिलिस्मी चबूतरा था और इस समय राजा वीरेन्द्रसिंह की निगाह भी जो तेजसिंह से बात कर रहे थे उसी तिलिस्मी चबूतरे की तरफ ही थी।

यकायक चबूतरे के निचले हिस्से में रोशनी देख कर राजा बीरेन्द्रसिंह को ताज्जुब हुआ और उन्होंने तेजसिंह का ध्यान भी उस तरफ दिलाया। उस रोशनी के सबब से साफ मालूम होता था कि चबूतरे का अगला हिस्सा (जो बीरेन्द्रसिंह की तरफ पड़ता था) किवाड़ के पल्ले की तरह खुल कर जमीन के साथ लग गया है और दो आदमी एक गठरी लटकाये हुए चबूतरे से बाहर की तरफ ला रहे हैं। उन दोनों के बाहर आने के साथ ही चबूतरे के अन्दर वाली रोशनी बन्द हो

और उन दोनों में से एक ने दूसरे के कंधे पर चढ़ कर वह कंदील भी बुझा दी जो उस दालान में जल रही थी।

कंदील बुझ जाने से वहां अंधकार हो गया और इसके बाद मालूम न हुआ कि वहां क्या हुआ या क्या हो रहा है। तेजसिंह और वीरेन्द्रसिंह उसी समय उठ खड़े हुए और हाथ में नंगी तलवार लिए हुए तथा एक आदमी को लालटेन लेकर वहां आने की आज्ञा देकर उस दालान की तरफ रवाना हुए जिसमें तिलिस्मी चबूतरा था, मगर वहां जाकर सिवाय एक गठरी के जो उसी चबूतरे के पास पड़ी हुई थी और कुछ नजर न आया। जब आदमी लालटेन लेकर वहां पहुंचा तो तेजसिंह ने अच्छी तरह घूम घूम कर जांच की मगर नतीजा कुछ भी न निकला, न तो यहां कोई आदमी दिखाई दिया और न उस चबूतरे ही में किसी तरह के निशान या दर्वाजे का पता लगा।

तेजसिंह ने जब वह गठरी खोली तो एक आदमी पर निगाह पड़ी। लालटेन की रोशनी में बड़े गौर देखने से पर भी तेजसिंह या वीरेन्द्रसिंह उसे पहिचान न सके अस्तु तेजसिंह ने उसी समय जफील बजाई जिसे सुनते ही कई सिपाही और खिदमतगार वहां इकट्ठे हो गये। इसके बाद वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह उस आदमी को उठवा कर राजा सुरेन्द्रसिंह के पास ले आए जो इस समय का शोरगुल सुन कर जाग चुके थे और जीतसिंह को अपने पास बुलवा कर कुछ बातें कर रहे थे।

उस बेहोश आदमी पर निगाह पड़ते ही जीतसिंह पहिचान गये और बोल उठे—"यह तो बलभद्रसिंह हैं!"

वीरेन्द्र०। (ताज्जुब से) हैं, यही बलभद्रसिंह हैं जो यहां से गायब हो गये थे!

जीत०। हां यही हैं, ताज्जुब नहीं कि जिस अनूठे ढंग से ये यहां पहुंचाए गये हैं उसी ढंग से गायब भी हुए हों।

सुरेन्द्र०। जरूर ऐसा ही हुआ होगा, भूतनाथ पर व्यर्थ का शक किया जाता था। अच्छा अब इन्हें होश में लाने की फिक्र करो और भूतनाथ को बुलाओ।

तेज०। जो आज्ञा।

सहज ही में बलभद्रसिंह चैतन्य हो गये और तब तक भूतनाथ भी वहां आ पहुंचा। राजा सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह और तेजसिंह को सलाम करने बाद भूतनाथ बैठ गया और बलभद्रसिंह से बोला—

भूत०। कहिये कृपानिधान, आप कहां छिप गये थे और कैसे प्रकट हो गये? सभी को मुझ पर सन्देह हो रहा है।

पाठक, इसके जवाब में वलभद्रसिंह ने यह नहीं कहा कि 'तुम्हीं ने तो मुझे वेहोश किया था' जिसके सुनने की शायद आप इस समय आशा करते होंगे, बल्कि वलभद्रसिंह ने यह जवाब दिया कि 'नहीं भूतनाथ, तुम पर कोई क्यों शक करेगा! तुमने ही तो मेरी जान बचाई है और तुम्हीं मेरे साथ दुश्मनी करोगे ऐसा भला कौन कह सकता है' ?

तेज० । खैर यह बताइये कि आपको कौन ले गया था और कैसे ले गया था?

वल० । इसका पता तो मुझे भी अभी तक नहीं लगा कि वे कौन थे जिनके पाले मैं पड़ गया था हां जो कुछ मुझ पर बीती है उसे अर्ज कर सकता हूं मगर इस समय नहीं क्योंकि मेरी तबीयत कुछ खराब हो रही है, आशा है कि अगर दो तीन घंटे सो सकूंगा तो सुबह तक ठीक हो जाऊंगा ।

सुरेन्द्र० । कोई चिन्ता नहीं, आप इस समय जाकर आराम कीजिए ।

जीत० । यदि इच्छा हो तो अपने उसी पुराने डेरे में भूतनाथ के पास रहिए नहीं तो कहिए आपके लिए दूसरे डेरे का इन्तजाम कर दिया जाय ।

वलभद्र० । जी नहीं, मैं अपने मित्र भूतनाथ के साथ ही रहना पसन्द करता हूं।

वलभद्रसिंह को साथ लिए भूतनाथ अपने डेरे की तरफ रवाना हुआ, इधर राजा सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह उस तिलिस्मी चबूतरे तथा वलभद्रसिंह के बारे में बातचीत करने लगे तथा अन्त में यह निश्चय किया कि बल-भद्रसिंह जो कुछ कहेंगे उस पर भरोसा न करके अपनी तरफ से इस बात का पता लगाना चाहिए कि उस तिलिस्मी चबूतरे की राह से आने जाने वाले कौन हैं, उस दालान में ऐयारों का गुप्त पहरा मुकर्रर करना चाहिए ।

छठवां बयान

कुमार की आज्ञानुसार इन्दिरा ने अपना किस्सा यों बयान किया :—

इन्दिरा० । मैं कह चुकी हूं कि ऐयारी का कुछ सामान लेकर जब मैं उस खोह के बाहर निकली और पहाड़ तथा जंगल पार करके मैदान में पहुंची तो यकायक मेरी निगाह एक ऐसी चीज पर पड़ी जिसने मुझे चौंका दिया और मैं घवड़ा कर उस तरफ देखने लगी ।

जिस चीज को देख कर मैं चौंकी वह एक कपड़ा था जो मुझसे थोड़ी ही दूर पर ऊंचे पेड़ की डाल के साथ लटक रहा था और उस पेड़ के नीचे मेरी मां बैठी हुई कुछ सोच रही थी । जब मैं दौड़ती हुई उसके पास पहुंची तो वह ताज्जुब

भरी निगाहों से मेरी तरफ देखने लगी क्योंकि उस समय ऐयारी से मेरी सूरत बदली हुई थी। मैंने बड़ी खुशी के साथ कहा, "मां, तू यहां कैसे आ गई?" जिसे सुनते ही उसने उठ कर मुझे गले से लगा लिया और कहा, "इन्दिरा, यह तेरा क्या हाल है? क्या तूने ऐयारी सीख ली है!" मैंने मुख्तसर में अपना सब हाल बयान किया मगर उसने अपने विषय में केवल इतना ही कहा कि अपना किस्सा मैं आगे चल कर तुझसे बयान करूंगी, इस समय केवल इतना ही कहूंगी कि दारोगा ने मुझे एक पहाड़ी में कैद किया था जहां से एक स्त्री की सहायता पाकर परसों मैं निकल भागी मगर अपने घर का रास्ता न पाने के कारण इधर उधर भटक रही हूं।

अफसोस उस समय मैंने बड़ा ही धोखा खाया और उसके सबब से मैं बड़े संकट में पड़ गई, क्योंकि वह वास्तव में मेरी मां न थी बल्कि मनोरमा थी और यह हाल मुझे कई दिनों के बाद मालूम हुआ। मैं मनोरमा को पहिचानती न थी मगर पीछे मालूम हुआ कि वह मायारानी की सखियों में से थी और गौहर के साथ वह वहां तक गई थी, मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि वह बड़ी शैतान बेदर्द और दुष्टा थी। मेरी किस्मत में दुःख भोगना बदा हुआ था जो मैं उसे मां समझ कर कई दिनों तक उसके साथ रही और उसने भी नहाने धोने के समय अपने को मुझसे बहुत बचाया। प्रायः कई दिनों के बाद वह नहाया करती और कहती कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

साथ ही इसके यह भी शक हो सकता है कि उसने मुझे जान से क्यों नहीं मार डाला? इसके जवाब में मैं कह सकती हूं कि वह मुझे जान से मार डालने के लिए तैयार थी मगर वह भी उसी कम्बख्त दारोगा की तरह मुझसे कुछ लिखवाया चाहती थी। अगर मैं उसकी इच्छानुसार लिख देती तो वह निःसन्देह मुझे मार कर बखेड़ा तै करती, मगर ऐसा न हुआ।

जब इसने मुझसे यह कहा कि 'रास्ते का पता न जानने के कारण से भटकती फिरती हूं' तब मुझे एक तरह का तरद्दुद हुआ, मगर मैंने कुछ जोश के साथ उसी समय जवाब दिया—"कोई चिन्ता नहीं मैं अपने मकान का पता लगा लूंगी।"

मनो०। मगर साथ ही इसके मुझे एक बात और भी कहनी है।

मैं०। वह क्या?

मनो०। मुझे ठीक खबर लगी है कि कम्बख्त दारोगा ने तेरे बाप को गिरफ्तार कर लिया है और इस समय वह काशी में मनोरमा के मकान में कैद है।

मैं०। मनोरमा कौन?

मनो० । राजा गोपालसिंह की स्त्री लक्ष्मीदेवी (जिसे अब लोग मायारानी नाम से पुकारते हैं) की सखी........

मैं०। असली लक्ष्मीदेवीसे तो गोपालसिंह की शादी हुई ही नहीं,वह बेचारी तो

मनो० । (बात काट कर) हां हां, यह हाल मुझे भी मालूम है, मगर इस समय जो राजरानी बनी हुई है लोग तो उसी को न लक्ष्मीदेवी समझे हुए हैं इस से मैंने उसे लक्ष्मीदेवी कहा ।

मैं० । (आंखों में आंसू भर कर) तो क्या मेरा बाप भी कैद हो गया ?

मनो० । बेशक, मैंने उसके छुड़ाने का भी बन्दोबस्त कर लिया है क्योंकि तुझे तो शायद मालूम ही होगा कि तेरे बाप ने मुझे भी थोड़ी बहुत ऐयारी सिखा रक्खी है अस्तु वही ऐयारी इस समय मेरे काम आई और आवेगी ।

मैं० । (ताज्जुब से) मुझे तो नहीं मालूम कि पिताजी ने तुम्हें भी ऐयारी सिखाई है !

मनोरमा० । ठीक है, तू उन दोनों बहुत नादान थी इसलिए आज वे बातें तुझे याद नहीं हैं पर मेरा मतलब यही है कि मैं कुछ ऐयारी जानती हूं और इस समय तेरे बाप को छुड़ा भी सकती हूं ।

मनोरमा की यह बात ऐसी थी कि मुझे उस पर शक हो सकता था मगर उसकी मीठी मीठी बातों ने मुझे धोखे में डाल दिया और सच तो यों है कि किस्मत में दुःख भोगना बदा था, अस्तु मैंने कुछ सोच कर यही जवाब दिया 'अच्छा जो उचित समझो सो करो । ऐयारी तो थोड़ी सी मुझे भी आ गई है इसका हाल भी मैं तुम्हें कह चुकी हूं कि चम्पा ने मुझे अपनी चेली बना लिया।

मनोरमा० । हां ठीक है, तो अब सीधे काशी ही चलना चाहिए और चलने का सबसे ज्यादे सुभीता डोंगी पर है, इसलिए जहां तक जल्द हो सके किनारे चलना चाहिए, वहां कोई न कोई डोंगी मिल ही जायगी ।

मैं० । बहुत अच्छा चलो ।

उसी समय हम लोग गंगा की तरफ रवाना हो गए और उचित समय वहां पहुंच कर अपने योग्य डोंगी किराये पर ली । डोंगी किराए करने में किसी तरह की तकलीफ न हुई क्योंकि वास्तव में डोंगी वाले भी उसी दुष्ट मनोरमा के नौकर थे मगर उस कम्बख्त ने ऐसे ढंग से बातचीत की कि मुझे किसी तरह का शक न हुआ या यों समझिए कि मैं अपनी मां से मिल कर एक तरह पर निश्चिन्त सी ही रही थी । रास्ते ही में मनोरमा ने मल्लाहों से इस किस्म की

भी शुरू कर दीं कि 'काशी पहुंच कर तुम्हीं लोग हमारे लिए एक छोटा सा मकान भी किराए पर तलाश कर देना, इसके वदले में तुम्हें वहुत कुछ इनाम दूंगी'।

मुख्तसर यह कि हम लोग रात के समय काशी पहुंचे। मल्लाहों द्वारा मकान का वन्दोवस्त हो गया और हम लोगों ने उसमें जाकर डेरा भी डाल दिया। एक दिन उसमें रहने वाद मनोरमा ने कहा कि 'वेटी, तू इस मकान के अन्दर दर्वाजा वन्द करके वैठ तो मैं जाकर मनोरमा का हाल दरियाफ्त कर आऊं। अगर मौका मिला तो मैं उसे जान से मार डालूंगी और तव स्वयं मनोरमा वन कर उसके मकान असवाव और नौकरों पर कब्जा करके तुझे लेने के लिए यहां आऊंगी, उस समय तू मुझे मनोरमा की सूरत शक्ल में देख कर ताज्जुव न कीजियो, जव मैं तेरे सामने आकर 'चापगेच' शब्द कहूं तब समझ जाइयो कि यह वास्तव में मेरी मां है मनोरमा नहीं, क्योंकि उस समय कई सिपाही और नौकर मुझे मालिक समझ कर आज्ञानुसार मेरे साथ होंगे। तेरे बारे में मैं उन लोगों में यही मशहूर करूंगी कि यह मेरी रिश्तेदार है, इसे मैंने गोद लिया है और अपनी लड़की वनाया है। तेरी जरूरत की सव चीजें यहां मौजूद हैं तुझे किसी तरह की तकलीफ न होगी'।

इत्यादि वहुत सी बातें समझा बुझा कर मनोरमा मकान के वाहर हो गई और मैंने भीतर से दर्वाजा बन्द कर लिया, मगर जहां तक मेरा ख्याल है वह मुझे अकेला छोड़ कर न गई होगी वल्कि दो चार आदमी उस मकान के दर्वाजे पर या इधर उधर हिफाजत के लिए जरूर लगा गई होगी।

ओफ ओह, उसने अपनी बातों और तर्कीबों का ऐसा मजवूत जाल विछाया कि मैं कुछ कह नहीं सकती। मुझे उस पर रत्ती भर भी किसी तरह का शक न हुआ और मैं पूरा धोखा खा गई। इसके दूसरे ही दिन वह मनोरमा वनी हुई कई नौकरों को साथ लिए मेरे पास पहुंची और 'चापगेच' शब्द कह कर मुझे अपना परिचय दिया। मैं यह समझ कर वहुत प्रसन्न हुई कि मां ने मनोरमा को मार लिया अब मेरे पिता भी कैद से छूट जायेंगे। अस्तु जिस रथ पर सवार होकर मुझे लेने के लिए आई थी उसी पर मुझे अपने साथ बैठा कर वह अपने घर ले गई और उस समय मैं हर तरह से उसके कब्जे में पड़ गई।

मनोरमा के घर पहुंच कर मैं उस सच्ची मुहब्बत को खोजने लगी जो मां को अपने वच्चे के साथ होती है, मगर मनोरमा में वह बात कहां से आती ? फिर भी मुझे इस बात का गुमान न हुआ कि यहां धोखे का जाल बिछा हुआ है जिसमें मैं फंस गई हूं बल्कि मैंने यह समझा कि वह मेरे पिता को छुड़ाने की फिक्र में

लगी हुई है और इसी से मेरी तरफ ध्यान नहीं देती, और वह मुझसे घड़ी यही बात कहा भी करती कि 'बेटी, मैं तेरे बाप को छुड़ाने की फिक्र में हो रही हूं।'

जब तक मैं उसके घर में बेटी कहला कर रही तब तक न तो उसने स्नान और न अपना शरीर ही देखने का कोई ऐसा मौका मुझे दिया जिससे मुझको होता कि यह मेरी मां नहीं बल्कि दूसरी औरत है। और हां मुझे भी वह सूरत में रहने नहीं देती थी, चेहरे में कुछ फर्क डालने के लिए उसने एक बना कर मुझे दे दिया था जिसे दिन में एक या दो दफे मैं नित्य लगा करती थी। इससे केवल मेरे रंग में फर्क पड़ गया था और कुछ नहीं।

उसके यहां रहने वाले सभी मेरी इज्जत करते और जो कुछ मैं कहती तुरत ही मान लेते मगर मैं उस मकान के हाते के वाहर जाने का इरादा नहीं सकती थी। कभी अगर ऐसा करती तो सभी लोग मना करते और रोकने तैयार हो जाते।

इसी तरह वहां रहते मुझे कई दिन वीत गए। एक दिन जब मनोरमा पर सवार होकर कहीं वाहर गई थी, मैं समझती हूं कि मायारानी से मिलने होगी, संध्या के समय जब थोड़ा सा दिन वाकी था, मैं धीरे धीरे बाग में रही थी कि यकायक किसी का फेंका हुआ पत्थर का छोटा सा टुकड़ा मेरे आकर गिरा। जब मैंने ताज्जुब से उसे देखा तो उसमें बंधे कागज के एक पर मेरी निगाह पड़ी। मैंने झट उठा लिया और पुर्जा खोल कर पढ़ा, उसमें लिखा हुआ था :—

"अब मुझे निश्चय हो गया कि तू 'इन्दिरा' है, अस्तु तुझे होशियार देता हूं और कहे देता हूं कि तू वास्तव में मायारानी की सखी मनोरमा के में फंसी हुई है! यह तेरी मां बन कर तुझे फंसा लाई है और राजा गोपाल के दारोगा की इच्छानुसार अपना काम निकालने के बाद तुझे मार डालेगी। जो कुछ कहना था कह दिया, अब जैसा तू उचित समझ कर। तुझे धर्म की है, इस पुर्जे को पढ़ कर तुरन्त फाड़ दे।"

मैंने उस पुर्जे को पढ़ने बाद उसी समय टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिया घबड़ा कर चारो तरफ देखने अर्थात् उस आदमी को ढूंढ़ने लगी जिसने वह का टुकड़ा फेंका था, मगर कुछ पता न लगा और न कोई मुझे दिखाई ही

उस पुर्जे के पढ़ने से जो कुछ मेरी हालत हुई मैं बयान नहीं कर

स समय मैं मनोरमा के विषय में ज्यों ज्यों पिछली बातों पर ध्यान देने लगी त्यों ों मुझे निश्चय होता गया कि यह वास्तव में मनोरमा है मेरी मां नहीं और व अपने किये पर पछताने और अफसोस करने लगी कि क्यों उस खोह के बाहर र रक्खा और आफत में फंसी ?

उसी समय से मेरे रहन सहन का ढंग भी बदल गया और मैं दूसरी ही फिक्र पड़ गई। सब से ज्यादे फिक्र मुझे उसी आदमी के पता लगाने की हुई जिसने पुर्जा मेरी तरफ फेंका था। मैं उसी समय वहां से हट कर मकान में चली गई, खयाल से कि जिस आदमी ने मेरी तरफ वह पुर्जा फेंका था और उसे फाड़ लने के लिए कसम दी थी वह जरूर मनोरमा से डरता होगा और यह जानने लिए कि मैंने पुर्जा फाड़ कर फेंक दिया या नहीं, उस जगह जरूर जायगा जहां ग में) टहलती समय मुझे पुर्जा मिला था।

जब मैं छत पर चढ़ कर और छिप कर उस तरफ देखने लगी जहां मुझे वह र्जा मिला था तो एक आदमी को धीरे धीरे टहल कर उस तरफ जाते देखा। वह उस ठिकाने पर पहुंच गया तब उसने इधर उधर देखा और सन्नाटा पाकर के उन टुकड़ों को चुन लिया जो मैंने फेंके थे और उन्हें कमर में छिपा कर तरह धीरे धीरे टहलता हुआ उस मकान की तरफ चला आया जिसकी छत से मैं यह सब तमाशा देख रही थी। जब वह मकान के पास पहुंचा तब मैंने पहिचान लिया। मनोरमा से बातचीत करती समय मैं कई दफे उसका नाम सुन चुकी थी।

इन्दिरा अपना किस्सा यहां तक बयान कर चुकी थी कि कमलिनी ने चौंक इन्दिरा से पूछा, "क्या नाम लिया, नानू ?"

इन्दिरा०। हां, उसका नाम नानू था।

कमलिनी०। वह तो इस लायक नहीं था कि तेरे साथ ऐसी नेकी करता तुझे आने वाली आफत से होशियार कर देता। वह बड़ा ही शैतान और पाजी मी था, ताज्जुब नहीं कि किसी दूसरे ने तेरे पास वह पुर्जा फेंका और नानू ला लिया हो और उसके साथ दुश्मनी की नीयत से उन टुकड़ों को बटोरा हो।

इन्दिरा०। (बात काट कर) बेशक ऐसा ही है, इस बारे में भी मुझे धोखा हुआ के सबब से मेरी तकलीफ बढ़ गई, जैसा कि मैं आगे चल कर बयान करूंगी।

कमलिनी०। ठीक है, मैं उस कम्बख्त नानू को खूब जानती हूं। जब मैं माया- के यहां रहती थी तब वह मायारानी और मनोरमा की नाक का बाल हो

रहा था और उनकी खैरखाही के पीछे प्राण दिए देता था, मगर अन्त में न
क्या सबब हुआ कि मनोरमा या नागर ही ने उसे फांसी देकर मार डाला।
सबब मुझे आज तक मालूम न हुआ और न मालूम होने की आशा ही है
उन लोगों में से इसका सबब कोई भी न बतावेगा। मैं भी उसके हाथ से
तकलीफ उठा चुकी हूं जिसका बदला तो मैं ले न सकी मगर उसकी लाश पर
का मौका मुझे जरूर मिल गया। (लक्ष्मीदेवी की तरफ देख के) जब मैंने
के कागजात लेने के लिए मनोरमा के मकान पर जाकर नागर को धोखा दि
तब मैंने अपनी कोठड़ी के बगल वाली कोठरी में इसी की लटकती हुई ला
थूका था*। उसी कोठरी में मैंने अफसोस के साथ 'बरदेबू' को भी मुर्दा पा
उसके मरने का सबब भी मुझे न मालूम हुआ और न होगा। वास्तव में
बड़ा ही नेक आदमी था और उसने मेरे साथ बड़ी नेकियां की थीं। मुझे ख
उसी ने दी थी कि 'अब मायारानी तुम्हें मार डालने का बन्दोवस्त कर र
वह उन दिनों खास बाग के मालियों का दारोगा था।

इन्दिरा०। बेशक बरदेबू बड़ा नेक आदमी था, असल में वह पुर्जा
मेरी तरफ फेंका था और कम्बख्त नानू ने देख लिया था, मगर मैं धोखा
मेरी समझ में आया कि वह पुर्जा नानू का फेंका हुआ है और उन टुकड़ों
ख्याल ने उसने चुन लिया है कि कोई देखने न पावे या किसी दुश्मन के
पड़ कर मेरा........

कमलिनी०। अच्छा फिर आगे क्या हुआ सो कहो।

इन्दिरा०। जब मैंने यह समझ लिया कि यह नेकी नानू ने ही मेरे
है और वह टहलता हुआ मकान के पास आ गया तो मैं छत पर से उतर
बाग में आई और टहलती हुई उसके पास पहुंची।

मैं०। (नानू से) आपने मुझ पर बड़ी कृपा की है जो मुझे आने वाले
से होशियार कर दिया। मैं अभी तक मनोरमा को अपनी मां ही समझ
नानू०। ठीक है मगर तुम्हें मुझसे ज्यादा बातचीत न करनी चाहि
ऐसा न हो कि लोगों को मुझ पर शक हो जाय।

मैं०। इस समय यहां कोई भी नहीं है इसलिए मैं यह प्रार्थना कर
कि जिस तरह आपने मुझ पर इतनी कृपा की है उसी तरह मेरे निकल
भी मदद देकर अनन्त पुण्य के भागी हों।

* देखिये सन्तति सातवां भाग, सातवां बयान।

नानू० । अच्छा मैं इस काम में भी तुम्हारी मदद करूंगा मगर तुम भागने में ल्दी न करना नहीं तो सब काम चौपट हो जायगा क्योंकि यहां के सभी आदमी म पर गहरी हिफाजत की निगाह रखते हैं और 'बरदेवू' तो तुम्हारा पूरा दुश्मन , उससे कभी बातचीत न करना, वह बड़ा ही धोखेबाज ऐयार है । बरदेवू को ानती हो न ?

मैं० । हां मैं बरदेवू को जानती हूं ।

नानू० । बस तो तुम यहां से चली जाओ, मैं फिर किसी समय किसी बहाने तुम्हारे पास आऊंगा तब बातें करूंगा ।

मैं खुशी खुशी वहां से हटी और बाग के दूसरे हिस्से में जाकर टहलने लगी हां से पहरे वाले बखबी देख सकते थे ।

जैसे जैसे अंधकार बढ़ता जाता था मुझ पर हिफाजत की निगाह भी बढ़ती ाती थी, यहां तक कि आधी घड़ी रात जाने पर लौंडियों और खिदमतगारों ने मकान के अन्दर जाने पर मजबूर किया और मैं भी लाचार होकर अपने कमरे आ बिस्तर पर लेट गई, सभों ने खाने पीने के लिए कहा मगर इस समय मुझे ना पीना कहां सूझता था, अस्तु बहाना करके टाल दिया और लेटे लेटे सोचने ी कि अब क्या करना चाहिए !

मैं समझे हुई थी कि नानू मेरे पास आकर मुझे यहां से निकल जाने के विषय राय देगा जैसा कि वह वादा कर चुका था, मगर मेरा खयाल गलत था, आधी त तक इन्तजार करने पर भी वह मेरे पास न आया । इसके अतिरिक्त रोज मेरी फाजत के लिये रात को दो लौंडियां मेरे कमरे में रहती थीं मगर आज चार डियों को रोज से ज्यादे मुस्तैदी के साथ पहरा देते देखा । उस समय मुझे खुटका , मैं सोचने लगी कि निःसंदेह इन लोगों को मेरे बारे में कुछ सन्देह हो गया मैं नींद न पड़ने और सिर में दर्द होने से बेचैनी दिखा कर उठी और कमरे में लने लगी यहां तक कि दर्वाजे के बाहर निकल कर सहन में पहुंची और तब ा कि आज तो बाहर भी पहरे का इन्तजाम बहुत सख्त हो रहा है । मैंने प्रकट किसी तरह का आश्चर्य नहीं किया और पुनः अपने बिस्तरे पर आकर लेट रही र तरह तरह की बातें सोचने लगी । उसी समय मुझे निश्चय हो गया कि उस को फेंकने वाला नानू नहीं कोई दूसरा है, अगर नानू होता तो इस बात की र फैल न जाती क्योंकि उन टुकड़ों को तो नानू ने मेरे सामने ही बटोर लिया । अफसोस, मैंने बहुत बुरा किया, अगर वे थोड़े से शब्द मैं न कहती तो नानू

सहज में ही उन टुकड़ों से कोई मतलब नहीं निकाल सकता था, मगर अब तो भेद खुल गया और मेरे पैरों में दोहरी जंजीर पड़ गई, अस्तु अब क्या करना चाहिए

रात भर मुझे नींद न आई और सुबह को जैसे ही मैं बिछावन पर से उठी तो सुना कि मनोरमा आ गई है। मैं कमरे के बाहर निकल कर सहन में आई जहां मनोरमा एक कुर्सी पर बैठी नानू से बात कर रही थी। दो लौंडियां उसके पीछे खड़ी थीं और उसके बगल में दो तीन खाली कुर्सियां भी पड़ी हुई थीं। मनोरमा ने अपने पास एक कुर्सी खैंच कर मुझे बड़े प्यार से उस पर बैठने को कहा और जब मैं बैठ गई तो बातें होने लगीं!

मनोरमा०। (मुझसे) बेटी तू जानती है कि यह (नानू की तरफ बताकर) आदमी हमारा कितना बड़ा खैरखाह है!

मैं०। मां, शायद यह तुम्हारा खैरखाह होगा मगर मेरा तो पूरा दुश्मन है।

मनोरमा०। (चौंक कर) क्यों क्यों, सो क्यों?

मैं०। सैकड़ों मुसीबतें झेल कर तो मैं तुम्हारे पास पहुंची और तुमने मुझे अपनी लड़की बना कर मेरे साथ जो सलूक किया वह प्रायः यहां के रहने वाले सभी कोई जानते होंगे, मगर यह नानू नहीं चाहता कि मैं अब भी किसी तरह सुख की नींद सो सकूं। कल शाम को जब मैं बाग में टहल रही थी तो यह मेरे पास आया और एक पुर्जा मेरे हाथ में देकर बोला कि 'इसे पढ़ और होशियार हो जा मगर खबरदार मेरा नाम न लीजियो'।

नानू०। (मेरी बात काट कर क्रोध से) क्यों मुझ पर तूफान बांध रही है! क्या यह बात मैंने तुमसे कही थी!

मैं०। (रंग बदल कर) बेशक तूने पुर्जा देकर यह बात कही थी और भाग जाने के लिए भी ताकीद की! आंखें क्यों दिखाता है! जो बातें तूने...

मनो०। (बात काट कर) अच्छा अच्छा, तू क्रोध मत कर जो कुछ है मैं समझ लूंगी, तू जो कहती थी उसे पूरा कर। (नानू से) बस चुपचाप बैठा रह, जब यह अपनी बात पूरी कर ले तब जो कुछ कहना हो कहना।

मैं०। मैंने उस पुर्जे को खोल कर पढ़ा तो उसमें यह लिखा हुआ पाया "जिसे तू अपनी मां समझती है वह मनोरमा है, तुझे अपना काम निकालने के लिए यहां ले आई है, काम निकल जाने पर तुझे जान से मार डालेगी, अस्तु जहां तक जल्द हो सके निकल भागने की फिक्र कर'। इत्यादि और भी कई बातें लिखी हुई थीं, जिन्हें पढ़ कर मैं चौंकी और बात बनाने के तौर पर नानू से कहा "आपने बड़ी मेहरबानी की जो मुझे होशियार कर दिया, अब भागने में

मेरी मदद करेंगे तो जान बचेगी।" इसके जवाब में इसने खुश होकर कहा कि हैं मुझसे ज्यादे बातचीत न करनी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि लोगों को मुझ शक हो जाय। मैं भागने में भी तुम्हारी मदद करूंगा मगर इस बात को बहुत पाये रखना क्योंकि यहां बरदेबू नाम का आदमी तुम्हारा दुश्मन है'। इत्यादि—

नानू०। (बात काट कर) हां बेशक यह बात मैंने तुमसे जरूर कही थी कि....

मैं०। धीरे धीरे तुम सभी बात कबूल करोगे, मगर ताज्जुब यह है कि मना ते पर भी तुम टोके बिना नहीं रहते।

मनोरमा०। (क्रोध से) क्या तुम चुप न रहोगे?

इसका जवाब नानू ने कुछ न दिया और चुप हो रहा। इसके बाद मनो- ा की इच्छानुसार मैंने यों कहना शुरू किया :—

मैं०। मैंने इस पुर्जे को पढ़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला और फेंक दिया। इसके नानू भी चला गया और मैं भी यहां आकर छत के ऊपर चढ़ गई और छिप उसी तरफ देखने लगी जहां उस पुर्जे को फाड़ कर फेंक आई थी। थोड़ी देर पुनः इसको (नानू को) उसी जगह पहुंच कर कागज के उन टुकड़ों को चुनते बटोरते देखा। जब यह उन टुकड़ों को बटोर कर कमर में रख चुका और मकान की तरफ आया तो मैं भी तुरत छत पर से उतर कर इसके पास चली और बोली, "कहिए, अब मुझे कब यहां से बाहर कीजिएगा?" इसके जवाब सने कहा कि 'मैं रात को एकान्त में तुम्हारे पास आऊंगा तो बातें करूंगा'। ही कह कर यह चला गया और पुनः मैं बाग में टहलने लगी। जब अन्धकार तो मैं घूमती हुई (हाथ का इशारा करके) उस झाड़ी की तरफ से निकली और किसी के बात की आहट पा पैर दबाती हुई आगे बढ़ी, यहां तक कि थोड़ी र पर दो आदमियों के बात करने की आवाज साफ साफ सुनाई देने लगी। आवाज से नानू को तो पहिचान लिया मगर दूसरे को पहिचान न सकी कि कौन था, हां पीछे मालूम हुआ कि वह बरदेबू था।

मनो०। अच्छा खैर यह बता कि इन दोनों में क्या बातें हो रही थीं।

मैं०। सब बातें तो मैं सुन न सकी, हां जो कुछ सुनने और समझने में आया हती हूं। इस नानू ने दूसरे से कहा कि 'नहीं नहीं अब मैं अपना इरादा कर चुका हूं और उस छोकरी को भी मेरी बातों पर पूरा विश्वास हो चुका सन्देह उसे ले जा कर मैं [illegible] काम में मेरी मदद करोगे तो मैं उसमें से आधी रकम तुम्हें दूंगा'। इसके

जवाब में दूसरे ने कहा कि 'देखो नानू यह काम तुम्हारे योग्य नहीं है, मालिक के साथ दगा करने वाला कभी सुख नहीं भोग सकता, बेहतर है कि तुम मेरी मान जाओ नहीं तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा और मैं तुम्हारा दुश्मन हो जाऊंगा'। यह जवाब सुनते ही नानू क्रोध में आकर उसे बुरा भला कहने और कोसने लगा। उसी समय इसके सम्बोधन करने पर मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम बरदेवू है। खैर, जब मैंने जाना कि अब ये दोनों अलग होते हैं तो चुपके से चल पड़ी और अपने कमरे में लेट रही। थोड़ी ही देर में यह मेरे पास पहुंचा और बोला, "बस अब जल्दी से उठ खड़ी हो और मेरे पीछे चली आ क्योंकि अब वह मौका आ गया कि मैं तुम्हें इस आफत से बचा कर बाहर निकाल दूं।" इसके जवाब में मैंने कहा कि 'बस रहने दीजिए, आप की सब कलई खुल गई, मैं आपकी और बरदेवू की बातें छिप कर सुन चुकी हूं, मां को आने दीजिए तो मैं आपकी खबर लेती हूं'। इतना सुनते ही यह लाल पीला होकर बोला 'खैर देख लेना कि मैं तेरी खबर लेता हूं या तू मेरी खबर लेती है'। बस यह कह के चला गया और थोड़ी देर में मैंने अपने को सख्त पहरे में पाया।

मनो०। ठीक है अब मुझे असल बातों का पता लग गया।

नानू०। (क्रोध के साथ) ऐसी तेज और धूर्त लड़की तो आज तक मैंने देखी ही नहीं! मेरे सामने ही मुझे झूठा और दोषी बना रही है और अपने को और बरदेवू को निर्दोष बनाया चाहती है!

इतना कह कर इन्दिरा कुछ देर के लिए रुक गई और थोड़ा सा जल पीने के बाद बोली—

"जो कुछ मैंने कहा उस पर मनोरमा को विश्वास हो गया।"

इन्द्रजीत०। विश्वास होना ही चाहिए, इसमें कोई शक नहीं कि तूने जो कुछ मनोरमा से कहा उसका एक एक अक्षर चालाकी और होशियारी से भरा हुआ था।

कमला०। निःसन्देह, अच्छा तब क्या हुआ?

इन्दिरा०। नानू ने मुझे झूठा बनाने के लिये बहुत जोर मारा मगर कुछ कर न सका क्योंकि मनोरमा के दिल पर मेरी बातों का पूरा असर पड़ चुका था और उस पुर्जे के टुकड़ों ने उसी को दोषी ठहराया जो उसने बरदेवू को दोषी ठहराने के लिये चुन रक्खे थे, क्योंकि बरदेवू ने यह पुर्जा अक्षर बिगाड़ कर ऐसे ढंग से लिखा था कि उसके कलम का लिखा हुआ कोई कह नहीं सकता था। मनोरमा ने नानू से मुझे हट जाने के लिए कहा और मैं उठ कर कमरे के अन्दर चली गई।

र के बाद जब मैं उसके बुलाने पर पुनः बाहर गई तो वहाँ मनोरमा को अकेले ठे हुए पाया। उसके पास वाली कुर्सी पर बैठ कर मैंने पूछा कि 'माँ, नानू कहाँ या' ? इसके जवाब में मनोरमा ने कहा कि 'बेटी, नानू को मैंने कैदखाने में भेज दिया। ये लोग उस कम्बख्त दारोगा के साथी और बड़े ही शैतान हैं इसलिए किसी न किसी तरह इन लोगों को दोषी ठहरा कर जहन्नुम में मिला देना ही चित है। अब मैं उस दारोगा से बदला लेने की धुन में लगी हुई हूँ, इसी काम के लिए मैं बाहर गयी थी और इस समय पुनः जाने के लिए तैयार हूँ केवल तुझे खने के लिए चली आयी थी, तू बेफिक्री के साथ यहाँ रह, आशा है कि कल ाम तक मैं अवश्य लौट आऊँगी। जब तक मैं उस कम्बख्त से बदला न ले लूँ और रे बाप को कैद से छुड़ा न लूँ तब तक एक घड़ी के लिए भी अपना समय नष्ट रना नहीं चाहती। बरदेवू को अच्छी तरह समझा जाऊँगी, वह तुझे किसी तरह ी तकलीफ न होने देगा'।

इन बातों को सुन कर मैं बहुत खुश हुई और सोचने लगी कि यह कम्बख्त हाँ तक शीघ्र चली जाय उत्तम है क्योंकि मुझे हर तरह से निश्चय हो चुका कि यह मेरी माँ नहीं है और यहाँ से यकायक निकल जाना भी कठिन है। य ही इसके मेरा दिल कह रहा था कि मेरा बाप कैद नहीं हुआ, यह सब ोरमा की बनावट है जो मेरे बाप का कैद होना बता रही है।

मनोरमा चली गई मगर उसने शायद ठीक मुझको यह न बताया कि नानू साथ क्या सलूक किया या अब वह कहाँ है, फिर भी मनोरमा के चले जाने के द मैंने नानू को न देखा और न किसी लौंडी या नौकर ही ने उसके बारे में ा मुझसे कुछ कहा।

अबकी दफे मनोरमा के चले जाने के बाद मुझ पर उतना सख्त पहरा नहीं जितना नानू ने बढ़ा दिया था मगर वहाँ का कोई आदमी मेरी तरफ से ाफिल भी न था।

उसी दिन आधी रात के समय जब मैं कमरे में चारपाई पर पड़ी हुई नींद ाने के कारण तरह तरह के मनसूबे बाँध रही थी, यकायक बरदेवू मेरे सामने कर खड़ा हो गया और बोला, "शाबाश, तूने बड़ी चालाकी से मुझे बचा ा और ऐसी बात गढ़ी कि मनोरमा को नानू ही पर पूरा शक हो गया और स आफत से बच गया नहीं तो नानू ने मुझे पूरी तरह फाँस लियो था, क्यों वह पुर्जा वास्तव में मेरा ही लिखा हुआ था। मैं तुझसे बहुत खुश हूँ और

तुझे इस योग्य समझता हूँ कि तेरी सहायता करूँ।

मैं०। आपको मेरी बातों का हाल क्योंकर मालूम हुआ ?

बरदेवू०। एक लौंडी की जुबानी मालूम हुआ जो उस समय मनो॰ पास खड़ी थी।

मैं०। ठीक है, मुझे विश्वास होता है कि आप मेरी सहायता करें॰ किसी तरह इस आफत से बाहर कर देंगे क्योंकि मनोरमा के न रहने॰ मौका भी बहुत अच्छा है।

बरदेवू०। बेशक मैं तुझे आफत से छुड़ाऊँगा मगर आज ऐसा॰ मौका नहीं है, मनोरमा की मौजूदगी में यह काम अच्छी तरह हो जावे॰ मुझ पर किसी तरह का शक भी न होगा क्योंकि जाते समय मनोरमा॰ हिफाजत में छोड़ गई है। इस समय मैं केवल इसलिए आया हूँ कि तुझे॰ की बातें समझा बुझा कर यहाँ से निकल भागने की तर्कीब बता दूँ और॰ इसके यह भी कह दूँ कि तेरी माँ दारोगा की बदौलत जमानिया में ति॰ अन्दर कैद है और इस बात की खबर गोपालसिंह को नहीं है। मगर॰ मिलने की तर्कीब तुझे अच्छी तरह बता दूँगा।

बरदेवू घंटे भर तक मेरे पास बैठा रहा और उसने वहाँ की बहुत॰ मुझे समझाई और निकल भागने के लिए जो कुछ तर्कीब सोची थी वह॰ जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा—साथ ही इसके बरदेवू ने मुझे॰ समझा दिया कि मनोरमा की उंगली में एक अंगूठी रहती है जिसका॰ नगीना बहुत ही जहरीला है, किसी के बदन में कहीं भी रगड़ देने से॰ बात में उसका तेज जहर तमाम बदन में फैल जाता है और तब सिवाय॰ की मदद के वह किसी तरह नहीं बच सकता। वह जहर की दवाइयों॰ मनोरमा ही जानती है) घोड़े का पेट चीर कर और उसकी ताजी आँतों॰ रख कर तैयार करती है......

इतना सुनते ही कमलिनी ने रोक कर कहा, "हाँ हाँ, यह बात॰ मालूम है। जब मैं भूतनाथ के कागजात लेने वहाँ गई थी तो उसी कोठ॰ घोड़े की दुर्दशा भी देखी थी जिसमें नानू और बरदेवू की लाश देखी, ॰ क्या हुआ ?" इसके जवाब में इन्दिरा ने फिर कहना शुरू किया—

बरदेवू मुझे समझा बुझा कर और बेहोशी की दवा की दो पुड़ि॰ चला गया और उसी समय से मैं भी मनोरमा के आने का इन्तजार॰

दिन तक वह न आई और इस बीच में पुनः दो दफे बरदेबू से बातचीत करने का मौका मिला। और सब बातें तो नहीं मगर यह मैं इसी जगह कह देना उचित समझती हूँ कि बरदेबू ने वह दवा की पुड़ियाएं मुझे क्यों दी थीं। उनमें एक तो बेहोशी की दवा थी और दूसरी होश में लाने की। मनोरमा के यहाँ एक ब्राह्मणी थी जो उसकी रसोई बनाती थी और उस मकान में रहने तथा पहरा देने वाली ग्यारह लौंडियों को भी उसी रसोई में से खाना मिलता था। इसके अतिरिक्त एक ठकुरानी और थी जो मांस बनाया करती थी। मनोरमा को मांस खाने का शौक था और प्रायः नित्य खाया करती थी। मांस ज्यादे बना करता और जो बच जाता वह सब लौंडियों नौकरों और मालियों को बाँट दिया जाता था। कभी कभी मैं भी रसोई बनाने वाली मिसरानी या ठकुरानी के पास जाकर उसके काम में सहायता कर दिया करती थी और वह बेहोशी की दवा बरदेबू ने इसीलिए दी थी कि समय आने पर खाने की चीजों तथा मांस इत्यादि में जहाँ तक हो सके मिला दी जाय।

आखिर मुझे अपने काम में सफलता प्राप्त हुई, अर्थात् चौथे या पाँचवें दिन संध्या के समय मनोरमा आ पहुँची और मांस के बटुए में बेहोशी की दवा मिला देने का भी मौका मिल गया।

रात के समय जब भोजन इत्यादि से छुट्टी पाकर मनोरमा अपने कमरे में गई तो उसने मुझे भी अपने पास बुला कर बैठा लिया और बातें करने लगी। उस समय सिवाय हम दोनों के वहाँ और कोई भी न था।

मनोरमा०। अबकी का सफर मेरा बहुत अच्छा हुआ और मुझे बहुत सी बातें नई मालूम हो गईं जिससे तेरे बाप के छुड़ाने में अब किसी तरह की कठिनाई नहीं रही। आशा है कि दो ही तीन दिन में वह कैद से छूट जायंगे और हम लोग भी इस अनूठे भेष को छोड़ कर अपने घर जा पहुँचेंगे।

मैं०। तुम कहाँ गई थीं और क्या करके आईं?

मनो०। मैं जमानिया गई थी। वहाँ के राजा गोपालसिंह की मायारानी और दारोगा से भी मुलाकात की। मायारानी ने वहाँ अपना पूरा दखल जमा लिया है और वहाँ की तथा तिलिस्म की बहुत सी बातें उसे मालूम हो गई हैं। इसलिए अब वह राजा गोपालसिंह को भी मार डालने का बंदोबस्त कर रही है।

मैं०। तिलिस्म कैसा?

मनोरमा०। (ताज्जुब के साथ) क्या तू नहीं जानती कि जमानिया का खास

बाग एक बड़ा भारी तिलिस्म है ?

मैं०। नहीं मुझे तो यह बात नहीं मालूम और तुमने भी कभी मुझे नहीं बताया।

यद्यपि मुझे जमानिया के तिलिस्म का हाल मालूम था और इस विषय की बहुत सी बातें अपनी माँ से सुन चुकी थी मगर इस समय मनोरमा से कह दिया कि 'नहीं यह बात भी मालूम नहीं है और तुमने भी इस विषय में कुछ नहीं कहा'। इसके जवाब में मनोरमा ने कहा, "हाँ ठीक है, मैंने समझ कर तुझे वे बातें नहीं कही थीं।"

मैं०। अच्छा यह तो बताओ कि मायारानी को थोड़े ही दिनों में सब हाल कैसे मालूम हो गया ?

मनोरमा०। ये सब बातें मुझे मालूम न थीं मगर दारोगा ने मुझको मनोरमा समझ कर बता दिया अस्तु जो कुछ उसकी जुबानी सुनने में आया तुझे कहती हूँ। मायारानी को वहाँ का हाल यकायक थोड़े ही दिनों में मालूम हो जाता और दारोगा भी इतनी जल्दी उसे होशियार न कर देता मगर (मायारानी के) बाप ने उसे हर तरह से होशियार कर दिया है क्योंकि लोग दीवान के तौर पर वहीं की हुकूमत कर चुके हैं और इसीलिए उसको भी न मालूम किस तरह पर वहाँ की बहुत सी बातें मालूम हैं।

मैं०। खैर, इन सब बातों से मुझे कोई मतलब नहीं, यह बताओ पिता कहां हैं और उन्हें छुड़ाने के लिए तुमने क्या बन्दोबस्त किया ? जाँय तो राजा गोपालसिंह को मायारानी के फन्दे से बचा लें। हम किये इस बारे में कुछ न हो सकेगा।

मनोरमा०। उन्हें छुड़ाने के लिए भी मैं सब बन्दोबस्त कर चुकी बस इतनी ही है कि तू एक चीठी गोपालसिंह के नाम की उसी मजमून दे जिस मजमून की लिखने के लिए दारोगा तुझे कहता था। अफसोस का है कि दारोगा को तेरा हाल मालूम हो गया है। वह तो मुझे नहीं सका मगर इतना कहता था कि 'इन्दिरा को तूने अपनी लड़की बना रख लिया है, सो खैर तेरे मुलाहिजे से मैं उसे छोड़ देता हूँ मगर उससे इस मजमून की चीठी लिखा कर जरूर भेजना होगा'। (कुछ रुक कर) क्यों मेरा सिर घूमता है।

मैं०। खाने को ज्यादा खा गई होगी।

मनोरमा० । नहीं मगर......

इतना कहते कहते मनोरमा ने गौर की निगाह से मुझे देखा और मैं अपने को बचाने की नीयत से उठ खड़ी हुई । उसने यह देख मुझे पकड़ने की नीयत से उठना चाहा मगर उठ न सकी और उस बेहोशी की दवा का पूरा पूरा असर उस पर हो गया अर्थात् वह बेहोश होकर गिर पड़ी । उस समय मैं उसके पास से चली आई और कमरे के बाहर निकली । चारो तरफ देखने से मालूम हुआ कि सब लौंडी नौकर मिसरानी और माली वगैरह जहाँ तहाँ बेहोश पड़े हैं, किसी को तनोवदन की सुध नहीं है । मैं एक जानी हुई जगह से मजबूत रस्सी लेकर पुनः मनोरमा के पास पहुँची और उसी से खूब जकड़ कर दूसरी पुड़िया सुंघा उसे होश में लाई । चैतन्य होने पर उसने हाथ में खंजर लिए मुझे अपने सामने खड़े पाया । वह उसी का खंजर था जो मैंने ले लिया था ।

मनोरमा० । हैं यह क्या ? तूने मेरी ऐसी दुर्दशा क्यों कर रक्खी है ?

मैं० । इसलिए कि तू वास्तव में मेरी माँ नहीं है और मुझे धोखा देकर यहां ले आई है ।

मनोरमा० । यह तूझे किसने कहा ?

मैं० । तेरी बातों और करतूतों ने ।

मनोरमा० । नहीं नहीं, यह सब तेरा भ्रम है ।

मैं० । अगर यह सब मेरा भ्रम है और तू वास्तव में मेरी माँ है तो बता मेरे नाना ने अपने अन्तिम समय में क्या कहा था ?

मनोरमा० । (कुछ सोच कर) मेरे पास आ तो बताऊँ ।

मैं० । मैं तेरे पास आ सकती हूँ मगर इतना समझ ले कि अब वह जहरीली अंगूठी तेरी उँगली में नहीं है ।

इतना सुनते ही वह चौंक पड़ी । इसके बाद और भी खूब खूब बातें उससे हुईं जिससे निश्चय हो गया कि मेरी ही करनी से वह बेहोश हुई थी और अब मैं उसके फेर में नहीं पड़ सकती । मैं उसे निःसन्देह जान से मार डालती मगर शेरदेवू ने ऐसा करने से मुझे मना कर दिया था । वह कह चुका था कि मैं तुझे इस कैद से छुड़ा तो देता हूँ मगर मनोरमा की जान पर किसी तरह की आफत नहीं ला सकता क्योंकि उसका नमक खा चुका हूँ ।"

यही सबब था कि उस समय मैंने उसे केवल बातों की ही धमकी देकर छोड़ दिया । बची हुई बेहोशी की दवा जबर्दस्ती उसे सुंघा कर बेहोश करने बाद मैं

कमरें के बाहर निकली और बाग में चली आई जहाँ प्रतिज्ञानुसार वरदेवू
मेरी राह देख रहा था। उसने मेरे लिए एक खंजर और ऐयारी का बटुआ
तैयार कर रक्खा था जो मुझे देकर उसके अन्दर की सब चीजों के बारे में
तरह समझा दिया और इसके बाद जिधर मालियों के रहने का मकान था
ले गया। माली सब तो बेहोश थे ही अस्तु कमन्द के सहारे मुझे बाग की
के बाहर कर दिया और फिर मुझे मालूम न हुआ कि वरदेवू ने क्या कार
कीं और उस पर तथा मनोरमा इत्यादि पर क्या बीती।

मनोरमा के घर से बाहर निकलते ही मैं सीधे जमानिया की तरफ
क्योंकि एक तो अपनी माँ को छुड़ाने की फिक्र लगी हुई थी जिसके लिए
ने कुछ रास्ता भी बता दिया था, मगर इसके इलावे मेरी किस्मत में
लिखा था कि बनिवस्त घर जाने के जमानिया को जाना पसन्द करूँ और
अपनी माँ की तरह खुद भी फँस जाऊं। अगर मैं घर जाकर अपने पि
मिलती और यह सब हाल कहती तो दुश्मनों का सत्यानाश भी होता और
माँ भी छूट जाती मगर सो न तो मुझको सूझा और न हुआ। इस सम
उस समय मुझको घड़ी घड़ी इस बात का भी खयाल होता था मनोरमा
पीछा जरूर करेगी, अगर मैं घर की तरफ जाऊँगी तो निःसन्देह गिरफ्ता
जाऊँगी।

खैर, मुख्तसर यह है कि वरदेवू के बताए हुए रास्ते से मैं इस तिलि
अन्दर आ पहुँची। आप तो यहाँ की सब बात का भेद जान ही गए होंगे इ
विस्तार के साथ कहने की कोई जरूरत नहीं, केवल इतना ही कहना काफी
कि गंगा किनारे एक स्मशान पर जो महादेव का लिंग एक चबूतरे से
वही रास्ता आने के लिए वरदेवू ने मुझे बताया था।

इन्दिरा ने अपना हाल यहाँ तक बयान किया था कि कमलिनी ने रोक
कहा, "हाँ हाँ, उस रास्ते का हाल मुझे मालूम है, (कुमार से) जिस र
मैं आप लोगों को निकाल कर तिलिस्म के बाहर ले गई थी*!"

इन्द्रजीत०। ठीक है, (इन्दिरा से) अच्छा तब क्या हुआ?

इन्दिरा०। मैं इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुँची और घूमती फिरती
कमरे में पहुँच गई जिसमें आपने उस दिन मुझे मेरे पिता और राजा गोपा
को देखा था, जिस दिन आप उस बाग में पहुँचे थे जिसमें मेरी माँ कैद

* देखिए आठवाँ भाग, दूसरे बयान का अन्त।

इन्द्रजीत० । अच्छा ठीक है, तो उसी खिड़की में से तूने भी अपनी माँ को देखा होगा ?

इन्दिरा० । जी हाँ, दूर ही से उसने मुझे देखा और मैंने उसे देखा मगर उसके पास न पहुँच सकी । उस समय हम दोनों की क्या अवस्था होगी इसे आप स्वयं समझ सकते हैं, मुझमें कहने की सामर्थ्य नहीं है । (एक लम्बी सांस लेकर) कई दिनों तक व्यर्थ उद्योग करने पर भी जब मुझे निश्चय हो गया कि मैं किसी तरह उसके पास नहीं पहुँच सकती और न उसके छुड़ाने का कुछ बन्दोबस्त ही कर सकती हूँ तब मैंने चाहा कि अपने पिता को इन सब बातों की इत्तिला दूँ। मगर अफसोस, यह काम भी मेरे किए न हो सका। मैं किसी तरह इस तिलिस्म के बाहर न जा सकी और मुद्दत्त तक यहाँ रह कर ग्रहदशा के दिन काटती रहा।

इन्द्रजीत० । अच्छा यह बता कि राजा गोपालसिंह वाली तिलिस्मी किताब तुझे क्योंकर मिली ?

इन्दिरा० । यह हाल भी मैं आपसे कहती हूँ ।

इतना कह कर इन्दिरा थोड़ी देर के लिए चुप हो गयी और उसके बाद फिर अपना किस्सा शुरू किया ही चाहती थी कि कमरे का दर्वाजा जो कुछ खुला हुआ था यकायक जोर से खुला और राजा गोपालसिंह आते हुए दिखाई पड़े ।

सातवां बयान

राजा गोपालसिंह को देखते ही सब कोई उठ खड़े हुए और बारी बारी से सलाम की रस्म अदा की। इस समय भैरोंसिंह ने लक्ष्मीदेवी की आँखों से निकलती हुई राजा गोपालसिंह की उस मुहब्बत मेहरबानी और हमदर्दी की निगाह पर गौर किया जिसे आज के थोड़े दिन पहले लक्ष्मीदेवी बेताबी के साथ ढूंढ़ती थी या जिसके न पाने से वह तथा उसकी बहिनें तरह तरह का इलजाम गोपालसिंह पर लगाने का ख्याल कर रही थीं ।

सभों की इच्छानुसार राजा गोपालसिंह भी दोनों कुमारों के पास ही बैठ गए और सभों के कुशल मंगल पूछने के बाद कुमार से बोले, "क्या आपको उस बड़े जलास की फिक्र नहीं है जो चुनार में होने वाला है, जिसमें भूतनाथ का दिलचस्प मुकद्दमा फैसल किया जायेगा और जिसमें उसके तथा और भी कई कैदियों के सम्बन्ध में एक से एक बढ़ कर अनूठा हाल खुलेगा ? साथ ही इसके मुझे

यह भी सन्देह होता है कि आप उनकी तरफ से भी कुछ बेफिक्र हो रहे हैं
लिए......

इन्द्र० । नहीं नहीं, मैं न तो बेफिक्र हूँ और न अपने काम में सुस्ती
किया चाहता हूँ !

गोपाल० । क्या हम लोग नहीं जानते कि इधर के कई दिन आपने
तरह व्यर्थ नष्ट किए हैं और इस समय भी किस बेफिक्री के साथ बैठे गप्पें
रहे हैं ?

इन्द्र० । (कुछ कहते कहते रुक कर) जी नहीं इस समय तो हम लोग इ
का किस्सा सुन रहे थे ।

गोपाल० । इन्दिरा कहीं भागी नहीं जाती थी, यहाँ नहीं तो चुना
हर तरह से बेफिक्र होकर आप इसका किस्सा सुन सकते थे जहाँ और
कई अनूठे किस्से आप सुनेंगे । खैर बताइए कि आप इन्दिरा का किस्सा
चुके या नहीं ?

इन्द्र० । हाँ और सब किस्सा तो सुन चुका केवल इतना सुनना बाकी
आपकी वह तिलिस्मी किताब क्योंकर इसके हाथ लगी और यह उस पुतली
सूरत में क्यों वहाँ रहा करती थी ।

गोपाल० । इतना किस्सा आप तिलिस्मी कार्रवाई से छुट्टी पाकर सुन
एगा और खैर अगर इस पर ऐसा ही जी लगा हुआ है तो मैं मुख्तसर में
समझाये देता हूँ क्यों कि मैं यह सब हाल इन्दिरा से सुन चुका हूँ । असल
कि मेरे यहाँ दो ऐयार हरनामसिंह और बिहारीसिंह रहते थे । वे रुपये के
में पड़ कर कम्बख्त मायारानी से मिल गए थे और मुझे कैदखाने में पहुँ
बाद वे लोग उसी की इच्छानुसार काम करते थे, मगर बुरी राह चलने
को या बुरों का संग करने वालों को जो कुछ फल मिलता है वही उन्हें मि
अर्थात् एक दिन मायारानी ने धोखा देकर उन्हें खास बाग के एक गुप्त
ढकेल दिया* जिसके बारे में वह केवल इतना ही जानती थी कि वह
ढंग का कूआँ लोगों को मार डालने के लिए बना हुआ है, मगर वास्तव
नहीं है । वह कूआँ उन लोगों के लिए बना है जिन्हें तिलिस्म में कैद करना
होता है । मायारानी को चाहे यह निश्चय हो गया कि दोनों ऐयार
लेकिन वास्तव में वे मरे नहीं बल्कि तिलिस्म में कैद हो गये थे । इस

---

* देखिए सन्तति आठवां भाग, पांचवां बयान ।

मायारानी बहुत दिनों तक छिपाये रही लेकिन आखिर एक दिन उसने अपनी लौंडी लीला से कह दिया और लीला से यह बात हरनामसिंह की लड़की ने सुन ली।

जब आपने मुझे कैद से छुड़ाया और मैं खुल्लमखुल्ला पुनः जमानिया का राजा बना तब हरनामसिंह की लड़की फरियाद करने के लिए मेरे पास पहुँची और मुझसे वह हाल कहा। मैंने जवाब में कहा कि 'वे दोनों ऐयार उस कूएँ में ढकेल देने से मरे नहीं बल्कि तिलिस्म में कैद हो गए हैं जिन्हें मैं छुड़ा तो सकता हूँ मगर उन दोनों ने मेरे साथ की दगा है इसलिए छुड़ाने योग्य नहीं है और न मैं उन्हें छुड़ाऊंगा ही। इतना सुन वह चली गई मगर छिपे छिपे उसने ऐसा भेद लगाया और चालाकी की जिसे सुनेंगे तो दंग हो जायेंगे। मुख्तसर यह कि अपने बाप को छुड़ाने की नीयत से उसी लड़की ने मेरी तिलिस्मी किताब चुराई और उसकी मदद से तिलिस्म के अन्दर पहुँची, मगर उस किताब का मतलब ठीक ठीक न समझने के सबब वह न तो अपने बाप को छुड़ा सकी और न खुद ही तिलिस्म के बाहर निकल सकी, हाँ उसी जगह अकस्मात् इन्दिरा से उसकी मुलाकात हो गई। इन्दिरा को भी अपनी तरह दुःखी जान कर उसने सब हाल इससे कहा और इन्दिरा ने चालाकी से वह किताब अपने कब्जे में कर ली तथा उससे बहुत कुछ फायदा भी उठाया। तिलिस्म में आने जाने वालों से अपने को बचाने के लिए इन्दिरा उस पुतली की सूरत बन कर रहने लगी, क्योंकि उसी ढंग के कपड़े इन्दिरा को उस पुतली वाले घर से मिल गए थे। जब मैंने इन्दिरा से यह हाल सुना तो बिहारीसिंह और हरनामसिंह तथा उसकी लड़की को बाहर निकाला। वे सब भी चुनारगढ़ पहुँचाए जा चुके हैं। जब आप चुनारगढ़ पहुँचेंगे तो औरों के साथ साथ उन लोगों का भी तमाशा देखेंगे, तथा...

लक्ष्मीदेवी०। (गोपालसिंह से) मगर आप इन बातों को इतनी जल्दी जल्दी और संक्षेप में कह कर कुमारों को भगाना क्यों चाहते हैं? इन्हें यहाँ अगर एक दिन की देर ही हो जायगी तो क्या हर्ज है?

कमलिनी०। मेहमानदारी के ख्याल से जल्द छूटना चाहते हैं!

गोपाल०। औरतों का काम तो आवाज कसने का हुई है मगर मैं किसी और ही सबब से जल्दी मचा रहा हूँ। महाराज (बीरेन्द्रसिंह) के पत्र बराबर आ रहे हैं कि दोनों कुमारों को शीघ्र भेज दो, इसके अतिरिक्त वहाँ कैदियों का जमाव हो रहा है और नित्य एक नया रंग खिलता है। वहाँ जितनी आफतें थीं वह

सब जाती रहीं...... ,

लक्ष्मी० । (बात काट कर) तो कुमार को और हम लोगों को आप तिलि[illegible] के बाहर क्यों नहीं ले चलते? वहाँ से कुमार बहुत जल्दी चुनार पहुँच सकते [illegible]

गोपाल० । (कुमार से) आप इस समय मेरे साथ तिलिस्म के बाहर [illegible] सकते हैं मगर ऐसा होना न चाहिए। आप लोगों के हाथ से जो कुछ तिलि[illegible] टूटने वाला है उसे तोड़ कर ही आपका इस तिलिस्म के अन्दर ही अन्दर [illegible] पहुँचना उचित होगा। जब आपकी शादी हो जायगी तब मैं आपको यहाँ [illegible] अच्छी तरह इस तिलिस्म की सैर कराऊँगा। इस समय मैं (किशोरी [illegible] इन्दिरा वगैरह की तरफ बता कर) इन सभों को लेकर खास बाग में जा[illegible] क्योंकि अब वहाँ सब तरह से शान्ति हो चुकी है और किसी तरह का [illegible] नहीं। वहाँ आठ दस दिन रह कर सभों को लिए हुए मैं चुनार चला जा[illegible] और तब उसी जगह आपसे हमलोगों की मुलाकात होगी।

इन्द्रजीत० । जो कुछ आप कहते हैं वही होगा मगर यहाँ की अद्‌भुत [illegible] देख कर मेरे दिल में कई तरह का खुटका बना हुआ है........

गोपाल० । वह सब चुनार में निकल जायगा, यहाँ मैं आपको कुछ न [illegible] ऊँगा। देखिए अब रात बीता चाहती है, सवेरा होने के पहिले ही आपको [illegible] काम में हाथ लगा देना चाहिए।

लक्ष्मी० । (हंस कर) आप क्या आये मानों भूचाल आ गया! अच्छी [illegible] मचाई, बात तक नहीं करने देते! (कुमार से) जरा इन्हें अच्छी तरह जाँच [illegible] लीजिए, कहीं कोई ऐयार रूप बदल कर न आया हो।

गोपाल० । (इन्द्रजीतसिंह के कान में कुछ कह कर) बस अब आप बिल[illegible] न कीजिए।

इन्द्रजीत० । (उठ कर) अच्छा तो फिर मैं प्रणाम करता हूँ और भैरो[illegible] को भी आपके ही सुपुर्द किये जाता हूँ। (लक्ष्मीदेवी से) आप किसी तरह [illegible] चिन्ता न करें, ये (गोपालसिंह) वास्तव में हमारे भाई साहब ही हैं, अस्तु [illegible] चुनार में पुनः मुलाकात की उम्मीद करता हुआ मैं आप लोगों से विदा होता [illegible]

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह ने मुस्कुराते हुए सभों की तरफ देखा [illegible] आनन्दसिंह ने भी बड़े भाई का अनुसरण किया। राजा गोपालसिंह दोनों कुम[illegible] को लिए कमरे के बाहर चले गये और कुछ देर तक बातचीत करने तथा सम[illegible] कर विदा करने के बाद पुनः कमरे में चले आये।

आठवाँ बयान

यद्यपि चुनारगढ़ वाले तिलिस्मी खंडहर की अवस्था ही जीतसिंह ने बदल दी और अब वह आला दर्जे की इमारत बन गई है मगर उसके चारों तरफ दूर दूर तक जो जंगलों की शोभा थी उसमें किसी तरह की कमी उन्होंने होने न दी।

सुबह का सोहावना समय है और राजा सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह जीतसिंह तथा तेजसिंह वगैरह धूर ऊपर वाले कमरे में बैठे जंगल की शोभा देखने के साथ ही साथ आपुस में धीरे धीरे बात भी करते जाते हैं। जंगली पेड़ों के पत्तों से छनी और फूलों की महक से सोंधी हुई भई दक्षिणी हवा के झपेटे आ रहे हैं और रात भर की चुप बैठी हुई तरह तरह की चिड़ियाएँ सवेरा होने की खुशी में अपनी सुरीली आवाजों से लोगों का जी लुभा रही हैं। स्याह तीतर अपनी मस्त और बँधी हुई आवाज से हिन्दू मुसलमान कुँजड़े और कस्साब में झगड़ा पैदा कर रहे हैं। मुसलमान कहते हैं कि तीतर साफ आवाज में यही कह रहा है कि 'सुब्हान तेरी कुदरत' मगर हिन्दू इस बात को स्वीकार नहीं करते और कहते हैं कि यह स्याह तीतर 'राम लक्ष्मण दशरथ' कह कर अपनी भक्ति का परिचय दे रहा है। कुँजड़े इसे भी नहीं मानते और उसकी बोली का मतलब 'मूली प्याज अदरक' समझ कर अपना दिल खुश कर रहे हैं, परन्तु कस्साबों को सिवाय इसके और कुछ नहीं सूझता कि यह तीतर 'कर जबह और ढक रख' का उपदेश दे रहा है।

इसी समय देवीसिंह भी वहाँ आ पहुँचे और भूतनाथ और बलभद्रसिंह के हाजिर होने की इत्तला दी। इच्छानुसार दोनों ने सामने आकर सलाम किया और फर्श पर बैठने बाद इशारा पाकर भूतनाथ ने तेजसिंह से कहा—

भूत०। (बलभद्रसिंह की तरफ इशारा करके) इनका हाल सुनने के लिए जी बेचैन हो रहा है, मैं इनसे कई दफे पूछ चुका हूँ मगर ये कुछ कहते नहीं।

तेज०। (बलभद्रसिंह से) अब तो आपकी तबीयत ठिकाने हो गई होगी ?

बल०। जी हाँ, अब मैं बहुत अच्छा और अपना हाल कहने के लिए तैयार हूँ।

तेज०। अच्छी बात है, हम लोग भी सुनने के लिए तैयार हैं और आप ही का इन्तजार कर रहे थे।

सभों का ध्यान बलभद्रसिंह की तरफ खिंच गया और बलभद्रसिंह ने अपने गायब होने का हाल इस तरह कहना शुरू किया—

"इस बात की तो मुझे कुछ भी खबर नहीं कि मुझे कौन ले गया और क्यों-

कर ले गया। उस दिन मैं भूतनाथ के पास ही एक चारपाई पर सो रहा था
जब मेरी आँख खुली तो मैंने अपने को एक हरे भरे और खूबसूरत बाग में पा
उस समय मैं बिल्कुल मजबूर था अर्थात् मेरे हाथों में हथकड़ी और पैरों में
पड़ी हुई थी और एक औरत नंगी तलवार लिए मेरे सामने खड़ी थी।
सोचा कि अब मेरी जान नहीं बचती और मेरे भाग्य ही में कैदी बन कर
देना बदा है। बहुत सी बातें सोच विचार के मैंने उस औरत से पूछा कि
कौन है और मैं यहाँ क्योंकर पहुँचा हूँ'? जिसके जवाब में उस औरत ने
कि 'तुझे मैं यहाँ ले आई हूँ और इस समय तू मेरा कैदी है। मैं जिस मुसीब
फँसी हुई हूँ उससे छुटकारा पाने के लिए इसके सिवाय और कोई तरकीब न
कि तुझे अपने कब्जे में करके अपने छुटकारे की सूरत निकालूँ क्योंकि मेरा दु
तेरे ही कब्जे में है। अगर तू उसे समझा बुझा कर राह पर ले आवेगा तो
साथ साथ तेरी जान बच जायगी'।

उस औरत की बातें सुन कर मुझे बड़ा ही ताज्जुब हुआ और मैंने
पूछा, "वह है कौन जो तेरा दुश्मन है और मेरे कब्जे में है?"

औरत०। तेरी बेटी कमलिनी मेरे साथ दुश्मनी कर रही है।

मैं०। क्यों?

औरत०। उसकी खुशी, मैंने तो उसका नुकसान नहीं किया।

मैं०। आखिर दुश्मनी का कोई सबब भी तो होगा?

औरत०। अगर कोई सबब है तो केवल इतना ही कि वह भूतनाथ का
करती है और मुझे भूतनाथ का दुश्मन समझती है मगर मैं कसम खाकर क
हूँ कि मुझे भूतनाथ से जरा भी रंज नहीं है बल्कि मैं भूतनाथ को अपना म
गार और भाई समझती हूँ। और मुझे भूतनाथ से किसी तरह का रंज होता
तुझे गिरफ्तार करके न लाती बल्कि भूतनाथ ही को ले आती, क्योंकि
तरह मैं तुझे उठा लाई हूँ उसी तरह भूतनाथ को भी उठा ला सकती थी।
अब मैं चाहती हूँ कि तू एक चीठी कमलिनी के नाम की लिख दे कि वह
साथ दुश्मनी का बर्ताव न करे। अगर तू अपनी कसम दे के यह बात कमलि
को लिख देगी तो वह जरूर मान जायगी।

मैंने कई तरह से, उलट फेर के, कई तरह की बातें उस औरत से
मगर साफ साफ न मालूम हुआ कि कमलिनी उसके साथ दुश्मनी क्यों करती
इसके अतिरिक्त मुझे इस बात का भी निश्चय हो गया कि जब तक मैं कमलि

के नाम की चीठी न लिख दूंगा तब तक मेरी जान को छुट्टी न मिलेगी। चीठी लिखने से इनकार करने के कारण कई दिनों तक मैं उसका कैदी बना रहा, आखिर लाचार हो मैंने उसकी इच्छानुसार पत्र लिख दिया, तब उसने बेहोशी की दवा सुंघा कर मुझे बेहोश किया और उसके बाद जब मेरी आँख खुली तो मैंने अपने को आपके सामने पाया।

भूत०। आपको यह नहीं मालूम हुआ कि उस औरत का नाम क्या था ?

बल०। मैंने कई दफे नाम पूछा मगर उसने न बताया।

मालूम होता है कि बलभद्रसिंह ने अपना जो कुछ हाल बयान किया उस पर हमारे राजा साहब या ऐयारों को विश्वास न हुआ मगर उनकी खातिर से तेजसिंह ने कह दिया कि 'ठीक है, ऐसा ही होगा'।

बलभद्रसिंह और भूतनाथ को राजा साहब बिदा किया ही चाहते थे कि उसी समय इन्द्रदेव के आने की इत्तिला मिली। आज्ञानुसार इन्द्रदेव हाजिर हुए और सभों को सलाम करने के बाद इशारा पाकर तेजसिंह के बगल में बैठ गए।

इन्द्रदेव के आने से हमारे राजा साहब और ऐयारों को बड़ी खुशी हुई और इसीलिए पन्नालाल रामनारायण और पं० बद्रीनाथ वगैरह हमारे बाकी के ऐयार लोग भी जो इस समय यहाँ हाजिर और इस इमारत के बाहरी तरफ टिके हुए थे इन्द्रदेव के साथ ही साथ राजा साहब के पास आ पहुँचे क्योंकि इन्द्रदेव बल-भद्रसिंह और भूतनाथ का अनूठा हाल जानने के लिए सभी बेचैन हो रहे थे और खास करके भूतनाथ के मुकदमे से तो सभों को दिलचस्पी थी। इसके अतिरिक्त इन्द्रदेव अपने साथ दो कैदी अर्थात् नकली बलभद्रसिंह और नागर को भी लाए थे और बोले थे कि 'काशिराज के भेजे हुए और भी कई कैदी थोड़ी देर में हाजिर हुआ चाहते हैं' जिस कारण हमारे ऐयारों की दिलचस्पी और भी बढ़ रही थी।

सुरेन्द्र०। तुम्हारे आने से हम लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई। इन्द्रजीत और गोपालसिंह तुम्हारी बड़ी प्रशंसा करते हैं और वास्तव में तुमने जो कुछ किया है वह प्रशंसा के योग्य भी है।

इन्द्रदेव०। (हाथ जोड़ कर) मैं तो किसी योग्य भी नहीं हूँ और न कोई काम ही मेरे हाथ से ऐसा निकला जिससे महाराज के गुलाम के बराबर भी अपने को समझने की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकूँ—हाँ दुर्दैव ने जो कुछ मेरे साथ बर्ताव किया और उसके सबब से मुझ अभागे को जो कष्ट भोगने पड़े उन्हें सुन कर दयालु महाराज को मुझ पर दया अवश्य आई होगी।

सुरेन्द्र० । हम लोग ईश्वर को धन्यवाद देते हैं जिसकी कृपा से एक विचि
और अनूठी घटना के साथ तुम्हारी स्त्री और लड़की का पता लग गया है
तुमने उन दोनों को जीती जागती देखा ।

इन्द्र० । यह सब कुछ आपके और कुमारों के चरणों की बदौलत हुआ
वास्तव में तो मैं माड़े की जिन्दगी बिताता हुआ दुनिया से विरक्त ही हो चुका
था । अब भी वे दोनों आप लोगों के चरणों की धूल आँखों में लगा लेंगी
तभी मेरी प्रसन्नता का कारण होंगी । आशा है कि आज ही या कल तक रा
गोपालसिंह भी उन दोनों तथा किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी कमलिनी लाडि
और कमला इत्यादि को लेकर यहाँ आवें और महाराज के चरणों का दर्शन करें

सुरेन्द्र० । (आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ) हाँ ! क्या गोपाल ने तु
कुछ लिखा है ?

इन्द्रदेव० । जी हाँ, उन्होंने मुझे लिखा है कि 'मैं शीघ्र ही उन सभों
लेकर महाराज की सेवा में उपस्थित हुआ चाहता हूँ, तुम भी अपने दोनों
नकली बलभद्रसिंह और नागर को लेकर काशिराज से मिलते हुए चुनार जा
और काशिराज ने हम पर कृपा करके हमारे जिन दुश्मनों को कैद कर रक्खा
अर्थात् बेगम जमालो और नौरतन वगैरह को भी अपने साथ लेते जाओ ।
इस समय उन्हीं के लिखे अनुसार मैं सेवा में उपस्थित हुआ हूँ !

सुरेन्द्र० । (उत्कण्ठा के साथ) तो क्या तुम उन लोगों को भी अपने सा
लेते आए हो ?

इन्द्रदेव० । जी हाँ और उन सभों को बाहर सरकारी सिपाहियों की सु
दंगी में छोड़ आया हूँ । बेगम वगैरह का हाल तो काशिराज ने महाराज
लिखा होगा ?

सुरेन्द्र० । हाँ काशिराज ने गोपालसिंह को लिखा था कि 'तुम्हारे ऐया
भूतनाथ के निशान देने के मुताबिक बलभद्रसिंह के दुश्मन गिरफ्तार कर लि
गए हैं और मनोरमा का मकान भी जब्त कर लिया गया है । गोपालसिंह ने
समाचार मुझको लिखा था !

इन्द्रदेव० । ठीक है तो अब उन कैदियों के लिए भी उचित प्रबन्ध कर
चाहिए जिन्हें मैं अपने साथ लाया हूँ ।

सुरेन्द्र० । इसका प्रबन्ध गोपालसिंह कर चुके होंगे क्यों कि कैदियों का

काम उन्हीं के सुपुर्द हैं।

बद्री०। (इन्द्रदेव से) उनके लिए आप तरद्दुद न करें क्योंकि वे लोग अपने उचित स्थान पर पहुँचा दिए गए।

पन्नालाल०। (सुरेन्द्रसिंह से–भूतनाथ और बलभद्रसिंह की तरफ बता कर) मगर इन दोनों महाशयों में से जिनकी खातिरदारी मेरे सुपुर्द की गई यह बलभद्रसिंह जो कहते हैं कि मैं महाराज का अन्न न खाऊँगा बल्कि अपने आराम की कोई चीज भी यहाँ से न लूँगा क्योंकि अब यह बात मालूम हो चुकी है कि राजा गोपालसिंह महाराज के पोते हैं और......

सुरेन्द्र०। ठीक है, ठीक है, वास्तव में ऐसा ही होना चाहिए। (बलभद्रसिंह से) मगर आप बहुत ही मुसीबत और कैद से छूट कर आए हैं इसलिए आपके पास रुपये पैसे की जरूर कमी होगी, फिर आप क्योंकर अपने लिए हर तरह का सामान जुटा सकेंगे ?

बलभद्र०। मैं भी इसी फिक्र में डूबा हुआ था मगर ईश्वर ने बड़ी कृपा की जो मेरे प्यारे मित्र इन्द्रदेव को यहाँ भेज दिया। अब मुझे किसी तरह की तकलीफ न होगी, जो कुछ जरूरत पड़ेगी मैं इनसे ले लूँगा, फिर इसके बाद मुझे यह भी आशा है कि दुष्टों का मुकदमा हो जाने पर बेगम के कब्जे से निकली हुई मेरी दौलत भी मुझे मिल जायगी।

इन्द्र०। (हाथ जोड़ कर महाराज सुरेन्द्रसिंह से) मेरे मित्र बलभद्रसिंह जो कुछ कह रहे हैं ठीक है और आशा है कि महाराज भी इस बात को स्वीकार कर लेंगे।

सुरेन्द्र०। (पन्नालाल से) खैर ऐसा ही किया जाय, इन्द्रदेव का डेरा बलभद्रसिंह के साथ ही करा दो जिसमें ये दोनों मित्र प्रसन्नता से आपस में बातें करते रहें।

इन्द्रदेव०। (हाथ जोड़ कर) मैं भी यही अर्ज किया चाहता था। आज न मालूम किस तरह, कितने दिनों के बाद, ईश्वर ने मित्र दर्शन का सुख दिया है, सो भी ऐसे मित्र का दर्शन जिसके मिलने की आशा कर ही नहीं सकते थे और इसके लिए हम लोग भूतनाथ के बड़े ही कृतज्ञ हैं।

भूतनाथ०। यह सब महाराज के चरणों का प्रताप है जिनके सदैव दर्शन के लोभ से महाराज का कुछ न बिगाड़ने पर भी मैं अपने को दोषी बनाए और भगवती की कृपा पर भरोसा किए बैठा हुआ हूँ।

इन्द्रदेव०। (महाराज की तरफ देख के) वास्तव में ऐसा ही है। [illegible] जो कुछ मालूम हुआ है उससे तो यही जाना जाता है कि भूतनाथ ने महाराज यहाँ एक दफे चोरी करने के अतिरिक्त और कोई काम ऐसा नहीं किया [illegible] महाराज या महाराज के सम्बन्धियों को दुःख हो...

भूतनाथ०। (लज्जा से नीची गर्दन करके) और सो भी बदनी[illegible] साथ नहीं!

इन्द्रदेव०। आगे चल कर और कोई बात जानी जाय तो मैं [illegible] सकता, मगर....

भूत०। ईश्वर न करे ऐसा हो।

बीरेन्द्र०। भूतनाथ ने अगर हम लोगों का कोई कसूर किया भी हो [illegible] हम लोग उस पर ध्यान नहीं दे सकते क्योंकि रोहतासगढ़ के तहखाने [illegible] नाथ का कसूर माफ कर चुका हूँ।

भूत०। ईश्वर आपका सहायक रहे!

इन्द्रदेव०। लेकिन अगर भूतनाथ ने किसी ऐसे के साथ बुरा बर्ता[illegible] हो जिससे आज के पहिले महाराज का कोई सम्बन्ध न था तो उस पर [illegible] राज को विशेष ध्यान न देना चाहिए।

तेज०। जी हाँ मगर इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ की जीवनी अद्‌भुत अनूठी और दुखद घटनाओं से भरी हुई है। मैं समझता हूँ कि [illegible] ने लोगों के दिल पर अपना भयानक प्रभाव तो पैदा किया परन्तु अपने [illegible] बदौलत अपने को सुखी न बना सका, उलटा इसने जमाने को दिखा [illegible] प्रतिष्ठा और सभ्यता का पल्ला छोड़ कर केवल लक्ष्मी का कृपापात्र बनने [illegible] उद्योग और उत्साह दिखाने वाले का परिणाम कैसा होता है।

इन्द्रदेव०। निःसन्देह ऐसा ही है। अगर भूतनाथ उसके साथ [illegible] प्रतिष्ठा का पल्ला भी मजबूती के साथ पकड़े होता और इस बात [illegible] रखता कि जो कुछ करे वह इसकी प्रतिष्ठा के विरुद्ध न होने पावे तो [illegible] में भूतनाथ तीसरे दर्जे का ऐयार कहा जाता।

जीत०। (मुस्कुरा कर) मगर सुना जाता है कि अब भूतनाथ [illegible] हुमंत की मीनार पर चढ़ कर दुनिया की सैर किया चाहता है और [illegible] देवताओं को भी वश में कर लेने वाले मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर न[illegible]

इन्द्रदेव०। अगर सिफारिश न समझी जाय तो मैं यह कहूँ [illegible]

कता हूँ कि दुनिया में इज्जत और हुर्मत उसी को मिल सकती है जो इज्जत ौर हुर्मत का उचित वर्ताव करता हुआ किसी वड़े इज्जत और हुर्मत वाले का ापात्र बने।

देवी०। भूतनाथ का ख्याल भी आज कल इन्हीं वातों पर है। मैंने वहुत नों तक छिपे छिपे भूतनाथ का पीछा कर के जान लिया है कि भूतनाथ को शियारी चालाकी और ऐयारी की विद्या के साथ ही साथ दौलत की कमी भी हीं है। अगर यह चाहे तो वेफिक्री के साथ अमीराना ढंग पर अपनी जिन्दगी ता सकता है, मगर भूतनाथ इसे पसन्द नहीं करता और खूव समझता है कि ह सच्चा सुख जो प्रतिष्ठा सभ्यता और सज्जनता के साथ सज्जन और मित्र ण्डली में वैठ कर हँसने वोलने से प्राप्त होता है और ही कोई वस्तु है और उसके ना मनुष्य का जीवन वृथा है।

वलभद्र०। बेशक, यही सवव है कि आजकल भूतनाथ अपना समय ऐसे कामों और विचारों में विता रहा है और चाहता है कि अपना चेहरा वेदाग इने में उसी तरह देख सके जिस तरह हीरा निर्मल जल में, मगर इसके लिए तनाथ को अपने पुराने मालिक से भी मदद लेनी चाहिए।

इन्द्रदेव०। (कुछ चौंक कर) हाँ, मैं यह निवेदन करना तो भूल ही गया आज ही कल में यहाँ रणधीरसिंह भी आने वाले हैं, अस्तु उनके लिए महा-ज को प्रवन्ध कर देना चाहिए।

यह एक ऐसी वात थी जिसने भूतनाथ को चौंका दिया और वह थोड़ी देर लिए किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न हो गया, मगर उद्योग करके उसने शीघ्र अपने दिल को सम्हाला और कहा—

भूतनाथ०। क्योंकि वे महाराज के मेहमान वन कर इस मकान में रहना ाचित् स्वीकार न करेंगे।

जीत०। ठीक है, तो उनके लिए दूसरा प्रबन्ध किया जायगा।

इन्द्र०। उनका आदमी उनके लिए खेमा वगैरह सामान लेकर आता ही होगा।

जीत०। (इन्द्रदेव से) हमारे पास कोई इत्तिला तो नहीं आई!

इन्द्रदेव०। जी यह काम भी मेरे ही सुपुर्द किया गया था।

जीत०। तो क्या तुम्हारे पास उनका कोई आदमी या पत्र गया था?

इन्द्र०। जी नहीं, वे स्वयं राजा गोपालसिंह के पास यह सुन कर गए थे कि धवी उन्हीं के यहाँ कैद है, क्योंकि उन्होंने अपने हाथ से माधवी को मार ने का प्रण किया था।

सुरेन्द्र० । (ताज्जुब से) तो क्या उन्होंने माधवी को अपने हाथों से

इन्द्र० । जी नहीं, अपने खानदान की एक लड़की को मार कर

की वनिस्वत प्रतिज्ञा भंग करना उन्होंने उत्तम समझा, उस समय मैं भी

भूत० । (सुरेन्द्रसिंह से हाथ जोड़ कर) यदि मुझे आज्ञा हो तो

खड़ा करने का इन्तजाम मैं करूँ और समय पर आगवानी के लिए कुछ

अपना कलंकित मुख उनको दिखाऊँ । यद्यपि मैं इस योग्य नहीं हूँ

मेरी सूरत देखना पसन्द ही करेंगे मगर उनके नमक से पला हुआ

उनसे दुदुराया जाकर भी अपनी प्रतिष्ठा ही समझेगा ।

सुरेन्द्र० । ठीक है मगर उनकी इच्छा के विरुद्ध ऐसा करने की

नहीं दे सकते । हाँ यदि तुम अपनी इच्छा से ऐसा करो तो हम रोकना

नहीं समझेंगे ।

ये बातें हो ही रही थीं कि जमानिया से राजा गोपालसिंह के कूच

इत्तिला मिली, इस तौर पर कि—'किशोरी कामिनी और लक्ष्मीदेवी

लिए राजा गोपालसिंह चले आ रहे हैं' ।

नौवां बयान

चुनारगढ़ वाली तिलिस्मी इमारत के चारो तरफ छोटे बड़े सैकड़ों

डेरों रावटियों और शामियानों की वहार दिखाई दे रही है, जिनमें से

लोगों के डेरे पड़ चुके हैं और वहुत अभी तक खाली पड़े हैं मगर वे

धीरे भर रहे हैं । किशोरी के नाना रणधीरसिंह और किशोरी कामिनी

को लिए हुए राजा गोपालसिंह भी आ गए हैं और इन लोगों के साथ

सिपाही भी आ पहुँचे हैं जो कायदे के साथ रावटियों में डेरा डाले हुए हैं।

इत्यादि महल में पहुंचा दी गई हैं जिसके सवव से अन्दर तरह तरह की

मनाई जा रही हैं । राजा गोपालसिंह का डेरा भी तिलिस्मी इमारत के

पड़ा है । राजा वीरेन्द्रसिंह ने उनके लिए अपने कमरे के पास ही

और सजा हुआ कमरा मुकर्रर कर दिया है, और उनके (गोपालसिंह के

लोग इमारत के वाहर वाले खेमों में उतरे हुए हैं । इसी तरह रणधीर

भी डेरा इमारत के वाहर उन्हीं के भेजे हुए खेमे में पड़ा है और वे

कर राजा सुरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह तथा और लोगों से मुलाकात कर

किशोरी और कमला से मिल कर खुश हो चुके हैं और साथ ही इस

की नजर भी कवूल कर चुके हैं जिसकी उम्मीद भूतनाथ को कुछ भी

इसी तरह राजा वीरेन्द्रसिंह के बचे हुए ऐयार लोग भी जो यहाँ मौजूद न अब आ गए हैं, यहाँ तक कि रोहतासगढ़ से ज्योतिषीजी का डेरा भी आ गया और वे भी तिलिस्मी इमारत के वाहर एक खेमे में टिके हुए हैं।

इनके अतिरिक्त कई बड़े बड़े रईस जमींदार और महाजन लोग भी गया ोहतासगढ़ जमानिया और चुनार वगैरह से राजा वीरेन्द्रसिंह को नजर और बारकबाद देने की नीयत से आये हुए हैं, जिनके सबब से यहाँ खूब अमन चमन ो रहा है और सभों को यह भी विश्वास है कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्द-सिंह भी तिलिस्म फतह करते हुए शीघ्र आना चाहते हैं और उनके आने के साथ ो ब्याह शादी के जलसे शुरू हो जायंगे। साथ ही इसके भूतनाथ वगैरह के मुक-मे से भी सभों को दिलचस्पी हो रही है, यहाँ तक कि वहुत से लोग केवल इसी फियत को देखने सुनने की नीयत से आए हुए हैं।

तिलिस्मी इमारत के बाहर एक छोटा सा बाजार लग गया है जिसमें जरूरी ीजें तथा खाने का कच्चा गल्ला तथा सब तरह का सामान मेहमानों के लिए ौजूद है और राजा साहब की आज्ञा है कि जिसको जिस चीज की जरूरत हो ी जाय और उसकी कीमत किसी से भी न ली जाय। इस काम की निगरानी लिए कई नेक और ईमानदार मुन्शी मुकर्रर हैं जो अपना काम वड़ा खूबी और कनीयती के साथ कर रहे हैं। यह बात तो हुई है मगर लोगों को आश्चर्य के थ उस समय और भी आनन्द मिलता है जब एक बहुत बड़े खेमे या पण्डाल अन्दर कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की शादी का सामान इकट्ठा होते खते हैं।

कैदियों को किसी खेमे में जगह नहीं मिली है बल्कि वे सब तिलिस्मी इमा-त के अन्दर एक ऐसे स्थान में रक्खे गये हैं जो उन्हीं के योग्य है, मगर भूत-थ विल्कुल आजाद है और आश्चर्य के साथ लोगों की उंगलियाँ उठवाता हुआ स समय चारो तरफ घूम रहा है और मेहमानों की खातिरदारी का खयाल भी रता रहता है।

राजा साहब की आज्ञानुसार तिलिस्मी इमारत के अन्दर पहिले खण्ड में एक हुत वड़ा दालान उस आलीशान दरबार के लिए सजाया जा रहा है जिसमें पहिले भूतनाथ तथा अन्य कैदियों का मुकद्दमा फैसल किया जायगा और वाद में दोनों मारों के व्याह की महफिल का आनन्द लोगों को मिलेगा और इसे लोग 'दर्बारे-म' के नाम से सम्बोधन करते हैं। इसके अतिरिक्त 'दर्बारे-खास' के नाम से सरी मंजिल पर एक और कमरा सजाया जा रहा है जिसमें दिन पहर न चढ़े तक दर्बार हुआ करेगा और उसमें खास खास तथा ऐयारी पेशे वाले

लोग बैठ कर जरूरी कामों पर विचार किया करेंगे। इस समय हम अपने पा
को भी इसी दर्बारे खास में ले चल कर बैठाते हैं।

एक ऊँची गद्दी पर महाराज सुरेन्द्रसिंह और उनके बाईं तरफ राजा
सिंह बैठे हुए हैं। सुरेन्द्रसिंह के दाहिने तरफ जीतसिंह और वीरेन्द्रसिंह के
तरफ तेजसिंह बैठे हैं और उनके बगल में क्रमशः देवीसिंह पण्डित बद्री
रामनारायण जगन्नाथ ज्योतिषी पन्नालाल और भूतनाथ वगैरह दिखाई दे
हैं और भूतनाथ के बगल में चुन्नीलाल हाथ में नंगी तलवार लिए खड़ा
उधर जीतसिंह के बगल में राजा गोपालसिंह और फिर क्रमशः बलभद्रसिंह
देव भैरोसिंह वगैरह बैठे हैं और उनके बगल में नाहरसिंह नंगी तलवार
खड़ा है और इस बात पर विचार हो रहा है कि कैदियों का मुकद्दमा
शुरू किया जाय तथा उस सम्बन्ध में किन किन बातों या चीजों की जरूरत

इसी समय चोबदार ने आकर अदब से अर्ज किया—"महल के दर्वा
एक नकाबपोश हाजिर हुआ है जो पूछने पर अपना परिचय नहीं देता
दर्बार में हाजिर होने की आज्ञा माँगता है।"

इस खबर को सुन कर तेजसिंह ने राजा साहब की तरफ देखा और
पाकर उस सवार को हाजिर करने के लिए चोबदार को हुक्म दिया।

वह नौजवान नकाबपोश सवार जो सिपाहियाना ठाठ के बेशकीमत क
अपने को सजाए हुए था, हाजिर होने की आज्ञा पा कर घोड़े से उतर
अपना नेजा जमीन में गाड़ कर उसी के सहारे घोड़े की लगाम अटका
इमारत के अन्दर गया और चोबदार के साथ घूमता फिरता दर्बारे-खास में
हुआ। महाराज सुरेन्द्रसिंह, वीरेन्द्रसिंह, जीतसिंह और तेजसिंह को
सलाम करने बाद उसने अपना दाहिना हाथ जिसमें एक चीठी थी दर्बार की
बढ़ाया और देवीसिंह ने उसके हाथ से पत्र लेकर तेजसिंह के हाथ में दे
तेजसिंह ने राजा सुरेन्द्रसिंह को दिया, उन्होंने उसे पढ़ कर जीतसिंह के
किया और इसके बाद वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह ने भी वह पत्र पढ़ा।

जीत०। (नकाबपोश से) इस पत्र के पढ़ने से जाना जाता है कि
हाल तुम्हारी जुबानी मालूम होगा ?

नकाबपोश०। (हाथ जोड़ कर) जी हाँ। मेरे मालिकों ने यह अर्ज
लिए मुझे यहाँ भेजा है कि 'हम दोनों भूतनाथ तथा और कैदियों का
सुनने के समय उपस्थित रहने की इच्छा रखते हैं और आशा करते हैं कि इस
महाराज प्रसन्नता के साथ हम लोगों को आज्ञा देंगे। हम लोग यह प्रति
कहते हैं कि हम लोगों के हाजिर होने का नतीजा देख कर महाराज प्रस

जीत० । मगर पहिले यह तो बताओ कि तुम्हारे मालिक हैं कौन और कहाँ रहते हैं ?

नकाबपोश० । इसके लिए आप क्षमा करें क्योंकि हमारे मालिक लोग अभी अपने को प्रकट नहीं किया चाहते और इसलिए जब यहां उपस्थित होंगे तो अपने चेहरे पर नकाब डाले होंगे । हाँ, मुकद्दमा खतम हो जाने के बाद वे अपने को प्रसन्नता के साथ प्रकट कर देंगे । आप देखेंगे कि उनकी मौजूदगी में मुकद्दमा सुनने के समय कैसे कैसे गुल खिलते हैं जिससे आशा है कि महाराज भी बहुत प्रसन्न होंगे ।

जीत० । कदाचित् तुम्हारा कहना ठीक हो मगर ऐसे मुकद्दमों में जिन्हें घरेलू मुकद्दमे भी कह सकते हैं अपरिचित लोगों को शरीक होने और बोलने की आज्ञा महाराज कैसे दे सकते हैं ?

नकाब० । ठीक है, महाराज मालिक हैं जो उचित समझें करें मगर इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि अगर उस समय हमारे मालिक लोग (केवल दो आदमी) उपस्थित न होंगे तो मुकद्दमे की बारीक गुत्थी सुलझ न सकेगी, और यदि वे पहिले ही से अपने को प्रकट कर देंगे तो......

जीत० । (तेजसिंह से) इस विषय में उचित यही है कि एकान्त में इस नकाबपोश से बातचीत की जाय ।

तेज० । (हाथ जोड़ कर) जो आज्ञा ।

इतना कह कर तेजसिंह उठे और उस नकाबपोश को साथ लिए हुए एकान्त में चले गए ।

इस नकाबपोश को देख कर सभी हैरान थे । इसकी सिपाहियाना चुस्त और बेशकीमत पौशाक, इसका बहादुराना ढंग और इसकी अनूठी बातों ने सभों के दिल में खलबली पैदा कर दी थी, खास करके भूतनाथ के पेट में तो चूहे दौड़ने लग गये और उसने इस नकाबपोश की असलियत जानने का ख्याल अपने दिल में मजबूती के साथ बाँध लिया था । यही कारण था कि जब थोड़ी देर बाद तेजसिंह उस नकाबपोश से बातें करके और उसको साथ लिए हुए वापस आए तब सभों का ध्यान उसी तरफ चला गया और सभी यह जानने के लिए व्यग्र होने लगे कि देखें तेजसिंह क्या कहते हैं ।

तेजसिंह ने अपने बाप जीतसिंह की तरफ देख कर कहा, "मेरे ख्याल से इनकी प्रार्थना स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है । यदि मान लिया जाय कि वे लोग हमारे साथ दुश्मनी भी रखते हों तो भी हमें इसकी कुछ परवाह नहीं हो सकती और न वे लोग हमारा कुछ बिगाड़ ही सकते हैं ।"

तेजसिंह की बात सुन कर जीतसिंह ने महाराज की तरफ देखा और इशारा पा करं नकावपोश से कहा, "खैर तुम्हारे मालिकों की प्रार्थना स्वीकार की जाती है। उनसे कह देना कि कल से नित्य एक पहर दिन चढ़ने के बाद दर्बार-खास में हाजिर हुआ करें।"

नकावपोश ने झुक कर सलाम किया और जिधर से आया था उसी तरफ लौट गया। थोड़ी देर तक और कुछ बातचीत होती रही जिसके वाद सब अपने अपने ठिकाने चले गए। केवल महाराज सुरेन्द्रसिंह वीरेन्द्रसिंह जीत तेजसिंह और गोपालसिंह गए और इन लोगों में कुछ देर तक उसी नकाब-पोश के विषय में वातचीत होती रही। क्या क्या बातें हुई इसे हम इस जगह खोलना उचित नहीं समझते और न इसकी जरूरत ही देखते हैं।

दसवां बयान

दूसरे दिन फिर उसी तरह का दर्बार-खास लगा जैसा पहिले दिन लगा था और जिसका खुलासा हाल हम ऊपर के बयान में लिख आए हैं। आज के दर्बार में वे दोनों नकावपोश हाजिर होने वाले थे जिनकी तरफ से कल एक नकाबपोश आया था अस्तु राजा साहब की तरफ से कल ही सिपाहियों और चोबदारों को हुक्म मिल गया था कि जिस समय दोनों नकाबपोश आवें उसी समय बिना इत्तिला किए ही दर्बार में पहुंचा दिए जायँ। यही सबब था कि आज दर्बार लगने के कुछ ही देर वाद एक चोबदार के पीछे पीछे वे दोनों नकाबपोश हाजिर हुए।

इन दोनों नकावपोशों की पौशाक बहुत ही बेशकीमत थी। सर पर लंबी शमला था जिसके आगे हीरे का जगमगाता हुआ सरपेच था। भद्दी मगर कीमती नकाब में वड़े वड़े मोतियों की झालर लगी हुई थी। चपकन और पायजामे में भी सलमे सितारे की जगह हीरे और मोतियों की भरमार थी तथा पगड़ी के बेशकीमत हीरे ने तो सभों को ताज्जुब ही में डाल दिया था जिसके बगल में जड़ाऊ कब्जे की तलवार लटक रही थी। दोनों नकावपोशों की पौशाक एक ढंग की थी और दोनों एक ही उम्र के मालूम पड़ते थे।

यद्यपि देखने से तो यही मालूम होता था कि ये दोनों नकाबपोश राजा से भी ज्यादे दौलत रखने वाले और किसी अमीर खानदान के होनहार बहादुर हैं मगर इन दोनों ने वड़े अदब के साथ महाराज सुरेन्द्रसिंह वीरेन्द्रसिंह और जीत-सिंह को सलाम किया और इन तीनों के सिवाय और किसी की तरफ ध्यान न दिया। महाराज की आज्ञानुसार राजा गोपालसिंह के बगल में इन दोनों को जगह मिली, जीतसिंह ने सभ्यतानुसार कुशल मंगल का प्रश्न किया।

दुष्टों के सिरताज, पतितों के महाराजाधिराज, नमकहरामों के किवलेगाह और दोजखियों के जहाँपनाह मायारानी के तिलिस्मी दारोगा साहब तलब किये गए और जब हाजिर हुए तो बिना किसी को सलाम किए जहाँ चोबदार ने बैठाया बैठ गए। इस समय इनके हाथों में हथकड़ी और पैरों में ढीली बेड़ी पड़ी हुई थी। जब से इन्हें कैदखाने की हवा नसीब हुई तब से बाहर की कोई खबर इनके कानों तक पहुंची न थी। इन्हीं के लिए नहीं बल्कि तमाम कैदियों के लिए इस बात का इन्तजाम किया गया था कि किसी तरह की अच्छी या बुरी खबर उनके कानों तक न पहुंचे और न कोई उनकी बातों का जवाब ही दे।

महाराज का इशारा पाकर पहिले राजा गोपालसिंह ने बात शुरू की और दारोगा की तरफ देख कर कहा—

गोपाल०। कहिए दारोगा साहब, मिजाज तो अच्छा है! अब आपको अपनी बेकसूरी साबित करने के लिए किन किन चीजों की जरूरत है?

दारोगा०। मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है और उम्मीद करता हूँ कि आपको भी इस बात का कोई सबूत न मिला होगा कि मैंने आपके साथ किसी तरह की बुराई की थी या मुझे इस बात की खबर भी थी कि आपको महारानी ने कैद कर रक्खा है।

गोपाल०। (मुस्कुराते हुए) नहीं नहीं, आप मेरे बारे में किसी तरह का तरद्दुद न करें। मैं आपसे अपने मामले में बातचीत करना नहीं चाहता और न यही पूछना चाहता हूँ कि शुरू शुरू में आपने मेरी शादी में कैसे कैसे नोंक झोंक के काम किए और बहुत सी मड़वे की बातों को तै करते हुए अन्त में किस मायारानी को लेकर अपने किस मेहरबान गुरुभाई के पास किस तरह की मदद लेने गये थे या फिर जमाने ने क्या रंग दिखाए, इत्यादि। मेरे साथ तो जो कुछ आपने किया उसे याद करने का ध्यान भी मैं अपने दिल में लाना पसन्द नहीं करता मगर मेरे पुराने दोस्त इन्द्रदेव आपसे कुछ पूछे बिना भी न रहेंगे। उन्हें चाहिए था कि अब भी अपने गुरुभाई का नाता निबाहें मगर अफसोस, किसी बेविश्वासे ने उन्हें यह कह कर रञ्ज कर दिया है कि 'इन्दिरा और सर्यू की किस्मतों का फैसला भी इन्हीं दारोगा साहब के हाथ से हुआ है'!

राजा गोपालसिंह के जुबानी थपेड़ों ने दारोगा का मुंह नीचा कर दिया। पुरानी बातों और करतूतों ने आँखों के आगे ऐसी भयानक सूरतें पैदा कर दीं जिनके देखने की ताकत इस समय उसमें न थी। उसके दिल में एक तरह का दर्द सा मालूम होने लगा और उसका दिमाग चक्कर खाने लगा। यद्यपि उसकी

बदकिस्मती और उसके पापों ने भयानक अन्धकार का रूप धारण करके चारो तरफ से घेर लिया था परन्तु इस अन्धकार में भी उसे सुवह के झिलमिलाते हुए तारे की तरह उम्मीद की एक वारीक और हलकी रोशनी बहुत दूर पर दिखाई दे रही थी जिसका सवव इन्द्रदेव था, क्योंकि इसे (दारोगा को) इन्दिरा और सयूं के प्रकट होने का हाल कुछ भी मालूम न था और वह यही समझता था कि इन्द्रदेव पहिले की तरह अभी तक इन वातों से वेखवर होगा और इन्दिरा तथा सयूं भी तिलिस्म के अन्दर मर खप कर अपने वारे में मेरी वदकारियों के सवूत अपने साथ ही लेती गई होंगी अस्तु ताज्जुव नहीं कि आज भी इन्द्रदेव अपना गुरुभाई समझ कर मदद करे। इसी सवव से उसने मुश्किल से अपने को सम्हाला और इन्द्रदेव की तरफ देख के कहा—

"राम राम, भला इस अनर्थ का भी कुछ ठिकाना है ! क्या आप भी इस वात को सच मान सकते हैं ?"

इन्द्रदेव० । अगर इन्दिरा मर गई होती और यह कलमदान नष्ट हो गया होता तो इस वात को मानने के लिए मुझे जरूर कुछ उद्योग करना पड़ता।

इतना कह कर इन्द्रदेव ने इन्दिरा की तस्वीर-वाला वह कलमदान निकाल कर सामने रख दिया।

इन्द्रदेव की वातें सुन और इस कलमदान की सूरत पुनः देख कर दारोगा की वची वचाई उम्मीद भी जाती रही। उसने भय और लज्जा से सर झुका लिया और वदन में पैदा हुई भई कपकपी को रोकने का उद्योग करने लगा। बीच में भूतनाथ वोल उठा—

"दारोगा साहव, इन्दिरा को आपके पंजे से वार वार छुड़ाने वाला भूतनाथ भी तो आपके सामने ही मौजूद है और अगर आप चाहें तो उस कम्वख्त से भी मिल सकते हैं जिसने उस वाग में आपको कूएं के अन्दर और इन्दिरा को दुःख के अथाह समुद्र से वाहर किया था।"

भूतनाथ की वात सुनते ही दारोगा काँप गया और घवड़ा कर उन आते हुए दोनों नकावपोशों की तरफ देखने लगा। उसी समय उनमें से एक नकावपोश ने नकाव हटा कर रूमाल से अपने चेहरे को इस तरह पोंछा जैसें पसीना पर कोई अपने चेहरे को साफ करता है लेकिन इससे उसका असल मतलव इतना ही था कि दारोगा उसकी सूरत देख ले।

दारोगा के साथ ही साथ और कई आदमियों की निगाह उस नकावपोश के चेहरे पर गई मगर उनमें से किसी ने भी आज के पहिले उसकी सूरत

देखी थी इसलिए कोई कुछ अनुमान न कर सका, हाँ दारोगा उसकी सूरत देखते ही भय और दुःख से पागल हो गया। वह घबड़ा कर उठ खड़ा हुआ और उसी समय चक्कर खा कर जमीन पर गिरने के साथ ही वेहोश हो गया।

यह कैफियत देख लोगों को वड़ा ही ताज्जुव हुआ। राजा सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह देवीसिंह और राजा गोपालसिंह ने भी उस नकावपोश की सूरत देख ली थी मगर इनमें से न तो किसी ने उसे पहिचाना और न उससे कुछ पूछना ही उचित जाना, अस्तु आज्ञानुसार दर्वार वर्खास्त किया गया और वह कम्वख्त नकटा दारोगा पुनः कैदखाने की अंधेरी कोठरी में डाल दिया गया। उन दोनों नकावपोशों में से एक ने तेजसिंह से पूछा, "कल किसका मुकद्दमा होगा?" जवाव में तेजसिंह ने वलभद्रसिंह का नाम लिया और दोनों नकावपोश वहाँ से रवाना हो गये।

ग्यारहवाँ बयान

दूसरे दिन नियत समय पर फिर दर्वार लगा और वे दोनों नकावपोश भी आ मौजूद हुए। आज के दर्वार में वलभद्रसिंह भी अपने चेहरे पर नकाव डाले हुए थे। आज्ञानुसार पुनः वह नकटा दारोगा और नकली वलभद्रसिंह हाजिर किए गए और सवके पहिले इन्द्रदेव ने नकली वलभद्रसिंह से इस तरह पूछना शुरू किया—

इन्द्रदेव०। क्यों जी, क्या तुम असली वलभद्रसिंह का ठीक ठीक पता न वताओगे?

नकली वलभद्र०। (लम्वी साँस लेकर और महाराजा साहव की तरफ देख कर) कैसा बुरा जमाना हो रहा है। हजार वार पहिचाने जाने पर भी अभी तक मैं नकली वलभद्रसिह ही कहा जाता हूँ और गुनाहों की टोकरी सर पर लादने वाले भूतनाथ को मूछों पर ताव देता हुआ देखता हूँ। (इन्द्रदेव की तरफ देख कर) मालूम होता है कि आपको जमानिया के दारोगा वाला रोजनामचा नहीं मिला, अगर मिलता तो आपको मुझ पर किसी तरह का शक न रहता।

भूत०। (जैपाल अर्थात् नकली वलभद्रसिंह से) तुझे अभी तक हौसला वना ही हुआ है? (तेजसिंह से) कृपानिधान अभी कल की वात है, आप उन वातों को कदापि न भूले होंगे जो मैंने कमलिनीजी के तालाब वाले तिलिस्मी मकान में इस दुष्ट के सामने आप लोगों से उस समय कही थीं जब आप लोग इसे सच्चा मान कर मुझे कैदखाने की हवा खिलाने का बन्दोवस्त कर चुके थे। क्या मैंने नहीं कहा था कि महाराज के सामने मेरा मुकद्दमा एक अनूठा रंग पैदा करके मेरे

बदले में किसी दूसरे ही को कैदखाने की कोठरी का मेहमान बनावेगा? आज वह दिन आपकी आँखों के सामने है, आपके साथ वे लोग भी हर तरह मेरी बातों को सुन रहे हैं जिन्होंने उस दिन इसे असली बलभद्रसिंह मान लिया और मुझे घृणा की दृष्टि से भी देखना पसन्द नहीं करते थे। आशा है आप उस समय की भूल पर अफसोस करेंगे और इस समय मैं बड़े अनूठे रहस्यों को खोल कर जो तमाशा दिखाने वाला हूँ, उसे ध्यान देकर देखेंगे।

तेज०। बेशक ऐसा ही है, औरों के दिल की तो मैं नहीं कह सकता मगर अपनी उस समय की भूल पर जरूर अफसोस करता हूं।

इस कमरे में जिसमें दर्बार लगा हुआ था ऊपर की तरफ कई खिड़कियाँ जिनमें दोहरी चिकें पड़ी हुई थीं जहाँ बैठी लक्ष्मीदेवी कमलिनी वगैरह इन बातों को बड़े गौर से सुन रही थीं। भूतनाथ ने पुनः जैपाल की तरफ देखा और कहा—

भूत०। अब मैं उन बातों को भी जान चुका हूँ जिन्हें उस समय न जानने के कारण मैं सचाई के साथ अपनी बेकसूरी साबित नहीं कर सकता था। कहो अब तुम अपने बारे में क्या कहते हो?

जैपाल०। मालूम होता है कि आज तू अपने हाथ की लिखी हुई उन चीठियों से इनकार किया चाहता है जो तेरी बुराइयों के खजाने को खोलने के काम में आ चुकी हैं और आवेंगी। क्या लक्ष्मीदेवी की गद्दी पर मायारानी को बैठाने की कार्रवाई में तूने सबसे बड़ा हिस्सा नहीं लिया था और क्या वे सब चीठियाँ तेरे हाथ की लिखी हुई नहीं हैं?

भूत०। नहीं नहीं, मैं इस बात से इनकार नहीं करूँगा कि वे चीठियाँ मेरे हाथ की लिखी हुई नहीं हैं, बल्कि इस बात को साबित करूँगा कि लक्ष्मीदेवी के बारे में मैं बिल्कुल बेकसूर हूँ और वे चीठियाँ जिन्हें मैंने अपने फायदे के लिए लिख रक्खा था मुझे नुकसान पहुँचाने का सबब हुईं, तथा इस बात को भी साबित करूँगा कि मैं वास्तव में वह रघुबरसिंह नहीं हूँ जिसने लक्ष्मीदेवी के मामले में कार्रवाई की थी। इसके साथ ही तुझे और इस नकटे दारोगा को भी यह समझ कर अपने उछलते हुए कलेजे को रोकने के लिए तैयार हो जाना चाहिए कि केवल असली बलभद्रसिंह ही नहीं बल्कि इन्दिरा तथा सर्यू भी दम भर में तुम लोगों की कलई खोलने के लिए यहाँ आ चुकी हैं।

जैपाल०। (बेहयाई के साथ) मालूम होता है कि तुम लोगों ने किसी को जाली बलभद्रसिंह बना कर राजा साहब के सामने पेश कर दिया है।

इतना सुनते ही बलभद्रसिंह ने अपने चेहरे से नकाब हटा कर जैपाल की तरफ देखा और कहा, "नहीं नहीं, जाली बलभद्रसिंह बनाया नहीं गया बल्कि

स्वयं यहाँ बैठा हुआ तेरी बातें सुन रहा हूँ।"

बलभद्रसिंह की सूरत देख के एक दफे तो जैपाल हिचका मगर तुरत ही उसने अपने को सम्हाला और परले सिरे की बेहयाई को काम में ला कर बोला, "आहा, हेलासिंह भी यहाँ आ गए! मुझे तुमसे मिलने की कुछ भी आशा न थी, क्योंकि मेरे मुलाकातियों ने जोर देकर कहा था कि हेलासिंह मर गया और अब तुम उसे कदापि नहीं देख सकते।"

बलभद्र०। (मुस्कुराता हुआ तेजसिंह की तरफ देख के) ऐसे बेहया की सूरत भी आज के पहिले आप लोगों ने न देखी होगी! (जैपाल से) मालूम होता है कि तू अपने दोस्त हेलासिंह की मौत का सबब भी किसी दूसरे को ही बताना चाहता है मगर ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि मेरे दोस्त भूतनाथ मेरे साथ हेलासिंह के मामले का सबूत भी बेगम के मकान से लेते आये हैं।

भूत०। हाँ हाँ, वह सबूत भी मेरे पास मौजूद है जो सबसे ज्यादे मेरे खास मामले में काम देगा।

इतना कह के भूतनाथ ने दो चार कागज, दस बारह पन्ने की एक किताब, और हीरे की अँगूठी जिसके साथ छोटा सा पुरजा बँधा हुआ था अपने बटुए में से निकाल कर राजा गोपालसिंह के सामने रख दिया और कहा, "बेगम नौरतन और जमालो को भी तलब करना चाहिए।"

इन चीजों को गौर से देख कर राजा गोपालसिंह ताज्जुब में आ गए और भूतनाथ का मुंह देखने लगे।

भूत०। (गोपालसिंह से) आप जिस समय कृष्णाजिन्न की सूरत में थे उस समय मैंने आपसे अर्ज किया था कि अपनी बेकसूरी का बहुत अच्छा सबूत किसी समय आपके सामने ला रक्खूंगा, सो यह सबूत मौजूद है, इसी से दोनों काम चलेगा।

गोपाल०। (ताज्जुब के साथ)हाँ ठीक है, (वीरेन्द्रसिंह से) ये बड़े काम की चीजें भूतनाथ ने पेश की हैं। बेगम नौरतन और जमालो के हाजिर होने पर मैं इनका मतलब बयान करूँगा।

वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखा और तेजसिंह ने बेगम नौरतन और जमालो के हाजिर होने का हुक्म दिया। इस समय जैपाल का कलेजा उछल रहा था। वह उन चीजों को अच्छी तरह देख नहीं सकता था और न उसे इसी बात का गुमान था कि बेगम के यहाँ से भूतनाथ फलानी चीजें ले आया है।

कैदियों की सूरत में बेगम नौरतन और जमालो हाजिर हुईं। उस समय एक नकाबपोश ने जिसने भूतनाथ की पेश की हुई चीजों को अच्छी तरह देख

लिया था गोपालसिंह से कहा, "मैं उम्मीद करता हूँ कि भूतनाथ की पेश की हुई इन चीजों का मतलब बनिस्वत आपके मैं ज्यादा अच्छी तरह बयान कर सकूँगा, यदि आप मेरी बातों पर विश्वास करके ये चीजें मेरे हवाले करें तो उत्तम हो।"

नकाबपोश की बातें सभी ने ताज्जुब के साथ सुनीं, खास करके जैपाल ने जिसकी विचित्र अवस्था हो रही थी। यद्यपि वह अपनी जान से हाथ धो बैठा था मगर साथ ही इसके यह भी सोचे हुए था कि मेरी चालबाजियों में फँसे हुए भूतनाथ को कोई कदापि बचा नहीं सकता और इस समय भूतनाथ के मददगार जो आदमी हैं वे लोग तभी भूतनाथ को बचा सकेंगे जब मेरी बातों पर पर्दा डालेंगे या मेरे कसूरों की माफी दिला देंगे, तथा जब तक ऐसा न होगा कभी भूतनाथ को अपने पंजे से निकलने न दूँगा। यही सबब था कि ऐसी अवस्था में भी वह बोलने और बातें बनाने से बाज नहीं आता था।

नकाबपोश की बात सुन कर राजा गोपालसिंह ने मुस्कुरा दिया और भूतनाथ की दी हुई चीजें उसके सामने रख कर कहा, "अच्छी बात है, यदि आप मुझसे ज्यादा जानते हैं तो आप ही इस गुत्थी को साफ करें।"

नकाबपोश०। अच्छा होता यदि इन चीजों को पहिले बड़े महाराज और जीतसिंह भी देख लेते।

गोपाल०। मैं भी यही चाहता हूँ।

इतना कह कर राजा गोपालसिंह ने उन चीजों को हाथ में उठा लिया और तेजसिंह की तरफ देखा। तेजसिंह का इशारा पा कर देवीसिंह राजा गोपालसिंह के पास गए और वे चीजें ले कर जीतसिंह के हाथ में दे आए।

महाराज सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह ने भी उन चीजों को अच्छी तरह देखा और इसके बाद महाराज की आज्ञानुसार जीतसिंह ने कहा, "महाराज हुक्म देते हैं कि आज की कार्रवाई यहीं खतम की जाय। इसके बाद की कार्रवाई कल दर्बार-आम में हो और इन पुर्जों का मतलब कल ही के दर्बार में नकाबपोश साहब बयान करें।"

इस बात को सभों ने पसन्द किया खास करके दोनों नकाबपोश और भूतनाथ की भी यही इच्छा थी, अस्तु दर्बार बर्खास्त हुआ और कल के लिए दर्बार-आम की मुनादी की गई।

बारहवां बयान

आज के दर्बार-आम की बैठक भी उसी ढंग की है जैसा कि हम दर्बार-आम के बारे में बयान कर चुके हैं, अगर फर्क है तो सिर्फ इतना ही कि दर्बार-

में बैठने वाले लोगों के वाद उन रईसों अमीरों और अफसरों तथा ऐयारों को दर्जे बदर्जे जगह मिली है जो आज के दर्वार में शरीक हुए हैं और आदमी भी वहुत ज्यादे इकट्ठे हुए मगर आवाज के खयाल से पूरा पूरा सन्नाटा छाया हुआ है। गुलशोर की तो दूर रहे किसी की मजाल नहीं कि विना मर्जी के चुटकी भी बजा सकें। इसके अतिरिक्त नङ्गी तलवार लिए रुआवदार फौजी सिपाहियों के पहरे का इन्तजाम भी वहुत ही मुनासिव और खूबसूरती के साथ किया गया है और ब्राहर के आए हुए मेहमान भी वड़ी दिलचस्पी के साथ वलभद्रसिंह और भूतनाथ का मुकद्दमा सुनने के लिए तैयार हैं।

नकटा दारोगा, जैपाल, वेगम, नौरतन और जमालो के हाजिर होने वाद तेजसिंह ने कल के दर्वार में भूतनाथ की पेश की हुई चीठियाँ अँगूठी और छोटी किताव राजा गोपालसिंह को दे दी और राजा गोपालसिंह ने इस ख्याल से कि कल के और परसों के मामले से भी सभी को आगाही हो जानी चाहिए, जो कुछ पिछले दो दिन के दर्वारे-खास में हुआ था रणधीरसिंह की तरफ देख कर वयान किया और इसके वाद कहा, "आज भी वे दोनों नकावपोश इस दर्वार में हाजिर हैं जिन्हें हम लोग ताज्जुव की निगाहों से देख रहे हैं और नहीं जानते कि कौन हैं, कहाँ के रहने वाले हैं, या इन मामलों से इन्हें क्या सम्वन्ध है जिसके लिए इन दोनों ने यहाँ आने और मुकद्दमे में शरीक होने का कष्ट स्वीकार किया है। फिर भी जव तक ये दोनों अपने को प्रकट न करें हम लोगों को इनका हाल जानने के लिए उद्योग न करना चाहिए और देखना चाहिए कि इनकी कार्रवाइयों और वातों का असर कम्वख्त मुजरिमों पर कैसा पड़ता है।"

यह कह कर गोपालसिंह ने वह अँगूठी चीठियाँ और छोटी किताव नकावपोश के आगे रख दी।

इस दर्वारे-आम वाले मकान में भी ऐसी जगह बनी हुई थी जहाँ से रानी चन्द्रकान्ता और किशोरी कामिनी लक्ष्मीदेवी कमलिनी वगैरह भी यहाँ की कैफियत देख सुन सकती थीं, इसलिए समझ रखना चाहिए कि वे सव भी दर्वार के मामले को देख सुन रही हैं।

उन दोनों में से एक नकावपोश ने भूतनाथ के पेश किए हुए कागजों में से एक कागज उठा लिया और खड़े होकर इस तरह कहना शुरू किया :—

"निःसन्देह आपलोग हम दोनों को ताज्जुव की निगाह से देखते होंगे और यह भी जानने की इच्छा रखते होंगे कि हम लोग कौन और कहाँ के रहने वाले हैं, मगर अफसोस है कि इस समय इस वारे में हम इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकते कि हमलोग ईश्वर के दूत हैं और इन दुष्टों के अच्छे बुरे कर्मों को अच्छी तरह

जानते हैं। यह जैपाल अर्थात् नकली बलभद्रसिंह चाहता है कि अपने साथ भूतनाथ को भी ले डूबे, मगर इसे समझ रखना चाहिए कि भूतनाथ हजार बुरा है पर भी इज्जत और कदर की निगाह से देखे जाने के लायक है। अगर भूतनाथ न होता तो यह जैपाल इस समय असली बलभद्रसिंह बन कर न मालूम और कैसे कैसे अनर्थ करता और असली बलभद्रसिंह की जान न जाने किस तकलीफ के साथ निकलती। अगर भूतनाथ न होता तो आज का यह आलीशान दर्बार हुए हम लोगों के लिए न होता और राजा गोपालसिंह भी इस तरह बैठे हुए दिखाई न देते, क्योंकि भूतनाथ की ही बदौलत दारोगा की गुप्त कुमेटी का अन्त हुआ और इसी की बदौलत कमलिनी भी मायारानी के साथ मुकाबला करने को तैयार हुई। अगर भूतनाथ ने दो काम बुरे किये हैं तो दस काम अच्छे भी किए हैं जो आप लोगों से छिपे नहीं हैं। भूतनाथ के अनूठे कामों का बदला यह नहीं हो सकता कि उसे किसी तरह की सजा मिले बल्कि यही हो सकता है कि उसे मुँह माँगा इनाम मिले, आशा है कि मेरी इस बात को महाराज खुले दिल से स्वीकार भी करेंगे।"

इतना कह कर नकाबपोश चुप हो गया और महाराज की तरफ देखने लगा। महाराज का इशारा पाकर तेजसिंह ने कहा, "महाराज आपकी इस बात को प्रसन्नता के साथ स्वीकार करते हैं।"

इतना सुनते ही भूतनाथ ने खड़े होकर सलाम किया और नकाबपोश ने सलाम करके पुनः इस तरह कहना शुरू किया :—

"बहुतों को ताज्जुब होगा कि जैपाल जब बलभद्रसिंह बन ही चुका था तो इतने दिनों तक कहाँ और क्योंकर छिपा रहा, लक्ष्मीदेवी या कमलिनी से मिला क्यों नहीं ? और इसी तरह से भूतनाथ भी जब जानता था कि बलभद्रसिंह कैद है और कहाँ है तो उसने इस बात को इतने दिनों तक छिपा क्यों रक्खा ? इसका जवाब मैं इस तरह देता हूँ कि अगर भूतनाथ कमलिनी का ऐयार बना हुआ न होता तो यह नकली बलभद्रसिंह अर्थात् जैपाल जिसे भूतनाथ मरा हुआ समझे बैठा था, कभी का प्रकट हो चुका होता, मगर भूतनाथ का डर इसे हद से ज्यादा था और यह चाहता था कि कोई ऐसा जरिया हाथ लग जाय जिससे भूतनाथ इसके सामने सर उठाने लायक न रहे, और तब यह प्रकट होकर अपने को बलभद्रसिंह के नाम से मशहूर करे। आखिर ऐसा ही हुआ अर्थात् वह सन्दूकड़ी जिसकी तरफ देखने की भी ताकत भूतनाथ में नहीं है इसके हाथ लग गई और वह कागज का मुट्ठा भी इसे मिल गया जो भूतनाथ के हाथ का लिखा हुआ था। अपनी इस बात के सबूत में मैं इस (हाथ की चीठी दिखा कर)

को जो आज के बहुत दिन पहिले की लिखी हुई है, पढ़ कर सुनाऊँगा !"

इतना कह कर उसने चीठी पढ़ना शुरू किया जिसमें यह लिखा हुआ था:—

प्यारी बेगम,

वह सन्दूकड़ी तो मेरे हाथ लग गई जो भूतनाथ को बस में करने के लिए जादू का असर रखती है मगर भूतनाथ तथा उसके आदमी बेतरह मेरे पीछे पड़े हुए हैं। ताज्जुब नहीं कि मैं गिरफ्तार हो जाऊँ, इसलिए यह सन्दूकड़ी तुम्हारे पास भेजता हूं, तुम इसे हिफाजत के साथ रखना। मैं भूतनाथ को धोखा देने का बन्दोवस्त कर रहा हूँ। अगर मैं अपना काम पूरा कर सका तो निःसन्देह भूतनाथ को विश्वास हो जायगा कि जैपाल मर गया। उस समय मैं तुम्हारे पास आकर अपनी खुशी का तमाशा दिखाऊँगा। मुझे इस वात का पता भी लग चुका है कि वह कागज की गठरी उसकी स्त्री के सन्दूक में है जिसका जिक्र मैं कई दफे तुमसे कर चुका हूं और जिसके मिले विना मैं अपने को वलभद्रसिंह वना कर प्रकट नहीं कर सकता।

—वही जैपाल।"

पढ़ने के वाद नकावपोश ने वह चीठी गोपालसिंह के आगे फेंक दी और बेगम की तरफ देख के पूछा, "तुझे याद है कि यह चीठी किस महीने में जैपाल ने तेरे पास भेजी थी ?"

बेगम०। वहुत दिन की वात हो गई इसलिए मुझे महीना और दिन तो याद नहीं है।

नकाव०। (जैपाल से) क्या तुझे याद है कि यह चीठी तूने किस महीने में लिखी थी ?

जैपाल०। वह चीठी मेरे हाथ की लिखी हुई होती तो मैं तेरी वात का जवाव देता।

नकाव०। तो यह बेगम क्या कह रही है ?

जैपाल०। तू ही जाने कि तेरी बेगम क्या कह रही है ? मैं तो उसे पहिचानता भी नहीं !

इतना सुनते ही नकावपोश को गुस्सा चढ़ आया। उसने अपने चेहरे से नकाव हटा कर गुस्से भरी निगाहों से जैपाल की तरफ देखा जिसकी ताज्जुब भरी निगाहें पहिले ही से उसकी तरफ जम रही थीं, और इसके बाद तुरत अपना चेहरा ढाँप लिया।

न मालूम उस नकावपोश की सूरत में क्या बात थी कि उसे देखते ही जैपाल की सूरत बिगड़ गई और वह काँपता हुआ नकावपोश की तरफ देखता हुआ अपने हथकड़ी सहित हाथों को जोड़ कर बोला, "बस बस माफ कीजिए,

वेशक यह चीठी मेरे हाथ की लिखी हुई है ! ओफ, मैं नहीं जानता था कि
अभी जीते हो। मैं तुम्हारी तरफ देखना नहीं चाहता हूँ !"

इतना कह कर जैपाल ने दोनों हाथों से अपनी आँखें ढक लीं और
लम्वी सांसें लेने लगा।

इस नकावपोश की सूरत पर सभों की तो नहीं मगर वहुतों की
पड़ी। हमारे राजा साहव, ऐयार लोग, गोपालसिंह, इन्द्रदेव और भूतनाथ
रह ने भी इसे देखा मगर पहिचाना किसी ने भी नहीं, क्योंकि इन लोगों
किसी ने भी आज के पहिले इसे देखा न था। इसके अतिरिक्त पहिले
में नकाबपोश की जो सूरत दिखाई दी थी उसमें और आज की सूरत में
आसमान का फर्क था। इस विषय में लोगों ने यह खयाल कर लिया कि
दिन एक नकावपोश ने सूरत दिखाई थी और आज दूसरे ने, क्योंकि नकाब
पौशाक इत्यादि के खयाल से जाहिर में दोनों नकावपोश एक ही रंग
इन नकावपोशों की तरफ से भूतनाथ का दिल तरद्दुद और खुटके
न था। पहिले दिन उस नकावपोश की जो सूरत भूतनाथ ने देखी
अपने दिल में अच्छी तरह नक्शा कर लिया था—वल्कि एक कागज पर
सूरत (तस्वीर) भी वना कर तैयार कर ली थी और आज भी इसी
उसकी सूरत के विषय में वारीक निगाह से भूतनाथ ने काम लिया मगर
कर रहा था कि ये दोनों कौन हैं जो वेवजह मेरी मदद कर रहे हैं और
वातें इन दोनों को कैसे मालूम हुईं।

थोड़ी देर तक नकावपोश चुप रहा और इसके बाद उसने राजा साहब
तरफ देख के कहा, "महाराज देखते हैं कि मैं इस मुकद्दमे की गुत्थी
तरह सुलझा रहा हूँ और इस जैपाल के दिल पर मेरी सूरत का क्या असर
अस्तु मैं इसी जगह एक और भी गुप्त वात की तरफ इशारा किया चाहता
जिसका हाल शायद अभी तक भूतनाथ को भी मालूम न होगा। वह यह
मनोरमा इस (वेगम की तरफ वता कर) वेगम की मौसेरी वहिन है और
की गुप्त सहेली नन्हों से गहरी मुहव्वत रखती है। यही सवव है कि भूतनाथ
घर से यह गठरी गायव हुई और जैपाल ने भी प्रकट होने के साथ ही लाश
की तरफ इशारा करके भूतनाथ को कावू में कर लिया। इस बात को
तो न जानते होंगे मगर भूतनाथ को इनकार करने की जगह अव नहीं
वाद न रहेगी।"

नकावपोश की इस वात ने भूतनाथ को चौंका दिया और उसने घबड़ा

*देखिए सन्तति ग्यारहवाँ भाग, आठवाँ वयान।

नकाबपोश से कहा, "क्या यह बात आप पूरी तरह से समझ बूझ कर कह रहे हैं?"

नकाब०। हाँ, और यह बात तुम्हारे ही सबब से पैदा हुई थी जिसके सबूत में यह पुर्जा पेश करता हूं।

इतना कह कर नकाबपोश ने अपने जेब में से एक पुर्जा निकाल कर पढ़ा और फिर राजा गोपालसिंह के सामने फेंक दिया। उसमें लिखा हुआ था—

प्यारी नन्हों,

अब तो उन्होंने अपना नाम भी बदल दिया। तुम्हें पता लगाना हो तो 'भूतनाथ' के नाम से पता लगा लेना और मुझे भी चाँद वाले दिन गौहर के यहाँ मिलना जो शेर की लड़की है। —करौंदा की छैंये छैंये।"

इस चीठी ने भूतनाथ को परेशान कर दिया और उसने खड़े होकर कहा, "बस बस, मुझे आपके कहने का विश्वास हो गया और बहुत सी पुरानी बातों का पता भी लग गया।"

नकाबपोश०। मैं इस बारे में और भी बहुत सी बातें कहूँगा मगर अभी नहीं, जब समय तथा बातों का सिलसिला आ जायगा तब। मैं यह तो ठीक ठीक नहीं कह सकता कि तुम्हारी स्त्री तुमसे दुश्मनी रखती है या वह इस बात को जानती है कि नन्हों और बेगम की मुहब्बत है मगर इतना जरूर कहूँगा कि तुमने अपनी स्त्री को गौहर के यहाँ जाने की इजाजत देकर अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार ली। मुझे इन बातों के कहने की कोई जरूरत नहीं थी मगर इस खयाल से बात निकल आई कि तुम भी अपनी गठरी के चोरी जाने का सबब जान जाओ। (तेजसिंह की तरफ देख कर) औरों को क्या कहा जाय, भूतनाथ ऐसे चालाक ऐयार भी औरतों के मामले में चूक ही जाते हैं!

इसी समय बेगम उद्योग करके उठ खड़ी हुई और महाराज की तरफ देख कर जोर से बोली, "दोहाई महाराज की! इस नकाबपोश का यह कहना कि नन्हों नाम की किसी औरत से मुझसे दोस्ती है बिलकुल झूठ है। इसका कोई सबूत नकाबपोश साहब नहीं दे सकते। मैं तो जानती भी नहीं कि नन्हों किस चिड़िया का नाम है। असल तो यह है कि यह केवल भूतनाथ की मदद करने आए हैं और झूठ सच बोल कर अपना काम निकालना चाहते हैं। अगर सरकार उस सन्दूकड़ी को खोलें तो सारी कलई खुल जाय।"

बेगम की बात सुन कर दोनों नकाबपोश गुस्से में आ गये। दूसरा नकाबपोश जो बैठा था उठ खड़ा हुआ और अपने चेहरे की एक झलक लापरवाही के साथ बेगम को दिखा कर क्रोध भरी आवाज में बोला, "क्या ये सब बातें झूठ हैं!"

इस दूसरे नकाबपोश ने अपनी सूरत दिखाने की नीयत से अपनी नकाब को

दम भर के लिए इस तरह हटाया जिससे लोगों को गुमान हो सकता था कि धोखे में नकाब खसक गई, मगर होशियार और ऐयार लोग समझ गए कि जान बूझ के अपनी सूरत दिखाई है। यद्यपि इसके चेहरे पर केवल तेजसिंह गोपालसिंह भूतनाथ जैपाल और बेगम की निगाह पड़ी थी, मगर इस नकाबपोश के चेहरे पर निगाह पड़ते ही बेगम यह कह कर चिल्ला उठी—तू कहाँ ! क्या नन्हों भी गई !!"

बस इससे ज्यादे और कुछ न कह सकी, एक दफे काँप कर बेहोश हो गई और जैपाल भी जमीन पर गिर कर बेहोश हो गया, अतएव मुकद्दमे की कार्रवाई रोक देनी पड़ी।

भूतनाथ तथा हमारे ऐयारों को विश्वास था कि यह दूसरा नकाबपोश वही होगा जिसने पहिले दिन सूरत दिखलाई थी, मगर ऐसा न था। उस सूरत में और इस सूरत में जमीन आसमान का फर्क था, अतएव सभों ने निश्चय कर लिया कि वह कोई दूसरा था और यह कोई और है।

इस सूरत को भी भूतनाथ पहिचानता न था। उसके ताज्जुब का ठिकाना न रहा और उसने निश्चय कर लिया कि आज इनकी खबर जरूर लेंगे, और यही कैफियत हमारे ऐयारों की भी थी।

कैदी पुनः कैदखाने में भेज दिये गये, दोनों नकाबपोश विदा हुए और दर्बार बर्खास्त किया गया।

तेरहवां बयान

दर्बार बर्खास्त होने के बाद जब महाराज सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह वीरेन्द्रसिंह तेजसिंह गोपालसिंह और देवीसिंह एकान्त में बैठे तो यों बातचीत होने लगी—

सुरेन्द्र०। ये दोनों नकाबपोश तो विचित्र तमाशा कर रहे हैं। मालूम होता है कि इन सब मामलों की सबसे ज्यादे खबर इन्हीं लोगों को है।

जीत०। बेशक ऐसा ही है।

वीरेन्द्र०। जिस तरह इन दोनों ने तीन दफे तीन तरह की सूरतें दिखाईं इसी तरह मालूम होता है और भी कई दफे कई तरह की सूरतें दिखावेंगे।

गोपाल०। निःसन्देह ऐसा ही होगा। मैं समझता हूं कि या तो ये दोनों अपनी सूरत बदल कर आया करते हैं या दोनों केवल दो ही नहीं हैं और कई आदमी हैं जो पारी पारी से आकर लोगों को ताज्जुब में डालते हैं और

तेज०। मेरा भी यही खयाल है। भूतनाथ के दिल में भी खलबली पैदा हो रही है। उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह इन लोगों का पता लगाने के लिए परेशान हो रहा है।

देवी० । भूतनाथ का ऐसा विचार कोई ताज्जुब की बात नहीं । जब हम लोग उनका हाल जानने के लिए व्याकुल हो रहे हैं तब भूतनाथ का क्या कहना है।

सुरेन्द्र० । इन लोगों ने मुकदमे की उलझन खोलने का ढंग तो अच्छा निकाला है मगर यह मालूम करना चाहिए कि इन मामलों से इन्हें क्या सम्बन्ध है ?

देवी० । अगर आज्ञा हो तो मैं उनका हाल जानने के लिए उद्योग करूँ ?

वीरेन्द्र० । कहीं ऐसा न हो कि पीछा करने से ये लोग विगड़ जायँ और फिर यहाँ आने का इरादा न करें ।

गोपाल० । मेरे खयाल से तो उन लोगों को इस बात का रंज न होगा कि लोग उनका हाल जानने के लिए पीछा कर रहे हैं, क्योंकि उन लोगों ने काम ही ऐसा उठाया है कि सैकड़ों आदमियों को ताज्जुब हो और सैकड़ों ही उनका पीछा भी करें । इस बात को वे लोग खूब ही समझते होंगे और इस बात का भी उन्हें विश्वास होगा कि भूतनाथ उनका हाल जानने के लिए सबसे ज्यादे कोशिश करेगा।

वीरेन्द्र० । ठीक है और इसी खयाल से वे लोग हर वक्त चौकन्ने भी रहते हों तो कोई ताज्जुब नहीं ।

जीत० । जरूर चौकन्ने रहते होंगे और ऐसी अवस्था में पता लगाना भी कठिन होगा।

गोपाल० । जो हो मगर मेरी इच्छा तो यही है कि स्वयं उनका हाल जानने के लिए उद्योग करूँ ।

सुरेन्द्र० । अगर उनके मामले में पता लगाने की इच्छा ही है तो क्या तुम्हारे यहाँ ऐयारों की कमी है जो तुम स्वयं कष्ट करोगे ? तेजसिंह देवीसिंह पण्डित बद्रीनाथ या और जिसे चाहो इस काम पर मुकर्रर करो ।

गोपाल० । जो आज्ञा, देवीसिंह कहते ही हैं तो इन्हीं को यह काम सुपुर्द किया जाय ।

सुरेन्द्र० । (देवीसिंह) अच्छा जाओ तुम ही इस काम में उद्योग करो, देखें क्या खबर लाते हो ।

देवीसिंह० । (सलाम करके) जो आज्ञा ।

गोपाल० । और इस बात का भी पता लगाना कि भूतनाथ उनका पीछा करता है या नहीं ।

देवी० । जरूर पता लगाऊँगा ।

इस बात से छुट्टी पाने बाद थोड़ी देर तक और बातें हुईं, इसके बाद महाराज आराम करने चले गए तथा और लोग भी अपने ठिकाने पधारे ।

चौदहवां बयान

सबसे ज्यादे फिक्र भूतनाथ को इस बात के जानने की थी कि वे दोनों नकाब-पोश कौन हैं और दारोगा जैपाल तथा बेगम को उन सूरतों से क्या सम्बन्ध जो समय समय पर नकाबपोशों ने दिखाईं थीं या हमारे तथा राजा गोपाल और लक्ष्मीदेवी इत्यादि के सम्बन्ध में हम लोगों से भी ज्यादे जानकारी नकाबपोशों को क्योंकर हुई तथा ये दोनों वास्तव में दो ही हैं या कई।

इन्हीं बातों के सोच विचार में भूतनाथ का दिमाग चक्कर खा रहा था। यों तो उस दरबार में जितने भी आदमी थे सभी उन दोनों नकाबपोशों का हाल जानने के लिए बेताब हो रहे थे और दर्बार बर्खास्त होने तथा अपने डेरे जाने के बाद भी हर एक आदमी इन्हीं दोनों नकाबपोशों का खयाल और करता था मगर किसी की हिम्मत यह न होती थी कि उनके पीछे पीछे जा हाँ, ऐयार और जासूस लोग जिनकी प्रकृति ही ऐसी होती है कि खामख्वाह लोगों के भेद जानने की कोशिश किया करते हैं उन दोनों नकाबपोशों का हाल जानने के फेर में पड़े हुए थे।

भूतनाथ का डेरा यद्यपि तिलिस्मी इमारत के अन्दर बलभद्रसिंह के था मगर वास्तव में वह अकेला न था। भूतनाथ के पिछले किस्से से पाठकों मालूम हो चुका होगा कि उसके साथी नौकर सिपाही या जासूस लोग कम जिनसे वह समय समय पर काम लिया करता था और जो उसके चाल की खबर बराबर रक्खा करते थे। अब यह कह देना आवश्यक है यहाँ भी भूतनाथ के बहुत से आदमी धीरे धीरे आ गए हैं जो सूरत बदल चारों तरफ घूमते और उसकी जरूरतों को पूरा करते हैं और उनमें आदमी खास तिलिस्मी इमारत के अन्दर उसके साथ रहते हैं जिन्हें भूतनाथ अपने खिदमतगार कह कर अपने पास रख लिया है और इस बात को बलभद्र-सिंह भी जानते हैं।

दर्बार बर्खास्त होने के बाद भूतनाथ और बलभद्रसिंह अपने डेरे पर और कुछ जलपान इत्यादि से छुट्टी पा कर यों बातचीत करने लगे :—

बलभद्र०। ये दोनों नकाबपोश तो बड़े ही विचित्र मालूम पड़ते हैं।

भूत०। क्या कहें कुछ अक्ल काम नहीं करती। मजा तो यह है कि हम लोगों की बातों को हम लोगों से भी ज्यादा जानते और समझते हैं।

बलभद्र०। बेशक ऐसा ही है।

भूत०। यद्यपि अभी तक इन नकाबपोशों ने मेरे साथ कुछ बुरा

नहीं किया बल्कि एक तौर पर मेरा पक्ष ही करते रहे हैं तथापि मेरा कलेजा डर के मारे सूखा जाता है यह सोच कर कि जिस तरह आज मेरी स्त्री की एक गुप्त बात इन्होंने प्रकट कर दी जिसे मैं भी नहीं जानता था उसी तरह कहीं मेरी उस सन्दूकड़ी का भेद भी न खोल दें जो जैपाल की दी हुई अभी तक राजा साहब के पास अमानत रक्खी है और जिसके खयाल ही से मेरा कलेजा हरदम कांपा करता है।

बलभद्र०। ठीक है, मगर मेरा खयाल है कि नकाबपोश तुम्हारी उस सन्दूकड़ी का भेद न तो खुद ही खोलेंगे और न खुलने ही देंगे।

भूत०। सो कैसे ?

बलभद्र०। क्या तुम उन बातों को भूल गये जो एक नकाबपोश ने भरे दर्बार में तुम्हारे लिए कही थीं ? क्या उसने नहीं कहा था कि भूतनाथ ने जैसे जैसे काम किए हैं उनके बदले में उसे मुँहमांगा इनाम देना चाहिए और क्या इस बात को महाराज ने भी स्वीकार नहीं किया था ?

भूत०। ठीक है, तो इस कहने से शायद आपका मतलब यह है कि मुँहमांगा इनाम के बदले में मैं उस सन्दूकड़ी को भी पा सकता हूँ ?

बलभद्र०। बेशक ऐसा ही है और उन नकाबपोशों ने भी इसी खयाल से वह बात कही थी, मगर अब यह सोचना चाहिए कि मुकद्दमा तै होने के पहिले मांगने का मौका क्योंकर मिल सकता है।

भूत०। मेरे दिल ने भी उस समय यही कहा था, मगर दो बातों के खयाल से मुझे प्रसन्न होने का समय नहीं मिलता।

बलभद्र०। वह क्या ?

भूत०। एक तो यही कि मुकदमा होने के पहिले इनाम में उस सन्दूकड़ी के मांगने का मौका मुझे मिलेगा या नहीं, और दूसरे यह कि नकाबपोश ने उस समय यह बात सच्चे दिल से कही थी या केवल जैपाल को सुनाने की नीयत से। साथ ही इसके एक बात और भी है।

बलभद्र०। वह भी कह डालो।

भूत०। आज आखिरी मर्तबे दूसरे नकाबपोश ने जो सूरत दिखाई थी उसके बारे में मुझे कुछ भ्रम सा होता है। शायद मैंने उसे कभी देखा है मगर कहाँ और क्योंकर सो नहीं कह सकता।

बलभद्र०। हाँ, उस सूरत के बारे में तो अभी तक मैं भी गौर कर रहा हूँ मगर अब तक कुछ ठीक काम नहीं कर सकता जब तक उन नकाबपोशों का कुछ हाल मालूम न हो जाय।

भूत०। मेरी तो यही इच्छा होती है कि उनका असल हाल जानने का उद्योग करूं, वल्कि कल मैं अपने आदमियों को इस काम के लिए मुस्तैद कर चुका हूँ।

वलभद्र०। अगर कुछ पता लगा सको तो वहुत ही अच्छी बात है, तो यों है कि मेरा दिल भी खुटके से खाली नहीं है।

भूत०। इस समय से संध्या तक और इसके बाद रात भर मुझे छुट्टी यदि आप आज्ञा दें तो मैं जवाव दे लूंगा।

वलभद्र०। कोई चिन्ता नहीं, तुम जाओ, अगर महाराज का कोई खोजने आवेगा तो मैं इस फिक्र में जाऊँ।

भूत०। वहुत अच्छा।

इतना कह कर भूतनाथ उठा और अपने दोनों आदमियों में से एक साथ लेकर मकान के वाहर हो गया।

पन्द्रहवां बयान

तिलिस्मी इमारत से लगभग दो कोस दूरी पर जंगल में पेड़ों के झुरमुट के अन्दर बैठा हुआ भूतनाथ अपने दो आदमियों से बातें कर रहा

भूत०। तो क्या तुम उनके पीछे पीछे उस खोह के मुहाने तक चले गये?

एक आदमी०। जी नहीं, थोड़ी देर तक तो मैं उन नकाबपोशों के पीछे चला गया मगर जव देखा कि वे दोनों बेफिक्र नहीं हैं बल्कि होकर चारो तरफ खास करके मुझे गौर से देखते जाते हैं तब मैं देकर हट गया। दूसरे दिन हम लोग कई आदमी एक दूसरे से अलग बैठ गये और आखिर मेरे साथी ने उन्हें ठिकाने तक पहुंचा कर पता लिया कि ये दोनों इस खोह के अन्दर रहते हैं। उसके बाद हम लोगों ने कर लिया और उसी खोह के पास छिप कर मैंने स्वयं कई दफे उन लोगों को उसी के अन्दर आते जाते देखा और यह भी जान लिया कि वे लोग आदमी से कम नहीं हैं।

भूत०। मेरा भी यही खयाल था कि वे लोग दस वारह से कम खैर जो होगा देखा जायगा, अव मैं संध्या हो जाने पर उस खोह के जाऊँगा, तुम लोग हमारी हिफाजत का खयाल रखना और इसके अतिरिक्त बात का पता लगाना कि जिस तरह मैं उनकी टोह में लगा हुआ हूँ और कोई भी उनका पीछा करता है या नहीं।

आदमी०। जो आज्ञा।

भूत० । हाँ एक बात और पूछना है। तुम लोगों ने जिन दस बारह
दमियों को खोह के अन्दर आते जाते देखा है वे सभी अपने चेहरे पर नकाब
ते हैं या दो चार ?

आदमी० । जी, हम लोगों ने जितने आदमियों को देखा सभों को नकाब-
पाया ।

भूत० । अच्छा तो तुम अब जाओ और अपने साथियों को मेरा हुक्म सुना
होशियार कर दो ।

इतना कह कर भूतनाथ खड़ा हो गया और अपने दोनों आदमियों को विदा
ने के बाद पश्चिम की तरफ रवाना हुआ । इस समय भूतनाथ अपनी असली
त में न था बल्कि सूरत बदल कर अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था ।

यहाँ से लगभग कोस भर की दूरी पर उस खोह का मुहाना था जिसका
भूतनाथ के आदमियों ने दिया था । संध्या होने तक भूतनाथ इधर उधर
ल में घूमता रहा और जब अंधेरा हो गया तब उस खोह के मुहाने पर
च कर चारो तरफ देखने लगा ।

यह स्थान एक घने और भयानक जंगल में था । छोटे से पहाड़ के निचले
से में दो तीन आदमियों के बैठने लायक एक गुफा थी और आगे से पत्थरों
बड़े बड़े ढोकों ने उसका रास्ता रोक रक्खा था । उसके नीचे की तरफ पानी
एक छोटा सा नाला बहता था जिसमें इस समय कम मगर साफ पानी बह
था और उस नाले के दोनों तरफ भी पेड़ों की बहुतायत थी । भूतनाथ ने
टा पाकर उस गुफा के अन्दर पैर रक्खा और सुरंग की तरह रास्ता पाकर
लता हुआ थोड़ी देर तक बेखटके चला गया । आगे जाकर जब रास्ता खराब
लूम हुआ तब उसने बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई और चारो तरफ
ने लगा । सामने का रास्ता बिलकुल बन्द पाया अर्थात सामने की तरफ पत्थर
दीवार थी जो एक चबूतरे की तरह मालूम पड़ती थी मगर वहाँ की छत
नी ऊँची जरूर थी कि आदमी उस चबूतरे के ऊपर चढ़ कर बखूबी खड़ा हो
ता था, अस्तु भूतनाथ उस चबूतरे के ऊपर चढ़ गया और जब आगे की तरफ
ा तो नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ नजर आईं ।

भूतनाथ सीढ़ियों की राह नीचे उतर गया और अन्त में उसने एक छोटे से
जे का निशान देखा जिसमें किवाड़ पल्ले इत्यादि की कोई जगह न थी, केवल
ऐं दाहिने और नीचे की तरफ चौखट का निशान था । दर्वाजे के अन्दर पैर
ने बाद सुरंग की तरह रास्ता दिखाई दिया जिसे गौर से अच्छी तरह देखने

बाद भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा दी और टटोलता हुआ आगे की तरफ थोड़ी दूर जाने बाद सुरंग खतम हुई और रोशनी दिखाई दी। यह रोशनी नाम मात्र की रोशनी किसी चिराग या मशाल की न थी बल्कि आसमान कते हुए तारों की थी क्योंकि वहाँ से आसमान तथा सामने की तरफ एक छोटा सा टुकड़ा दिखाई दे रहा था।

यह मैदान आठ या दस बिगहे से ज्यादे न होगा। बीच में एक बँगला था, उसके आगे वाले दालान में कई आदमी बैठे हुए दिखाई देते चारों तरफ बड़े बड़े जंगली पेड़ों की भी कमी न थी। सन्नाटा देख कर सुरंग के पार निकल गया और एक पेड़ की आड़ देकर इस खयाल से गया कि मौका मिलने पर आगे की तरफ बढ़ेंगे। थोड़ी ही देर में भूतनाथ मालूम हो गया कि उसके पास ही एक पेड़ की आड़ में कोई दूसरा आदमी खड़ा है। यह दूसरा आदमी वास्तव में देवीसिंह था जो भूतनाथ के पीछे थोड़ी देर बाद यहाँ आकर पेड़ की आड़ में खड़ा हो गया था और सूरत बदलने बाद अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था इसलिए एक का पहिचानना कठिन था।

थोड़ी ही देर बाद दो औरतें अपने अपने हाथों में चिराग लिए अन्दर से निकलीं और उसी तरफ रवाना हुईं जिधर पेड़ की आड़ में और देवीसिंह खड़े हुए थे। एक तो भूतनाथ और देवीसिंह का दिल से खुटके में था ही कि मेरे पास ही एक पेड़ की आड़ में कोई दूसरा है, दूसरे इन दो औरतों को अपनी तरफ आते देख और भी घबड़ाये, ही क्या सकते थे, क्योंकि इस समय जो कुछ ताज्जुब की बात उन दोनों उसे देख कर भी चुप रह जाना उन दोनों की सामर्थ्य से बाहर था पास आने पर मालूम हो गया कि उन दोनों की औरतों में से एक तो भूतनाथ स्त्री है जिसे वह लामाघाटी में छोड़ आया था और दूसरी चम्पा।

भूतनाथ आगे बढ़ा ही चाहता था कि पीछे से कई आदमियों ने पकड़ लिया और उसी की तरह देवीसिंह भी बेकाबू कर दिये गये।

* उन्नीसवाँ भाग समाप्त *

भारतजीवन प्रेस, वाराणसी

* श्रीः *

चन्द्रकान्ता सन्तति

बीसवां भाग

पहिला बयान

भूतनाथ और देवीसिंह को कई आदमियों ने पीछे से पकड़ कर अपने काबू में कर लिया और उसी समय एक आदमी ने किसी विचित्र भाषा में पुकार कर कुछ कहा जिसे सुनते ही वे दोनों औरतें अर्थात चम्पा तथा भूतनाथ की स्त्री चिराग फेंक फेंक कर पीछे की ओर लौट गईं और अंधकार के कारण कुछ मालूम न हुआ कि वे दोनों कहां गईं, हां भूतनाथ और देवीसिंह को इतना मालूम हो गया कि उन्हें गिरफ्तार करने वाले भी सब नकाबपोश हैं। भूतनाथ की तरह देवीसिंह भी सूरत बदल कर अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थे।

गिरफ्तार हो जाने के बाद भूतनाथ और देवीसिंह दोनों एक साथ कर दिये गये और दोनों ही को लिए हुए वे सब बीच वाले बंगले की तरफ रवाना हुए। यद्यपि अंधकार के अतिरिक्त सूरत बदलने और नकाब डाले रहने के सबब एक को दूसरे का पहिचानना कठिन था तथापि अन्दाज ही से एक को दूसरे ने जान लिया और शरमिन्दगी के साथ धीरे धीरे उस बंगले की तरफ जाने लगे। जब बंगले के पास पहुंचे तो आगे वाले दालान में जहां दो चिरागों की रोशनी थी, तीन आदमियों को हाथ में नंगी तलवार लिये पहरा देते देखा। वहां पहुंचने पर हमारे दोनों ऐयार को मालूम हुआ कि उन्हें गिरफ्तार करने वाले गिनती में आठ से ज्यादे नहीं हैं। उस समय देवीसिंह और भूतनाथ के दिल में थोड़ी देर के लिए यह बात पैदा हुई कि केवल आठ आदमियों से हमें गिरफ्तार हो जाना उचित न था और अगर हम चाहते तो इन लोगों से अपने को बचा ही लेते, मगर उन दोनों का यह विचार

तुरन्त ही जाता रहा जब उन्होंने कुछ कम बेश यह सोचा कि अगर हम इस
से अपने को बचा लेते तो क्या होता क्योंकि यहां से निकल कर भाग जाना
था और अगर भाग भी जाते तो जिस काम के लिए आये उससे हाथ धो
अस्तु जो होगा देखा जायगा।

इस दालान में अन्दर जाने के लिए दर्वाजा था और उसके आगे लाल
रेशमी पर्दा लटक रहा था। दीवार छत इत्यादि सब रंगीन बने हुए थे और
बनी हुई तरह तरह की तस्वीरें अपनी खूबी और खूबसूरती के सबब देखने वा
दिल खींच लेती थीं परन्तु इस समय उन पर भरपूर और बारीक निगाह
हमारे ऐयारों के लिये कठिन था इसलिए हम भी उनका हाल बयान नहीं कर

जो लोग दोनों ऐयारों को गिरफ्तार कर लाये थे उनमें से एक आदमी
उठा कर बंगले के अन्दर चला गया और चौथाई घड़ी के बाद लौट आ कर
साथियों से बोला, "इन दोनों महाशयों को सर्दार के सामने ले चलो और एक
जाकर इनके लिए हथकड़ी बेड़ी भी ले आओ, कदाचित् हमारे सर्दार इन के
लिए कैदखाने का हुक्म दें।"

अस्तु एक आदमी हथकड़ी बेड़ी लाने के लिए चला गया और वे सब
और भूतनाथ को लिए हुए बंगले की तरफ रवाना हुए।

यह बंगला बाहर से जैसा सादा और मामूली ढंग का मालूम होता
अन्दर से न था। जूता उतार कर चौखट के अन्दर पैर रखते ही हमारे दोनों
ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखने लगे और फौरन ही समझ गये कि इसमें
रहने वाला या इसका मालिक कोई साधारण आदमी नहीं है। देवीसिंह
यह बात सबसे ज्यादे ताज्जुब की थी और इसीलिए उनके दिल में घड़ी
बात पैदा होती थी कि यह स्थान हमारे इलाके में होने पर भी अफसोस
ताज्जुब की बात है कि इतने दिनों तक हम लोगों को इसका पता न लगा

पर्दा उठा कर अन्दर जाने पर हमारे दोनों ऐयारों ने अपने को एक
कमरे में पाया जिसकी छत भी गोल और गुम्बजदार थी और उसमें
बिल्लौरी हांडियां जिनमें इस समय मोमबत्तियां जल रही थीं कायदे
के साथ लटक रही थीं। दीवारों पर खूबसूरत जंगलों और पहाड़ों की
निहायत खूबी के साथ बनी हुई थीं जो इस जगह की ज्यादे रौशनी के
मालूम होती थीं और यही जान पड़ता था कि अभी बन कर तैयार हुई
तस्वीरों में अकस्मात देवीसिंह और भूतनाथ ने रोहतासगढ़ के पहाड़

की भी तस्वीर देखीं जिसके सवव से और तस्वीरों को भी गौर से देखने का शौक इन्हें हुआ मगर ठहरने की मोहलत न मिलने के सवव लाचार थे यहां की जमीन पर सुर्ख मखमली मुलायम गद्दा बिछा हुआ था और सदर दरवाजे के अतिरिक्त और भी तीन दर्वाजे नजर आ रहे थे जिन पर वेशकीमत किमखाब के पर्दे पड़े हुए थे और उनमें मोतियों की झालरें लटक रही थीं। हमारे दोनों ऐयारों को दहिने तरफ वाले दर्वाजे के अन्दर जाना पड़ा जहां गली के ढंग पर रास्ता घूमा हुआ था। इस रास्ते में भी मखमली गद्दा बिछा हुआ था। दोनों तरफ की दीवारें साफ और चिकनी थीं तथा छत के सहारे एक बिल्लौरी कन्दील लटक रही थी जिसकी रौशनी इस सात आठ हाथ लम्बी गली के लिए काफी थी। इस गली को पार करके ये दोनों एक बहुत बड़े कमरे में पहुंचाए गए जिसकी सजावट और खूबी ने उन्हें ताज्जुब में डाल दिया और वे हैरत की निगाह से चारो तरफ देखने लगे।

जंगल मैदान पहाड़ खोह दर्रे झरने शिकारगाह तथा शहरपनाह किले मोरचे और लड़ाई इत्यादि की तस्वीरें चारो तरफ दीवार में इस खूबी और सफाई के साथ बनी हुई थीं कि देखने वाला यह कह सकता था कि बस इससे ज्यादे कारीगरी और सफाई का काम मुसौवर कर ही नहीं सकता। छत पर हर तरह की चिड़ियों और उनके पीछे झपटते हुए बाज बहरी इत्यादि शिकारी परिन्दों की तस्वीरें बनी हुई थीं जो दीवारगीरों और कन्दीलों की तेज रोशनी के सबब बहुत साफ दिखाई दे रही थीं। जमीन पर साफ सुथरा फर्श बिछा हुआ था और सामने की तरफ हाथ भर ऊंची गद्दी पर दो नकाबपोश तथा गद्दी के नीचे और कई आदमी अदब के साथ बैठे हुए थे मगर उनमें से ऐसा कोई भी न था जिसके चेहरे पर नकाब न हो।

देवीसिंह और भूतनाथ को उम्मीद थी कि हम उन्हीं दोनों नकाबपोशों को उसी ढंग की पोशाक में देखेंगे जिन्हें कई दफे देख चुके हैं मगर यहां उसके विपरीत देखने में आया। इस बात का निश्चय तो नहीं हो सकता था कि इस नकाब के अन्दर वही सूरत छिपी हुई है या कोई और लेकिन पोशाक और आवाज यही प्रकट करती थी कि वे दोनों कोई दूसरे ही हैं, मगर इसमें भी कोई शक नहीं कि इन दोनों की पोशाक उन नकाबपोशों से कहीं बढ़ चढ़ के थी जिन्हें भूतनाथ और देवीसिंह देख चुके थे।

जब देवीसिंह और भूतनाथ उन दोनों नकाबपोशों के सामने खड़े हुए तो उन दोनों में से एक ने अपने आदमियों से पूछा, "ये दोनों कौन हैं जिन्हें गिरफ्तार कर लाए हो ?"

एक०। जी इनमें से एक (हाथ का इशारा करके) राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार

देवीसिंह हैं और यह वही मशहूर भूतनाथ है जिसका मुकद्दमा आज कल
वीरेन्द्रसिंह के दर्बार में पेश है।

नकाब०। (ताज्जुब से) हां! अच्छा तो ये दोनों यहां क्यों आये? अपनी
से आये हैं या तुम लोग जबर्दस्ती गिरफ्तार कर लाए हो?

वही आदमी०। इस हाते के अन्दर तो ये दोनों आदमी अपनी
आये थे मगर यहां हम लोग गिरफ्तार करके लाये हैं।

नकाब०। (कुछ कड़ी आवाज में) गिरफ्तार करने की जरूरत क्यों
किस तरह मालूम हुआ कि ये दोनों यहां बदनीयती के साथ आये हैं?
दोनों ने तुम लोगों से कुछ हुज्जत की थी?

वही आदमी०। जी हुज्जत तो किसी से न की मगर छिप छिप कर
और पेड़ की आड़ में खड़े होकर ताक झांक करने से मालूम हुआ कि इ
की नीयत अच्छी नहीं है, इस लिए गिरफ्तार कर लिए गये।

नकाब०। इतने बड़े प्रतापी राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐसे नामी ऐयार
केवल इतनी बात पर इस तरह का बर्ताव करना तुम लोगों को उचित
कदाचित् ये हम लोगों से मिलने के लिए आए हों। हां अगर केवल भूत
साथ ऐसा बर्ताव होता तो ज्यादे रंज की बात न थी।

यद्यपि नकाबपोश की आखिरी बात भूतनाथ को कुछ बुरी मालूम हु
कर ही क्या सकता था? साथ ही इसके यह भी देख रहा था कि नकाबपो
मनसी और सभ्यता के साथ बातें कर रहा है, जिसकी उम्मीद यहां आने
कदापि न थी। अस्तु जब नकाबपोश अपनी बात पूरी कर चुका तो इस
कि उसका नौकर कुछ जवाब दे भूतनाथ बोल उठा—

भूतनाथ०। कृपानिधान, हम लोग यहां किसी बुरी नीयत से नहीं
न तो चोरी करने का इरादा है न किसी को तकलीफ देने का, मैं केवल
स्त्री का पता लगाने के लिए यहां आया हूं, क्योंकि मेरे जासूसों ने मेरी
यहां होने की मुझे इत्तिला दी थी।

नकाब०। (मुस्कुरा कर) शायद ऐसा ही हो, मगर मेरा ख्याल कुछ
ही है। मेरा दिल कह रहा है कि तुम लोग उन दोनों नकाबपोशों का भे
जानने के लिए यहां आये हो जो राजा साहब के दर्बार में जाकर अपने
कामों से लोगों को ताज्जुब में डाल रहे हैं, मगर साथ ही इसके इस बा
समझ लो कि यह मकान उन दोनों नकाबपोशों का नहीं है बल्कि ह

नके मकान में जाने का रास्ता तुम उस सुरंग के अन्दर ही छोड़ आये जिसे करके यहां आये हो अर्थात् हमारे और उनके मकान का रास्ता बाहर से तो क ही है मगर सुरंग के अन्दर आकर दो हो गया है। खैर जो कुछ हो हम इस रे में ज्यादा बातचीत करना उचित नहीं समझते और न तुम लोगों को कुछ कलीफ ही देना चाहते हैं बल्कि अपना मेहमान समझ कर कहते हैं कि अब आ ये हो तो रात भर कुटिया में आराम करो, सवेरा होने पर जहां इच्छा हो चले ाना। (गद्दी के नीचे बैठे हुए एक नकाबपोश की तरफ देख के) यह काम तुम्हारे पुर्द किया जाता है, इन्हें खिला पिला कर ऊपर वाली मंजिल में सोने की जगह ो और सुबह को इन्हें खोह के बाहर पहुंचा दो।

इतना कह कर वह नकाबपोश उठ खड़ा हुआ और उसका साथी दूसरा नकाब-ोश भी जाने के लिए तैयार हो गया। जिस जगह इन नकाबपोशों की गद्दी गी हुई थी उस (गद्दी) के पीछे दीवार में एक दर्वाजा था जिस पर पर्दा लटक हा था। दोनों नकाबपोश पर्दा उठा कर अन्दर चले गये और यह छोटा सा र्बार बर्खास्त हुआ। गद्दी के नीचे बैठने वाले भी मुसाहब सर्दार या नौकर जो ोई हों उठ खड़े हुए और उस आदमी ने जिसे दोनों ऐयारों की मेहमानी का क्म हुआ था देवीसिंह और भूतनाथ की तरफ देख कर कहा—"आप लोग मेहर-ानी करके मेरे साथ आइये और ऊपर की मंजिल में चलिए।" भूतनाथ और वीसिंह भी कुछ उज्र न करके पीछे पीछे चलने के लिए तैयार हो गये।

नकाबपोश की बातों ने भूतनाथ और देवीसिंह दोनों ही को ताज्जुब में डाल दिया। भूतनाथ ने नकाबपोश से कहा था कि मैं अपनी स्त्री की खोज में यहां आया , मगर बहुत कुछ कह जाने पर भी नकाबपोश ने भूतनाथ की इस बात का कोई वाब न दिया और ऐसा करना भूतनाथ के दिल में खुटका पैदा करने के लिए म न था। भूतनाथ को निश्चय हो गया कि उसकी स्त्री यहां है और अवश्य है। उसने सोचा कि जो नकाबपोश राजा बीरेन्द्रसिंह के दर्बार में पहुंच कर बड़ी ड़ी गुप्त बातें इस अनूठे ढंग से खोलते हैं उनके घर में यदि मैं अपनी स्त्री को देखूं ो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हमारे देवीसिंह ने तो एक शब्द भी मुंह निकालना पसन्द न किया, न मालूम इसका सबब क्या था और वे क्या सोच रहे थे मगर कम से कम इस बात की शर्म तो उनको जरूर ही थी कि वे यहां आने के साथ ही गिरफ्तार हो गये। यह तो नकाबपोशों की मेहरबानी थी कि थकड़ी और बेड़ी से उनकी खातिर न की गई।

वह नकाबपोश कई रास्तों से घुमाता फिराता भूतनाथ और देवीसिंह ऊपर वाली मंजिल में ले गया। जो लोग इन दोनों को गिरफ्तार कर वे भी उनके साथ गये।

जिस कमरे में भूतनाथ और देवीसिंह पहुंचाये गये वह यद्यपि न था मगर जरूरी और मामूली ढंग के सामान से सजाया हुआ था। की रोशनी हो रही थी, जमीन पर साफ सुफरा फर्श विछा था और कई भी रक्खे हुए थे, एक संगमर्मर की छोटी चौकी बीच में रक्खी हुई थी, किनारे दो सुन्दर पलंग आराम करने के लिए विछे हुए थे।

भूतनाथ और देवीसिंह को खाने पीने के लिए कई दफा कहा गया मगर दोनों ने इनकार किया अस्तु लाचार होकर नकाबपोशों ने उन दोनों को करने के लिए उसी जगह छोड़ा और स्वयं उन आदमियों को जो दोनों को गिरफ्तार कर लाये थे साथ लिए हुए वहां से चला गया। जाती समय बाहर से दर्वाजे की जंजीर बन्द करते गये और इस कमरे में भूतनाथ और सिंह अकेले रह गये।

दूसरा बयान

जब दोनों ऐयार उस कमरे में अकेले रह गये तब थोड़ी देर तक अपनी और भूल पर गौर करने के बाद आपुस में यों बातें करने लगे :—

देवी०। यद्यपि तुम मुझसे और मैं तुमसे छिप कर यहां आया मगर यहां पर वह छिपना विल्कुल व्यर्थ गया। तुम्हारे गिरफ्तार हो जाने का तो रञ्ज न होना चाहिये क्योंकि तुम्हें अपनी जान की फिक्र पड़ी थी, अतएव भलाई के लिए तुम यहां आये थे और जो कोई किसी तरह का फायदा चाहता है उसे कुछ न कुछ तकलीफ भी जरूर ही भोगनी पड़ती है, मगर दिल्लगी ही दिल्लगी में वेवकूफ बन गया। न तो मुझे इन लोगों से कोई ही था और न यहां आए विना मेरा कुछ हर्ज ही होता था।

भूत०। (मुस्कुरा कर) मगर आने पर आपका भी एक काम निकल क्योंकि यहां अपनी स्त्री को देख कर अब किसी तरह भी जांच किए बिना नहीं रह सकते।

देवी०। ठीक है! मगर भूतनाथ, तुम बड़े ही निडर और हौसले के हो जो ऐसी अवस्था में भी हंसने और मुस्कुराने से बाज नहीं आते!

भूत०। तो क्या आप ऐसा नहीं कर सकते?

देवी० । अगर बनावट के तौर पर हंसने या मुस्कुराने की जरूरत न पड़े तो मैं ऐसा नहीं कर सकता । मैं इस बात को खूब समझता हूं कि तुम्हारे जीवट और हौसले की इतनी तरक्की क्योंकर हुई मगर वास्तव में तुम निराले ढंग के आदमी हो, सच तो यह है कि तुम्हारी ठीक ठीक अवस्था जानना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है ।

भूत० । आपका कहना बहुत ठीक है, मगर तभी तक मेरे जीवट और मर्दानगी का अन्दाजा मिलना कठिन है जब तक कि मैं अपने को मुर्दा समझे हुए हूं, जिस दिन मैं अपने को जिन्दा समझूंगा उस दिन यह बात न रहेगी ।

देवी० । तो क्या तुम अभी तक भी अपने को मुर्दा ही समझे हुए हो ?

भूत० । बेशक, क्योंकि अब मैं बेइज्जती और बदनामी के साथ जीने को मरने के बराबर समझता हूं । जिस दिन मैं राजा बीरेन्द्रसिंह का विश्वासपात्र बनने योग्य हो जाऊंगा उस दिन समझूंगा कि जी गया । मैं आपसे इस किस्म की बातें कदापि न करता अगर आपको अपना मेहरबान और मददगार न समझता । आप को जैपाल या नकली बलभद्रसिंह की पहिली मुलाकात का दिन याद होगा जब आपने मुझ पर मेहरबानी रखने और मुझे अपनाने का शपथपूर्वक एकरार किया था ।

देवी० । बेशक मुझे याद है, जब तुम घबराये हुए और बेबसी की अवस्था में थे तब मैंने तुमसे कहा था कि 'यदि मुझे यह मालूम हो जायगा कि तुम मेरे पिता के घातक हो जिन पर मेरा बड़ा स्नेह था तब भी मैं तुम्हें इसी तरह मुहब्बत की निगाह से देखूंगा जैसे कि अब मैं देख रहा हूं'* । कहो है न यही बात ?

भूत० । बेशक यही शब्द आपने कहे थे ।

देवी० । और अब भी मैं उसी बात का एकरार करता हूं ।

भूत० । (प्रसन्नता से) आपकी सचाई पर भी मुझे उतना ही विश्वास है जितना एक और एक दो होने पर !

देवी० । यह बात तो तुम सच नहीं कहते !

भूत० । (चौंक कर) सो कैसे ?

देवी० । इसी से कि तुमने भेद की कोई बात आज तक मुझसे नहीं कही, यहां तक कि इस जगह आने की इच्छा भी मुझ पर प्रकट न की ।

भूत० । (शरमिन्दगी से सिर नीचा करके) बेशक यह मेरा कसूर है जिसके लिए (हाथ जोड़ कर) मैं आपसे माफी मांगता हूं, क्योंकि मैं इस बात को अच्छी

* देखिये ग्यारहवें भाग का आखिरी बयान ।

तरह देख चुका हूं कि आपने अपनी बात का निर्वाह पूरा पूरा किया।

देवी०। खैर अब भी अगर तुम मुझे अपना विश्वासपात्र समझोगे तो मेरे दिल का रंज निकल जायगा, असल तो यों है कि इस मौके पर तुमसे मिलने के लिए मैंने यहां आने का इरादा भी किया क्योंकि मुझे विश्वास था कि तुम यहां जरूर आओगे। खैर अब तुम अपने कौल और इकरार को याद रक्खो और इस समय इन बातों को इसी जगह छोड़ कर इस बात पर विचार करो कि अब हमलोगों को क्या करना चाहिये। मैं समझता हूं कि तुम्हारे पास तिलिस्मी खंजर मौजूद है।

भूत०। जी हां, (खंजर की तरफ इशारा करके) यह तैयार है।

देवी०। (अपने खंजर की तरफ बता के) मेरे पास भी है।

भूत०। आपको कहां से मिला ?

देवी०। तेजसिंह ने दिया था। यह वही खंजर है जो मनोरमा के पास था। कम्बख्त ने इसके जोड़ की अंगूठी अपनी जंघा के अन्दर छिपा रक्खा था जिसका पता बड़ी मुश्किल से लगा और तब से इस ढंग को मैंने भी पसन्द किया।

भूत०। अच्छा तो अब आपकी क्या राय होती है ? यहां से निकल जाने की कोशिश की जाय या यहां रह कर कुछ भेद जानने की ?

देवी०। इन दोनों खंजरों की बदौलत शायद हम यहां से निकल जायं मगर ऐसा करना न चाहिए। अब जब गिरफ्तार होने की शरमिन्दगी उठा चुके तो बिना कुछ किये चले जाना उचित नहीं है, जिस पर यहां आकर अपनी स्त्री को और तुमने अपनी स्त्री को देख लिया, अब क्या बिना उन दोनों का असल भेद मालूम किये यहां से चलने की इच्छा हो सकती है!

भूत०। बेशक ऐसा ही है........

इतना कहते कहते भूतनाथ यकायक रुक गया क्यों कि उसके कान में किसी के जोर से हंसने की आवाज आई और यह आवाज कुछ पहिचानी हुई सी मालूम पड़ी। देवीसिंह ने भी इस आवाज पर गौर किया और उन्हें भी इस बात का शक हुआ कि इस आवाज को मैं कई दफे सुन चुका हूं। मगर इस बात का कोई निश्चय वे दोनों नहीं कर सके कि यह आवाज किसकी है।

देवीसिंह और भूतनाथ दोनों ही आदमी इस बात को गौर से देखने और जांचने लगे कि यह आवाज किधर से आई या हम उसे किसी तरह देख भी सकते हैं या नहीं जिसकी यह आवाज है। यकायक उन दोनों ने दीवार में ऊपर की तरफ दो सूराख देखे जिनमें आदमी का सर बखूबी जा सकता था। ये सूराख छत से हाथ भर नीचे हट कर बने हुए थे और हवा आने जाने के लिए बनाए गये थे।

दोनों को ख्याल हुआ कि इसी सूराख में से आवाज आती है और उसी समय पुनः हंसने की आवाज आने से इस बात का निश्चय हो गया।

फौरन ही दोनों के मन में यह बात पैदा हुई कि किसी तरह उस सूराख तक पहुंच कर देखना चाहिए कि कुछ दिखाई देता है कि नहीं मगर इस ढंग से कि उस दूसरी तरफ वालों को हमारी इस ढिठाई का पता न लगे।

हम लिख चुके हैं कि इस कमरे में दो चारपाइयां बिछी हुई थीं। देवीसिंह ने उन्हीं दोनों चारपाइयों को उस सूराख तक पहुंचने का जरिया बनाया अर्थात् बिछावन हटा देने के बाद एक चारपाई दीवार के सहारे खड़ी करके दूसरी चारपाई उसके ऊपर खड़ी की और कमन्द से दोनों के पावे अच्छी तरह मजबूती के साथ बांध कर एक प्रकार की सीढ़ी तैयार की। इसके बाद देवीसिंह ने भूतनाथ के कन्धे पर चढ़ कर कन्दील की रोशनी बुझा दी और तब उस चारपाई की अनूठी सीढ़ी पर चढ़ने का विचार किया, उस समय मालूम हुआ कि उस सूराख में से थोड़ी थोडी रोशनी भी आ रही है। भूतनाथ ने नीचे खड़े रह कर चारपाई को मजबूती के साथ थामा और बिनवट के सहारे अंगूठा अड़ाते हुए देवीसिंह ऊपर चढ़ गये। वे सूराख टेढ़े अर्थात् दूसरी तरफ को झुकते हुए थे। एक सूराख में गर्दन डाल कर देवीसिंह ने देखना शुरू किया। उधर नीचे की मंजिल में एक बहुत बड़ा कमरा था जिसकी ऊंची छत इस कमरे की छत के बराबर पहुंची हुई थी जिसमें देवीसिंह और भूतनाथ थे। उस कमरे में सजावट की कोई चीज न थी सिर्फ जमीन पर साफ सुफेद फर्श बिछा हुआ और दो शमादान जल रहे थे। वहां पर देवीसिंह ने दो नकाबपोशों को ऊंची गद्दी पर और चार को गद्दी के नीचे बैठे हुए पाया और एक तरफ जिधर कोई मर्द न था अपनी और भूतनाथ की स्त्री को भी देखा। ये लोग आपुस में धीरे धीरे बातें कर रहे थे। इनकी बातें साफ समझ में नहीं आती थीं, जो कुछ टूटी फूटी बातें सुनने में आईं उनका मतलब यही था कि सुरंग का दर्वाजा बन्द करने में भूल हो जाने के सबब से भूतनाथ और देवीसिंह यहां आ गये अस्तु अब ऐसी भूल न होनी चाहिए जिसमें यहां तक कोई आ सके इत्यादि, इसी बीच में एक और भी नकाबपोश वहां आ पहुंचा जो इस समय अपने नकाब को उलट कर सिर के ऊपर फेंके हुए था। इस आदमी की सूरत देखते ही देवीसिंह ने पहिचान लिया कि भूतनाथ का लड़का और कमला का सगा तथा बड़ा भाई हरनामसिंह है। देवीसिंह ने अपनी जिन्दगी में हरनामसिंह को शायद एक या दो दफे किसी मौके पर देखा होगा इसलिए उसको पहिचान लेने लिए (?) ताज्जुब

के साथ ही साथ शक बना रहा, अस्तु इस शक को मिटाने के लिए देवीसिंह
उतर आये और चारपाई को खुद पकड़ कर भूतनाथ को ऊपर चढ़ने और
सूराख के अन्दर झांकने के लिए कहा ।

जब भूतनाथ चारपाई की विनन के सहारे ऊपर चढ़ गया और उस सूराख
झांक कर देखा तो अपने लड़के हरनामसिंह को पहिचान कर उसे बड़ा ही ता
हुआ और वह बड़े गौर से देखने तथा उन लोगों की बातें सुनने लगा ।

पाठक, ताज्जुब नहीं कि आप इस हरनामसिंह को एक दम ही भूल
क्योंकि जहां तक हमें याद है इसका नाम शायद चन्द्रकान्ता सन्तति के दूसरे
के पांचवें बयान में आ कर रह गया और फिर कहीं इसका जिक्र तक नहीं
यह वह हरनामसिंह नहीं है जो मायारानी का ऐयार था बल्कि यह कमल
बड़ा भाई तथा खास भूतनाथ का पहिला और असल लड़का हरनामसिंह है।
बहुत दिनों के बाद आज यहां देख कर आप निःसन्देह आश्चर्य करेंगे परन्तु
अब हम यह लिखते हैं कि भूतनाथ ने सूराख के अन्दर झांक कर क्या देखा

भूतनाथ ने देखा कि उसका लड़का हरनामसिंह गद्दी के ऊपर बैठे हुए
नकाबपोशों के सामने खड़ा है और सदर दर्वाजे की तरफ बड़े गौर से देख रहा
उसी समय एक आदमी लपेटे हुए मोटे कपड़े का बहुत बड़ा लम्बा पुलिन्दा
हुए आ पहुंचा और इस पुलिन्दे को गद्दी पर रख के खड़ा हो हाथ जोड़ कर
हुई आवाज में बोला, "कृपानाथ, बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूंगा

गद्दी के नीचे बैठे हुए दो आदमियों ने इशारा पाकर लपेटे हुए कपड़े
खोला और तब भूतनाथ ने भी देखा कि वह एक बहुत बड़ी और आदमी के
के बराबर तस्वीर है ।

उस तस्वीर पर निगाह पड़ते ही भूतनाथ की अवस्था बिगड़ गई और डर
के मारे थरथर कांपने लगा । बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने को सम्हाल
न सका और उसके मुंह से एक चीख की आवाज निकल ही गई अर्थात् वह
उठा । उसी समय उसने यह भी देखा कि उसकी आवाज उन लोगों के कान तक
पहुंच गई और इस सबब से वे लोग ताज्जुब के साथ ऊपर की तरफ देखने

भूतनाथ जल्दी के साथ चारपाई के नीचे उतर आया और कांपती हुई
में देवीसिंह से बोला, "ओफ, मैं अपने को सम्हाल न सका और मेरे मुंह से
की आवाज निकल ही गई जिसे उन लोगों ने सुन लिया, ताज्जुब नहीं
लोगों में से कोई यहां आये, अस्तु आप जो उचित समझिये कीजिये, मुझ

मैं अपना हाल आपसे कहूंगा ।" इतना कह भूतनाथ जमीन पर बैठ गया ।

देवीसिंह ने झटपट अपने बटुए में से सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई, दो तीन डपट की बातें कह भूतनाथ को चैतन्य किया और उसके मोढ़े पर चढ़ कर कन्दील जलाने बाद मोमबत्ती बुझा कर बटुए में रख ली और इसके बाद दोनों चारपाई उसी तरह दुरुस्त कर दीं जिस तरह पहिले थी, इसके बाद एक चारपाई पर भूतनाथ को सुला कर पेट दर्द का बहाना करने और हाय हाय करके कराहने के लिए कह कर आप उसी चारपाई के सहारे बैठ गये । उसी समय कमरे का दर्वाजा खुला और तीन चार नकाबपोश अन्दर आते हुए दिखाई पड़े ।

उन आदमियों ने पहिले तो गौर से कमरे के अन्दर की अवस्था देखी और तब उनमें से एक ने आगे बढ़ कर देवीसिंह से पूछा, "क्या अभी तक आप लोग जाग रहे हैं ?"

देवी०। हां (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) इनके पेट में यकायक दर्द पैदा हो गया और बड़ी तकलीफ है, अक्सर दर्द की तकलीफ से चिल्ला उठते हैं ।

नकाब०। (भूतनाथ की तरफ देख के)आज यहां कुछ खाने में भी तो नहीं आया ।

देवी० । पहिले ही की कुछ कसर होगी ।

नकाब० । फिर कुछ दवा वगैरह का बन्दोबस्त किया जाय ?

देवी० । मैंने दो दफे दवा खिलाई है, अब तो कुछ आराम हो रहा है पहिले बड़ी तेजी पर था ।

इतना सुन कर वे लोग चले गये और जाती समय पहिले की तरह दर्वाजा पुनः बन्द करते गये ।

अब फिर उस कमरे में सन्नाटा हो गया और भूतनाथ तथा देवीसिंह को धीरे धीरे बातचीत करने का मौका मिला ।

देवी० । हां अब बताओ तुमने पिछले कमरे में क्या देखा और तुम्हारे मुंह से चीख की आवाज क्यों निकल गई ?

भूत० । ओफ मेरे प्यारे दोस्त देवीसिंह, क्योंकि अब मैं आपको खुशी और सच्चे दिल से अपना दोस्त कह सकता हूं चाहे आप मुझसे हर तरह पर बड़े क्यों न हों, उस कमरे में जो कुछ मैंने देखा वह मुझे दहला देने के लिए काफी था । पहिले तो वहां मैंने अपने लड़के को देखा जिसे उम्मीद है कि आपने भी देखा होगा ।

देवी० । बेशक उसे मैंने देखा था मगर शक मिटाने के लिये तुम्हें दिखाना पड़ा, चाहे वह कोई ऐयार ही सूरत बदले क्यों न हो मगर शकल ठीक वैसी थी ।

भूत० । अगर उसकी सूरत बनावटी नहीं है तो वह मेरा लड़का हरनाम ही है, खैर उसके बारे में तो मुझे कुछ ज्यादे तरद्दुद न हुआ मगर उसके कुछ देर बाद मैंने एक ऐसी चीज देखी कि जिससे मुझे हौल हो गया और मेरे मुंह चीख की आवाज निकल पड़ी।

देवी० । वह क्या चीज थी ?

भूत० । एक बहुत बड़ी तस्वीर थी जिसे एक आदमी ने पहुंच कर उस नका पोश के आगे रख दिया जो गद्दी पर बैठा हुआ था और कहा, "बस मैं इसी दावा भूतनाथ पर करूंगा।"

देवी० । वह किसकी तस्वीर थी, किसी मर्द की या औरत की ?

भूत० । (एक लम्बी सांस लेकर) वह औरत मर्द जङ्गल पहाड़ बस्ती सभी की तस्वीर थी, मैं क्या बताऊं किसकी तस्वीर थी। एक यही बात है मैं अपने मुंह से नहीं निकाल सकता ! मगर अब मैं आपसे कोई बात न छिपा चाहे कुछ ही क्यों न हो। आप यह तो अच्छी तरह जानते ही हैं कि मैं उस की सन्दूकड़ी से कितना डरता हूं जो नकली बलभद्रसिंह की दी हुई अभी तक सिंह के पास है।

देवी० । मैं खूब जानता हूं और उस दिन भी मेरा खयाल उसी सन्दूकड़ी तरफ चला गया था जब एक नकाबपोश ने दर्बार में खड़े होकर तुम्हारी ता की थी और तुम्हें मुंह मांगा इनाम देने के लिए कहा था।

भूत० । ठीक है, बलभद्रसिंह ने भी मुझे यही कहा था कि 'ये नकाब तुम्हारे मददगार हैं और तुम्हारा भेद ढके रहने के लिए महाराज से यह सन्दू तुम्हें दिलाया चाहते हैं मैं भी यह सोच कर प्रसन्न था और चाहता था कि दमा फैसल होने के पहिले ही इनाम मांगने का मुझे कोई मौका मिल जाय, इस तस्वीर ने जिसे मैं अभी देख चुका हूं मेरी हिम्मत तोड़ दी और मैं पुनः जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया हूं।

देवी० । तो उस सन्दूकड़ी से और इस तस्वीर से क्या सम्बन्ध ?

भूत० । वह सन्दूकड़ी अपने पेट में जिस भेद को छिपाये हुए है उसी यह तस्वीर प्रकट करती है। इसके अतिरिक्त मैं सोचे हुए था कि अब उसका दावीदार नहीं है मगर अब मालूम हो गया कि उसका दावीदार भी आ और उसी ने यह तस्वीर नकाबपोश के आगे पेश की !

देवी० । क्या तुम यह नहीं बता सकते कि उस सन्दूकड़ी और इस तस

में क्या भेद है ?

भूत० । (लम्बी सांस लेकर) अब मैं आपसे कोई बात छिपा न रक्खूंगा मगर इतना समझ रखिये कि उस भेद को सुन कर आप अपने ऊपर एक तरद्दुद का बोझा डाल लेंगे ।

देवी० । खैर जो कुछ होगा सहना ही पड़ेगा और तुम्हारी मदद भी करनी ही पड़ेगी, मगर सबके पहिले मैं यह जानना चाहता हूं कि उसभेद से हमारे महाराज का भी कुछ सम्बन्ध है या नहीं ।

भूत० । अगर कुछ सम्बन्ध है भी तो केवल इतना ही कि उस भेद को सुन कर वे मुझ पर घृणा करेंगे, नहीं तो महाराज से और उस भेद से कुछ सम्बन्ध नहीं । मैंने महाराज के विपक्ष में कोई बुरा काम नहीं किया, जो कुछ बुरा किया है वह सिर्फ अपने और अपने दुश्मनों के साथ ।

देवी० । जब महाराज से उस भेद का कोई सम्बन्ध ही नहीं है तो मैं हर तरह पर तुम्हारी मदद कर सकता हूं, अच्छा तो अब बताओ कि वह कौन सा भेद है ?

भूत० । इस समय न पूछिये क्योंकि हम लोग विचित्र स्थान में कैद हैं, ताज्जुब नहीं कि हम दोनों की बातें कोई किसी जगह पर छिप कर सुनता हो, हां मैदान में निकल चलने पर जरूर कहूंगा ।

देवी० । अच्छा यह तो बताओ कि उस आदमी की सूरत भी तुमने अच्छी तरह देख ली या नहीं जिसने यह तस्वीर नकाबपोश के आगे पेश की थी !

भूत० । हां उसकी सूरत मैंने बखूबी देखी थी । मैं उसे खूब पहिचानता हूं, क्योंकि दुनिया में मेरा सबसे बड़ा दुश्मन वही है और उसे अपनी ऐयारी का भी घमंड है ।

देवी० । अगर वह तुम्हारे कब्जे में आ जाये तो ?

भूत० । जरूर उसे फंसाने बल्कि मार डालने की फिक्र करूंगा ! मैं तो उसकी तरफ से बिल्कुल बेफिक्र हो गया था, मुझे इस बात की रत्ती भर उम्मीद न थी कि वह जीता है ।

देवी० । खैर कोई चिन्ता नहीं जैसा होगा देखा जायगा, तुम अभी से हताश क्यों हो रहे हो !

भूत० । अगर वह सन्दूकड़ी मुझे मिल जाती और उसके खुलने की नौबत न आती तो....

देवी० । वह सन्दूकड़ी मैं तुम्हें दिला दूंगा और उसे किसी के सामने खुलने भी न दूंगा, उसकी तरफ से तुम बेफिक्र रहो ।

भूत० । (मुहब्बत से देवीसिंह का पंजा पकड़ के) अगर ऐसा करो तो क्या बात है !

देवी० । ऐसा ही होगा । खैर, अब यह सोचना चाहिए कि इस समय लोगों को क्या करना उचित है, मैं समझता हूं कि सुबह होने के साथ ही लोग इस हद के वाहर पहुंचा दिये जायेंगे ।

भूत० । मेरा खयाल भी यही है, लेकिन अगर ऐसा हुआ तो आपकी मेरी स्त्री के बारे में किसी बात का पता न लगेगा ।

देवीसिंह और भूतनाथ इस विषय पर बहुत देर तक बातचीत और पक्की करते रहे, यहां तक कि सबेरा हो गया, कई नकाबपोश उस कमरे को कर भूतनाथ तथा देवीसिंह के पास पहुंचे और उन्हें वाहर चलने के लिए कहा।

तीसरा बयान

महाराज से जुदा होकर देवीसिंह और बलभद्रसिंह से विदा होकर भूत ये दोनों ही नकाबपोशों का पता लगाने के लिए चले गये । बचा हुआ दिन तमाम रात तो किसी ने इन दोनों की खोज न की मगर दूसरे दिन सवेरा के साथ ही इन दोनों की तलबी हुई और थोड़ी ही देर में जवाब मिला कि दोनों का पता नहीं है कि कहां गये और अभी तक क्यों नहीं आये । हमारे महाराज समझ गये कि देवीसिंह की तरह भूतनाथ भी उन्हीं दोनों नकाबपोशों का पता लगाने चला गया, मगर उन दोनों के न लौटने से एक तरह की चिन्ता हो गई और लाचार होकर आज दर्बारे-आम का जलसा बन्द रखना पड़ा।

दर्बारे-आम के बन्द होने की खबर वहां वालों को तो मिल गई मगर वे नकाबपोश अपने मामूली समय पर आ ही गये और उनके आने की इत्तिला वीरेन्द्रसिंह से की गई । उस समय राजा बीरेन्द्रसिंह एकान्त में तेजसिंह तथा भी कई ऐयारों के साथ बैठे हुए देवीसिंह और भूतनाथ के बारे ही में बातें कर रहे थे । उन्होंने ताज्जुब के साथ नकाबपोशों का आना सुना और उसी समय हाजिर करने का हुक्म दिया ।

हाजिर होकर दोनों नकाबपोशों ने बड़े अदब से सलाम किया और आज्ञा पाकर महाराज से थोड़ी दूर पर तेजसिंह के बगल में बैठ गये । इस समय लिये का दर्बार था तथा गिनती के मामूली आदमी बैठे हुए थे, राजा बीरेन्द्रसिंह को नकाबपोश की बातें सुनने को शौक था इसलिए तेजसिंह के बगल ही में बैठने की आज्ञा दी और स्वयं बातचीत करने लगे ।

बीरेन्द्र० । आज भूतनाथ के न होने से मुकद्दमे की कार्रवाई रोक देनी पड़ी।

नकाब० । (अदब से हाथ जोड़ कर) जी हां, मैंने यहां पहुंचने के

सुना कि 'कल से देवीसिंहजी और भूतनाथ का पता नहीं है इसलिए आज दर्बार न होगा'। मगर ताज्जुब की बात है कि भूतनाथ और देवीसिंहजी एक साथ कहां चले गये। मैं तो यही समझता हूं कि भूतनाथ हम लोगो का पता लगाने के लिए निकला है और उसका ऐसा करना कोई ताज्जुब की बात भी नहीं मगर देवीसिंहजी विना मर्जी के चले गये इस बात का ताज्जुब है।

बीरेन्द्र०। देवीसिंह बिना मर्जी के नहीं चले गये वलिक हमसे पूछ के गये हैं।

नकाव०। तो उन्हें महाराज ने हम लोगो का पीछा करने की आज्ञा क्यों दी? हम लोग तो महाराज के तावेदार स्वयं ही अपना भेद कहने के लिए तैयार हैं और शीघ्र ही समय पाकर अपने को प्रगट करेहींगे, केवल मुकदमे की उलझन खोलने और कैदियों को निरुत्तर करने के लिए अपने को छिपाये हैं।

तेज०। आप लोगों को शायद यह मालूम नहीं है कि भूतनाथ ने देवीसिंह को अपना दोस्त वना लिया है। जिस समय भूतनाथ के मुकदमे का वीज रोपा गया था उसके कई घंटे पहिले ही देवीसिंह ने उसकी सहायता करने की प्रतिज्ञा कर दी थी क्योंकि वह भूतनाथ की चालाकी ऐयारी तथा उसके अच्छे कामों से प्रसन्न थे।

नकाव०। ठीक है तब तो ऐसा हुआ ही चाहिये परन्तु कोई चिन्ता नहीं, भूतनाथ वास्तव में अच्छा आदमी है और उसे महाराज की सेवा का उत्साह भी है।

तेज०। इसके अतिरिक्त उसने हमारे कई काम भी बड़ी खूवी के साथ किये हैं।

नकाव०। ठीक है।

तेज०। हां मैं एक बात आपसे पूछना चाहता हूं।

नकाव०। आज्ञा!

तेज०। निःसन्देह भूतनाथ और देवीसिंह आप लोगों का भेद लेने के लिए गये हैं, अस्तु आश्चर्य नहीं कि वे दोनों उस ठिकाने तक पहुंच गये हों जहां आप लोग रहते हैं और आपको उनका कुछ हाल भी मालूम हुआ हो!

नकाव०। न तो वे हम लोगों के डेरे तक पहुंचे और न हम लोगों को उनका कुछ हाल ही मालूम है। हम लोगों के विषय में हजारों आदमी बल्कि यों कहना चाहिए कि आज कल यहां जितने लोग इकट्ठे हो रहे हैं सभी आश्चर्य करते हैं और इसलिए जब हम लोग यहां आते हैं तो सैकड़ों आदमी चारो तरफ से घेर लेते हैं और जाते समय तो कोसों तक पीछा करते हैं इसलिए हम लोगों को भी बहुत घूम फिर कर तथा लोगों को भुलावा देते हुए अपने डेरे की तरफ जाना पड़ता है।

तेज०। तब तो उन दोनों का न लौटना आश्चर्य है।

नकाब० । बेशक, अच्छा तो आज हम लोग कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का कुछ हाल महाराज को सुनाते जायं, आखिर आ गये हैं तो कुछ करना ही चाहिये ।

वीरेन्द्र० । (ताज्जुब से) उनका कौन सा हाल ?

नकाब० । वही तिलिस्म के अन्दर का हाल । जब तक राजा गोपालसिंह थे तब तक का हाल तो उनकी जुबानी आपने सुना ही होगा मगर उसके बाद हुआ और तिलिस्म में उन दोनों भाइयों ने क्या किया सो न सुना होगा। वह हाल हम लोग सुना सकते हैं, यदि आज्ञा हो तो........

वीरेन्द्र० । (ज्यादे ताज्जुब के साथ) कब तक का हाल आप सुना सकेंगे

नकाब० । आज तक का हाल, बल्कि आज के बाद भी रोज रोज का तब तक बराबर सुना सकते हैं जब तक उनके यहां आने में दो घण्टे की देर

वीरेन्द्र० । हम बड़ी प्रसन्नता से उनका हाल सुनने के लिए तैयार हैं, हम चाहते हैं कि गोपालसिंह और अपने पिताजी के सामने वह हाल सुनें।

नकाब० । जो आज्ञा, मैं सुनाने के लिए तैयार हूं ।

वीरेन्द्र० । मगर वह सब हाल आप लोगों को कैसे मालूम हुआ, होता होगा ?

नकाब० । (हाथ जोड़ कर) इसका जवाब देने के लिए मैं अभी तैयार नहीं हूं, लेकिन यदि महाराज मजबूर करेंगे तो लाचारी है क्योंकि हम लोग महाराज को अप्रसन्न भी नहीं किया चाहते ।

वीरेन्द्र० । (मुस्कुरा कर) हम तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करना नहीं चाहते ।

इतना कह के वीरेन्द्रसिंह ने तेजसिंह की तरफ देखा । तेजसिंह स्वयं महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास गये और थोड़ी ही देर में लौट आकर बोले, "महाराज बैठे हैं और आप लोगों का इन्तजार कर रहे हैं ।" सुनते ही उठ खड़े हुए और राजा सुरेन्द्रसिंह की तरफ चले। उसी समय तेजसिंह ऐयार राजा गोपालसिंह के पास भेज दिया ।

चौथा बयान

राजा सुरेन्द्रसिंह का दरबारे खास लगा हुआ है । जीतसिंह वीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह और भैरोसिंह वगैरह अपने खास ऐयारों के अतिरिक्त कोई गैर

यहां दिखाई नहीं देता। महाराज की आज्ञानुसार एक नकाबपोश ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल इस तरह कहना शुरू किया :—

नकाब०। जब तक राजा गोपालसिंह वहां रहे तब तक का हाल तो इन्होंने आपसे कहा ही होगा, अब मैं उसके बाद का हाल बयान करूंगा।

राजा गोपालसिंह से विदा हो दोनों कुमार उसी बावली पर पहुँचे। जब राजा गोपालसिंह सभों को लिए हुए वहां से चले गये उस समय सवेरा हो चुका था, अतएव दोनों भाई जरूरी काम और प्रातः कृत्य से छुट्टी पाकर बावली के अन्दर उतरे। निचली सीढ़ी पर पहुँच कर आनन्दसिंह ने अपने कुल कपड़े उतार दिए और केवल लंगोट पहिरे हुएं जल के अन्दर कूद कर बीचोबीच में जा गोता लगाया। वहां जल के अन्दर एक छोटा सा चबूतरा था और उस चबूतरे के बीचोबीच में लोहे की मोटी कड़ी लगी हुई थी। जल में जा कर उसी को आनन्दसिंह ने उखाड लिया और इसके बाद जल के बाहर चले आए। बदन पोंछ कर कपड़े पहिर लिए, लंगोट सूखने के लिए फैला दिया, और दोनों भाई सीढ़ी पर बैठ कर जल के सूखने का इन्तजार करने लगे।

जिस समय आनन्दसिंह ने जल में जाकर वह लोहे की कड़ी निकाल ली उसी समय से बावली का जल तेजी के साथ घटने लगा, यहां तक कि दो घण्टे के अन्दर ही बावली खाली हो गई और सिवाय कीचड़ के उसमें कुछ भी न रहा और वह कीचड़ भी मालूम होता था कि बहुत जल्द सूख जायगा क्योंकि नीचे की जमीन पक्की और संगीन बनी हुई थी, केवल नाम मात्र को मिट्टी या कीचड़ का हिस्सा उस पर था। इसके अतिरिक्त किसी सुरंग या नाली की राह निकल जाते हुए पानी ने भी बहुत कुछ सफाई कर दी थी।

बावली के नीचे वाली चारो तरफ की अन्तिम सीढ़ी लगभग तीन हाथ के ऊँची थी और उसकी दीवार में चारो तरफ चार दर्वाजों के निशान बने हुए थे जिसमें से पूरब तरफ वाले निशान को दोनों कुमारों ने तिलिस्मी खंजर से साफ किया। जब उसके आगे वाले पत्थरों को उखाड़ कर अलग किया तो अन्दर जाने के लिए रास्ता दिखाई दिया जिसके विषय में कह सकते हैं कि वह एक सुरंग का मुहाना था और इस ढंग से बन्द किया गया था जैसा कि ऊपर बयान कर चुके हैं।

इसी सुरंग के अन्दर कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को जाना था मगर पहर भर तक उन्होंने इस ख्याल से उसके अन्दर जाना मोकूफ रक्खा था कि उसके अन्दर से पुरानी हवा निकल कर ताजी हवा भर जाय क्योंकि यह बात उन्हें पहिले

ही से मालूम थी कि दर्वाजा खुलने के बाद थोड़ी ही देर में उसके अन्दर की हवा साफ हो जायगी।

पहर भर दिन बाकी था जब दोनों कुमार उस सुरंग के अन्दर घुसे और तिलिस्मी खंजर की रोशनी करते हुए आधे घण्टे तक बराबर चले गये। सुरंग में कई ऐसे सूराख बने हुए थे जिनमें से रोशनी तो नहीं मगर हवा तेजी के साथ आती थी और यही सबब था कि उसके अन्दर की हवा थोड़ी देर में साफ हो गई।

आप सुन चुके होंगे कि तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में (जहां के देवमन्दिर में दोनों कुमार कई दिन तक रह चुके हैं) देवमन्दिर के अतिरिक्त चारो तरफ मकान बने हुए थे* और उनमें से उत्तर तरफ वाला मकान गोलाकार स्याह पत्थर का बना हुआ तथा उसके चारो तरफ चर्खियां और तरह तरह के कल पुर्जे लगे हुए थे। उस सुरंग का दूसरा मुहाना उसी मकान के अन्दर था और इसी सुरंग के बाहर होकर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अपने को उसी मकान में पाया। इस मकान में चारो तरफ गोलाकार दालान के अतिरिक्त कोई कोठरी या कमरा न था। बीच में एक संगमर्मर का चबूतरा था और उस पर स्याह पत्थर का एक मोटा आदमी बैठा हुआ था जो जांच करने पर मालूम हुआ कि लोहे का है। उसी आदमी के सामने की तरफ के दालान में सुरंग का वह मुहाना था जिसमें से दोनों कुमार निकले थे। उस सुरंग के बगल में एक और सुरंग थी और उसके नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं। चारो तरफ देख भाल करने के बाद दोनों कुमार उसी सुरंग में उतर गये और आठ दस सीढ़ी नीचे उतर जाने के बाद देखा कि सुरंग खुलासी तथा बहुत दूर तक चली गई है। लगभग सौ कदम तक दोनों कुमार बेखटके चले गये और इसके बाद एक छोटेसे बाग में पहुंचे जिसमें खुशनुमा पेड़ पत्तों का तो कहीं नाम निशान भी न था हां जंगली बैर मकोय इत्यादि के पेड़ों की कमी न थी। दोनों कुमार सोचे हुए थे कि यहां भी और जगहों की तरह हम सन्नाटा पाएंगे अर्थात् किसी आदमी की सूरत दिखाई न देगी मगर ऐसा न था। वहां कई आदमियों को इधर उधर घूमते देख दोनों कुमारों को बड़ा ताज्जुब हुआ और वे गौर से उन आदमियों की तरफ देखने लगे जो शक्ल से जंगली और भयानक मालूम पड़ते थे।

वे आदमी गिनती में पांच थे और उन लोगों ने भी दोनों कुमारों को देख के उतना ही ताज्जुब किया जितना कुमारों ने उनको देख कर। वे लोग इस

* देखिये नौवां भाग, पहिला बयान।

कुमार के पास चले आये और उनमें से एक ने आगे बढ़ कर कुमार से पूछा, "क्या आप दोनों के साथ भी वही सलूक किया गया जो हम लोगों के साथ किया गया था? मगर ताज्जुब है कि आपके कपड़े और हरवे छीने नहीं गए और आप लोगों के चेहरे पर भी किसी तरह का रंज मालूम नहीं पड़ता!"

इन्द्र०। तुम लोगों के साथ क्या सलूक किया गया था और तुम लोग कौन हो?

आदमी०। हम लोग कौन हैं इसका जवाब देना सहज नहीं है और न आप थोड़ी देर में इसका जवाब सुन ही सकते हैं, मगर आप अपने बारे में सहज में बता सकते हैं कि किस कसूर पर यहां पहुँचाए गये।

इन्द्र०। हम दोनों भाई तिलिस्म को तोड़ते और कई कैदियों को छुड़ाते हुए अपनी खुशी से यहां तक आये हैं और अगर तुम लोग कैदी हो तो समझ रक्खो कि अब इस कैद की अवधि पूरी हो गई और बहुत जल्द अपने को स्वतन्त्र विचरते हुए देखोगे।

आदमी०। हमें कैसे विश्वास हो कि जो कुछ आप कह कह रहे हैं वह सच है।

इन्द्र०। अभी नहीं तो थोड़ी देर में स्वयं विश्वास हो जायगा।

इतना कह कर कुमार आगे की तरफ बढ़े और वे लोग उन्हें घेरे हुए साथ साथ जाने लगे। इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को विश्वास हो गया कि सर्यू की तरह ये लोग भी इस तिलिस्म में कैद किये गये हैं और दारोगा या मायारानी ने इनके साथ यह सलूक किया है, और वास्तव में बात भी ऐसी ही थी।

इन आदमियों की उम्र यद्यपि बहुत ज्यादे न थी मगर रंज गम और तकलीफ की बदौलत सूख कर कांटा हो गये थे। सर और दाढ़ी के बालों ने बढ़ और उलझ कर उनकी सूरत डरावनी कर दी थी और चेहरे की जर्दी तथा गढ़हे में घुसी हुई आंखें उनकी बुरी अवस्था का परिचय दे रही थीं।

इस बाग में पानी का एक चश्मा था और वही इन कैदियों की जिन्दगी का सहारा था मगर इस बात का पता नहीं लग सकता था कि पानी कहां से आता है और निकल कर कहां चला जाता है। इसी नहर की बदौलत यहां की जमीन का बहुत बड़ा हिस्सा तर हो रहा था और इस सबब से उन कैदियों को केला वगैरह खाकर अपनी जान बचाये रहने का मौका मिलता था।

बाग के बीचोबीच में बीस या पचीस हाथ ऊंचा एक बुर्ज था और उस बुर्ज के चारो तरफ स्याह पत्थर का कमर बराबर ऊंचा चबूतरा बना हुआ था, मगर इस बात का पता नहीं लगता था कि इस बुर्ज पर चढ़ने के लिए कोई रास्ता भी

है या नहीं या अगर है तो कहां से है। दोनों कुमार उस चबूतरेपर बेधड़क जा
बैठ गये और तब इन्द्रजीतसिंह ने उन कैदियों की तरफ देख के कहा, "कहो क
तुम्हें विश्वास हुआ कि जो कुछ हमने कहा था सच है ?"

आदमी०। जी हां, अब हम लोगों को विश्वास हो गया, क्योंकि हम लो
ने इस चबूतरे को कई दफे आजमा कर देख लिया है। इस पर बैठना तो दूर र
हम इसे छूने के साथ ही बेहोश हो जाते थे मगर ताज्जुब है कि आप पर इस
असर कुछ भी नहीं होता।

इन्द्र०। इस समय तुम लोग भी इस चबूतरे पर बैठ सकते हो जब तक हम बैठे

आदमी०। (चबूतरा छूने की नीयत से बढ़ता हुआ) क्या ऐसा हो सकता

इन्द्र०। आजमा के देख लो।

उस आदमी ने चबूतरा छूआ मगर उस पर कुछ बुरा असर न हुआ और
कुमार की आज्ञा पा वह चबूतरे पर बैठ गया। उसकी देखा देखी सभी आद
उस चबूतरे पर बैठ गये और जब किसी तरह का बुरा असर होते न देखा तब
जोड़ कर कुमार से बोले, "अब हम लोगों को आपकी बात में किसी तरह का
न रहा, आशा है कि आप कृपा करके अपना परिचय देंगे।"

जब कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना परिचय दिया तब सब के सब उनके
पर गिर पड़े और डबडबाई आंखों से उनकी तरफ देख के बोले, "दोहाई है महा
की, हमारे मामले पर विचार होकर दुष्टों को दण्ड मिलना चाहिये।"

इतना कह कर नकाबपोश चुप हो गया और कुछ सोचने लगा। इसी
बीरेन्द्रसिंह ने उससे कहा, "मालूम होता है कि उस चबूतरे में बिजली का
था और इस सबब से उसे कोई छू नहीं सकता था, मगर दोनों लड़कों के
बिजली वाला तिलिस्मी खंजर मौजूद था और उसके जोड़ की अंगूठी भी, इस
तब तक के लिये उसका असर जाता रहा जब तक दोनों लड़के उस पर बैठे र

नकाब०। (हाथ जोड़ कर) जी बेशक यही बात है।

बीरेन्द्र०। अच्छा तब क्या हुआ ?

नकाब०। इसके बाद कुमार ने उन सभों का हाल पूछा और उन सभों ने
रो कर अपना हाल बयान किया।

बीरेन्द्र०। उन लोगों ने अपना हाल क्या कहा ?

नकाब०। मैं यही सोच रहा था कि उन लोगों ने जो कुछ अपना हाल
किया वह मैं इस समय कहूं या न कहूं।

तेज० । क्या उन लोगों का हाल कहने में कोई हर्ज है ? आखिर हम लोगों को मालूम तो होगा ही ।

नकाब० । जरूर मालूम होगा और मेरी ही जुबानी मालूम होगा, मैं जो कहने से रुकता हूँ वह केवल एक ही दो दिन के लिए, हमेशा के लिए नहीं ।

तेज० । अगर यही बात है तो हमें दो एक दिन के लिए कोई जल्दी भी नहीं।

नकाब० । (हाथ जोड़ कर) अस्तु अब आज्ञा हो तो हमलोग डेरे पर जांय । कल पुनः सभा में उपस्थित होकर यदि देवीसिंह और भूतनाथ न आये तो कुमार का हाल सुनावेंगे ।

सुरेन्द्र० । (इशारे से जाने की आज्ञा दे कर) तुम दोनों ने इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का हाल सुना कर अपने विषय में हम लोगों का आश्चर्य और भी बढ़ा दिया ।

दोनों नकाबपोश उठ खड़े हुए और अदबके साथ सलाम करके वहांसे रवाना हुए।

पांचवां बयान

देवीसिंह और भूतनाथ की यह इच्छा न थी कि आज सवेरा होते ही हम लोग यहां से चले जांय और अपनी स्त्रियों के विषय में किसी तरह की जांच न करें, मगर लाचारी थी क्योंकि नकाबपोशों की इच्छा के विरुद्ध वे यहां रह नहीं सकते थे, साथ ही इसके मालिक मकान की मेहरबानी और मीठे बर्ताव का भी उन्हें वैसा ही खयाल था जैसा कि इस मजबूरी की अवस्था में होना चाहिए । सवेरा होने पर जब कई नकाबपोश उनके सामने आये और उन्हें बाहर निकलने के लिए कहा तो देवीसिंह और भूतनाथ उठ खड़े हुए और कमरे के बाहर निकल उनके पीछे पीछे रवाना हुए । जब मकान के नीचे उतर कर मैदान में पहुँचे तो देवीसिंह का इशारा पाकर भूतनाथ ने एक नकाबपोश से कहा, "हम तुम्हारे मालिक से एक दफे और मिलना चाहते हैं ।

नकाब० । इस समय उनसे मुलाकात नहीं हो सकती ।

भूत० । अगर घण्टे या दो घण्टे में मुलाकात हो सके तो हम लोग ठहर जांय।

नकाब० । नहीं, अब मुलाकात हो ही नहीं सकती, उन्होंने रात ही को जो हुक्म दे रक्खा था हम लोग उसको पूरा कर रहे हैं ।

भूत० । हम लोगों को कोई जरूरी बात पूछनी हो तो ?

नकाब० । एक चीठी लिख कर रख जाओ, उसका जवाब तुम्हारे पास पहुँच जायगा ।

भूत०। अच्छा यह बताओ कि यहां हम लोगों ने गिरफ्तार होने के पहिले जिन दो औरतों को देखा था उनसे भी मुलाकात हो सकती है या नहीं?

नकाब०। नहीं, क्या उन लोगों को आपने खानगी समझ रक्खा है?

दूसरा नकाब०। इन सब फजूल बातों से कोई मतलब नहीं और न हम लोगों को इतनी फुरसत ही है। आप लोग नाहक हम लोगों को रंज करते हैं और हमारे मालिक की उस मेहरबानी को एक दम भूल जाते हैं जिसकी बदौलत आप लोग कैदखाने की हवा खाने से बच गये?

भूत०। (कुछ क्रोध भरी आवाज में) अगर हम लोग न जांय तो तुम क्या करोगे?

नकाब०। (रंज के साथ) जबर्दस्ती निकाल बाहर करेंगे। आप लोग अपने तिलिस्मी खंजर के भरोसे न भूलियेगा, ऐसे ऐसे तुच्छ खंजरों का काम हम लोग अपने नाखूनों से लेते हैं। बस सीधी तरह कदम उठाइये और इस जमीन को अपनी मिलकियत न समझिये।

नकाबपोशों की बातें यद्यपि भूतनाथ और देवीसिंह को बुरी मालूम हुईं मगर बहुत सी बातों को सोच विचार कर चुप हो रहे और तकरार करना उचित न जाना। सब नकाबपोशों ने मिल कर उन्हें खोह के बाहर किया और उस समय भूतनाथ और देवीसिंह से एक नकाबपोश ने कहा, "बस अब इसके अन्दर आने का ख्याल न कीजियेगा, कल दर्वाजा खुला रह जाने के कारण आप लोग चले आये मगर अब ऐसा मौका भी न मिलेगा।"

नकाबपोशों के चले जाने बाद भूतनाथ और देवीसिंह वहां से रवाना हुए और कुछ दूर जाकर जंगल में एक घने पेड़ की छाया देख कर बैठ के यों बात-चीत करने लगे:—

भूत०। कहिये अब क्या इरादा है?

देवी०। बात तो यह है कि हम लोग नकाबपोशों के घर जाकर बेइज्जत हो गये। चाहे ये दोनों नकाबपोश कुछ भी कहें मगर मुझे निश्चय है कि दर्बार में आने वाले दोनों नकाबपोश वही हैं जिनके हम मेहमान हुए थे। मुझे तो शर्म मालूम होगी जब दर्बार में मैं उन्हें अपने सामने देखूंगा। इसके अतिरिक्त यदि यहां से जाकर अपनी स्त्री को घर में न देखूंगा तो मेरे आश्चर्य रंज और क्रोध का कोई हद न रहेगा।

भूत०। यद्यपि मैं एक तौर पर बेहया हो गया हूं परन्तु आज की बेइज्जती तो कलेजा फाड़े डालती है, बहुत ऐयारी की मगर ऐसा जक कभी नहीं उठाया,

यहां से हटने की इच्छा नहीं होती, यही जी में आता है कि इनमें से एक न एक को अवश्य पकड़ना चाहिये, और अपनी स्त्री के विषय में तो इतना कहना काफी है कि यदि अपने घर जाकर अपनी स्त्री को पा लिया तो मैं भी अपनी स्त्री की तरफ से बेफिक्र हो जाऊंगा।

देवी०। करने के लिए तो हम लोग बहुत कुछ कर सकते हैं मगर जब मैं उनके बर्ताव पर ध्यान देता हूँ तब लाचारी आकर पल्ला पकड़ती है। जब एक बार उन्होंने हम लोगों को गिरफ्तार किया तो हर तरह का सलूक कर सकते थे परन्तु किसी तरह बुराई हम लोगों के साथ न की, दूसरे वे लोग स्वयं हमारे महाराज के दर्बार में हाजिर हुआ करते हैं और समय पर अपने को प्रकट कर देने का वादा भी कर चुके हैं, ऐसी अवस्था में उनके साथ खोटा बर्ताव करते डर लगता है, कहीं ऐसा न हो कि वे लोग रंज हो जांय और दर्बार में आना छोड़ दें, अगर ऐसा हुआ तो बड़ी बदनामी होगी और कैदियों का मामला भी आज कल के ढंग से अधूरा ही रह जायगा !

भूत०। आप बात तो ठीक कहते हैं, परन्तु.......

देवी०। नहीं, अब इस समय तरह देना ही उचित है, जिस तरह मैं अपनी बदनामी का खयाल करता हूँ उसी तरह तुमको भी तो खयाल होगा !

भूत०। जरूर, यदि नकाबपोशों का कोई अकेला आदमी कब्जे में आ जाय तो शायद काम निकल जाय और किसी को इस बात की खबर भी न हो।

इस तरह की बातें हो रही थीं कि उनके कानों में घोड़े के टापों की आवाज आई और दोनों ने घूम कर पीछे की तरफ देखा। एक नकाबपोश सवार आता हुआ दिखाई पड़ा जिस पर निगाह पड़ते ही भूतनाथ ने देवीसिंह से कहा, "यह भी जरूर उन्हीं में से है, भला एक दफे और तो कोशिश कीजिए और जिस तरह हो सके इसे गिरफ्तार कीजिए फिर जैसा होगा देखा जायगा। बस अब इस समय सोचने विचारने का मौका नहीं है।"

वह सवार बिल्कुल बेफिक्री के साथ धीरे धीरे आ रहा था अस्तु ये दोनों भी उसके रास्ते के दोनों तरफ पेड़ों की आड़ देकर उसे गिरफ्तार करने की नीयत से खड़े हो गये। जब वह नकाबपोश सवार इन दोनों की सीध पर पहुँचा और आगे बढ़ा ही चाहता था तभी भूतनाथ के हाथ की फेंकी हुई कमन्द उसके घोड़े के गले में जा पड़ी। घोड़ा भड़क कर उछलने कूदने लगा और तब दोनों ने लपक कर घोड़े की लगाम थाम ली। उस सवार ने खंजर खींच कर वार करना चाहा, मगर

कुछ सोच कर रुक गया और साथ ही इसके इन दोनों को भी उसने रोके लिए तैयार देखा।

नकाब०। (भूतनाथ से) तुम लोग मुझे व्यर्थ क्यों रोकते हो? मुझसे क्या चाहते हो?

भूत०। हम लोग तुम्हें किसी तरह की तकलीफ देना नहीं चाहते, बस थोड़ी देर के लिए घोड़े से नीचे उतरो और हमारी दो चार बातों का जवाब देकर जहां जी में आवे चले जाओ।

नकाब०। बहुत अच्छा, मगर नकाब हटाने के लिए जिद्द न करना।

इतना कह कर नकाबपोश घोड़े के नीचे उतर पड़ा और भूतनाथ ने उससे कहा, "लेकिन तुम्हें अपने चेहरे से नकाब हटाना ही पड़ेगा और यह काम सबसे पहिले होगा।" यह कहते कहते भूतनाथ ने अपने हाथ से उसके चेहरे की नकाब उलट दी मगर उसके चेहरे पर निगाह पड़ते ही चौंक कर बोल उठा, "हैं! यह तो मेरी स्त्री है जो नकाबपोशों के घर में दिखाई पड़ी थी।"

छठवाँ बयान

अपनी स्त्री की सूरत देख कर जितना ताज्जुब भूतनाथ को हुआ उतना ही आश्चर्य देवीसिंह को भी हुआ। यह विचार कर रंज गम और गुस्से से देवीसिंह का सिर घूमने लगा कि इसी तरह मेरी स्त्री भी अवश्य नकाबपोशों के यहां है और हम लोगों को उसकी सूरत देखने में किसी तरह का भ्रम नहीं हुआ। अगर सोचा जाय कि जिन दोनों औरतों को हम लोगों ने देखा था वे वास्तव में हम लोगों की औरतें न थीं बल्कि वे औरतों की सूरत में ऐयार थे तो इसका निश्चय भी इसी समय हो सकता है। वह औरत सामने मौजूद ही है, देख लिया जाय कि कोई ऐयार है या वास्तव में भूतनाथ की स्त्री।

उस स्त्री ने भूतनाथ के मुँह से यह सुन कर कि 'यह तो मेरी स्त्री है'—क्रोध भरी आंखों से भूतनाथ की तरफ देखा और कहा, "एक तो तुमने जबर्दस्ती मेरी नकाब उलट दी, दूसरे बिना कुछ सोचे विचारे आवारा लोगों की तरह यह कह दिया कि 'यह मेरी स्त्री है'। क्या सभ्यता इसी को कहते हैं? (देवीसिंह की तरफ देख के) आप ऐसे सज्जन और प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार होकर क्या इस बात को पसन्द करते हैं?"

देवी०। अगर तुम भूतनाथ की स्त्री नहीं हो तो मैं जरूर इस बर्ताव को बुरा समझता हूँ जो भूतनाथ ने तुम्हारे साथ किया है।

औरत०। (भूतनाथ से) क्यों साहब, आपने मेरी ऐसी बेइज्जती क्यों की?

मेरा मालिक या कोई वारिस इस समय यहां होता तो अपने दिल में क्या कहता ?

भूत० । (ताज्जुब से उसका मुंह देखता हुआ) क्या मैं भ्रम में पड़ा हुआ हूं या मेरी आंखें मेरे साथ दगा कर रही हैं ?

औरत० । सो तो आप ही जानें, क्योंकि दिमाग आपका है और आंखें भी आपकी हैं, हां इतना मुझे अवश्य कहना पड़ेगा कि आप अपनी असभ्यता का परिचय देकर पुरानी बदनामी को चरितार्थ करते हैं। कौन सी बात आपने मुझमें ऐसी देखी जिससे इतना कहने का साहस आपको हुआ ?

भूत० । मालूम होता है कि या तो तू कोई ऐयार है और या फिर किसी दूसरे ने तेरी सूरत मेरी स्त्री के ढंग की बना दी है जिसे शायद तूने कभी देखा नहीं।

भूतनाथ ने उस औरत की बातों का जवाब तो दिया मगर वास्तव में वह खुद भी बहुत घबरा गया था। अपनी स्त्री की ढिठाई और चपलता पर उसे तरह तरह के शक होने लगे और वह बड़ी बेचैनी के साथ सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिए कि इसी बीच में उस स्त्री ने भूतनाथ की बात का यों जवाब दिया :—

स्त्री० । यों आप जिस तरह चाहें सोच समझ कर अपनी तबीयत खुश कर लें मगर इस बात को खूब समझ रक्खें कि मैं भी लावरिस नहीं हूं और आप अगर मेरे साथ कोई बेअदबी का बर्ताव करेंगे तो उसका बदला भी अवश्य पावेंगे, साथ ही इस बात को भी अवश्य समझ लें कि आपके इस कहने पर कि तू कोई ऐयार है आपके सामने अपना चेहरा धोने की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकती।

भूत० । मगर अफसोस है कि मैं बिना जांच किए तुम्हें छोड़ भी नहीं सकता।

स्त्री० । (देवीसिंह की तरफ देख के) बहादुरी तो तब थी जब आप लोग किसी मर्द के साथ इस ढिठाई का बर्ताव करते। एक कमजोर औरत को इस तरह मजबूर करके फजीहत करना ऐयारों और बहादुरों का काम नहीं है। हाय, इस जगह अगर मेरा कोई होता तो यह दुःख न भोगना पड़ता। (यह कह कर वह आंसू बहाने लगी)

उस औरत की बातचीत कुछ ऐसे ढंग की थी कि सुनने वालों को उस पर दया आ सकती थी और यही मालूम होता था कि यह जो कुछ कह रही है उसमें झूठ का लेश नहीं है, यहां तक कि स्वयं भूतनाथ को भी उसकी बातों पर सहम जाना पड़ा और वह ताज्जुब के साथ उस औरत का मुंह देखने लगा, खास करके इस ख्याल से भी कि देखें आंसू बहने के सबब से उसके चेहरे का रंग कुछ बदलता है या नहीं। उधर देवीसिंह तो उसकी बातों से बहुत ही हैरान हो गये और उनके जी में रह रह के यह बात पैदा होने लगी कि जरूर भूतनाथ इसके पहिचानने में

कुछ सोच कर रुक गया और साथ ही इसके इन दोनों को भी उसने रोकने के लिए तैयार देखा।

नकाब०। (भूतनाथ से) तुम लोग मुझे व्यर्थ क्यों रोकते हो? मुझसे क्या चाहते हो?

भूत०। हम लोग तुम्हें किसी तरह की तकलीफ देना नहीं चाहते, बस थोड़ी देर के लिए घोड़े से नीचे उतरो और हमारी दो चार बातों का जवाब देकर जहाँ जी में आवे चले जाओ।

नकाब०। बहुत अच्छा, मगर नकाब हटाने के लिए जिद्द न करना।

इतना कह कर नकाबपोश घोड़े के नीचे उतर पड़ा और भूतनाथ ने उससे कहा, "लेकिन तुम्हें अपने चेहरे से नकाब हटाना ही पड़ेगा और यह काम सबसे पहिले होगा।" यह कहते कहते भूतनाथ ने अपने हाथ से उसके चेहरे की नकाब उलट दी मगर उसके चेहरे पर निगाह पड़ते ही चौंक कर बोल उठा, "हैं! यह तो मेरी स्त्री है जो नकाबपोशों के घर में दिखाई पड़ी थी।"

छठवाँ बयान

अपनी स्त्री की सूरत देख कर जितना ताज्जुब भूतनाथ को हुआ उतना ही आश्चर्य देवीसिंह को भी हुआ। यह विचार कर रंज गम और गुस्से से देवीसिंह का सिर घूमने लगा कि इसी तरह मेरी स्त्री भी अवश्य नकाबपोशों के यहां है और हम लोगों को उसकी सूरत देखने में किसी तरह का भ्रम नहीं हुआ। अगर सोचा जाय कि जिन दोनों औरतों को हम लोगों ने देखा था वे वास्तव में हम लोगों की औरतें न थीं बल्कि वे औरतों की सूरत में ऐयार थे तो इसका निश्चय भी इसी समय हो सकता है। वह औरत सामने मौजूद ही है, देख लिया जाय कि कोई ऐयार है या वास्तव में भूतनाथ की स्त्री।

उस स्त्री ने भूतनाथ के मुँह से यह सुन कर कि 'यह तो मेरी स्त्री है'—क्रोध भरी आंखों से भूतनाथ की तरफ देखा और कहा, "एक तो तुमने जबर्दस्ती मेरी नकाब उलट दी, दूसरे बिना कुछ सोचे विचारे आवारा लोगों की तरह यह कह दिया कि 'यह मेरी स्त्री है'। क्या सभ्यता इसी को कहते हैं? (देवीसिंह की तरफ देख के) आप ऐसे सज्जन और प्रतापी राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार होकर क्या इस बात को पसन्द करते हैं?"

देवी०। अगर तुम भूतनाथ की स्त्री नहीं हो तो मैं जरूर इस बर्ताव को बुरा समझता हूँ जो भूतनाथ ने तुम्हारे साथ किया है।

औरत०। (भूतनाथ से) क्यों साहब, आपने मेरी ऐसी बेइज्जती क्यों की!

मेरा मालिक या कोई वारिस इस समय यहां होता तो अपने दिल में क्या कहता ?

भूत० । (ताज्जुब से उसका मुँह देखता हुआ) क्या मैं भ्रम में पड़ा हुआ हूँ या मेरी आंखें मेरे साथ दगा कर रही हैं ?

औरत० । सो तो आप ही जानें, क्योंकि दिमाग आपका है और आंखें भी आपकी हैं, हां इतना मुझे अवश्य कहना पड़ेगा कि आप अपनी असभ्यता का परिचय देकर पुरानी बदनामी को चरितार्थ करते हैं । कौन सी बात आपने मुझमें ऐसी देखी जिससे इतना कहने का साहस आपको हुआ ?

भूत० । मालूम होता है कि या तो तू कोई ऐयार है और या फिर किसी दूसरे ने तेरी सूरत मेरी स्त्री के ढंग की बना दी है जिसे शायद तूने कभी देखा नहीं ।

भूतनाथ ने उस औरत की बातों का जवाब तो दिया मगर वास्तव में वह खुद भी बहुत घबरा गया था । अपनी स्त्री की ढिठाई और चपलता पर उसे तरह तरह के शक होने लगे और वह बड़ी बेचैनी के साथ सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिए कि इसी बीच में उस स्त्री ने भूतनाथ की बात का यों जवाब दिया :—

स्त्री० । यों आप जिस तरह चाहें सोच समझ कर अपनी तबीयत खुश कर लें मगर इस बात को खूब समझ रक्खें कि मैं भी लावारिस नहीं हूँ और आप अगर मेरे साथ कोई बेअदबी का बर्ताव करेंगे तो उसका बदला भी अवश्य पावेंगे, साथ ही इस बात को भी अवश्य समझ लें कि आपके इस कहने पर कि तू कोई ऐयार है आपके सामने अपना चेहरा धोने की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकती ।

भूत० । मगर अफसोस है कि मैं बिना जांच किए तुम्हें छोड़ भी नहीं सकता।

स्त्री० । (देवीसिंह की तरफ देख के) बहादुरी तो तब थी जब आप लोग किसी मर्द के साथ इस ढिठाई का बर्ताव करते । एक कमजोर औरत को इस तरह मजबूर करके फजीहत करना ऐयारों और बहादुरों का काम नहीं है। हाय, इस जगह अगर मेरा कोई होता तो यह दुःख न भोगना पड़ता। (यह कह कर वह आंसू बहाने लगी)

उस औरत की बातचीत कुछ ऐसे ढंग की थी कि सुनने वालों को उस पर दया आ सकती थी और यही मालूम होता था कि यह जो कुछ कह रही है उसमें झूठ का लेश नहीं है, यहां तक कि स्वयं भूतनाथ को भी उसकी बातों पर सहम जाना पड़ा और वह ताज्जुब के साथ उस औरत का मुंह देखने लगा, खास करके इस ख्याल से भी कि देखें आंसू बहने के सबब से उसके चेहरे का रंग कुछ बदलता है या नहीं । उधर देवीसिंह तो उसकी बातों से बहुत ही हैरान हो गये और उनके जी में रह रह के यह बात पैदा होने लगी कि जरूर भूतनाथ इसके पहिचानने में

धोखा खा गया और वास्तव में यह भूतनाथ की स्त्री नहीं है। अक्सर देखे एक ही रंग रूप के दो आदमी देखे हैं, ताज्जुब नहीं कि यहां भी वैसा ही मामला आ पड़ा हो।

देवी०। (स्त्री से) तो तू इस भूतनाथ की स्त्री नहीं है?

स्त्री०। जी नहीं।

देवी०। आखिर इसका फैसला क्योंकर हो?

स्त्री०। आप लोग जरा तकलीफ करके मेरे घर तक चलें, बच्चों को देखने और मेरे मालिक से बातचीत करने पर आपको मालूम होगा कि मेरा कहना सच है या झूठ।

देवी०। (औरत की बात पसन्द करके) तुम्हारा घर यहां से कितनी दूर

स्त्री०। (हाथ का इशारा करके) इसी तरफ है, यहां से थोड़ी ही दूर इन घने पेड़ों के पार होते ही आपको वह झोपड़ी दिखाई देगी जिसमें आज हम लोग रहते हैं।

देवी०। क्या तुम झोपड़ी में रहती हो? मगर तुम्हारी सूरत शक्ल झोपड़ी में रहने योग्य नहीं है।

स्त्री०। जी मेरे दो लड़के बीमार हैं, उनकी तन्दुरुस्ती का ख्याल करके पानी बदलने की नीयत से आज कल हम लोग यहां आ टिके हैं। (हाथ कर) आप कृपा कर शीघ्र उठिये और मेरे डेरे पर चल कर इस दखेड़े कीजिये, विलम्ब होने से मैं मुफ्त में सताई जाऊंगी।

देवी०। (भूतनाथ से) क्या हर्ज है अगर इसके डेरे पर चल कर लिया जाय?

भूत०। जो कुछ आपकी राय हो मैं करने को तैयार हूँ, मगर यह अजीव ढंग से अन्धा बना रही है।

देवी०। अच्छा फिर उठो, अब देर करना उचित नहीं!

उस औरत की अनूठी बातचीत ने इन दोनों को इस बात पर मजबूर कि उसके साथ साथ डेरे तक या जहां वह ले जाय चुपचाप चले जांय और कि जो कुछ वह कहती है कहां तक सच है, और आखिर ऐसा ही हुआ।

इशारा पाते ही औरत उठ खड़ी हुई। देवीसिंह और भूतनाथ उसके पीछे रवाना हुए। उस औरत को घोड़े पर सवार होने की आज्ञा न मिली वह घोड़े की लगाम थामे हुए धीरे धीरे इन दोनों के साथ चली।

लगभग आध कोस के गए होंगे कि दूर से एक छोटा सा कच्चा मकान दिखाई पड़ा जिसे एक तौर पर झोंपड़ी कहना उचित है। इस मकान के ऊपर खपड़े की जगह केवल पत्ते ही से छाया हुआ था।

जब ये लोग झोंपड़ी के दर्वाजे पर पहुंचे तब उस औरत ने अपने घोड़े को खूंटे के साथ बांध कर थोड़ी सी घास उसके आगे डाल दी जो उसी जगह एक पेड़ के नीचे पड़ी हुई थी और जिसे देखने से मालूम होता था कि रोज इसी जगह घोड़ बंधा करता है। इसके बाद उसने देवीसिंह और भूतनाथ से कहा, "आप लोग जरा सा इसी जगह ठहर जांय, मैं अन्दर जाकर आप लोगों के लिए चारपाई ले आती हूँ और अपने मालिक तथा लड़कों को भी बुला लाती हूँ।"

देवीसिंह और भूतनाथ ने इस बात को कबूल किया और कहा, "क्या हर्ज है जाओ मगर जल्दी आना क्योंकि हम लोग ज्यादे देर तक यहां ठहर नहीं सकते।"

वह औरत मकान के अन्दर चली गई और वे दोनों देर तक बाहर खड़े रह कर उसका इन्तजार करते रहे, यहां तक कि घण्टे भर से ज्यादे बीत गया और वह औरत मकान के बाहर न निकली। आखिर भूतनाथ ने पुकारना और चिल्लाना शुरू किया मगर इसका भी कोई नतीजा न निकला अर्थात् किसी ने भी उसे किसी तरह का जवाब न दिया। तब लाचार होकर वे दोनों मकान के अन्दर घुस गए मगर फिर भी किसी आदमी की यहां तक कि उस औरत की भी सूरत दिखाई न पड़ी। उस छोटी झोंपड़ी में किसी को ढूंढ़ना या पता लगाना कौन कठिन था अस्तु बित्ता बित्ता भर जमीन देख डाला मगर सिवाय एक सुरंग के और कुछ भी दिखाई न पड़ा। न तो मकान में किसी तरह का असबाब ही था और न चारपाई बिछावन कपड़ा लत्ता या अन्न और बरतन इत्यादि ही दिखाई पड़ा, अस्तु लाचार होकर भूतनाथ ने कहा, "बस बस, हम लोगों को उल्लू बना कर वह इसी सुरंग की राह निकल गई!"

बेवकूफ बना कर इस तरह उस औरत के निकल जाने से दोनों ऐयारों को बड़ा ही अफसोस हुआ। भूतनाथ ने सुरंग के अन्दर घुस कर उस औरत को ढूंढ़ने का इरादा किया। पहिले तो इस बात का ख्याल हुआ कि कहीं उस सुरंग में दो चार आदमी घुस कर बैठे न हों जो हम लोगों पर बेमौके वार करें, मगर जब अपने तिलिस्मी खंजर का ध्यान आया तो यह खयाल जाता रहा और बेफिक्री के साथ हाथ में तिलिस्मी खंजर लिये हुए भूतनाथ उस सुरंग के अन्दर घुसा, पीछे पीछे देवीसिंह ने भी उसके अन्दर पैर रक्खा।

वह सुरंग लगभग पांच सौ कदम के लम्बी होगी। उसका दूसरा सिरा जंगल में पेड़ों के झुरमुट के अन्दर निकला था। देवीसिंह और भूतनाथ भी सुरंग के अन्दर ही अन्दर वहां तक चले गये और इन्हें विश्वास हो गया कि उस औरत का पता किसी तरह नहीं लग सकता।

इस समय इन दोनों के दिल की क्या कैफियत थी सो वे ही जानते हैं अस्तु लाचार होकर देवीसिंह ने घर लौट चलने का विचार किया मगर भूतनाथ ने इस बात को स्वीकार न करके कहा, "इस तरह तकलीफ उठाने और... होने पर भी बिना कुछ काम किए घर लौट चलना मेरे ख्याल से उचित नहीं है।

देवी०। आखिर फिर किया ही क्या जायगा ? मुझे इतनी फुरसत नहीं कि कई दिनों तक वेफिक्री के साथ इन लोगों का पीछा करूं। उधर दरबार की जो कुछ कैफियत है तुम जानते ही हो ! ऐसी अवस्था में मालिक की प्रसन्नता का खयाल न करके एक साधारण काम में दूसरी तरफ उलझे रहना मैं उचित नहीं है।

भूत०। आपका कहना ठीक है मगर इस समय मेरी तबीयत का क्या हाल है सो भी आप अच्छी तरह समझते होंगे।

देवी०। मेरे ख्याल से तुम्हारे लिये कोई ज्यादे तरद्दुद की बात नहीं इसके अतिरिक्त घर लौट चलने पर मैं अपनी औरत को देखूंगा, अगर वह गई तो तुम भी अपनी स्त्री की तरफ से वेफिक्र हो जाओगे।

भूत०। अगर आपकी स्त्री घर पर मिल जाय तो भी मेरे दिल का ... न जायगा।

देवी०। अपनी स्त्री का हाल चाल लेने के लिए तुम भी अपने आदमी को भेज सकते हो।

भूत०। यह सब कुछ ठीक है मगर क्या करूं, इस समय मेरे पेट में ... तरह की खिचड़ी पक रही है और क्रोध क्षण क्षण में बढ़ा ही चला आता है।

देवी०। अगर ऐसा ही है तो जो कुछ तुम्हें उचित जान पड़े सो करो, मैं अकेला ही घर की तरफ लौट जाऊंगा।

भूत०। अगर ऐसा ही कीजिये तो मुझ पर बड़ी कृपा होगी, मगर महाराज बारे में पूछेंगे तब क्या जवाब ......

देवी०। (बात काट कर) महाराज की तरफ से तुम वेफिक्र रहो ... मुनासिब समझूंगा कह सुन लूंगा, मगर इस बात का वादा कर जाओ कि

दिन पर तुम वापस आओगे या तुम्हारा हाल मुझे कब और क्योंकर मिलेगा ?

भूत० । मैं आपसे सिर्फ तीन दिन की छुट्टी लेता हूँ। अगर इससे ज्यादे दिन तक अटकने की नौबत आई तो किसी न किसी तरह अपने हाल चाल की खबर आप तक पहुँचा दूँगा।

देवी० । बहुत अच्छा, (मुस्कुराते हुए) अब आप जाइये और पुनः लात खाने का बन्दोवस्त कीजिए, मैं तो घर की तरफ रवाना होता हूँ, जय माया की !

भूत० । जय माया की !

भूतनाथ को उसी जगह छोड़ कर देवीसिंह रवाना हुए और संध्या होने के पहिले ही तिलिस्मी इमारत के पास आ पहुँचे।

सातवां बयान

डेरे पर पहुँच कर स्नान करने और पौशाक बदलने के बाद देवीसिंह सबसे पहिले राजा बीरेन्द्रसिंह के पास गये और उसी जगह तेजसिंह से भी मुलाकात की। पूछने पर देवीसिंह ने अपना और भूतनाथ का कुल हाल बयान किया जो कि हम ऊपर के बयानों में लिख आये हैं। उस हाल को सुन कर बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को कई दफे हंसने और ताज्जुब करने का मौका मिला और अन्त में बीरेन्द्रसिंह ने कहा, "अच्छा किया जो तुम भूतनाथ को छोड़ कर यहां चले आये। तुम्हारे न रहने के कारण नकाबपोशों के आगे हम लोगों को शर्मिन्दा होना पड़ा।"

देवी० । (ताज्जुब से) क्या वे लोग यहां आये थे ?

बीरेन्द्र० । हां, वे दोनों अपने मामूली वक्त पर यहां आये थे और तुम दोनों का पीछा करने पर ताज्जुब और अफसोस करते थे, साथ ही इसके उन्होंने यह भी कहा था कि वे दोनों ऐयार हमारे मकान तक नहीं पहुँचे।

देवी० । वे लोग जो चाहें सो कहें मगर मेरा ख्याल यही है कि हम दोनों उन्हीं के मकान में गए थे।

बीरेन्द्र० । खैर जो हो मगर उन नकाबपोशों का यह कहना बहुत ठीक है कि जब हम लोग समय पर अपना हाल आप ही कहने के लिए तैयार हैं तो आपको हमारा भेद जानने के लिए उद्योग न करना चाहिए !

देवी० । बेशक उनका कहना ठीक है मगर क्या किया जाय, ऐयारों की तबीयत ही ऐसी चंचल होती है कि किसी भेद को जानने के लिए वे देर तक या कई दिनों तक सब्र नहीं कर सकते। यद्यपि भूतनाथ इस बात को खूब जानता है कि वे दोनों नकाबपोश उसके पक्षपाती हैं और पीछा करके उनका दिल दुखाने का नतीजा

शायद अच्छा न निकले मगर फिर भी उसकी तबीयत नहीं मानती, तिस पर की बेइज्जती और अपनी स्त्री के ख्याल ने उसके जोश को और भी भड़का है। अगर वह अपनी स्त्री को वहां न देखता तो निःसन्देह मेरे साथ वापस आता और उन लोगों का पीछा करने का ख्याल अपने से दिल निकाल देता।

तेज०। खैर कोई चिन्ता नहीं, वे नकाबपोश खुशदिल नेक और हमारे मालूम होते हैं, इसलिए आशा है कि भूतनाथ को अथवा तुम्हारे किसी आदमी तकलीफ पहुँचाने का ख्याल न करेंगे।

बीरेन्द्र०। हमारा भी यही ख्याल है। (देवीसिंह से मुस्कुरा कर) तुम्हारा दिल भी तो अपनी बीबी साहेबा को देखने के लिए बेताब हो रहा होगा?

देवी०। बेशक मेरे दिल में धुकनी सी लगी हुई है और मैं चाहता किसी तरह आपकी बात पूरी हो तो महल में जाऊं।

बीरेन्द्र०। मगर हमसे तो तुमने पूछा ही नहीं कि तुम्हारे जाने के तुम्हारी बीबी महल में थीं या नहीं।

देवी०। (हंस कर) जी आपसे पूछने की मुझे कोई जरूरत नहीं और विश्वास ही है कि आप इस बारे में मुझसे सच बोलेंगे।

बीरेन्द्र०। (हंस कर) खैर मेरी बातों पर विश्वास न करो और जाकर अपनी रानी को देखो, मैं भी उसी जगह पहुँचकर तुम्हें इस बेचारी का मजा चखाता हूं!

इतना कह कर राजा बीरेन्द्रसिंह उठ खड़े हुए और देवीसिंह भी हंसते वहां से चले गये।

महल के अन्दर अपने कमरे में एक कुर्सी पर बैठी चम्पा रोहतासगढ़ और किले की तस्वीर दीवार के ऊपर बना रही है और उसकी दो लौंडियां में मोमी शमादान लिए हुए रोशनी दिखा कर इस काम में उसकी मदद रही हैं। चम्पा का मुंह दीवार की तरफ और पीठ सदर दर्वाजे की तरफ दोनों लौंडियां भी उसी की तरह दीवार की तरफ देख रही हैं इसलिए चम्पा उसकी लौंडियों को इस बात की कुछ भी खबर नहीं कि देवीसिंह धीरे धीरे दबाते हुए इस कमरे में आकर दूर से और कुछ देर से उनकी कार्रवाई हुए ताज्जुब कर रहे हैं। चम्पा तस्वीर बनाने के काम में बहुत ही निपुण शीघ्र काम करने वाली थी तथा उसे तस्वीरों के बनाने का शौक भी हद था। देवीसिंह ने उसके हाथ की बनाई हुई सैकड़ों तस्वीरें देखी थीं, मगर

की तरह ताज्जुब करने का मौका उन्हे आज के पहिले नहीं मिला था। ताज्जुब इस लिये कि इस समय जिस ढंग की तस्वीरें चम्पा बना रही थी ठीक उसी ढंग की तस्वीरें देवीसिंह ने भूतनाथ के साथ जाकर नकाबपोशों के मकान में दीवार के ऊपर बनी हुई देखी थीं। कह सकते हैं कि एक स्थान या इमारत की तस्वीर अगर दो कारीगर बनावें तो सम्भव है कि एक ढंग की तैयार हो जायं मगर यहां यही बात न थी। नकाबपोशों के मकान में रोहतासगढ़ पहाड़ी की जो तस्वीर देवीसिंह ने देखी थी उसमें दो नकाबपोश सवार पहाड़ी के ऊपर चढ़ते हुए दिखलाये गये थे जिनमें से एक का घोड़ा मुश्की और दूसरे का सब्जा था। इस समय जो तस्वीर चम्पा बना रही थी उसमें भी उसी ठिकाने उसी ढंग के दो सवार इसने बनाये और उसी तरह इन दोनों सवारों में से भी एक का घोड़ा मुश्की और दूसरे का सब्जा था। देवीसिंह का खयाल है कि यह बात इत्तिफाक से नहीं हो सकती।

ताज्जुब के साथ उस तस्वीर को देखते हुए देवीसिंह सोचने लगे, क्या यह तस्वीर इसने यों ही अन्दाज से तैयार की है? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। अगर यह तस्वीर इसने अन्दाज से बनाई होती तो दोनों सवार और घोड़े ठीक उसी रंग के न बनते जैसा कि मैं उन नकाबपोशों के यहां देखे आता हूं। तो क्या यह वास्तव में उन नकाबपोशों के यहां गई थी? बेशक गई होगी, क्योंकि उस तस्वीर के देखे बिना उसके जोड़ की तस्वीर यह बना नहीं सकती, मगर इस तस्वीर के बनाने से साफ जाहिर होता है कि यह अपनी उन नकाबपोशों के यहां जाने वाली बात गुप्त रखना भी नहीं चाहती, मगर ताजुब है कि जब इसका ऐसा खयाल है तो वहां (नकाबपोशों के घर पर) मुझे देख कर छिप क्यों गई थी? खैर अब बातचीत करने पर जो कुछ भेद है सब मालूम हो जायगा।

यह सोच कर देवीसिंह दो कदम आगे बढ़े ही थे कि पैरों की आहट पाकर चम्पा चौंकी और घूम कर देखने लगी। देवीसिंह पर निगाह पड़ते ही कूंची और रंग की प्याली जमीन पर रख कर उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़ कर प्रणाम करने बाद बोली, "आप सफर से लौट कर कब आये?"

देवी०। (मुस्कुराते हुए) चार पांच घण्टे हुए होंगे, मगर यहां भी मैं आधी घड़ी से तमाशा देख रहा हूं।

चम्पा०। (मुस्कुराती हुई) क्या खूब! इस तरह चोरी से ताक झांक करने की क्या जरूरत थी?

देवी०। इस तस्वीर और इसकी बनावट को देख कर मैं ताज्जुब कर रहा

था और तुम्हारे काम में हर्ज डालने का इरादा नहीं होता था।

चम्पा०। (हंस कर) बहुत ठीक, खैर आइये बैठिये।

देवी०। पहिले मैं तुम्हारी इस कुर्सी पर बैठ के इस तस्वीर को गौर से देखूं।

इतना कह कर देवीसिंह उस कुर्सी पर बैठ गये जिस पर थोड़ी ही देर पहिले चम्पा बैठी हुई तस्वीर बना रही थी और बड़े गौर से उस तस्वीर को देखने लगे। चम्पा भी कुरसी की पिछवाई पकड़ कर खड़ी हो गई और देखने लगी। देखते देखते देवीसिंह ने झट हलके जर्द रंग की प्याली और कूंची उठा ली और तस्वीर में रोहतासगढ़ किले के ऊपर एक बुर्ज और उसके साथ सटे हुए एक का साधारण निशान बनाया अर्थात् उसकी जमीन बांधी जिसे देखते ही चम्पा चौंकी और बोली, "हां हां ठीक है, यह बनाना तो मैं भूल ही गई थी। बस आप रहने दीजिये, इसे भी मैं ही अपने हाथ से बनाऊंगी, तब आप देख कर कहियेगा कि तस्वीर कैसी बनी और इसमें कौन सी बात छूट गई थी।"

चम्पा की इस बात को सुन देवीसिंह चौंक पड़े। अब उन्हें पूरा पूरा विश्वास हो गया कि चम्पा उन नकाबपोशों के मकान में जरूर गई हुई थी और अपने निःसन्देह इसी को देखा था अस्तु देवीसिंह ने घूम कर चम्पा की तरफ देखा और कहा, "मगर यह तो बताओ कि वहां मुझे देख कर तुम भाग क्यों गई थीं?"

चम्पा०। (ताज्जुब की सूरत बना के) कहां? कब?

देवी०। उन्हीं नकाबपोशों के यहां!

चम्पा०। मुझे बिल्कुल याद नहीं पड़ता कि आप कब की बात कर रहे हैं।

देवी०। अब लगीं न नखरा करके परेशान करने?

चम्पा०। मैं आपके चरणों की कसम खाकर कहती हूं कि मुझे कुछ याद नहीं कि आप कब की बात कर रहे हैं।

अब तो देवीसिंह के ताज्जुब का कोई हद न रहा, क्योंकि वे खूब जानते थे कि चम्पा जितनी खूबसूरत और ऐयारी के फन में तेज है उतनी ही नेक और पतिव्रता भी है। वह उनके चरणों की कसम खाकर झूठ कदापि नहीं बोल सकती। आखिर कुछ देर तक ताज्जुब के साथ गौर करने के बाद पुनः देवीसिंह ने कहा, "क्या तुम कल या परसों तुम कहां गई थीं?"

चम्पा०। मैं तो कहीं नहीं गई! आप महारानी चन्द्रकान्ता से पूछ लें। मेरा उनका तो दिन रात का संग है अगर कहीं जाती तो किसी काम कहीं जाती और ऐसी अवस्था में आपसे छिपाने की जरूरत ही क्या थी?

देवी० । फिर यह तस्वीर तुमने कहां देखी ?

चम्पा० । यह तस्वीर ? मैं........

इतना कह चम्पा कपड़े का एक लपेटा हुआ पुलिन्दा उठा लाई और देवीसिंह के हाथ में दिया । देवीसिंह ने उसे खोल कर देखा और चौंक कर चम्पा से पूछा, "यह नक्शा तुम्हें कहां से मिला ?"

चम्पा० । यह नक्शा मुझे कहां से मिला सो मैं पीछे कहूंगी पहिले आप यह बतावें कि इस नक्शे को देख कर आप चौंके क्यों और यह नक्शा वास्तव में कहां का है ? क्योंकि मैं इसके बारे कुछ भी नहीं जानती ।

देवी० । यह नक्शा उन्हीं नकाबपोशों के मकान का है जिनके बारे में मैं अभी तुमसे पूछ रहा था ?

चम्पा० । कौन नकाबपोश ? वे ही जो दरबार में आया करते हैं ?

देवी० । हां वे ही, और उन्हीं के यहां मैंने तुमको देखा था ।

चम्पा० । (ताज्जुब के साथ) यों मैं कुछ भी नहीं समझ सकती, पहिले आप अपने सफर का हाल सुनावें और यह बतावें कि आप कहां गये थे और क्या क्या देखा ?

इसके जवाब में देवीसिंह ने अपने और भूतनाथ के सफर का हाल बयान किया और इसके बाद उस कपड़े वाले नक्शे की तरफ बता के कहा, "यह उसी मकान का नक्शा है । इस बंगले के अन्दर दीवारों पर तरह-तरह की तस्वीरें बनी हुई हैं जिन्हें कारीगर दिखा नहीं सकता, इसलिए नमूने के तौर पर बाहर की तरफ यही रोहतासगढ़ की एक तस्वीर बना कर उसने नीचे लिख दिया है कि इस बंगले में इसी तरह की बहुत सी तस्वीरें बनी हुई हैं । वास्तव में यह नक्शा बहुत अच्छा साफ और बेशकीमत बना हुआ है ।"

चम्पा० । अब मैं समझी कि असल मामला क्या है, मैं उस मकान में नहीं थी ।

देवी० । तब यह तस्वीर तुमने कहां से पाई ?

चम्पा० । यह तस्वीर मुझे लड़के (तारासिंह) ने दी थी ।

देवी० । तुमने पूछा तो होगा कि यह तस्वीर उसे कहां से मिली ?

चम्पा० । नहीं, उसने बहुत तारीफ करके यह तस्वीर मुझे दी और मैंने ले ली ।

देवी० । कितने दिन हुए ?

चम्पा० । आज पांच छः दिन हुए होंगे ।

इसके बाद देवीसिंह बहुत देर तक चम्पा के पास बैठे रहे और जब
जाने लगे तब वह कपड़े वाली तस्वीर अपने साथ बाहर लेते गये।

आठवां बयान

महल के बाहर आने पर भी देवीसिंह के दिल को किसी तरह चैन न
यद्यपि रात बहुत बीत चुकी थी तथापि राजा वीरेन्द्रसिंह से मिल कर उस
के विषय में बातचीत करने की नीयत से वह राजा साहब के कमरे में
मगर वहां जाने पर मालूम हुआ कि बीरेन्द्रसिंह महल में गए हुए हैं, लाचार
लाटा ही चाहते थे कि राजा बीरेन्द्रसिंह भी आ पहुंचे और अपने पलंग के पा
सिंह को देख कर बोले, "रात को भी तुम्हें चैन नहीं पड़ती! (मुस्कुरा कर)
ताज्जुब यह है कि चम्पा ने तुम्हें इतने जल्दी बाहर आने की छुट्टी क्योंकर
देवी०। इस हिसाब से तो मुझे भी आप पर ताज्जुब करना चाहिए
नहीं, असल तो यह हैं कि मैं एक ताज्जुब की बात आपको सुनाने के लि
चला आया हूं।

बीरेन्द्रसिंह०। वह कौन सी बात है, और तुम्हारे हाथ में यह
पुलिन्दा कैसा है?

देवी०। इसी कम्बख्त ने तो मुझे इस आनन्द के समय में आपसे मि
मजबूर किया।

बीरेन्द्र०। सो क्या? (चारपाई पर बैठ कर) बैठ के बातें करो।

देवीसिंह ने महल में चम्पा के पास जाकर जो कुछ देखा और सुना
बयान किया, इसके बाद वह कपड़े वाली तस्वीर खोल कर दिखाई तथा उ
को भी अच्छी तरह समझाने के बाद कहा, "न मालूम यह नक्शा तारा को
और कहां से मिला और उसने इसे अपनी मां को क्यों दे दिया!"

बीरेन्द्र०। तारासिंह से तुमने क्यों नहीं पूछा?

देवी०। अभी तो मैं सीधा आप ही के पास चला आया हूं, अब
मुनासिब हो किया जाय। कहिए तो लड़के को इसी जगह बुलाऊं?

बीरेन्द्र०। क्या हर्ज है, किसी को कहो बुला लावे।

देवीसिंह कमरे के बाहर निकले और पहरे के एक सिपाही को तार
बुलाने की आज्ञा देकर पुनः कमरे में चले गये और राजा साहब से बात
लगे। थोड़ी देर में पहरे वाले ने वापस आकर अर्ज किया कि 'तारासिंह
कात नहीं हुई और इसका भी पता न लगा कि वे कब और कहां गये

खिदमतगार कहता है कि संध्या होने के पहिले ही से उनका पता नहीं है'।

बेशक यह बात ताज्जुब की थी। रात के समय बिना आज्ञा लिए तारासिंह का गैरहाजिर रहना सभों को ताज्जुब में डाल सकता था, मगर राजा बीरेन्द्रसिंह ने यह सोचा कि आखिर तारासिंह ऐयार है शायद किसी काम की जरूरत समझ कर कहीं चला गया हो अस्तु राजा साहब ने भैरोसिंह को तलब किया और थोड़ी ही देर में भैरोसिंह ने हाजिर होकर सलाम किया।

बीरेन्द्र०। (भैरो से) तुम जानते हो कि तारासिंह क्यों और कहां गया है?

भैरो०। तारा तो आज संध्या होने के पहिले ही से गायब है, पहर भर दिन बाकी था जब वह मुझसे मिला था, उसे तरद्दुद में देख कर मैंने पूछा भी था कि आज तुम तरद्दुदमें क्यों मालूम पड़ते हो मगर इसका उसने कोई जवाब नहीं दिया।

बीरेन्द्र०। ताज्जुब की बात है! हमें उम्मीद थी कि तुम्हें उसका हाल जरूर मालूम होगा।

भैरो०। क्या मैं सुन सकता हूं कि इस समय उसे याद करने की जरूरत क्यों पड़ी?

बीरेन्द्र०। जरूर सुन सकते हो।

इतना कह कर बीरेन्द्रसिंह ने देवीसिंह की तरफ देखा और देवीसिंह ने कुछ कम बेश अपना और भूतनाथ का किस्सा बयान करने के बाद उस तस्वीर का हाल कहा और तस्वीर भी दिखाई। अन्त में भैरोसिंह ने कहा, "मुझे कुछ भी मालूम नहीं कि तारासिंह को यह तस्वीर कब और कहां से मिली मगर अब इसका हाल जानने की कोशिश जरूर करूंगा।"

हुक्म पाकर भैरोसिंह विदा हुआ और थोड़ी देर तक बातचीत करने बाद देवीसिंह भी चले गये।

दूसरे दिन मामूली कामों से छुट्टी पाकर राजा बीरेन्द्रसिंह जब दर्बार खास में बैठे तो पुनः तारासिंह के विषय में बातचीत शुरू हुई और इसी बीच में नकाबपोशों का भी जिक्र छिड़ा। उस समय वहां राजा बीरेन्द्रसिंह गोपालसिंह तेजसिंह तथा देवीसिंह वगैरह अपने ऐयारों के अतिरिक्त कोई गैर आदमी न था। जितने थे सभी ताज्जुब के साथ तारासिंह के विषय में तरह तरह की बातें कर रहे थे और मौके पर भूतनाथ तथा नकाबपोशों का भी जिक्र आता था। दोनों नकाबपोश वहां आ के इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का किस्सा सुना गये थे उसे आज तीन दिन जमाना गुजर गया। इस बीच में न तो वे दोनों नकाबपोश आये और न उनके

विषय में कोई बात ही सुनी गई । साथ ही इसके अभी तक भूतनाथ का कोई
चाल मालूम न हुआ । खुलासा यह कि इस समय के दर्वार में इन्हीं सब बातों
चर्चा थी और तरह तरह के ख्याल दौड़ाये जा रहे थे । इसी समय चोबदार
दोनों नकाबपोशों के आने की इत्तिला की । हुक्म पाकर वे दोनों हाजिर
गये और सलाम करके आज्ञानुसार उचित स्थान पर बैठ गए ।

एक नकाब० । (हाथ जोड़ के राजा वीरेन्द्रसिंह से) महाराज ताज्जुब
होंगे कि तावेदारों ने हाजिर होने में दो तीन दिन का नागा किया ।

बीरेन्द्र० । बेशक ऐसा ही है क्योंकि हम लोग इन्द्रजीत और आनन्द
तिलिस्मी किस्सा सुनने के लिए बेचैन हो रहे थे ।

नकाब० । ठीक है, हम लोग हाजिर न हुए इसके कई सबब हैं । एक
इसका पता हम लोगों को लग चुका था कि भूतनाथ जो हम लोगों की
गया था अभी तक लौट कर नहीं आया और इस सबब से कैदियों के मुक
दिलचस्पी नहीं आ सकती थी । दूसरे कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह
में कई बातें ऐसी थीं जिनका हाल दरियाफ्त करना बहुत जरूरी था
काम के लिए हम लोग तिलिस्म के अन्दर गये हुए थे ।

बीरेन्द्र० । क्या आप लोग जब चाहे तब उस तिलिस्म के अन्दर जा
हैं जिसे वे दोनों लड़के फतह कर रहे हैं ?

नकाब० । जी सब जगह तो नहीं मगर खास खास ठिकाने कभी
सकते हैं जहां तक कि हमारे गुरु महाराज जाया करते थे, मगर उनकी
एक घड़ी की हम लोगों को मिला करती है ।

बीरेन्द्र० । आप लोगों के गुरु कौन और कहां हैं ?

नकाब० । अब तो वे परमधाम को चले गए ।

बीरेन्द्र० । खैर तो जब आप लोग तिलिस्म में गए थे तो क्या दोनों
से मुलाकात हुई थी !

नकाब० । मुलाकात तो नहीं हुई मगर जिन बातों का शक था वह
और जो बातें मालूम न थीं वे मालूम हो गईं जिससे इस समय हम
उनका किस्सा कहने के लिए तैयार हैं । (देवीसिंह की तरफ देख कर)
भूतनाथ को अकेला ही छोड़ दिया !

देवी० । हां, क्योंकि मुझे आप लोगों का भेद जानने का उतना
जितना भूतनाथ को है । मैं तो उस दिन केवल इतना ही जानने

कि देखें भूतनाथ कहां जाता है और क्या करता है मगर मेरी तबीयत इतने ही में भर गई।

नकाब०। मगर भूतनाथ की तबीयत अभी नहीं भरी।

तेज०। वह भी विचित्र ढंग का ऐयार है? साफ साफ देखता है कि आप लोग उसके पक्षपाती हैं मगर फिर भी आप लोगों का असल हाल जानने के लिए बेताब हो रहा है। यह उसकी भूल है तथापि आशा है कि आप लोगों की तरफ से उसे किसी तरह की तकलीफ न पहुंचेगी।

नकाब०। नहीं नहीं, कदापि नहीं। (वीरेन्द्रसिंह की तरफ देख के और हाथ जोड़ के) हम लोगों को अपना लड़का समझिए और विश्वास रखिए कि आपके किसी ऐयार को हम लोगों की तरफ से किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंच सकती चाहे वे लोग हमें किसी तरह का रंज पहुंचावें।

बीरेन्द्र०। आशा तो ऐसी ही है, और हमारे ऐयार भी बड़े ही नालायक होंगे अगर आप लोगों को किसी तरह की तकलीफ पहुंचाने का इरादा करेंगे।

देवी०। मैं कल से एक और तरद्दुद में पड़ गया हूं।

नकाब०। वह क्या?

देवी०। कल से मेरे लड़के तारासिंह का पता नहीं है, न मालूम वह क्यों और कहां चला गया।

नकाब०। तारासिंह के लिए आपको तरद्दुद न करना चाहिये, आशा है कि घण्टे भर के अन्दर ही यहां आ पहुंचेगा।

देवी०। आपके इस कहने से तो मालूम होता है कि आपको उसका हाल मालूम है।

नकाब०। बेशक मालूम है मगर मैं अपनी जुबान से कुछ भी न कहूंगा, आप स्वयं उससे जो कुछ पूछना होगा पूछ लेंगे। (वीरेन्द्रसिंह से) आज जिस समय हम लोग घर से यहां की तरफ रवाना हो रहे थे उसी समय एक चीठी कुंअर इन्द्रजीतसिंह की मुझे मिली जिसमें उन्होंने लिखा था कि तुम महाराज के पास जाकर मेरी तरफ से अर्ज करो कि महाराज भैरोसिंह और तारासिंह को मेरे पास भेज दें क्योंकि उनके बिना हम लोगों को कई बातों की तकलीफ हो रही है, साथ ही उसके एक चीठी महाराज के नाम की भी उन्होंने भेजी है।

इतना कह के नकाबपोश ने अपनी जेब में से एक बन्द लिफाफा निकाल कर वीरेन्द्रसिंह के हाथ में दिया।

वीरेन्द्र० । (ताज्जुब के साथ लिफाफा लेकर) सीधे मेरे पास क्यों नहीं भेजा

नकाव० । वे न तो खुद तिलिस्म के बाहर आ सकते हैं और न किसी को बुला सकते हैं, हमलोगों का आदमी हर दम तिलिस्म के अन्दर मौजूद रहता है और उनका हालचाल की खवर लिया करता है इसलिए उसके मारफत पत्र भेज सकते हैं

इतना सुन कर बीरेन्द्रसिंह चुप हो रहे और लिफाफा खोल कर पढ़ने लगे प्रणाम इत्यादि के वाद यह लिखा था :—

"हम दोनों भाई कुशलपूर्वक तिलिस्म की कारंवाई कर रहे हैं परन्तु ऐयार या मददगार न रहने के कारण कभी कभी तकलीफ हो जाती है इस आशा है कि भैरोसिंह और तारासिंह को शीघ्र भेज देंगे । यहां तिलिस्म में ने हमें दो मददगार बहुत अच्छे पहुंचा दिये हैं जिनका नाम रामसिंह और ल सिंह है । ये दोनों मायारानी और तिलिस्मी दारोगा इत्यादि के भेदों से खूब वा हैं । यदि इन लोगों के सामने दुष्टों के मुकद्दमे का फैसला करेंगे तो आशा देखने सुनने वालों को एक अपूर्व आनन्द मिलेगा । इन्हीं दोनों की जुबानी दोनों भाइयों का हाल पूरा पूरा मिला करेगा और ये ही दोनों भैरोसिंह हम लोगों के पास पहुंचा देंगे । भाई गोपालसिंह से कह दीजिएगा कि उनके भरतसिंहजी भी इस तिलिस्म में मुझे मिले हैं । उन्हें कम्बख्त दारोगा ने कैद था, ईश्वर की कृपा से उनकी जान बच गई । भाई गोपालसिंहजी मुझसे विदा समय तालाब वाले नहर के विषय में गुप्त रीति से जो कुछ कह गये थे वह निकला, चांद वाला पताका भी हम लोगों को मिल गया ।

आपके आज्ञाकारी पुत्र—इन्द्रजीत, आनन्द

इस चीठी को पढ़ कर वीरेन्द्रसिंह बहुत ही प्रसन्न हुए मगर साथ ही इसके ताज्जुब भी हद्द से ज्यादे हुआ । इन्द्रजीतसिंह के हाथ के अक्षर पहिचानने में तरह की भूल नहीं हो सकती थी, तथापि शक मिटाने के लिए वीरेन्द्रसिंह ने वह राजा गोपालसिंह के हाथ में दे दी क्योंकि उनके विषय में भी दो एक गुप्त बात ऐसा इशारा था जिसके पढ़ने से इस बात का रत्ती भर भी शक नहीं हो सकता कि यह चीठी कुमार के हाथ के लिखी हुई नहीं है या ये नकाबपोश जाल कर

चीठी पढ़ने के साथ ही राजा गोपालसिंह हद्द से ज्यादे खुश होकर और राजा वीरेन्द्रसिंह की तरफ देख कर बोले, "निःसन्देह यह पत्र इन्द्रजीत हाथ का लिखा हुआ है । विदा होते समय जो गुप्त वातें मैं उनसे कह आया चीठी में उनका जिक्र एक अपूर्व आनन्द दे रहा है, फिर दूर अपने मित्र

के पा जाने का हाल पढ़ कर मुझे जो प्रसन्नता हुई उसे मैं शब्दों द्वारा प्रकट नहीं कर सकता। (नकाबपोशों की तरफ़ देख के) अब मालूम हुआ कि आप लोगों के नाम रामसिंह और लक्ष्मणसिंह हैं, ज़रूर आप लोग बहुत सी बातों को छिपा रहे हैं परन्तु जिस समय भेदों को खोलेंगे उस समय निःसन्देह एक अद्भुत आनन्द मिलेगा।"

इतना कह कर राजा गोपालसिंह ने वह चीठी तेजसिंह के हाथ में दे दी और इन्होंने पढ़ कर देवीसिंह को और देवीसिंह ने पढ़ कर और ऐयारों को भी दिखाई जिसके सबब से इस समय सभों ही के चेहरे पर प्रसन्नता दिखाई देने लगी। इसी समय तारासिंह भी वहां आ पहुंचा।

नकाबपोश ने जो कुछ कहा था वही हुआ अर्थात् थोड़ी देर में तारासिंह ने भी वहां पहुंच कर सभों के दिल से खुटका दूर किया, मगर हमारे राजा साहब और ऐयारों को इस बात का ताज्जुब जरूर था कि नकाबपोश को तारासिंह का हाल क्योंकर मालूम हुआ और उसने किस जानकारी पर कहा कि वह घण्टे भर के अन्दर आ जायगा। खैर इस समय तारासिंह के आ जाने से सभों को प्रसन्नता ही हुई और देवीसिंह को भी उस तस्वीर के विषय में कुछ खुलासा हाल पूछने का मौका मिला, मगर नकाबपोशों के सामने उस विषय में बातचीत करना उचित न जाना।

नकाबपोश०। (बीरेन्द्रसिंह से) देखिए तारासिंह आ गये, जो मैंने कहा था वही हुआ। अब इन दोनों के विषय में क्या हुक्म होता है? क्या आज ये दोनों ऐयार कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के पास जाने के लिए तैयार हो सकते हैं।

तेज०। हां तैयार हो सकते हैं और आप लोगों के साथ जा सकते हैं मगर दो एक जरूरी कामों की तरफ ध्यान देने से यही उचित जान पड़ता है कि आज नहीं बल्कि कल इन दोनों भाइयों को आपके साथ बिदा किया जाय।

नकाब०। जैसी मर्जी, अब आज्ञा हो तो हम लोग बिदा हों।

तेज०। क्या आज इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का किस्सा आप न सुनावेंगे?

नकाब०। देर तो हो गई मगर फिर भी कुछ थोड़ा सा हाल सुनाने के लिए हम लोग तैयार हैं, आप दरियाफ्त करायें यदि बड़े महाराज निश्चिन्त हों तो....

इशारा पाते ही भैरोसिंह बड़े महाराज अर्थात् महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास चले गये और थोड़ी देर में लौट आकर बोले, "महाराज आप लोगों का इन्तजार कर रहे हैं।"

इतना सुनते ही बीरेन्द्रसिंह के साथ ही साथ सब कोई उठ खड़े हुए और बात की बात में यह दर्बार-खास महाराजा सुरेन्द्रसिंह का दर्बार-खास हो गया।

नौवां बयान

महाराज सुरेन्द्रसिंह और वीरेन्द्रसिंह तथा उनके ऐयारों के सामने एक नका-पोश ने दोनों कुमारों का हाल इस तरह बयान करना शुरू किया :—

नकाब० । कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने भी उन पांचों कैदियों के साथ रात को उस बाग में गुजारा किया । सवेरा होने पर मामूली कामों से छुट्टी पाकर दोनों भाई बीच वाले बुर्ज के पास गये और चबूतरे वाले पत्थरों को गौर से देखने लगे । पत्थरों में कहीं कहीं अंक और अक्षर भी खुदे हुए थे, उन्हीं अंकों को देखते इन्द्रजीतसिंह ने एक चौखूटे पत्थर पर हाथ रक्खा और आनन्दसिंह की तरफ कर कहा, "बस इसी पत्थर को उखाड़ना चाहिए ।" इसके जवाब में आनन्द ने "जी हां" कहा और तिलिस्मी खञ्जर की नोक से टुकड़े को उखाड़ डाला।

पत्थर के नीचे एक छोटा सा चौखूटा कुण्ड बना हुआ था और उस कुण्ड बीचोबीच में लोहे की एक गोल कड़ी लगी थी जिसे कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने खींच शुरू किया । उस कड़ी के साथ लोहे की पचीस तीस हाथ लम्बी जंजीर लगी थी जो बराबर खिचती हुई चली आई और जब वह रुक गई अर्थात् अपनी तक खिंच कर बाहर निकल आई तब उस चबूतरे के चारो तरफ का पत्थर आप से आप उखड़ कर जमीन के साथ लग गया और उसके अन्दर के लिए दो रास्ते दिखाई देने लगे । इनमें से एक रास्ता नीचे तहखाने में जाने के लिए था और दूसरा बुर्ज के ऊपर चढ़ने के लिए ।

दोनों कुमार पहिले बुर्ज के ऊपर चढ़ गये और वहां से चारो तरफ की देखने लगे । खास बाग के कुछ हिस्से और उनके कई तरफ की मजबूत तथा कुछ इमारत और पेड़ पत्ते इत्यादि दिखाई दे रहे थे । उन सभों को देखने बाद कुमार नीचे उतर आये और उन पांचों कैदियों को यह कह कर कि लोग इसी बाग में रहो, खबरदार नीचे न उतरना' दोनों भाई तहखाने में उतरे

नीचे उतरने के लिए चक्करदार ग्यारह सीढ़ियां थीं जिन्हें तै करने बाद दोनों एक लम्बे चौड़े कमरे में पहुंचे । वहां बिल्कुल अन्धकार था, मगर तिलिस्मी खंजर की रोशनी करने पर वहां की सब चीजें साफ दिखाई देने लगीं । वह लम्बाई में बीस हाथ और चौड़ाई में पन्द्रह हाथ से ज्यादे न होगा । उसके बीच में लोहे का एक चबूतरा था और उसके ऊपर लोहे ही का एक शेर बैठा था जिसकी चमकदार आंखें उसके भयानक चेहरे के साथ ही साथ देखने वाले के दिल पर खौफ पैदा कर सकती थीं । उसके सामने जमीन पर

हथौड़ा पड़ा हुआ था। बस इसके अतिरिक्त उस कमरे में और कुछ भी न था। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उस शेर के सर को अच्छी तरह टटोलना शुरू किया।

उस शेर के दाहिने कान की तरफ केवल एक उंगली जाने लायक छोटा सा गड़हा था। कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने अपनी जेब में से एक चमकदार चीज निकाल कर उस गड़हे में फंसाने के बाद शेर के सामने वाला हथौड़ा जमीन से उठा कर उसी से वह चमकदार चीज (कील) एक ही चोट में ठोंक दी और इसके बाद तुरत ही दोनों भाई उस तहखाने के बाहर निकल आये।

वह चमकदार चीज जो शेर के सर में ठोंकी गई थी क्या थी इसे आप लोग जानते होंगे। यह वही चमकदार चीज थी जो कुंअर इन्द्रजीतसिंह को बाग के उस तहखाने में एक पुतले के पेट में से मिली थी, जिसमें वे कुंअर आनन्दसिंह खोजते हुए गये थे*।

जब दोनों कुमार तहखाने के बाहर निकल आये उसके थोड़ी ही देर बाद जमीन के अन्दर से धमधमाहट और घड़घड़ाहट की आवाज आने लगी जिससे वे पांचों कैदी बहुत ही ताज्जुब और घबराहट में आ गये। मगर कुमार ने उन्हें समझा कर शान्त किया और कुछ खाने पीने की फिक्र में लगे। पहर भर बाद वह आवाज बन्द हुई और तब तक कुमार भी हर तरह से निश्चिन्त हो गये। दोपहर दिन ढलने के बाद पांचों कैदियों को साथ लिए हुए दोनों कुमार पुनः तहखाने के अन्दर उतरे। जब उस कमरे में पहुंचे तो वहां शेर और चबूतरे का नाम निशान भी न पाया, हां उसके बदले में उसी जगह एक गड़हा देखा जिसमें उतरने के लिए छः सात सीढ़ियां बनी हुई थीं। कैदियों को भी साथ लिए और तिलिस्मी खञ्जर की रोशनी किए हुए दोनों कुमार इस सुरङ्ग में घुसे और लगभग पचास कदम जाने बाद पुनः एक कमरे में पहुंचे। यह कमरा भी पहिले ही कमरे के बराबर था और इसके सामने की दीवार में पुनः आगे जाने के लिए एक सुरंग का मुहाना नजर आ रहा था अर्थात् इस कमरे को लांघ कर पुनः आगे बढ़ जाने के लिए भी सामने की तरफ सुरंग दिखाई दे रही थी।

यह कमरा पहिले की तरह खाली या सूनसान न था। इसमें तरह तरह की बेशकीमत चीजों तथा हर्बे जवाहिरात और अशर्फियों के भी जगह जगह ढेर लगे हुए थे जिन्हें देख कर उन पांचों कैदियों में से एक ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह से पूछा, "यह इतनी बड़ी रकम यहां किसके लिए रक्खी हुई है?"

---

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति दसवां भाग, पहिला बयान।

इन्द्र०। यह सब दौलत हमारे लिए रक्खी हुई हैं, केवल इतनी ही नहीं बल्कि इसी तरह और भी कई जगह इससे भी बढ़ के अच्छी अच्छी और कीमती चीजें दिखाई देंगी।

कैदी०। इन चीजों को आप क्योंकर बाहर निकालेंगे?

इन्द्र०। जब हम लोग तिलिस्म तोड़ते हुए चुनारगढ़ पहुंचेंगे तब ये सब चीजें निकलवा ली जायंगी।

कैदी०। तब तक इसी तरह ज्यों की त्यों पड़ी रहेंगी?

इन्द्र०। हां।

इस कमरे में चारों तरफ की दीवारों के साथ तरह तरह के बेशकीमत हर्बे लटक रहे थे जिन पर इस खयाल से कि जंग इत्यादि लग कर खराब न हो जाय एक किस्म का मोमी रोगन लगा हुआ था। नीचे दो सन्दूक जड़ाऊ जेवरों से भरे हुए थे जिनमें ताले लगे हुए न थे। इसके अतिरिक्त सोने के बहुत से जड़ाऊ गुल-नुमा और नाजुक बर्तन भी दिखाई दे रहे थे।

इन चीजों को देख भाल कर कुमार आगे बढ़े और सुरंग के दूसरे मुहाने में घुस कर दूर तक चले गये। अबकी दफे का सफर सीधा न था बल्कि घूमघुमौआ था। लगभग दो या डेढ़ कोस जाने के बाद पुन: एक कमरे में पहुंचे। पहिले कमरे की तरह इसमें भी आमने सामने दोनों तरफ सुरंग बनी हुई थी।

इस कमरे में सोने चांदी या जवाहिरात की कोई चीज न थी, हां दीवारों पर बड़ी बड़ी तस्वीरें लटक रही थीं जो एक किस्म के रोगनी कपड़े पर जिस पर सर्दी गर्मी का असर नहीं पहुंच सकता था बनी हुई थीं। इन तस्वीरों में रोह-तासगढ़ और चुनार की तस्वीरें ज्यादे थीं और तरह तरह के नक्शे भी जगह जगह लटक रहे थे जिन्हें बड़े गौर से दोनों कुमार देर तक देखते रहे।

इस कमरे की कैफियत को देख के इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा "मालूम होता है, 'ब्रह्म-मण्डल' यही है, इस जगह हम लोगों को बराबर आना पड़ेगा, तथा चुनारगढ़ के तिलिस्म की चाभी भी इसी जगह से हमें मिलेगी।"

आनन्द०। बेशक यही बात है, इस जगह के 'ब्रह्म-मण्डल' होने में कुछ भी सन्देह नहीं हो सकता।

इन्द्र०। फिर अब तुम्हारी क्या राय है? इस समय यहां कुछ काम किया जाय या नहीं? क्योंकि इस काम को हम लोग अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

आनन्द०। मेरी राय में तो इस समय यहां कोई काम न करना चाहिये क्योंकि

(कैदियों की तरफ इशारा करके) इनलोगों को तकलीफ होगी, पहिले इन लोगों को तिलिस्म के बाहर कर देना उचित होगा, फिर हम लोग यहां आकर अपना काम किया करेंगे।

इन्द्र०। मैं भी यही उचित समझता हूं,इसके अतिरिक्त हमलोगों को यहां कई दफे आने की जरूरत पड़ेगी अस्तु इस समय अगर यहां अटक कर कोई काम करेंगे तो बाहर निकलने में बहुत देर हो जायगी और हम भी परेशान और दुःखी हो जांयगे।

इतना कह कर इन्द्रजीतसिंह आगे की तरफ बढ़े और सभों को लिए सामने वाली सुरंग में घुसे। अवकी दफे दोनों कुमारों और कैदियों को बहुत ज्यादे चलना पड़ा और साथ ही इसके भूख प्यास की भी तकलीफ उठानी पड़ी। कई कोस का सफर करने के बाद जब वे लोग सुरंग के बाहर निकले तो सुवह की सफेदी आसमान पर फैल चुकी थी इसलिए दोनों कुमारों ने अन्दाज से समझा कि अवकी दफे हमलोग चौदह या पन्द्रह घण्टे तक बराबर चलते रहे और जमानिया को बहुत दूर छोड़ आये।

सुरंग के बाहर निकल कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने जिस सरजमीन में अपने को पाया वह एक बहुत ही दिलचस्प और सुहावनी घाटी थी। चारो तरफ कम ऊंची सुन्दर और हरी भरी पहाड़ियों के बीच में सरसब्ज मैदान था जिसके बीच में बरसाती पानी से बचने के लिए एक स्थान भी बना हुआ था। इस सरजमीन को इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने बहुत ही पसन्द किया और इन्द्रजीतसिंह ने उन कैदियों की तरफ देख कर कहा,"अब तुम लोग अपने को आजाद और तिलिस्मी कैदखाने से बाहर निकला हुआ समझो, थोड़ी देर में हमलोग तुम्हें इस घाटी से बाहर पहुंचा देंगे फिर जहां तुम लोगों की इच्छा हो चले जाना।"

इसके जवाब में इन कैदियों ने हाथ जोड़ कर कहा—"अब हम लोग इन चरणों को छोड़ नहीं सकते! यद्यपि अपने दुश्मनों से बदला लेने के लिए हम लोग बेताब हो रहे हैं परन्तु हमारी यह अभिलाषा भी आपकी कृपा के बिना पूरी नहीं हो सकती अस्तु हमलोग आपके साथ ही साथ राजा बीरेन्द्रसिंह के दर्बार में चलने की इच्छा रखते हैं।"

दोनों कुमारों ने उनकी प्रार्थना मंजूर कर ली और इसके बाद जो कुछ अनूठी कार्रवाई उन लोगों ने की दूसरे दिन बयान करूंगा।

इतना कह कर नकाबपोश चुप हो गया और अपने घर जाने की इच्छा से राजा साहब का मुंह देखने लगा। यद्यपि महाराज इसके आगे भी इन्द्रजीतसिंह

और आनन्दसिंह का हाल सुना चाहते थे परन्तु इस समय नकाबपोश को छुट्टी दे देना ही उचित जान कर घर जाने की इजाजत दे दी और दर्बार बर्खास्त किया।

...सवाँ बयान

अब देखना चाहिए कि देवीसिंह का साथ छोड़ के भूतनाथ ने क्या किया। भूतनाथ भी वास्तव में एक विचित्र ऐयार है। जिस तरह वह अपने फन में बड़ा ही तेज और होशियार है और जिस काम के पीछे पड़ जाता है उसे कुछ न कुछ सीधा किये बिना नहीं रहता, उसी तरह वह निडर भी परले सिरे का कहा जा सकता है। यद्यपि आज कल उसे इस बात की धुन चढ़ी हुई है कि उसके दो एक पुराने ऐब जिनके सबब से उसकी ऐयारी में धब्बा लगता है छिपे रह जांय और वह किसी न किसी तरह राजा बीरेन्द्रसिंह का ऐयार बन जाय मगर फिर भी ऐयारी के समय अपना काम निकालने की धुन में वह जान तक की परवाह नहीं करता। इस मौके पर भी उसने नकाबपोशों का पीछा करके जो कुछ किया उसके विषय में भी यही कहने की इच्छा होती है कि उसने अपनी जान को हथेली पर ले कर वह काम किया जिसका हाल अब हम लिखते हैं।

संध्या होने में अभी घण्टे भर की देर है। उसी खोह के मुहाने पर जिसके अन्दर नकाबपोशों का मकान है या जिसमें भूतनाथ और देवीसिंह नकाबपोशों का पता लगाते हुए गए थे हम दो नकाबपोशों को ढाल तलवार लगाये हाथ में हाथ दिये टहलते हुए देखते हैं। इन दोनों नकाबपोशों की पोशाक और नकाब साधारण थी और हाथ पैर से भी ये दोनों दुबले पतले और कमजोर मालूम पड़ते थे। हम नहीं कह सकते कि यह दोनों यहां कितनी देर से और किस फिक्र में घूम रहे हैं, तथा आपुस में किस ढंग की बातें कर रहे हैं, हां इनके हाव भाव से इस बात का पता जरूर लगता है कि ये दोनों किसी के आने का इन्तजार कर रहे हैं। ऐसे ही समय में अचानक एक आदमी इनके पास आकर खड़ा हो गया जो सूरत शक्ल आदि से बिल्कुल उजड्ड और देहाती मालूम पड़ता था तथा जिसके हाथ पैर तथा चेहरे पर गर्द रहने से यह भी जान पड़ता था कि यह कुछ दूर से सफर करता हुआ आ रहा है।

दोनों नकाबपोशों ने उसकी सूरत गौर से देखी और एक ने पूछा, "तू कौन है और क्या चाहता है?"

उस देहाती ने नकाबपोश की बात का कुछ जवाब न दिया और इशारे से बताया कि यहां से थोड़ी दूर पर कोई किसी को मार रहा है।

पुनः एक नकाबपोश ने पूछा, "क्या तू गूंगा है ?"

इसका भी उसने कुछ जवाब न देकर फिर पहिले की तरह इशारे से कुछ समझाया और अपने साथ आने के लिए कहा।

दोनों नकाबपोशों को विश्वास हो गया कि यह गूंगा बहरा और साथ ही इसके उजड्ड तथा बेवकूफ भी है, अस्तु एक नकाबपोश ने अपने साथी से कहा, "इसके साथ चल कर देखो तो सही क्या कहता है।"

दोनों नकाबपोश उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गये और वह भी यह इशारा करके कि तुम्हें थोड़ी ही दूर चलना पड़ेगा उन्हें अपने साथ लिए हुए पूरब की तरफ रवाना हुआ।

थोड़ी दूर जाने बाद उस देहाती ने जमीन पर गिरे कई रुपये और दो तीन जनाने जेवर नकाबपोशों को दिखाए जिससे इन्हें ताज्जुब हुआ और उन्होंने उस देहाती को जेवर और रुपये उठा लेने के लिए कहा, मगर उस देहाती ने ऐसा करने से इनकार किया और आगे चलने के लिए इशारा किया।

दोनों नकाबपोश भी जेवरों और रुपयों को उसी तरह छोड़ उस देहाती के पीछे पीछे चल कर और आगे बढ़े तथा कुछ दूर चलने पर पुनः दो तीन जेवर और एक कटा हुआ हाथ जमीन पर देखा। ताज्जुब में आकर एक नकाबपोश ने दूसरे से कहा, "यह क्या मामला है ? हमारे पड़ोस ही में कोई बुरी घटना भई हुई जान पड़ती है ?"

दूसरा०। रंग तो ऐसा ही मालूम पड़ता है !

पहिला०। यह हाथ भी किसी औरत का जान पड़ता है, शायद ये जेवर भी उसी के हों ?

दूसरा०। बेशक ये जेवर उसी के होंगे, इस बात का पता लगा के अपने सर्दार को इत्तिला देनी चाहिये।

ये बातें हो ही रही थीं कि आगे से किसी औरत के रोने की आवाज इन दोनों नकाबपोशों ने सुनी जिससे ताज्जुब में आकर ये आगे की तरफ बढ़े।

इसी तरह चल कर वे दोनों अपने स्थान से दूर निकल गये और अन्त में एक औरत को जोर से रोते और चिल्लाते देखा। यह औरत साधारण न थी बल्कि किसी अमीर घर की मालूम पड़ती थी। इसके बदन में खुशबूदार फूलों के जेवर पड़े हुए थे और यह दोनों हाथ से अपना सर पीट के रो रही थी। इसके सामने एक दूसरी औरत की लाश पड़ी हुई थी और उसके बदन में भी खुशबूदार

फूलों के जेवर पड़े हुए थे। उस लाश के बदन से खून वह रहा था, और उसका एक हाथ कटा हुआ था।

थोड़ी देर तक ताज्जुब के साथ देखने के वाद एक नकावपोश ने उस औरत से पूछा, "इसे किसने मारा और यह तेरी कौन है?" इसके जबाव में उस औरत ने अपने आंचल से आंसू पोछ कर कहा, "मैं क्या बताऊं कि किसने मारा! तुम्हारे किसी साथी ने मारा है, अब तुम मुझे भी मार कर छुट्टी करो जिससे बखेड़ा ही तै हो जाय।"

एक नकाव०। (ताज्जुब और क्रोध के साथ) क्या हम लोग ऐसे नामर्द और पतित हैं जो औरतों के खून से अपना हाथ रंगेंगे?

औरत०। मैं तो यही सोचती हूं, जब खुद मुझी पर बीत चुकी और बीत रही है तब मैं और क्या कहूं? शायद आप न हों मगर आप ही की तरह पर्दे में मुंह छिपाने वालों ने इसे मारा है। चाहे वह मर्द हो या औरत मगर याद रहे कि इसका वदला लिये बिना न रहूंगी या इसके साथ अपनी भी जान दे दूंगी।

नकावपोश०। मगर यह तू कह किससे रही है और तुझे क्योंकर यकीन हो गया कि इसे हमारे साथियों ने मारा है?

औरत०। तुम्हीं लोगों से कह रही हूं और मुझे यह अच्छी तरह यकीन है कि इसे तुम्हारे साथियों ने मारा है।

नकावपोश०। (क्रोध से) क्या कहूं तू औरत है, तुझ पर हाथ छोड़ नहीं सकता, अगर कोई मर्द ऐसी बातें करता तो उसे इस कहने का मजा चखा देता!

औरत०। शायद मुझे धोखा हुआ हो मगर इसमें कोई शक नहीं कि जिसने इसे मारा है वह तुम्हारी ही तरह का था।

नकाव०। तू अपना और इसका हाल तो कह, शायद उससे कुछ पता लगे।

औरत०। मैं इस जगह कुछ भी नहीं कहने की, अगर तुम उन लोगों में से नहीं हो जिन्होंने मुझे सताया है और असल मर्द हो तो मुझे अपने सर्दार के पास ले चलो, उसी जगह मैं सब हाल कहूंगी।

नकाव०। हमारे सर्दार के पास तू नहीं जा सकती।

औरत०। तो अब मुझे विश्वास हो गया जो कुछ किया है सब तुम लोगों ने किया है।

इसी तरह की बातें देर तक होती रहीं। वह दोनों नकावपोश उस औरत को अपने सर्दार के पास ले चलना या उसे अपना पता देना नहीं चाहते थे मगर

उस औरत ने ऐसी तीखी तीखी बातें कहीं कि वे दोनों जोश में आ गए और उसे तथा उस लाश को उठा कर अपने खोह के मुहाने पर चलने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने लाश उठा कर ले चलने में मदद करने के लिए उस गूंगे देहाती को इशारे में कहा मगर उसने ऐसा करने से साफ इनकार किया बल्कि जब उन दोनों नक़ावपोशों ने उसे डांटा तब वह डर कर वहां से भागा और कुछ दूर पर जाकर खड़ा हो गया।

फिर उन दोनों नकावपोशों ने उस गूंगे से कुछ कहना उचित न जाना और जोश में आकर खुद लाश को उठा कर ले चलने के लिए तैयार हो गये, क्योंकि उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि इस औरत की जुबानी जरूर कोई अनूठी बात सुनने में आयेगी।

हम ऊपर बयान कर चुके हैं कि उस औरत की लाश भी फूलों के गहनों से भरी हुई थी, अब इतना और कह देना है कि उन फूलों पर बेहोशी की दवा इस ढङ्ग पर छिड़की हुई थी कि कुछ मालूम नहीं होता था और खुशबू के साथ उस दवा का गुण भी धीरे धीरे फैल रहा था। यद्यपि फूलों की फैलने वाली खुशबू के सबब नकाबपोशों पर उसका कुछ असर हो चुका था मगर उन्हें इस बात का खयाल कुछ भी न था।

जब उन दोनों ने उस लाश को उठा लिया और फूलों की खुशबू को तेजी के साथ दिमाग में घुसने का मौका मिला तब उन दोनों नक़ावपोशों ने समझा कि हमारे साथ ऐयारी की गई। मगर अब कर ही क्या सकते थे? तुरत सर में चक्कर आने लगा जिसके सबब से वे दोनों बैठ गये और साथ ही इसके बेहोश होकर जमीन पर लम्बे हो गये। उस समय औरत की लाश भी चैतन्य हो गई और वह देहाती गूंगा भी उनकी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ। उस औरत ने देहाती गूंगे से कहा, "अब क्या करना चाहिये?"

देहाती०। बस अब हमारा काम हो गया, अब इन्हें मालूम हो जायगा कि भूतनाथ कोई साधारण ऐयार नहीं है।

औरत०। मगर अब भी आपको इस बात के सोचने का मौका है कि नकाब-पोश लोग आपसे रंज न हो जांय और इस बखेड़े का नतीजा बुरा न निकले।

देहाती०। इन बातों को मैं खूब सोच चुका हूं। उन दोनों नकाबपोशों को जो हमारे राजा साहब के दर्बार में आया करते हैं मैं रंज होने का मौका ही न दूंगा और इन दोनों में से भी केवल एक ही को उठा ले जाऊंगा और उसी से अपना काम निकालूंगा।

इतना कह उस देहाती ने दोनों नकावपोशों के चेहरे पर से नकाब उलट दी मगर असली सूरत पर निगाह पड़ते ही चौंक के उस औरत की तरफ देख कर कहा, "ओफ ओह, ये सूरतें तो वे ही हैं जिन्होंने दर्बारे-आम में दारोगा और जैपाल को वदहवास कर दिया था। पहिले दिन जब एक नकावपोश ने अपने चेहरे पर से नकाव हटाई थी तो दारोगा के सर में चक्कर* आ गया था, और दूसरे दिन जब दूसरे नकावपोश ने सूरत दिखाई तो जैपाल की जान शरीर से निकलने तैयारी करने लगी थी†।

इसी बीच में वह औरत भी उठ कर हर तरह से दुरुस्त हो गई थी जिसे थोड़ी देर पहिले दोनों नकावपोश मुर्दा समझ कर उठा लें चले थे। असल में उसका हाथ कटा हुआ न था, असली हाथ कपड़े के अन्दर छिपा हुआ था और एक बनावटी कटा हुआ हाथ लगा कर दिखा दिया गया था।

ऊपर की बातचीत से हमारे पाठक समझ गये होंगे कि ये देहाती महाशय असल में भूतनाथ हैं और दोनों औरतें उसके नौजवान शागिर्द तथा मर्द हैं।

भूतनाथ की आखिरी बात सुन कर उसके एक शागिर्द ने जो औरत की सूरत में था कहा, "क्या ये ही दोनों हमारे महाराज के दर्बार में जाया करते हैं?"

भूत०। दर्बार में जब नकाबपोशों ने सूरत दिखाई थी तब दो दफे इन्हीं दोनों की सूरतें देखने में आई थीं, मगर मैं नहीं कह सकता कि वहां जाने वाले दोनों नकावपोश यही हैं। मेरा दिल तो यही गवाही देता है कि दोनों नकावपोश कोई दूसरे हैं और जब दर्बार में जाते हैं तो केवल नक़ाव ही डाल कर नहीं बल्कि अपनी सूरतें भी वदल कर जाते हैं और उस दिन इन्हीं की सी सूरत बना कर गये थे।

शागिर्द०। वेशक ऐसा ही है।

भूत०। खैर अब मैं इन दोनों में से एक को छोड़ न जाऊंगा जैसा कि पहिले इरादा कर चुका था बल्कि दोनों ही को उठा कर ले जाऊंगा और असली भेद मालूम करके ही छोड़ूंगा।

इतना कह के भूतनाथ ने ऐयारी ढग पर उन दोनों नकाबपोशों की गठड़ी बांधी और तीनों आदमी मिलजुल कर उन्हें उठा ले गये।

बारहवां बयान

नक़ावपोशों के चले जाने के बाद जब केवल घर वाले ही वहां रह गये तब राजा वीरेन्द्रसिंह ने अपने पिता से तारासिंह की बाबत जो कुछ हाल हम ऊपर

* देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति उन्नीसवां भाग, दसवां बयान।
† देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति उन्नीसवां भाग, बारहवां बयान।

लिख आये हैं कुछ घटा बढ़ा कर बयान किया और इसके बाद कहा, "तारासिंह नकाबपोशों के सामने ही लौट कर आ गया था जिससे अभी तक यह पूछने का मौका न मिला कि वह कहां गया था और वह तस्वीर उसे कहां से मिली थी जो उसने अपनी मां को दी थी।"

इतना कह कर वीरेन्द्रसिंह चुप हो गये और देवीसिंह ने वह कपड़े वाली तस्वीर (जो चम्पा ने दी थी) महाराज सुरेन्द्रसिंह के सामने रख दी। सुरेन्द्रसिंह ने बड़े गौर से उस तस्वीर को देखा और इसके बाद तारासिंह से पूछा—

सुरेन्द्र०। निःसन्देह यह तस्वीर किसी अच्छे कारीगर के हाथ की बनी हुई है, यह तुम्हें कहां से मिली?

तारा०। मैं स्वयम् इस तस्वीर का हाल अर्ज करने वाला था, परन्तु इसके सम्बन्ध की कई ऐसी बातों को जानना आवश्यक था जिनके बिना इसका पूरा भेद मालूम नहीं हो सकता, अतएव मैं उन्हीं बातों के जानने की फिक्र में पड़ा हुआ था और इसी सबब से अभी तक कुछ अर्ज करने की नौबत नहीं आई।

तेज०। तो क्या तुम्हें इसका पूरा पूरा भेद मालूम हो गया?

तारा०। जी नहीं, मगर कुछ कुछ जरूर मालूम हुआ है?

तेज०। तो इस काम में तुमने अपने साथियों से मदद क्यों नहीं ली?

तारा०। अभी तक मदद की जरूरत नहीं पड़ी थी, मगर हां अब मदद लेनी पड़ेगी!

वीरेन्द्र०। खैर, बताओ कि इस तस्वीर को तुमने क्योंकर पाया?

तारा०। (इधर उधर देख कर) भूतनाथ की स्त्री से।

तारासिंह की इस बात को सुन कर सब कोई चौंक पड़े, खास कर देवीसिंह को तो बड़ा ही ताज्जुब हुआ और उसने हैरत की निगाह से अपने लड़के तारा-सिंह की तरफ देख कर पूछा—

देवी०। भूतनाथ की स्त्री तुम्हें कहां मिली?

तारा०। उसी जंगल में जिसमें आपने और भूतनाथ ने उसे देखा था, बल्कि उसी झोंपड़ी में जिसमें भूतनाथ और आप उसके साथ गये थे और लाचार होकर लौट आये थे। आपको यह सुन कर ताज्जुब होगा कि वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री ही थी।

देवी०। (आश्चर्य से) हैं, क्या वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री थी।

तारा०। जी हां, आप और भूतनाथ नकाबपोशों के फेर में पड़ कर कई दिनों

तक परेशान हुए परन्तु उतना हाल मालूम न कर सके जितना मैं जान आया हूं।

इस समय दर्बार में आपुस वालों के सिवाय कोई गैर आदमी ऐसा न था जिसके सामने इस तरह की बातों के कहने सुनने में किसी तरह का ख्याल होता अतएव बड़ी उत्कण्ठा के साथ सब कोई तारासिंह की बातें सुनने के लिए तैयार हो गये और देवीसिंह का तो कहना ही क्या जिनका दिल तूफान में पड़े हुए जहाज की तरह हिंडोले खा रहा था। उन्हें यकायक यह ख्याल पैदा हुआ कि अगर वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री थी तो दूसरी औरत भी जरूर चम्पा ही रही होगी जिसे नकाबपोशों के मकान में देखा गया था, अस्तु बड़े ताज्जुब के साथ अपने लड़के तारासिंह से पूछा, "क्या तुम बता सकते हो कि जिन दो औरतों को हमने नकाबपोशों के मकान में देखा था वे कौन थीं ?"

तारा०। उनमें से एक तो जरूर भूतनाथ की स्त्री थी मगर दूसरी के बारे में अभी तक कुछ पता नहीं लगा।

देवी०। (कुछ सोच कर) दूसरी भी तुम्हारी मां होगी ?

तारा०। शायद ऐसा हो मगर विश्वास नहीं होता।

तेज०। तुम्हें यह कैसे निश्चय हुआ कि वह वास्तव में भूतनाथ की स्त्री थी?

तारा०। उसने स्वयं भूतनाथ की स्त्री होना स्वीकार किया बल्कि और भी बहुत सी बातें ऐसी कहीं जिससे किसी तरह का शक नहीं रहा।

देवी०। और तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि नकाबपोशों के घर में जाकर हम लोगों ने किसे देखा या जंगल में भूतनाथ की स्त्री हम लोगों को मिली थी और हम लोग उसके पीछे पीछे एक झोपड़ी में जा कर सूखे हाथ लौट आये थे ?

तारा०। यह सब हाल मुझे बखूबी मालूम है और उस समय मैं भी उसी जंगल में था जिस समय आपने भूतनाथ की स्त्री को देखा था और उसके पीछे पीछे गये थे। इस समय आप यह सुन कर और ताज्जुब करेंगे कि आपसे अलग होकर भूतनाथ ने उसी दिन अर्थात् कल संध्या के समय उन दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार कर लिया जिनकी सूरत यहां दरबार में देख कर दारोगा और जैपाल बदहवास हो गये थे।

वीरेन्द्र०। (ताज्जुब से) हैं ! मगर वे दोनों नकाबपोश तो आज भी यहां आये थे जिनका जिक्र तुम कर रहे हो।

तारा०। जी हां उन्हें तो मैं अपनी आंखों ही से देख चुका हूं, मगर मेरे कहने का मतलब यह है कि भूतनाथ ने कल जिन दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार किया

है उनकी सूरतें ठीक वैसी ही हैं जैसी दारोगा और जैपाल ने यहां देखी थीं, चाहे ये लोग हों कोई भी।

तेज०। और भूतनाथ ने उन्हें गिरफ्तार कहां पर किया ?

तारा०। उसी खोह के मुहाने पर उसने उन्हें धोखा दिया जिसमें नकाबपोश लोग रहते थे।

देवी०। मालूम होता है कि हम लोगों की तरह तुम भी कई दिनों से नकाबपोशों की खोज में पड़े हो ?

तारा०। खोज में नहीं बल्कि फेर में।

वीरेन्द्र०। खैर तुम खुलासे तौर पर सब हाल बयान कर जाओ, इस तरह पूछने और कहने से काम नहीं चलेगा।

तारा०। जो आज्ञा, मगर मेरा हाल कुछ बहुत लम्बा चौड़ा नहीं, केवल इतना ही कहना है कि मैं भी पांच सात दिन से उन नकाबपोशों के फेर में पड़ा हूं और इत्तिफाक से मैं भी उसी खोह के अन्दर जा पहुंचा जिसमें वे लोग रहते हैं। (कुछ सोच और जीतसिंह की तरफ देख कर) अगर कोई हर्ज न हो तो दो घण्टे के बाद मुझसे मेरा हाल पूछा जाय।

जीत०। (महाराज की तरफ देख कर और कुछ इशारा पा कर) खैर कोई चिन्ता नहीं, मगर यह बताओ कि इस दो घण्टे के अन्दर तुम क्या काम करोगे।

तारा०। कुछ भी नहीं, मैं केवल अपनी मां से मिल लूंगा और स्नान ध्यान से छुट्टी पा लूंगा।

देवी०। (धीरे से) आज कल के लड़के भी कुछ विचित्र ही पैदा होते हैं, खास करके ऐयारों के।

इसके जवाब में तारासिंह ने अपने पिता की तरफ देखा और मुस्कुरा कर सर झुका लिया। यह बात देवीसिंह को कुछ बुरी मालूम हुई मगर बोलने का मौका न देख कर चुप रह गये।

तेज०। (तारा से) आज जब हम लोग तुम्हारे न मिलने से परेशान थे तो हमारी परेशानी को देख कर नकाबपोशों ने कहा था कि तारासिंह के लिए आपको तरद्दुद न करना चाहिये, आशा है कि वह घण्टे भर के अन्दर ही यहां आ पहुंचेगा, और वास्तव में हुआ भी ऐसा ही, तो क्या नकाबपोशों को तुम्हारा हाल मालूम था ? यह बात नकाबपोशों से भी पूछी गई थी मगर उन्होंने कुछ जवाब न दिया और कहा कि इसका जवाब तारा ही देगा।

तारा० । नकाबपोशों की सभी बातें ताज्जुब की होती हैं, मैं नहीं जानता कि उन्हें मेरा हाल क्योंकर मालूम हुआ ।

तेज० । क्या तुम्हें इस बात की खबर है कि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने तुम्हें और भैरोसिंह को बुलाया है ?

तारा० । जी नहीं ।

तेज० । (कुमार की चीठी तारा को दिखा कर) लो इसे पढ़ो ।

तारा० । (चीठी पढ़ कर) नकाबपोशों ही के हाथ यह चीठी आई होगी ?

तेज० । हां और उन्हीं नकाबपोशों के साथ तुम दोनों को जाना भी पड़ेगा।

तारा० । जब मर्जी होगी हम दोनों चले जांयगे ।

इसके बाद महाराज की आज्ञानुसार दर्बार बर्खास्त हुआ और सब कोई अपने अपने ठिकाने चले गये । तारासिंह भी महल में अपनी मां से मिलने के लिये चला गया और घण्टे भर से ज्यादे देर तक उसके पास बैठा बातचीत करता रहा, इसके बाद जब महल से बाहर आया तो सीधे जीतसिंह के डेरे में चला गया और जब मालूम हुआ कि वे महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास गये हुए हैं तो खुद भी महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास चला गया ।

हम नहीं कह सकते कि महाराज सुरेन्द्रसिंह जीतसिंह और तारासिंह में देर तक क्या क्या बातें होती रहीं, हां इसका नतीजा यह जरूर निकला कि तारासिंह को पुनः अपना हाल किसी से कहना न पड़ा अर्थात् महाराज ने उसे अपना हाल बयान करने से माफी दे दी और तारासिंह को भी जो कुछ कहना सुनना था महाराज से ही कह सुन कर छुट्टी पा ली । औरों को तो इस बात का ऐसा खयाल न हुआ मगर देवीसिंह को यह चालाकी बुरी मालूम हुई और उन्हें निश्चय हो गया कि तारासिंह और चम्पा दोनों मां बेटे मिले हुए हैं और साथ ही इसके बड़े महाराज भी इस भेद को जानते हैं मगर ताज्जुब है कि ऐयारों पर प्रकट नहीं करते, इसका कोई न कोई सबब जरूर है, और तब देवीसिंह की हिम्मत न पड़ी कि अपने लड़के को कुछ कहें या डांटें ।

दो घण्टे रात जा चुकी थी जब महाराज सुरेन्द्रसिंह ने बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को अपने पास बुलवाया । उस समय जीतसिंह पहिले ही से महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास बैठे हुए थे, अस्तु जब दोनों आदमी वहां आ गये तो दो घण्टे तक तारासिंह के बारे में बातचीत होती रही और इसके बाद महाराज आराम करने के लिए पलंग पर चले गये । बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह अपने अपने कमरे में चले आये।

बारहवाँ बयान

दूसरे दिन अपने मामूली समय पर पुनः दोनों नकाबपोशों के आने की इत्तिला मिली। उस समय जीतसिंह वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह राजा गोपालसिंह बलभद्रसिंह इन्द्रदेव और बद्रीनाथ वगैरह अपने यहां के कुछ ऐयार लोग भी महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास बैठे हुए थे और उन्हीं नकाबपोशों के बारे में तरह तरह की बातें हो रही थीं। आज्ञानुसार दोनों नकाबपोश हाजिर किए गए और फिर इस तरह बातचीत होने लगी :—

तेज०। (नकाबपोशों की तरफ देख कर) तारासिंह की जुबानी सुनने में आया कि भूतनाथ ने आपके दो आदमियों को ऐयारी कर के गिरफ्तार कर लिया है।

एक नकाब०। जी हां, हम लोगों को भी इस बात की खबर लग चुकी है मगर कोई चिन्ता की बात नहीं है। गिरफ्तार होने और बेइज्जती उठाने पर भी वे दोनों भूतनाथ को किसी तरह की तकलीफ न देंगे और न भूतनाथ ही उन्हें किसी तरह की तकलीफ दे सकेगा। यद्यपि उस समय भूतनाथ ने उन दोनों को नहीं पहिचाना मगर जब उनका परिचय पायेगा और पहिचानेगा तो उसे बड़ा ही ताज्जुब होगा। जो हो मगर भूतनाथ को ऐसा करने की जरूरत न थी। ताज्जुब है कि ऐसे फजूल के कामों में भूतनाथ का जी क्योंकर लगता है। ऐयारी करके जिस समय भूतनाथ ने दोनों को गिरफ्तार किया था उस समय उन दोनों की सूरत देखने के साथ ही छोड़ देना चाहिये था क्योंकि एक दफे भूतनाथ इस दर्बार में उन दोनों सूरतों को देख चुका था और जानता था कि आखिर इन दोनों का हाल मालूम होगा ही। अब दोनों को गिरफ्तार करके ले जाने से भूतनाथ की बेचैनी कम न होगी बल्कि और ज्यादे बढ़ जायगी।

तेज०। हां हम लोगों ने भी यही सुना था कि जिन सूरतों को देख कर मायारानी का दारोगा और जैपाल बदहवास हो गये थे उन्हीं दोनों को भूतनाथ ने गिरफ्तार किया है।

नकाब०। जी हां ऐसा ही है।

तेज०। तो क्या वे दोनों स्वयं इस दर्बार में आये थे या आप लोगों ने उन दोनों के जैसी सूरत बनाई थी?

नकाब०। जी वे लोग स्वयं यहां नहीं आये थे बल्कि हम ही दोनों उन दोनों की तरह सूरत बनाए हुए थे। दारोगा और जैपाल इस बात को समझ न सके।

तेज०। असल में दोनों कौन हैं जिन्हें भूतनाथ ने गिरफ्तार किया है ?

नकाव०। (कुछ सोच कर) आज नहीं, अगर हो सकेगा तो दो एक दिन में मैं आपकी इस बात का जवाब दूंगा क्योंकि इस समय हम लोग ज्यादा देर तक यहां ठहरना नहीं चाहते। इसके अतिरिक्त सम्भव है कि कल तक भूतनाथ भी उन दोनों को लिए हुए यहीं आ जाय। अगर वह अकेला ही आवे तो हुक्म दीजि-येगा कि उन दोनों को भी यहां ले आये, उस समय कम्बख्त दारोगा और जैपाल के सामने उन दोनों का हाल सुनने से आप लोगों को विशेष आनन्द मिलेगा। मैं भी... (कुछ रुक कर) मौजूद ही रहूंगा, जो बात समझ में न आवेगी समझा दूंगा। (कुछ रुक कर) हां भैरोसिंह और तारासिंह के विषय में क्या आज्ञा होती है ? क्या आज वे दोनों हमारे साथ भेजे जांयगे ? क्योंकि इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को उन दोनों के विना सख्त तकलीफ हैं।

सुरेन्द्र०। हां भैरो और तारा तुम दोनों के साथ जाने के लिए तैयार हैं। इतना कह कर महाराज ने भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देखा जो उस दर्बार में बैठे हुए नकावपोशों की बातें सुन रहे थे। महाराज को अपनी तरफ देखते देख दोनों भाई उठ खड़े हुए और महाराज को सलाम करने बाद दोनों नकावपोशों के पास आकर बैठ गये।

नकाव०। (महाराज से) तो अब हम लोगों को आज्ञा मिलनी चाहिए।

सुरेन्द्र०। क्या आज दोनों लड़कों का हाल हम लोगों को न सुनाओगे ?

नकाव०। (हाथ जोड़ कर) जी नहीं, क्योंकि देर हो जाने से आज भैरोसिंह और तारासिंह को इन्द्रजीतसिंह के पास हम लोग पहुंचा न सकेंगे।

सुरेन्द्र०। खैर क्या हर्ज है, कल तो तुम लोगों का आना होगा ही ?

नकाव०। अवश्य।

इतना कह कर दोनों नकावपोश उठ खड़े हुए और सलाम करके बिदा हुए, भैरोसिंह और तारासिंह भी उनके साथ रवाना हुए।

तेरहवां बयान

रात घण्टे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है। पहाड़ के एक सूनसान दर्रे में जहां किसी आदमी का जाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव जान पड़ता है, सात आदमी बैठे हुए किसी के आने का इन्तजार कर रहे हैं और उन लोगों के पास ही एक लालटेन जल रही है। यह स्थान चुनारगढ़ के तिलिस्मी मकान से लगभग छः

कोस की दूरी पर होगा। यह दो पहाड़ों के बीच वाला दर्रा बहुत बड़ा, पेचीला, ऊंचा नीचा और ऐसा भयानक था कि साधारण मनुष्य एक सायत के लिए भी यहां खड़ा रह कर अपने उछलते और कांपते हुए कलेजे को सम्हाल नहीं सकता था। इस दर्रे में बहुत सी गुफाएं ऐसी हैं जिनमें सैकड़ों आदमी आराम से रह कर दुनियादारों की आंखों से वल्कि वहम और गुमान से भी अपने को छिपा सकते हैं, और इसी से समझ लेना चाहिये कि यहां ठहरने या बैठने वाला आदमी साधारण नहीं वल्कि वड़े जीवट और कड़े दिल का होगा।

ये सातो आदमी जिन्हें हम बेफिक्री के साथ बैठे देखते हैं भूतनाथ के साथी हैं और उसी की आज्ञानुसार ऐसे स्थान में अपना घर बनाये पड़े हुए हैं। इस समय भूतनाथ यहां आने वाला है, अस्तु ये लोग भी उसी का इन्तजार कर रहे हैं।

इसी समय भूतनाथ भी उन दोनों नकाबपोशों को जिन्हें आज ही धोखा देकर गिरफ्तार किया था लिए हुए आ पहुंचा। भूतनाथ को देखते ही वे लोग उठ खड़े हुए और बेहोश नकाबपोशों की गठरी उतारने में सहायता दी।

दोनों बेहोश जमीन पर सुला दिए गये और इसके बाद भूतनाथ ने अपने एक साथी की तरफ देख कर कहा, "थोड़ा पानी ले जाओ, मैं इन दोनों के चेहरे धोकर देखा चाहता हूं।"

इतना सुनते ही एक आदमी दौड़ता हुआ चला गया और थोड़ी ही दूर पर एक गुफा के अन्दर घुस कर पानी का भरा हुआ लोटा ले कर चला आया। भूतनाथ ने बड़ी होशियारी से (जिसमें उनका कपड़ा भींगने न पावे) दोनों नकाबपोशों का चेहरा धोकर लालटेन की रोशनी में गौर से देखा मगर किसी तरह का फर्क न पाकर धीरे से कहा, "इन लोगों का चेहरा रंगा हुआ नहीं है।"

इसके बाद भूतनाथ ने उन दोनों को लखलखा सुंघाया जिससे वे तुरत ही होश में आकर उठ बैठे और घबराहट के साथ चारों तरफ देखने लगे। लालटेन की रोशनी में भूतनाथ के चेहरे पर निगाह पड़ते ही उन दोनों ने भूतनाथ को पहिचान लिया और हंस कर उससे कहा, "बहुत खासे! तो ये सब जाल आप ही के रचे हुए थे?"

भूत०। जी हां, मगर आप इस बात का खयाल भी अपने दिल में न लाइयेगा कि मैं आपको दुश्मनी की नीयत से पकड़ लाया हूं।

एक नकाबपोश०। (हंस कर) नहीं नहीं, यह बात हम लोगों के दिल में नहीं आ सकती और न तुम हमें किसी तरह का नुकसान पहुंचा ही सकते हो, मगर मैं यह पूछता हूं कि तुम्हें इस कारवाई के करने से फायदा क्या होगा?

भूत० । आप लोगों से किसी तरह का फायदा उठाने की भी मेरी नीयत नहीं है। मैं तो केवल दो चार बातों का जवाब पाकर ही अपनी दिलजमई कर लूंगा और इसके बाद आप लोगों को उसी ठिकाने पहुंचा दूंगा जहां से ले आया हूं।

नकाब० । मगर तुम्हारा यह खयाल भी ठीक नहीं है क्योंकि तुम खुद समझ गये होगे कि हम लोग थोड़े ही दिनों के लिए अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए हैं और अपना भेद प्रकट होने नहीं देते, इसके बाद हम लोगों का भेद छिपा नहीं रहेगा, अस्तु इस बात को जान कर भी तुम्हें इतनी जल्दी क्यों पड़ी है और क्यों तुम्हारे पेट में चूहे कूद रहे हैं ? क्या तुम नहीं जानते कि स्वयं महाराज सुरेन्द्रसिंह और राजा वीरेन्द्रसिंह हम लोगों का भेद जानने के लिए बेताब हो रहे थे मगर कई बातों पर ध्यान देकर हम लोगों ने अपना भेद खोलने से इनकार कर दिया और कह दिया कि कुछ दिन सब्र कीजिए फिर आपसे आप हम लोगों का भेद खुल जायगा, फिर तुम हो क्या चीज जो तुम्हारे कहने से हमलोग अपना भेद खोल देंगे ?

नकाबपोश की कुरुखी मिली हुई बातें सुन कर यद्यपि भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया मगर क्रोध करने का मौका न देख वह चुप रह गया और नरमी के साथ फिर बातचीत करने लगा ।

भूत० । आपका कहना ठीक है, मैं इस बात को खूब जानता हूं, मगर मैं उन भेदों को खुलवाना नहीं चाहता जिन्हें हमारे महाराज जानना चाहते हैं, मैं तो केवल दो चार मामूली बातें आप लोगों से पूछना चाहता हूं जिनका उत्तर देने में न तो आप लोगों का भेद ही खुलता है और न आप लोगों का कोई हर्ज ही होगा। इसके अतिरिक्त मैं वादा करता हूं कि मेरी बातों का जो कुछ आप जवाब देंगे उसे मैं किसी दूसरे पर तब तक प्रकट न करूंगा जब तक आप लोग अपना भेद न खोलेंगे।

नकाब० । (कुछ सोच कर) अच्छा पूछो क्या पूछते हो ?

भूत० । पहिली बात मैं यह पूछता हूं कि देवीसिंह के साथ मैं आप लोगों के मकान में गया था यह बात आपको मालूम है या नहीं ?

नकाब० । हां मालूम है ।

भूत० । खैर और दूसरी बात यह है कि वहां मैंने अपने लड़के हरनामसिंह को देखा, क्या वह वास्तव में हरनामसिंह ही था ।

नकाब० । (कुछ क्रोध की निगाह से भूतनाथ को देख कर) हां था तो सही, फिर ?

भूत० । (लापरवाही के साथ) कुछ नहीं, मैं केवल अपना शक मिटाना चाहता था । अच्छा अब तीसरी बात यह जानना चाहता हूं कि वहां देवीसिंह ने अपनी

स्त्री को और मैंने अपनी स्त्री को देखा था, क्या वे दोनों वास्तव में हम दोनों की स्त्रियां थीं या कोई और ?

नकाब० । चम्पा के बारे में पूछने वाले तुम कौन हो ? हां अपनी स्त्री के बारे में पूछ सकते हो, सो मैं साफ कह देता हूं कि वह बेशक तुम्हारी स्त्री 'रामदेई' थी।

यह जवाब सुनते ही भूतनाथ चौंका और उसके चेहरे पर क्रोध और ताज्जुब की निशानी दिखाई देने लगी। भूतनाथ को निश्चय था कि उसकी स्त्री का असली नाम 'रामदेई' किसी को मालूम नहीं है मगर इस समय एक अनजान आदमी के मुँह से उसका नाम सुन कर भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और इस बात पर उसे क्रोध भी चढ़ आया कि मेरी स्त्री इन लोगों के पास क्यों आई, क्योंकि वह एक ऐसे स्थान पर थी जहां उसकी इच्छा के विरुद्ध कोई जा नहीं सकता था, ऐसी अवस्था में निश्चय है कि वह अपनी खुशी से बाहर निकली और इन लोगों के पास आई। केवल इतना ही नहीं उसे इस बात के ख्याल से और भी रंज हुआ कि मुलाकात होने पर भी उसकी स्त्री ने उससे अपने को छिपाया बल्कि एक तौर पर धोखा देकर बेवकूफ बनाया—आदि इसी तरह की बातों को परेशानी और रंज के साथ भूतनाथ सोचने लगा।

नकाब० । अब जो कुछ पूछना था पूछ चुके या अभी कुछ बाकी है ?

भूत० । हां अभी कुछ और पूछना है।

नकाब० । तो जल्दी से पूछते क्यों नहीं, सोचने क्या लग गये ?

भूत० । अब यह पूछना है कि मेरी स्त्री आप लोगों के पास कैसे आई और वह खुद आप लोगों के पास आई या उसके साथ जबर्दस्ती की गई ?

नकाब० । अब तुम दूसरी राह चले, इस बात का जवाब हम लोग नहीं दे सकते।

भूत० । आखिर इसका जवाब देने में हर्ज ही क्या है ?

नकाब० । हो या न हो मगर हमारी खुशी भी तो कोई चीज है।

भूत० । (क्रोध में आकर) ऐसी खुशी से काम नहीं चलेगा, आपको मेरी बातों का जवाब देना ही पड़ेगा !

नकाब० । (हंस कर) मानों आप हम लोगों पर हुकूमत कर रहे हैं और जबर्दस्ती पूछ लेने का दावा रखते हैं ?

भूत० । क्यों नहीं, आखिर आप लोग इस समय मेरे कब्जे में हैं।

इतना सुनते ही नकाबपोश को भी क्रोध चढ़ आया और उसने तीखी आवाज

में कहा, "इस भरोसे न रहना कि हम लोग तुम्हारे कब्जे में हैं, अगर अब तक नहीं समझते थे तो अब समझ रक्खो कि उस आदमी का तुम कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते जो अपने हाथों से तुम्हारे छिपे हुए ऐबों की तस्वीर बनाने वाला है। हां बेशक तुमने वह तस्वीर भी हमारे मकान में देखी होगी अगर सचमुच अपने लड़के हरनामसिंह को उस दिन देख लिया है तो।"

यह एक ऐसी बात थी जिसने भूतनाथ के होशहवास दुरुस्त कर दिये। अब तक जिस जोश और दिमाग के साथ वह बैठा बातें कर रहा था वह बिल्कुल जाता रहा और घबराहट तथा परेशानी ने उसे अपना शिकार बना लिया। वह उठ कर खड़ा हो गया और बेचैनी के साथ इधर उधर टहलने लगा। बड़ी मुश्किल से कुछ देर में उसने अपने को सम्हाला और तब नकाबपोश की तरफ देख कर पूछा, "क्या वह तस्वीर आपके हाथ की बनाई हुई थी?"

नकाब०। बेशक!

भूत०। तो आपही ने उस आदमी को वह तस्वीर दी भी होगी जो मुझ पर उस तस्वीर की बाबत दावा करने के लिये कहता था!

नकाब०। इस बात का जवाब नहीं दिया जायगा।

भूत०। तो क्या आप मेरे उन भेदों को दर्बार में खोला चाहते हैं?

नकाब०। अभी तक तो ऐसा करने का इरादा नहीं था मगर अब जैसा मुनासिब समझा जायगा वैसा किया जायगा।

भूत०। उन भेदों को आपके अतिरिक्त आपकी मण्डली में और भी कोई जानता है?

नकाब०। इसका जवाब देना भी उचित नहीं जान पड़ता।

भूत०। आप बड़ी जबर्दस्ती करते हैं!

नकाब०। जबर्दस्ती करने वाले तो तुम थे मगर अब क्या हो गया?

भूत०। (तेजी के साथ) मुमकिन है कि मैं अब भी जबर्दस्ती का बर्ताव करूं, कोई क्या जान सकता है कि तुम लोगों को कौन उठा ले गया?

नकाब०। (हंस कर) ठीक है, तुम समझते हो कि यह बात किसी को मालूम न होगी कि हम लोगों को भूतनाथ उठा ले गया है।

भूत०। (जोर दे कर) ऐसा ही है, इसके विपरीत भी क्या कोई समझा सकता है?

इतने ही में थोड़ी दूर पर से यह आवाज आई, "हां समझा सकता है और विश्वास दिला सकता है कि यह बात छिपी हुई नहीं है।"

अब तो भूतनाथ की कुछ विचित्र ही हालत हो गई। वह घबड़ा कर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी और फुर्ती के साथ अपने आदमियों से बोला, "पकड़ो जाने न पाये !"

भूतनाथ के आदमी तेजी के साथ उस बोलने वाले की खोज में दौड़ गये मगर नतीजा कुछ भी न निकला अर्थात् वह आदमी गिरफ्तार न हुआ और भाग कर निकल गया। यह हाल देख दोनों नकाबपोशों ने खिलखिला कर हंस दिया और कहा, "क्यों, अब तुम अपनी क्या राय कायम करते हो ?"

भूत०। हां मुझे विश्वास हो गया कि आपका यहां रहना छिपा नहीं रहा अथवा हमारे पीछे आपका कोई आदमी यहां तक जरूर आया है। इसमें कोई शक नहीं कि आप लोग अपने काम में पक्के हैं कच्चे नहीं मगर ऐयारी के फन में मैंने आपको दबा लिया।

नकाब०। यह दूसरी बात है, तुम ऐयार हो और हम लोग ऐयारी नहीं जानते, मगर इतना होने पर भी तुम हमारे लिए दिन रात परेशान रहते हो और कुछ करते धरते नहीं बन पड़ता। मगर भूतनाथ, हम तुमसे फिर भी यही कहते हैं कि हम लोगों के फेर में न पड़ो और कुछ दिन सब्र करो, फिर आप से आप तुम्हें हम लोगों का हाल मालूम हो जायगा। ताज्जुब है कि तुम इतने बड़े ऐयार होकर जल्दबाजी के साथ ऐसी ओछी कार्रवाई करके खुदबखुद अपना काम बिगाड़ने की कोशिश करते हो ! उस दिन दर्बार में तुम देख चुके हो और जान भी चुके हो कि हम लोग तुम्हारी तरफदारी करते हैं, तुम्हारे ऐबों को छिपाते हैं, और तुम्हें एक विचित्र ढङ्ग से माफी दिला कर खास महाराज का कृपापात्र बनाया चाहते हैं, फिर क्या सबब है कि तुम हम लोगों का पीछा करके खामखाह हमारा क्रोध बढ़ा रहे हो ?

भूत०। (गुस्से को दबा कर नर्मी के साथ) नहीं नहीं, आप इस बात का गुमान भी न कीजिये कि मैं आपलोगों को दुःख दिया चाहता हूं और...

नकाब०। (बात काट के लापरवाही के साथ) दुःख देने की बात मैं नहीं कहता, क्योंकि तुम हम लोगों को दुःख दे ही नहीं सकते।

भूत०। खैर न सही मगर मैं अपने दिल की बात कहता हूं कि किसी बुरे इरादे से मैं आपलोगों का पीछा नहीं करता क्योंकि मुझे इस बात का निश्चय हो चुका है कि आप लोग मेरे सहायक हैं, मगर क्या करूं अपनी स्त्री को आपके मकान

में देख कर हैरान हूं और मेरे दिल के अन्दर तरह तरह की बातें पैदा हो रही हैं। आज

मैं इसी इरादे से आप लोगों को यहां ले आया था कि जिस तरह हो सके अपनी स्त्री का असल भेद मालूम कर लूं।

नकाब०। जिस तरह हो सके के क्या मानी ? हम कह चुके हैं कि तुम हमें किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंचा सकते और न डरा धमका कर ही कुछ पूछ सकते हो क्योंकि हम लोग बड़े ही जबर्दस्त हैं।

भूत०। अब इतनी ज्यादे शेखी तो न बघारिये, क्या आप ऐसे मजबूत हो गये कि हमारा हाथ कोई काम कर ही नहीं सकता !

नकाब०। हमारे कहने का मतलब यह नहीं है बल्कि यह है कि ऐसा करने से तुम्हें कोई फायदा नहीं हो सकता, क्योंकि हमारे संगी साथी सभी कोई तुम्हारे भेदों को जानते हैं मगर तुम्हें नुकसान पहुंचाना नहीं चाहते। हमारी ही तरफ ध्यान देकर देख लो कि तुम्हारे हाथों दुःखी होकर भी तुम्हें दुःख देना नहीं चाहते और जो कुछ तुम कर चुके हो उसे सह कर बैठे हैं।

भूत०। हमने आपको क्या दुःख दिया है ?

नकाब०। अगर हम इस बात का जवाब देंगे तो तुम औरों को तो नहीं मगर हमें पहिचान जाओगे।

भूत०। अगर आपको पहिचान भी जाऊंगा तो क्या हर्ज है ? मैं फिर प्रतिज्ञा पूर्वक कहता हूं कि जब तक आप स्वयं अपना भेद न खोलेंगे तब तक मैं अपने मुंह से कुछ भी किसी के सामने न कहूंगा, आप इसका निश्चय रखिये।

नकाब०। (कुछ सोच कर) मगर हमारा जवाब सुन कर तुम्हें गुस्सा चढ़ आवेगा और ताज्जुब नहीं कि खंजर का वार कर बैठो।

भूत०। नहीं नहीं, कदापि नहीं, क्योंकि मुझे अब निश्चय हो गया कि आपका यहां आना छिपा नहीं है, अगर मैं आपके साथ कोई बुरा बर्ताव करूंगा तो किसी लायक न रहूंगा।

नकाब०। हां ठीक है और बेशक बात भी ऐसी ही है। (फिर कुछ सोच कर) अच्छा तो अब तुम्हारी उस बात का जवाब देते हैं, सुनो और अपने कलेजे को अच्छी तरह सम्हालो।

भूत०। कहिये मैं हर तरह से सुनने के लिये तैयार हूं।

नकाब०। उस पीतल वाली सन्दूकड़ी में जिसके खुलने से तुम डरते हो और जो कुछ है वह हमारे ही शरीर का खून है, उसे तुम हमारे ही सामने से उठा ले गये, और हमारा ही नाम 'दलीपशाह' है।

यह एक ऐसी बात थी कि जिसके सुनने की उम्मीद भूतनाथ को नहीं हो सकती थी और न भूतनाथ में इतनी ताकत थी कि ये बातें सुन कर भी अपने को सम्हाले रहता। उसका चेहरा एक दम जर्द पड़ गया, कलेजा धड़कने लगा, हाथ पैर में कंपकंपी होने लगी, और वह सकते की सी हालत में ताज्जुब के साथ नकाबपोश के चेहरे पर गौर करने लगा।

नकाब०। तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास हुआ या नहीं !

भूत०। नहीं, तुम दलीपशाह कदापि नहीं हो सकते, यद्यपि मैंने दलीपशाह की सूरत नहीं देखी है मगर मैं उसके पहिचानने में गलती नहीं कर सकता और न इसी बात की उम्मीद हो सकती है कि दलीपशाह मुझे माफ कर देगा या मेरे साथ दोस्ती का बर्ताव करेगा।

नकाब०। तो मुझे दलीपशाह होने के लिए कुछ और भी सबूत देना पड़ेगा और उस भयानक रात की ओर इशारा करना पड़ेगा जिस रात को तुमने वह कार्रवाई की थी, जिस रात को घटाटोप अंधेरी छाई हुई थी, बादल गरज रहे थे, बार-बार बिजली चमक कर औरतों के कलेजों को दहला रही थी, बल्कि उसी समय एक दफे बिजली तेजी के साथ चमक कर पास ही वाले खजूर के पेड़ पर गिरी थी, और तुम स्याह कम्बल की घोंघी लगाये आम की बारी में घुस कर यकायक गायब हो गये थे। कहो कुछ और भी परिचय दूं या बस !

भूत०। (कांपती हुई आवाज में) बस बस, मैं ऐसी बातें सुना नहीं चाहता। (कुछ रुक कर) मगर मेरा दिल यही कह रहा है कि तुम दलीपशाह नहीं हो।

नकाब०। हां ! तब तो मुझे कुछ और भी कहना पड़ेगा। जिस समय तुम घर के अन्दर घुसे थे तुम्हारे हाथ में स्याह कपड़े का एक बहुत बड़ा लिफाफा था, जब मैंने तुम पर खंजर का वार किया तब वह लिफाफा तुम्हारे हाथ से गिर पड़ा और मैंने उठा लिया जो अभी तक मेरे पास मौजूद है, अगर तुम चाहो तो मैं दिखा सकता हूँ।

भूत०। (जिसका बदन डर के मारे कांप रहा था) बस बस बस, मैं तुम्हें कह चुका हूं और फिर कहता हूं कि ऐसी बातें सुना नहीं चाहता और न इसके सुनने से मुझे विश्वास ही हो सकता है कि तुम दलीपशाह हो। मुझ पर दया करो और अपनी चलती फिरती जुबान रोको !

नकाब०। अगर विश्वास नहीं हो सकता तो मैं कुछ और भी कहूंगा और

अगर तुम न सुनोगे तो अपने साथी को सुनाऊंगा। (अपने साथी नकाबपोश की

तरफ देख के) मैं उस समय अपनी चारपाई के पास बैठा कुछ लिख रहा था
यह भूतनाथ मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। कम्बल की घोंघी एक क्षण के लिये
इसके आगे की तरफ से हट गई थी और इसके कपड़े पर पड़े हुए खून के छींटे
दिखाई दे रहे थे। यद्यपि मेरी तरह इसके चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई थी मगर
मैं खूब समझता था कि यह भूतनाथ है। मैं उठ खड़ा हुआ और फुरती के साथ
इसके चेहरे पर से नकाब हटा कर इसकी सूरत देख ली। उस समय इसके चेहरे
पर भी खून के छींटे पड़े हुए दिखाई दिये। भूतनाथ ने मुझे डाँट कर कहा कि
'तुम हट जाओ और मुझे अपना काम करने दो'। तब तक मुझे इस बात की कुछ
भी खबर न थी कि यह मेरे पास क्यों आया है और क्या चाहता है। जब मैंने
पूछा कि 'तुम क्या किया चाहते हो और मैं यहां से क्यों हट जाऊं' तब इसने मुझ
पर खंजर का वार किया क्योंकि यह उस समय बिल्कुल पागल हो रहा था और
मालूम होता था कि इस समय अपने पराये को पहिचान नहीं सकता...

भूत०। (बात काट कर) ओफ, बस करो, वास्तव में उस समय मुझमें अपने
पराये को पहिचानने की ताकत न थी, मैं अपनी गरज में मतवाला और साथ ही
इसके अन्धा भी हो रहा था!

नकाब०। हां हां, सो तो मैं खुद ही कह रहा हूं क्योंकि तुमने उस समय अपने
प्यारे लड़के को कुछ भी नहीं पहिचाना और रुपये की लालच ने तुम्हें मायारानी
के तिलिस्मी दारोगा का हुक्म मानने पर मजबूर किया। (अपने साथी नकाबपोश
की तरफ देख कर) उस समय इसकी स्त्री अर्थात् कमला की मां इससे रंज होकर
मेरे ही घर में आई और छिपी हुई थी और जिस चारपाई के पास मैं बैठा हुआ
लिख रहा था उसी पर उसका छोटा बच्चा अर्थात् कमला का छोटा भाई सो रहा
था, उसकी मां अन्दर के दालान में भोजन कर रही थी और उसके पास उसकी
बहिन अर्थात् भूतनाथ की साली भी बैठी हुई अपने दुःख दर्द की कहानी के साथ
ही इसकी शिकायत भी कर रही थी, उसका छोटा बच्चा उसकी गोद में था
मगर भूतनाथ...

भूत०। (बात काटता हुआ) आफ ओफ! बस करो, मैं सुनना नहीं चाहता
तु तु तु तुम में.........'

इतना कहता हुआ भूतनाथ पागलों की तरह इधर उधर घूमने लगा और
फिर एक चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गया।

चौदहवां बयान

भूतनाथ के बेहोश हो जाने पर दोनों नकाबपोशों ने भूतनाथ के साथियों में से एक को पानी लाने के लिए कहा और जब वह पानी ले आया तो उस नकाब-पोश ने जिसने अपने को दलीपशाह बताया था अपने हाथ से भूतनाथ को होश में लाने का उद्योग किया। थोड़ी ही देर में भूतनाथ चैतन्य हो गया और नकाब-पोश की तरफ देख कर बोला, "मुझसे बड़ी भारी भूल हुई जो आप दोनों को फंसा कर यहां ले आया! आज मेरी हिम्मत बिल्कुल टूट गई और मुझे निश्चय हो गया कि अब मेरी मुराद पूरी नहीं हो सकती और मुझे लाचार होकर अपनी जान दे देनी पड़ेगी।"

नकाब०। नहीं नहीं भूतनाथ, तुम ऐसा मत सोचो, देखो हम कह चुके हैं और तुम्हें मालूम भी हो चुका है कि हम लोग तुम्हारे ऐबों को खोला नहीं चाहते बल्कि राजा वीरेन्द्रसिंह से तुम्हें माफी दिलाने का बन्दोबस्त कर रहे हैं। फिर तुम इस तरह हताश क्यों होते हो? होश करो और अपने को सम्हालो।

भूत०। ठीक है, मुझे इस बात की आशा हो चली थी कि मेरे ऐब छिपे रह जांयगे और मैं इसका बन्दोबस्त भी कर चुका था कि वह पीतल वाली सन्दूकड़ी खोली न जाय मगर अब वह उम्मीद कायम नहीं रह सकती क्योंकि मैं अपने दुश्मन को अपने सामने मौजूद पाता हूं।

नकाब०। बड़े ताज्जुब की बात है कि दर्बार में हम लोगों की कैफियत देख सुन कर भी तुम हमें अपना दुश्मन समझते हो! यदि तुम्हें मेरी बातों का विश्वास न हो तो मैं तुम्हें इजाजत देता हूं कि खुशी से मेरा सिर काट कर पूरी दिल जमई कर लो और अपना शक भी मिटा लो। तब तो तुम्हें अपने भेदों के खुलने का भय न रहेगा?

भूत०। (ताज्जुब से नकाबपोश की सूरत देख कर) दलीपशाह, वास्तव में तुम बड़े ही दिलावर शेर-मर्द रहमदिल और नेक आदमी हो। क्या सचमुच तुम मेरे कसूरों को माफ करते हो?

नकाब०। हां हां, मैं सच कहता हूं कि मैंने तुम्हारे कसूरों को माफ कर दिया बल्कि दो रईसों के सामने इस बात की कसम खा चुका हूं।

भूत०। वे दोनों रईस कौन हैं?

नकाब०। जिनके कब्जे में इस समय हम लोग हैं और [illegible] महाराज

साहव के दर्बार में जाया करते हैं।

भूत०। क्या राजा साहव के दर्बार में जाने वाले नकाबपोश कोई दूसरे हैं आप नहीं, या उस दिन दर्बार में आप नहीं थे जिस दिन आपकी सूरत देख कर जैपाल घबड़ाया था ?

नकाब०। हां बेशक वे नकाबपोश दूसरे हैं और समय समय पर नकाब डालने के अतिरिक्त सूरतें भी बदल कर जाया करते हैं। उस दिन वे हमारी सूरत बन कर दर्बार में गए थे।

भूत०। वे दोनों कौन हैं ?

नकाब०। यही तो एक बात है जिसे हम लोग खोल नहीं सकते, मगर तुम घबड़ाते क्यों हो ? जिस दिन उनकी असली सूरत देखोगे खुश हो जाओगे। तुम ही नहीं बल्कि कुल दर्बारियों को और महाराजा साहव को भी खुशी होगी क्योंकि वे दोनों नकाबपोश कोई साधारण व्यक्ति नहीं हैं।

भूत०। मेरे इस भेद को वे दोनों जानते हैं या नहीं ?

नकाब०। फिर तुम उसी तरह की बातें पूछने लगे।

भूत०। अच्छा अब न पूछूंगा मगर अंदाज से मालूम होता है कि जब आप उनके सामने भेद छिपाने की कसम खा चुके हैं तो वे इस भेद को जानते जरूर होंगे। खैर जब आप कहते ही हैं कि मेरा भेद छिपा रह जायगा तो मुझे घबराना न चाहिए। मगर मैं फिर यही कहूंगा कि आप दलीपशाह नहीं हैं।

नकाब०। (खिलखिला कर हंसने के बाद) तब तो फिर मुझे कुछ और कहना पड़ेगा। वाह, तुम्हारी स्त्री बड़ी ही नेक थी, जो कुछ तुमने उसके सामने किया....

भूत०। (नकाबपोश के मुँह पर हाथ रख कर) बस बस बस, मैं कुछ भी सुना नहीं चाहता, यह कैसी माफी है कि आप अपनी जुबान नहीं रोकते !

इतने ही में पत्थरों की आड़ में से एक आदमी निकल कर बाहर आया और यह कहता हुआ भूतनाथ के सामने खड़ा हो गया, "तुम उन्हें भले ही रोक दो मगर मैं उन बातों की याद दिलाए विना नहीं रह सकता !"

हम नहीं कह सकते कि इस नए आदमी को यहां आए कितनी देर हुई या यह कब से पत्थरों की आड़ में छिपा हुआ इन दोनों की बातें सुन रहा था, मगर भूतनाथ उसे यकायक अपने सामने देख कर चौंक पड़ा और घबराहट तथा परेशानी के साथ उसकी सूरत देखने लगा। यह देख उस आदमी ने जान बूझ कर रोशनी के सामने अपनी सूरत कर दी जिसमें पहिचानने के लिए भूतनाथ को तक

खौफ न करनी पड़े।

यह वही आदमी था जिसे भूतनाथ ने नकाबपोशों के मकान में सूराख के अंदर से झांक कर देखा था और जिसने नकाबपोशों के सामने एक बड़ी सी तस्वीर पेश करके कहा था कि 'कृपानाथ, बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूंगा'।

इस आदमी को देख कर भूतनाथ पहिले से भी ज्यादे घबड़ा गया। उसके बदन का खून बर्फ की तरह जम गया और उसमें हाथ पैर हिलाने की ताकत बिल्कुल न रही। उस आदमी ने पुनः कड़क कर भूतनाथ से कहा, "ये नकाबपोश साहब तुम्हारी बात मान कर चाहे चुप रह जांय मगर मैं उन बातों को अच्छी तरह याद दिलाए बिना न रहूंगा जिन्हें सुनने की ताकत तुममें नहीं है। अगर तुम इनको दलीपशाह नहीं मानते तो मुझे दलीपशाह मानने में तुम्हें कोई उज्र भी न होगा।"

भूतनाथ यद्यपि आश्चर्यमय घटनाओं का शिकार हो रहा था और एक तौर पर खौफ तरद्दुद परेशानी और नाउम्मीदी ने उसे चारो तरफ से आकर घेर लिया था मगर फिर भी उसने कोशिश करके अपने होश हवास दुरुस्त किये और उस नए आये दलीपशाह की तरफ देख कर कहा, "बहुत खासे! एक दलीपशाह ने ता परेशान कर ही रक्खा था अब आप दूसरे दलीपशाह भी आ पहुंचे, थोड़ी देर में कोई तीसरे दलीपशाह भी आ जांयगे, फिर मैं काहे को किसी से दो बातें कर सकूंगा। (पुराने दलीपशाह की तरफ देख कर) अब बताइये दलीपशाह आप हैं या ये?"

पुराना दलीप०। तुम इतने ही में घबरा गये! हमारे यहां जितने नकाबपोश हैं सभी अपना नाम दलीपशाह बताने के लिए तैयार होंगे, मगर तुम्हें अपनी अक्ल से पहिचानना चाहिये कि वास्तव में दलीपशाह कौन है।

भूत०। इस कहने का मतलब तो यही है कि आप लोग सच नहीं बोलते?

पुराना दलीप०। जो बातें हमने तुमसे कहीं क्या वे झूठ हैं?

नया दलीप०। या मैं जो कुछ कहूंगा वह झूठ होगा। अच्छा सुनो मैं एक दिन का जिक्र करता हूं जब तुम ठीक दोपहर के समय उसी पीतल वाली सन्दूकड़ी को बगल में छिपाये रोहतासगढ़ की तरफ भागे जा रहे थे। जब तुम्हें प्यास लगी तब तुम एक ऊंचे जगत वाले कूए पर पानी पीने के लिये ठहर गये जिस पर एक पुराने नीम के पेड़ की सुन्दर छाया पड़ रही थी। कूएं की जगत में नीचे की तरफ एक खुली कोठरी थी और उसमें एक मुसाफिर गर्मी की तकलीफ मिटाने की नीयत से लेटा हुआ तुम्हारे ही बारे में तरह तरह की बातें सोच रहा था। तुम्हें उस आदमी के वहां मौजूद रहने का गुमान भी न था मगर उसने तुम्हें

कूएं पर जाते हुए देख लिया, अस्तु वह इस फिक्र में पड़ गया कि तुम्हारा छोटी सी गठरी में क्या चीज है इसे मालूम करे और अगर उसमें कोई चीज उसके मतलब की हो तो उसे निकाल ले। उस समय उस आदमी की सूरत ऐसी न थी कि तुम उसे पहिचान सकते बल्कि वह ठीक एक देहाती पंडित की सूरत में था क्योंकि वह वास्तव में एक ऐयार था, अस्तु वह हाथ में लोटा लिए हुए कोठरी के बाहर निकला और उस ठिकाने गया जहां तुम ·· · में झुक कर पानी खींच रहे थे। तुम्हें इस बात का गुमान भी न था कि वह तुम्हारे साथ दगा करेगा मगर उसने पीछे से तुम्हें ऐसा धक्का दिया कि तुम कूएं के अन्दर जा रहे और उसने तुम्हारे ऐयारी के बटुए पर कब्जा करके जो कुछ अन्दर था उसे अच्छी तरह देख और समझ लिया बल्कि कुछ ले भी लिया। क्या तुम्हें आज तक मालूम भी हुआ कि वह कौन था!

भूत०। (ताज्जुब से) नहीं, मैं अभी तक न जान सका कि वह कौन था, मगर इन बातों के कहने से तुम्हारा मतलब ही क्या है?

नया दलीप०। मतलब यही है कि तुम जान जाओ कि इस समय वह आदमी तुम्हारे सामने खड़ा है।

भूत०। (क्रोध से खंजर निकाल कर) क्या वह तुम ही थे।

नया दलीप०। (खंजर का जवाब खंजर ही से देने के लिए तैयार होकर) बेशक मैं ही था और मैंने तुम्हारे बटुए में क्या क्या देखा सो भी इस समय बयान करूंगा।

पहिला दलीप०। (भूतनाथ को डपट कर) बस खबरदार, होश में आओ और अपनी करतूतों पर ध्यान द . । हमने पहिले ही कह दिय · क ? म इ में आकर अपने को बर्बाद कर दोगे। बेशक तुम बर्बाद हो जाओगे और किसी काम के न रहोगे, साथ ही इसके यह भी समझ रखना कि तुम दलीपशाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और न उसे तुम्हारे तिलिस्मी खंजर की पर्वाह है।

भूत०। मैं आपसे किसी तरह तकरार नहीं करता मगर इसको सजा दिये बिना भी न रहूंगा क्योंकि इसने मेरे साथ दगा करके मुझे बड़ा नुकसान पहुंचाया है और यही वह शख्स है जो मुझ पर दावा करने वाला है, अस्तु हमारे इसके इसी जगह सफ़ाई हो जाय तो बेहतर है।

पहिला दलीप०। खैर जब तुम्हारी बदकिस्मती आ ही गई है तो हम कुछ नहीं कह सकते, तुम लड़ के देख लो और जो कुछ बदा है भोगो, मगर साथ ही इसके यह भी सोच लो कि तुम्हार तरह इसके और मेरे हाथ में भी तिलिस्मी

खंजर है और इन खंजरों की चमक में तुम्हारे आदमी तुम्हें कुछ भी मदद नहीं पहुंचा सकते ।

भूत० । (कुछ सोच कर और फिर रुक के) तो क्या आप इसकी मदद करेंगे ?

पहिला दलीप० । बेशक !

भूत० । आप तो मेरे सहायक ?

पहिला दलीप० । मगर इतने नहीं कि अपने साथियों को नुकसान पहुंचावें।

भूत० । आखिर ये जब मुझे नुकसान पहुंचाने के लिए तैयार हैं तो क्या किया जाय ?

पहिला दलीप० । इनसे भी माफी की उम्मीद करो क्योंकि हम लोगों के सर्दार तुम्हारे पक्षपाती हैं ।

भूत० । (खंजर म्यान में रख कर) अच्छा अब हम आपकी मेहरबानी पर भरोसा करते हैं, जो चाहे कीजिये ।

पहिला दलीप० । (नये दलीप से) आओ जी, तुम मेरे पास बैठ जाओ ।

नया दलीप० । मैं तो इससे लड़ता ही नहीं मुझे क्या कहते हो ? लो मैं तुम्हारे पास बैठ जाता हूं, मगर यह तो बताओ कि अब इसी भूतनाथ के कब्जे में पड़े रहोगे या यहां से चलोगे भी ?

पहिला दलीप० । (भूतनाथ से) कहो अब मेरे साथ क्या सलूक किया चाहते हो ? तुम्हें मुनासिब तो यही है कि हमें कैद करके दर्बार में ले चलो ।

भूत० । नहीं मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है बल्कि आप मुझे माफी की उम्मीद दिलाइये तो मैं यहां से चला जाऊं ।

पहिला दलीप० । हां तुम माफी की उम्मीद कर सकते हो, मगर इस शर्त पर कि अब हम लोगों का पीछा न करोगे !

भूत० । नहीं अब ऐसा न करूंगा । चलिए मैं आपको आपके ठिकाने पहुंचा दूं।

नया दलीप० । हमें अपना रास्ता मालूम है किसी मदद की जरूरत नहीं ।

इतना कह कर नया दलीपशाह उठ खड़ा हुआ और साथ ही वे दोनों नकाबपोश भी जिन्हें भूतनाथ बेहोश करके लाया था उठे और अपने मकान की तरफ चल पड़े ।

पन्द्रहवां बयान

महाराज सुरेन्द्रसिंह के दर्बार में दोनों नकाबपोश दूसरे दिन नहीं आये बल्कि तीसरे दिन आये और आज्ञानुसार बैठ जाने पर अपनी गैरहाजिरी का सबब एक

नकाबपोश ने इस तरह बयान किया ;—

"भैरोसिंह और तारासिंह को साथ लेकर यद्यपि हम लोग इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के पास गये थे मगर रास्ते में कई तरह की तकलीफ हो जाने के कारण जुकाम (सर्दी) और बुखार के शिकार बन गये, गले में दर्द और रेंजिश के सबब साफ बोला नहीं जाता था बल्कि अभी तक आवाज साफ नहीं हुई, इसीलिए कुंवर इन्द्रजीतसिंह ने जोर देकर हम लोगों को रोक लिया और दो दिन अपने पास से हटने न दिया, लाचार हम लोग हाजिर न हो सके, बल्कि उन्होंने एक चीठी भी महाराज के नाम की दी है।"

यह कह के नकाबपोश ने एक चीठी जेब से निकाली और उठ कर महाराज के हाथ में दे दी। महाराज ने बड़ी प्रसन्नता से वह चीठी जो खास इन्द्रजीतसिंह के हाथ की लिखी हुई थी पढ़ी और इसके बाद बारी बारी से सभों के हाथ में वह चीठी घूमी। उसमें यह लिखा हुआ था :—

प्रणाम इत्यादि के बाद—

"आपके आशीर्वाद से हम लोग प्रसन्न हैं। दोनों ऐयारों के न होने से जो तकलीफ थी अब वह भी जाती रही। रामसिंह और लक्ष्मणसिंह ने हम लोगों की बड़ी मदद की इसमें कोई सन्देह नहीं! हम लोग तिलिस्म का बहुत ज्यादे काम खत्म कर चुके हैं। आशा है कि आज के तीसरे दिन हम दोनों भाई आपकी सेवा में उपस्थित होंगे और इसके बाद जो कुछ तिलिस्म का काम बचा हुआ है उसे आपकी सेवा में रह कर ही पूरा करेंगे। हम दोनों की इच्छा है कि तब तक आप कैदियों का मुकदमा भी बन्द रक्खें क्योंकि उसके देखने और सुनने के लिये हम दोनों बेचैन हो रहे हैं। उपस्थित होने पर हम दोनों अपना अनूठा हाल भी अर्ज करेंगे।"

इस चीठी को पढ़ कर और यह जान कर सभी प्रसन्न हुए कि अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह आया ही चाहते हैं, इसी तरह इस उपन्यास के प्रेमी पाठक भी जान कर प्रसन्न होंगे कि अब यह उपन्यास भी शीघ्र ही समाप्त हुआ चाहता है। अस्तु कुछ देर तक खुशी के चर्चे होते रहे और इसके बाद पुनः नकाबपोशों से बातचीत होने लगी—

एक नकाब०। भूतनाथ लौट कर आया या नहीं?

तेज०। ताज्जुब है कि अभी तक भूतनाथ नहीं आया। शायद आपके साथियों ने उसे [illegible] मुझे तो

नकाबपोश०। नहीं नहीं हमारे साथी लोग उसे दुःख नहीं देंगे;

विश्वास था कि भूतनाथ आ गया होगा क्योंकि वे दोनों नकाबपोश लौट कर हमारे यहां पहुंच गये जिन्हें भूतनाथ गिरफ्तार कर के ले गया था। मगर अब शक होता है कि भूतनाथ पुनः किसी फेर में तो नहीं पड़ गया या उसे पुनः हमारे किसी साथी को पकड़ने का शौक तो नहीं हुआ!

तेज०। आपके साथी ने लौट कर अपना हाल तो कहा होगा?

नकाबपोश०। जी हां, कुछ हाल कहा था जिससे मालूम हुआ कि उन दोनों को गिरफ्तार करके ले जाने पर भूतनाथ को पछताना पड़ा।

तेज०। क्या आप बता सकते हैं कि क्या क्या हुआ?

नकाब०। बता सकते हैं मगर यह बात भूतनाथ को नापसन्द होगी क्योंकि भूतनाथ को उन लोगों ने उसके पुराने ऐबों को बता कर डरा दिया था और इसी सबब से वह उन नकाबपोशों का कुछ बिगाड़ न सका। हां हम लोग उन दोनों नकाबपोशों को अपने साथ यहां ले आये हैं यह सोच कर कि भूतनाथ यहां आ गया होगा अस्तु उनका मुकाबिला हुजूर के सामने करा दिया जायगा।

तेज०। हां! वे दोनों नकाबपोश कहां हैं?

नकाबपोश०। बाहर फाटक पर उन्हें छोड़ आया हूं, किसी को हुक्म दिया जाय बुला लावे।

इशारा पाते ही एक चोबदार उन्हें बुलाने के लिए चला गया, और उसी समय भूतनाथ भी दर्बार में हाजिर होता दिखाई दिया। कौतुक की निगाह से सभों को सलाम किया और आज्ञानुसार देवीसिंह के बगल में बैठ गया।

जिस समय भूतनाथ इस इमारत की ड्योढ़ी पर आया था उस समय उन दोनों नकाबपोशों को फाटक पर टहलता हुआ देख कर चौंक पड़ा था। यद्यपि उन दोनों के चेहरे नकाब से खाली न थे मगर फिर भी भूतनाथ ने उन्हें पहिंचान लिया कि ये दोनों वही नकाबपोश हैं जिन्हें हम फंसा ले गये थे। अपने धड़कते कलेजे और परेशान दिमाग को लिए हुए भूतनाथ फाटक के अन्दर चला गया और दर्बार में हाजिर होकर उसने दोनों सर्दार नकाबपोशों को देखा।

एक नकाबपोश०। कहो भूतनाथ अच्छे तो हो?

भूत०। हुजूर लोगों के एकबाल से जिन्दा हूं मगर दिन रात इसी सोच में पड़ा रहता हूं कि प्रायश्चित करने या क्षमा मांगने से ईश्वर भी अपने भक्तों के पापों को भुला कर क्षमा कर देता है परन्तु मनुष्यों में वह बात क्यों नहीं पाई जाती!

नकाब०। जो लोग ईश्वर से डरते हैं और उसे निर्गुण और सगुण सर्वशक्ति-

मात्र जगदीश्वर का भरोसा रखते हैं वे जीवमात्र के साथ वैसा ही बर्ताव करते हैं जैसा ईश्वर चाहता है या जैसा कि हरि इच्छा समझी जाती है। अगर तुमने सच्चे दिल से परमात्मा से क्षमा मांग ली और अब तुम्हारी नीयत साफ है तो तुम्हें किसी तरह का दुःख नहीं मिल सकता, अगर कुछ मिलता है तो इसका कारण तुम्हारे चित्त का विकार है। तुम्हारे चित्त में अभी तक शान्ति नहीं हुई और तुम एकाग्र होकर उचित कार्यों की तरफ ध्यान नहीं देते इसलिए तुम्हें सुख प्राप्त नहीं होता। अब हमारा कहना इतना ही है कि तुम शान्ति के स्वरूप बनो और ज्यादे खोज बीन के फेर में न पड़ो। यदि तुम इस बात को मानोगे तो निःसन्देह अच्छे रहोगे और तुम्हें किसी तरह का कष्ट न होगा।

भूत०। निःसन्देह आप उचित कहते हैं।

देवी०। भूतनाथ, तुम्हें यह सुन कर प्रसन्न होना चाहिये कि दो ही तीन दिन में कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह आने वाले हैं।

भूत०। (ताज्जुब से) यह कैसे मालूम हुआ।

देवी। उनकी चीठी आई है।

भूत०। कौन लाया है?

देवी०। (नकाबपोशों की तरफ बता कर) ये ही लाये हैं।

भूत०। क्या मैं उस चीठी को देख सकता हूं?

देवी०। अवश्य।

इतना कह कर देवीसिंह ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह की चीठी भूतनाथ के हाथ में दे दी और भूतनाथ ने प्रसन्नता के साथ पढ़कर कहा, "अब सब बखेड़ा तै हो जायगा।"

जीत०। (महाराज का इशारा पाकर भूतनाथ से) भूतनाथ, तुम्हें महाराज की तरफ से किसी तरह का खौफ न करना चाहिये, क्योंकि महाराज आज्ञा दे चुके हैं कि तुम्हारे ऐबों पर ध्यान न देंगे और देवीसिंह जिन्हें महाराज अपना अंग समझते हैं, तुम्हें अपने भाई के बराबर मानते हैं। अच्छा यह बताओ कि तुम्हारे लौट आने में इतना विलम्ब क्यों हुआ, क्योंकि जिन दो नकाबपोशों को तुम गिरफ्तार करके ले गए थे उन्हें अपने घर लौटे दो दिन हो गए।

भूतनाथ कुछ जवाब देना ही चाहता था कि वे दोनों नकाबपोश भी हाजिर हुए जिन्हें बुलाने के लिए चोबदार गया था। जब वे दोनों सभों को सलाम करके आज्ञानुसार बैठ गये तब भूतनाथ ने जवाब दिया—

भूत०। (दोनों नकाबपोशों की तरफ बता कर) जहां तक मैं ख्याल करता हूं

थे दोनों नकाबपोश वे ही हैं जिन्हें मैं गिरफ्तार करके ले गया था। (नकाबपोशों से) क्यों साहबों ?

एक नकाबपोश०। ठीक है मगर हम लोगों को ले जाकर तुमने क्या किया सो महाराज को मालूम नहीं है।

भूत०। हम लोग एक साथ हीं अपने अपने स्थान की तरफ रवाना हुए थे, ये दोनों तो बेखटके अपने घर पर पहुंच गए होंगे मगर मैं एक विचित्र तमाशे के फेर में पड़ गया था।

जीत०। वह क्या ?

भूत०। (कुछ संकोच के साथ) क्या कहूं कहते शर्म मालूम होती है ?

देवी०। ऐयारों को किसी घटना के कहने में शर्म न होनी चाहिये चाहे उन्हें अपनी दुर्गति का हाल ही क्यों न कहना पड़े, और यहां कोई गैर शख्स भी बैठा हुआ नहीं है, ये नकाबपोश साहब भी अपने ही हैं, तुम खुद देख चुके हो कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने इनके बारे में क्या लिखा है।

भूत०। ठीक है मगर............खैर जो होगा देखा जायेगा, मैं बयान करता हूं सुनिये। इन नकाबपोशों को बिदा करने बाद जिस समय मैं वहां से रवाना हुआ रात आधी से कुछ ज्यादा जा चुकी थी। जब मैं 'पिपलिया' वाले जंगल में पहुंचा जो यहां से दो ढाई कोस होगा, तो गाने की मधुर आवाज मेरे कानों में पड़ी और मैं ताज्जुब से चारो तरफ गौर करने लगा। मालूम हुआ कि दाहिनी तरफ से आवाज आ रही है अस्तु मैं रास्ता छोड़ धीरे धीरे दाहिनी तरफ चला और गौर से उस आवाज को सुनने लगा। जैसे जैसे आगे बढ़ता था आवाज साफ होती जाती थी और यह भी जान पड़ता था कि मैं इस आवाज से अपरिचित नहीं बल्कि कई दफे सुन चुका हूं, अस्तु उत्कण्ठा के साथ कदम बढ़ा कर चलने लगा। कुछ और आगे जाने बाद मालूम हुआ कि दो औरतें मिल कर बारी बारी से गा रही हैं जिनमें से एक की आवाज पहिचानी हुई है। जब उस ठिकाने पहुंच गया जहां से आवाज आ रही थी तो देखा कि बड़ के एक बड़े और पुराने पेड़ के ऊपर कई औरतें चढ़ी हुई हैं जिनमें दो औरतें गा रही हैं। वहां बहुत अन्धकार हो रहा था इसलिए इस बात का पता नहीं लग सकता था कि वे औरतें कौन कैसी और किस रंग ढंग की हैं तथा उनका पहिरावा कैसा है।

मैं भले बुरे का कुछ ख्याल न करके उस पेड के नीचे चला गया और तिलिस्मी खंजर अपने हाथ में लेकर रोशनी के लिए उसका कब्जा दबाया। उसकी तेज रोशनी

से चारो तरफ उजाला हो गया और पेड़ पर चढ़ी हुई वे औरतें साफ दिखाई देने लगीं। मैं उनके पहिचानने की कोशिश कर ही रहा था कि यकायक उस पेड़ के चारो तरफ चक्र की तरह आग भभक उठी और तुरत ही बुझ गई। जैसे किसी ने बारूद की लकीर में आग लगा दी हो और वह भक से उड़ जाने बाद केवल धूआं ही धूआं रह जाय ठीक वैसा ही मालूम हुआ। आग बुझ जाने के साथ ही ऐसा जहरीला और कड़ुआ धूआं फैला कि मेरी तबीयत घबड़ा गई और मैं समझ गया कि इसमें बेहोशी का असर जरूर है और मेरे साथ ऐयारी की गई। बहुत कोशिश की मगर मैं अपने को सम्हाल न सका और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा।

मैं नहीं कह सकता कि बेहोश होने बाद मेरे साथ कैसा सलूक किया गया, हां जब मैं होश में आया और मेरी आंखें खुलीं तो मैंने एक सुन्दर सजे हुए कमरे में अपने को हथकड़ी बेड़ी से मजबूर पाया। उस समय कमरे में रोशनी बखूबी हो रही थी और मेरे सामने साफ फर्श के ऊपर कई औरतें बैठी हुई थीं जिनमें मेरी औरत ऊंची गद्दी पर बैठी हुई उन सभों की सर्दार मालूम पड़ती थी।

॥ बीसवां भाग समाप्त ॥

२० वां संस्करण] १९७७ ई० [११०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी